# दुई शब्द

'आखर प्रीति केर' किछ नहीं बस, अहाँक सिनेह थीक जे अहाँ सव अपन पत्रक माध्यम सँ हमरा कोनो रूपे मोन पाड़लौं। एकरा हम कंगालिनक धन जकां नुका के रखने छलौं। जखन मोन उदास, हतास उपेक्षित बुझा पड़ैत छल तखन पत्रक ई पेटी निकालि चुपचाप पढैत छलौं आँखि सँ, हृदय सँ एहि मे छिरियाल सिनेह के हंसोथि एकटा अविकल आत्मतुष्टि, एकटा परमानंदक अनुभूति से मोन प्राण भरैत छलौं। एहि पत्र सवक सोझा हमरा विश्वक सम्पदा सारहीन लागैत ऐछ। हमर जिनगी में रक्त संबंध से कम महत्व प्यारक संबंधक नहि रहल। हम जकरा मानलौं सम्पूर्ण प्यार, ममता, वात्सल्य से सिंचलौं चाहे ओ देखल होथि वा कि अनदेखाल, जानल पहिचानल होथि कि अनचिन्हार...मुदा जे समयक एकाई से, संशय–असंशय से, तर्क वितर्क से एहि सिनेहके जोखलैथ ओ स्वयं अपने आप पाछु हँटि गेलैथ।

आय जीवनक एहि संध्या बेला में एहि पत्र सब के उजागर नै करब ते स्वयं अपनों संग न्याय नै क सकब। किन्तु दुःख एतवे ऐछ जे हज़ारो हज़ार पत्रक सम्मुख हमर किताबक पन्ना बड कम ऐछ। हम चाहियोके सभ पत्र के यथावत नै छापि सकैत छी। प्रयास केने छी जे प्रायः सभ पत्रक किछ ने किछ पाती के उजागर कै सकी। हम ओही नाम सभ के कृतज्ञता, आभार दय सकी। बहुतो से संपर्क टूटी गेल, बहुतो के जवाब नहीं दय सकलौं। बेसी लोग के हम देखनो नै छी। किंतु पत्रक माध्यम से हम हुनक छवि अपन मोन में बसेने छी। आ हरदम प्रेरणा ग्रहण करैत छी। हिंदी, मैथिलीक आ अंग्रेज़ीक सब पाठक लोकनिक पत्र आगू देने छी। बहुतो में वर्ष, तारीख धूमिल भय गेल छैक, कतेको में तो सेहो नै ऐछ।

पत्र लेखन सुदूर अतीत से आबी रहल छैक। तैंते आदि कवि विद्यापति के कविता.. 'के पतिया ले जायत रे मोरा प्रियतम पास' फेरो 'पियतम को पतिया लिखूं जो कोई होई विदेश तन में मन में नयन में, ताको कहाँ सन्देश' मैथिली में 'शीलादाई के चिठी में एतवे लिखल छैं, कहू यो प्राणनाथ कोना के रहै छी', से लिखलनि ऐछ श्री सोनदाई एहि हरिहर हरिहर कागद पर..जन जन के ठोर पर छल। एतवे नहि, गीतों में 'चंदारे मोरा पतिया लेई जारे, प्रियतम को'.....सरिपों पत्र लेखन आत्मविव्यक्तिक सशक्त साधन थीक, स्वयं के चिन्हवा लेल, अपना के जानवा लेल। यदि केकरो पर तामस उठे ते तत्क्षण ओकर नाम से पत्र लिखी मोनक सब तामस निकालि दी आ कनि काल बाद यदि फेरो ओही पत्र के पढ़ी ते लागत कतेक बेदरमत वाला चिठी लिखने छलौं, स्वयं पर तामसो उठैत छैक, आ हंसियो लागैत छैक। पत्र इयह थीक जाकर अस्तित्व रहि जायत छैक। सब किछ, अतीत भय जायत छैक मुदा पत्र मे छिरियायल प्रेम कहियो अतीत नहि होयत छै। अपराजित कुसुम सदृश्य चिर काल धरि मोहित–सम्मोहित करैत रहैत ऐछ.. हँ, उदास भेला पर, की तनाव में रहला पर जखन मानव लिखैत ऐछ तै अपन आत्मा के अनावृत कै दैत ऐछ। आ ई क्षण सब से साँच क्षण होयत ऐछ। कोनो कोनो पत्रते राष्ट्रीय निधि बनि जायत ऐछ। पंडित जवाहर लाल नेहरू के लिखल पत्र पिताक पत्र पुत्रीक नाम देशक गौरव बनि गेल। महात्मा गाँधीक पत्र सब विदेश में

करोड़ों मे नीलाम भेल। हाले मे ओबामाक पत्र पुत्रीक नाम सार्वजनिक भ गेल। ई एकटा इतिहास ऐछ।...हमर प्रयोजन मात्र एतवे जे पत्रक कतेक महत्व ऐछ।

अंग्रेज़ीक एकटा बड पैघ विद्वान लिखने ऐछ जे most difficult in life is to know yourself.

प्रत्येक मानव जीवन अपना आप में एकटा उपन्यास, कथा, संस्मरण, यात्रा नाटक, आलोचना-प्रत्यालोचना, विश्लेषण, समीक्षा आदि के समेटने रहैत छैक...अपन जीवन में मानव कतेको कथा के जन्म दैत ऐछ। संस्मरण में जीवैत ऐछ, यात्रा में चलैत ऐछ, जिनगी भरि नाटके ते करैत ऐछ, विद्वान लोकनि जीवनक एहि खंड के साहित्यिक अभिधा बनाय साहित्यक सृजन करै लागलनि, भनहि ओ कोनो भाषा होय! अभिव्यक्ति के सामर्थ्य हेवाक चाही तैं ओ साहित्यकार बनी जायत छैथ।

सौंसे जीवन आंखि में नाचि जायत ऐछ.....भगलपुर में जनम, साहेबगंज, हजारीबागक जंगल में बाल्यकाल , पुनः पापाक बदली सहरसा आ पटना धरिक अश्रांत यात्रा... पंद्रह बरिसक आयु में वालिका वधु डुमरा, सहरसाक चालीस गोटेक सामंती संयुक्त परिवार में सभ से पैघ पुतहु...फेर सहरसाक जीवन, पतिक वकालत, अपन नौकरी, राजनीति, बालबच्चाक स्कूली पढ़ाई, सहरसा जिलाक इमानदार पी पी बनवाक सनेस पतिक हार्ट एटैक, इंग्लैंड में बायपास सर्जरी आ तीन बरिस बाद सब किछुक अंत हम लहास बनि गेल छलौं।

रजनी से शेफालिका बनि गेनाय हमर जीवनक अद्‌भुत प्रक्रिया रहल रजनी एकटा विशाल परिवारक केंद्र बिन्दु स्नेह सिन्धु में उधियाइत शेफालिका, साहित्यक विस्तृत उदधि में लहरिक छोट सन ज्वार जकां उमड़ैत इतरैत।

एहि दुनू नामक संग चिठी पत्रीक भण्डार हमर मोनक कोन कोन के स्पर्श करैत छल... हम एकरा जोगा के राखैत छलौं, 'उजाले अपनी यादों के हमारे संग रहने दो, न जाने जिंदगी की किस गली में शाम हो जाये'... हमर अन्हार जिनगी में इजोत भरयवाला ई पत्र सभ..सहरसा एहेन जगह में एतेक पत्र हमरा नाम से एला पर डाकिया सभ गोटेक ठोर पर एके बात रहैत छल वकील साहेबक कनियाक नाम से कतेक चिठी अबैत छैक...एकटा पत्र आयल शेफालिका पुर्णियाक पता से। डाकिया हमरा पत्र दै देलक, ओकरा हम कहलौं हमर पत्र नै थिक... मुदा नहीं मनलक। चिठी खोल लौं ते बंगला में लिखल छल। ओ हमर जिनगीक संघर्ष काल छल, हमर साहित्यिक जिनगीक स्वर्ण काल। हम छपैत रही आ खूब छपैत रही, मैथिलीक कोनो पत्रिका नहीं छल जाहि मे हम नै छलौं। फेरो हिंदी, अंग्रेज़ी सब में हम बराबर छपैत रही...जे हमर जीवनक संघर्ष में एकटा स्फूर्ति भरि दैत छल, नव उजास, नवल विहान...कोनो रचनाकार अपन युगक स्थिति परिस्थिति से प्राप्त अनुभव के अपन सृजन में अभिव्यक्त करैत ऐछ। जहिना चारुकात घटैत घटना सब जीवन मे नव बाट खेलैत ऐछ ओहिना बदलैत जीवनमूल्य सँ निःसृत मानवीय संवेदना, मानव स्वभाव, मानसिक स्थिति आ अवस्थाक विश्लेषण भ जैत छैक। एहि चिठी पत्री सब से। सुगंध फूल में ते होइतहि ऐछ, स्वप्न में, साँस में, आंखि में सेहो बसैत ऐछ। मुदा, हम ओकरा स्पर्श नै क सकैत छी। मात्र अंतर में अनुभूत करैत छी...ओहिना एहि पत्र सबहक स्नेहिल संस्पर्शक सुगंध के हम साँस साँस में अनुभूत करैत छी. ..

जमाना बड तीव्र गति सँ भगैत गेल। वैज्ञानिक क्रांति, वैचारिक क्रांति सँ देशे नहि समस्त संसार में हिलकोर मचि गेल। इंटरनेट, मोबाइल, एसेमेस आदि समस्त विश्व के एकटा गाम में बदलि देलक आजुक बच्चा तार, लैटिनिंग फोन काल आदि के नाम नहि जनैत ऐछ, कोना बेर कुबेर, राति-बिराति तारक नाम से, खराब बातक आशंका से जी थर थर कपैंत रहैत छल ककरा की भऽ गेलैक? आब ते पोस्टोफिस, डाकिया खाली सरकारी काज लेल रहि गेल, वैश्वीकरणक एहि युग मे गाम से शहर, शहर से देश, देश से विदेश सब ठामक संस्कृतिक झलक पत्र में भेट लागल। कम्युनिकेशनक साधन हमर सबहक आवश्यकता बनि गेल अछि। सड़क पर चलैत आम आदमीक हाथ में मोबाइल रहैत छैक चाहे ओ कोनो वर्गक होइ या कोनो आयु केर। युवक युवती, सड़क पर, रेल में, बस में घंटो घंटा मोबाइल से गप करैत ऐछ। किंतु दिमागक गप दिमाग से कपूर जकां उड़ि जायत ऐछ। ईमेल से पल मे समाचार संसारक एक कोन से दोसर कोन में पहुंचि जायत ऐछ। मुदा, पत्र में जे हृदयक मौलिक अभिव्यक्ति होइत ऐछ ओ एसेमेस में नहि भेटैत छैक किन्तु पत्र निजताक सुगंधी से ओत प्रोत रहैत छैक। हुँ अपवाद सभठाम रहैत ऐछ। हमहू ईमेल सँ पत्र आयल किछ एहि मे दऽ रहल छी जाहि मे जीवन छैक, सिनेह छैक।

आजुक पीढ़ी कल्पनो नहि क सकैत अछि जे पहिने लोक के कतेक धैर्य छल पत्र लिखवा लेल। खासक पति पत्नीक के। समय तखनो नहि छल, अपन अपन परिस्थितिक बेगरता छल। तैं हम पति पत्नीक पत्रक किछ अंश सेहो द रहल छी एहि संग्रह मे। हमर पापा स्व. ब्रजेश्वर मल्लिक एकटा ऑफिसर क संगे भावुक, संवेदनशील साहित्यकार सेहो छलैथ। अपन ब्याहक बाद पापा हमर माँ स्व. अन्नपूर्णा मल्लिक के जे पत्र लिखलनि ओ अपना आप में एकटा साहित्य छल। हम देखने छलों जे एकटा लाल रंगक भेलवेट से मढ़हल कॉपी में माँ अपना हाथ से पापाक पत्र सब उतारने छलीह जे एकरा पुस्तकाकार में छपायब किंतु, पारिस्थितिक एहेन झंझा जीवन में आयल जे पापा माक सपना पूर्ण नहि भेल... ओ कोपी कत गुम भ गेल...हम सब भाई बहिनी नुका नुका के कौपी पढ़ैत छलौं लजाइत छलौं, सिखैत छलौं, साहित्य संवर्धित होइत छल। पापाक लिखल 8-10 पन्नाक चिट्ठी क एकटा फाटल चीटल खंड हमर पत्रक खजाना में बदरंग पड़ल छल...

'मेरी अन्नी, .....तुम मुझ से दूर हो, पर मैं देख रहा हूँ तुम मुझ से दूर कहाँ हो... तुम तो मेरी अंतरात्मा में बसी हो और मैं कल्पनाओं की दुनिया में तुम्हें खोजता हूँ... मेरी अन्नी एक मासूम बाला की तरह पलंग पर लेटी है, और मैं उसे हौले हौले थपकियाँ देकर सुला रहा हूँ...गुनगुना रहा हूँ... सो जा राजकुमारी सो जा... कभी लगता है मैं बांसुरी बजा रहा हूँ और तू पनघट से बावरी की तरह भागी भागी आ रही हो...'

**तुम्हारा ब्रज**
1940

सब भाई बहन खूब हँसैत छल पापा आ गीत?? किन्तु हम बुझि गेलों जे पापाक इयैह भावना हमर अंतरात्मा में बसल छल वाल्याकाले से। स्यात पापाक एयाह कल्पनाशक्ति, इयह स्वप्निल संसार हमर जिनगी बिन गेल छल। हमर अंतर में एकटा विरहिणी नायिका तुलसी तर दीप नेसैत सतत प्रतीक्षा में रहैत ऐछ।

एहि मे हम पत्र सबहक दुई खंड केने छी। पहिलुक साहित्यिक पत्र सब, जिनका कारण हम आय एहि देहरि पर पहुंचल छी दोसर खंड पारिवारिक थीक जिनका सिनेहक कारण रजनी शेफालिका बनि गेलीह...कोन पत्र आगु ऐछ, कोन पाछु ई हमरा स्वयं नहि मोन ऐछ...हमर अस्तव्यस्त जिनगी जकां हमर सभ चीज अस्तव्यस्त रहल। साँच तँ ई अछि जे 'अखर प्रीत केर' 'किस्त किस्त जीवनक' एकटा किस्ते थीक– एहि पत्र में आयल अपन समस्त हृदय के हम असंख्य धन्यवाद द रहल छी जिनका कारन हमर जीवन ज्योतित रहल। दृष्टि क आफताब आलम जीके हार्दिक धन्यवाद जे एहि अस्तव्यस्त कागद सभ के जोड़ि आकार देलनि... संगही गजेन्द्र ठाकुर जी के दिल्ली एहेन महानगर में हमरा सहयोग द एही पुस्तक का प्रकाशन केलन्हि.... हुनक एहि महानता मात्र धन्यवाद कहि हम स्वयं तुच्छ भऽ जायब। नागार्जुनक एकटा पांति हमर मोन मानस में सतत उथल पुथल मचौने रहैत ऐछ.....'कौन चाहेगा उसका शून्य में टकराए यह उच्छवास? हो (गयी हूँ) मैं नहि पाषाण/जिसको डाल दे कोई कहीं भी/करेगा वह कुछ नहि विरोध/ करेगा वह कुछ नहि अनुरोध/ वेदना ही नही जिसके पास/ फिर उठेगा कहाँ से नि:श्वास.........

**शेफाली**

परमादरणीया शेफालिका जी,

सादर प्रणाम।

'किस्त-किस्त जीवन' अहाँ तँ सागरजी कें पठेलियनि मुदा घरौआ नारी होयबाक कारणें ई लाभ हम उठेलौं। हुनकासँ पहिने हमहीं पढ़ि गेलौं 6-7 किस्त में। हमरा बुझबा मे नहि आबि रहल अछि जे कतय सँ शुरु करी? की लिखी? की कही?

हँ, एतेक जरूर लिखब जे एहि किताब कें हाथ में लैत वा किताब दिस तकैत अनेरो आँखि से दहो-बहो नोर झरय लगैए। किए? तकर कारण हम अपनो नहि जानि पबैत छी।

एहि बेर महाकुंभ मेला लागल अछि। हमरो बहुत परिचित लोकनि सभ महाकुंभ स्नान करैक लेल जाइ गेलीह अछि। हमरो चलै ले कहलनि। हम हिनका सँ पुछल मुदा हिनकर नहिंये सन जबाब पाबी हम चुप भ' गेलौं किएक तँ हिनका एहि सभ मे विश्वास किछु कम्मे जकाँ छनि।

लेकिन 'किस्त-किस्त जीवन' (जकरा हम अहाँक डाइरी कहैत छी) पढ़ि गेला सँ मोन मे एकटा एहन सन हिलकोर उठल जे कोनो टा कुंभ स्नान सँ बेसी सुखमय लागल। एकटा बात आर जे मोनक कोनो दोग में अहाँक दर्शन करबाक प्रबल इच्छा जागि गेल अछि। ठीके शेफालिका जी, जखन हम अहाँके देखब तँ हाथ सँ छुबिं देखक, आंगुर से दाबि कें देखब, तरहत्थी सँ हँसोथिकें

देखब...भरि पाँज में पकड़ि कें देखब... चरण मे झुकि कें देखब...की सरिपों अहाँ वैह शेफालिका छी जे हमरा माथ पर एखन हाथ रोपने....छी?

सत्ते, विधाताक बड़ पैघ डाड. अहाँक रंगीन जीवन पर पड़ल। अहाँ लोकनिक अंतरंगता हुनको अखरि गेलनि। अहाँ एकटा सफल बेटी, निश्छल प्रेयसी, सर्वस्व समर्पिता पत्नी, कुशल गृहिणी, ममतामयी माय, निष्णात लेखिका...समाज-सेविका, राजनयिक आ My dear बाँधवी...आ और की-की ने छी... से नहि जनितहुँ जँ ई पोथी नहि पढ़ितहुँ। अहाँ अतुलनीय छी... ''तोहर सरिस एक तोहें माधब मन होइछ अनुमाने'' (ई बात हम एहि लेल लिखलहुँ जे सागरजी अहाँक तुलना महादेवी वर्मा, महाश्वेता देवी वगैरह सभ सँ करैत रहैत छथि) जे-हो, मुदा मैथिली साहित्य कें एकटा अनमोल वस्तु भेटलैक अहाँक ई पोथी। हमरा बुझने एहि पोथीक उचित मूल्यांकन नहि भेलैक अछि। हमरा सन घरेलू महिला लोकनि कै तँ ई पोथी अरवैध कें पढ़वाक चाहियनि। पोथीक भाषा आ शैली मे गति छैक। एक-दू पेज पढ़लाक बाद हैत नहि जे पढ़ब छोड़ि आर कोनो काज करी। येह एहि कृतिक सफलता भेलैक।

1962 में जखन वियाह भेल छल तखने सँ मैथिलीक पोथी-पत्रिका पढ़ैत आबि रहल छी। तहिया 'मिथिला मिहिर' मे अहाँक दू जुट्टिया गुहल केशवला फोटोक संग अहाँक कविता-कथा संग ..... पढ़ैत रही। बड़ बढ़ियाँ...बड़ बेश!

'किस्त-किस्त जीवन' तँ एकटा विरल रचना अछि। 'अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस' क वर्षगांठ पर हम आग्रह करबनि मैथिलीक भाग्य विधाता लोकनि सँ जे एहन उपाय करथि जे एहि पोथीक अंतर्राष्ट्रीय भाषा मे अनुवाद होइक...।

आब हम अपन लेखनी कें विराम देबय चाहैत छी एकटा छोट छीन पांतीक संग-

*पढ़ि गेलौं ई आत्मकथा,*
*मोन मे भेल उसास....*
*कतेक व्यथित ई बारह मास!*
*कतेक व्यथित ई बारह मास!!*

स्नेहाकांक्षिणी
**शैल**
संतोषपुर, कोलकाता

---

*....शेफालिका वर्माक कविता होइत ऐछ भावात्मक, आत्माभिव्यक्ति मूलक अओर से भावात्मक शैली में हिनक शब्दयोजना उप्निष्ठ भावहि जकां कोमल आ मधुर होइत ऐछ....*

*–प्रो. रमानाथ झा*

---

पत्र पहुँचनामाक सूचना अवश्य दी, से आग्रह।

*ई पत्र वरीय लेखक लक्ष्मण झा 'सागर' क पत्नी शैल झाक लिखल अछि जे एकटा गृहिणीक संगे बहुत तरह स मैथिलीक सेवा करैत छथि। (इ हमरा बाद में ज्ञात भेल) हुनक ह्रदयक निश्छल उदगार एहि मे सन्निहित अछि। किस्त-किस्त कोनो घरेलू महिलाक अन्तस्तल के स्पर्श कँ सकैत छैक ई हमर प्रथम अनुभूति, ई विश्वक सभ सँ पैघ पुरस्कार हमरा लेल अछि आ किस्त किस्त लेखनक उद्देश्य केर संपूर्णता। हम तँ किछ नहि छी-किन्तु, शैल जी स्वयं महान छथि ओहि आवरण सँ हमरा आच्छादित कऽ देलनि-*

साहित्य समाजक दर्पण होइत अछि आ साहित्यकार ओहि दर्पणक शिल्पी। शिल्पी जतेक विलक्षण हएत छाया ततेक साफ। कोनो साहित्यिक अध्ययनसँ रचनाकारक मनोवृत्ति स्पष्ट होइत अछि। मैथिली साहित्यिक संग ई विडंबना रहल जे एहिमे वाल साहित्य, अर्थनीति आ आत्मकथाक विरल लेखन भेल। मात्र किछु साहित्यकार एहि विधामे अपन लेखनीक प्रयोग कएलनि। ओहि विरल साहित्कारक मुच्छमे एकटा नाम अछि- डॉ. शेफालिका वर्मा।

शेफालिका जीक रचना सभमे पारदर्शिता रहल ओ जे ह्दएसँ सोचैत छथि ओकरा अपन कृति उतारी छैत छथि। हुनक रचनामे अंर्तमनक ध्वनि स्पष्ट सुनल आ सकैत अछि। कतहु अन्तर्द्वन्द्व नहि कतहु पूर्वाग्रह नहि। हुनक किछु कृति- विप्रलब्ध, अर्थयुग, स्मृति रेखा, यायावरी आ भावांजलि पढ़लाक बाद हुनक जीवनक वास्तविक रूपक दर्शन कएल जा सकैत अछि। अपन रचना सभकें एकसूत्रमे सहेजि कऽ अपन आत्मकथाक लिखलन्हि ''किस्त-किस्त जीवन'' अप्रत्याशित मुदा प्रासंगिक नाम। जीवनक कतेक रूप होइत अछि। बाल, वयस्क, प्रौढ़... सुख-दुख काम निष्काम यएह थिक एहि रचनाक सार। अपन करूणामयी जीवनक बून-बूनकें आंजुरमे एकत्रित कऽ आत्मकथा लिखलन्हि।

आमुखसँ स्पष्ट होइत अछि जे ओ नित डायरी लिखैत छथि तें अपन किस्त-किस्त अनुभवके वटोरि लेलनि। वाल-कालक गणित विषयक समस्या हो वा संगीत शिक्षक पंडित वाजपेयी जीक व्यवहारक मूल विश्लेषण सभ विन्दुपर पोथिक फुजल पन्ना जकाँ स्पष्ट प्रस्तुति। युवती वएसमे प्रवेश करैत काल कोनो अनचिनहार युवकक नजरि देखि कऽ अपन ब्रह्मास्त्रक (थूक फेकवाक) प्रयोग करैत छलीह। ओना एहि अस्त्रक शिकार विवाहसँ पूर्व ललन बावू सेहो भेल छलाह, जिनका संग ओ दाम्पत्य सूत्रमे बान्हल गेलीह। नव प्रकारक रक्षा सूत्रक विषय मे पढ़ि अकचका गेलहुँ, नीक नहि लागल मुदा, एहिसँ रचनाक प्रासंगिकता पर प्रश्नचिन्ह नहि लगाओल जा सकैत अछि।

**शिव कुमार झा**

''टिल्लू''- किस्त किस्त जीवन-शेफालिका वर्मा (समीक्षा)

'विदेह' प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका

शेफालिका जी,

अहाँक कथा सभ मे तनाव ग्रस्त समााजक मूलभूत समस्याक रोचक वर्णन होइत अछि। युवा पीढ़ी कोना पथभ्रष्ट भऽ गलत बाट ध' लैत अछि, नारीक शोषण कोन प्रकारे होइत अछि सभ। लिपिबद्ध केने छी अहाँ। अहाँक कथा सभकें बेर-बेर पढ़बाक मोन होइत अछि...

**गौरीशंकर राजहंस**
भूतपूर्व संसद सदस्य
लोकसभा

## आशीर्वाद

अखिल भारतीय मैथिली सम्मेलन में कवयित्री शेफालिका की प्रतिभा से परिचय पाकर मैं जितना प्रसन्न हूँ, उतना ही चकित भी हूँ। इतनी छोटी अवस्था में उन्होंने जो साहित्य में अन्तर्दृष्टि प्राप्त की है, वह उनके स्वर्णिम भविष्य की अग्रसूचिका है। उनके काव्यसंग्रह 'विप्रलब्धा' का भावोत्कर्ष आज के नवयुग के कवियों के लिए अनुकरणीय है।

सम्मेलन के अधिवेशन में उन्होंने एक सर्वोत्कृष्ट सम्मान भी अर्जित किया। उन्हें डा. उमेश मिश्र स्मृति स्वर्णपदक से आभूषित किया गया। उनकी काव्य-प्रतिभा भविष्य में और भी अधिक सम्मान की अधिकारिणी होगी, इसमें कोई सन्देह नहीं।

मेरा उन्हें हार्दिक आशीर्वाद है कि वे भारतीय साहित्य और संस्कृति में योग देकर और भी बड़े सम्मान और अलंकरण प्राप्त करें और हमारे देश और साहित्य को उन पर अभिमान हो!

**डॉ. राम कुमार वर्मा**
'साकेत'
इलाहाबाद-2
24.12.78

सौ. शेफालिका वर्मा केँ हम तहिए सँ जनैत छिऐन्ह जहिया ओ दस-गयारह बर्षक बालिका छलीह। हुनक पिता (बंधुवर श्री ब्रजेश्वर मल्लिक) यदा कदा अपन रानीघाट निवास मे निमंत्रण दैत रहैत छलाह (जाहि मे षट्रस ओ नवरस दूहूक समावेश रहैत छलैक। साहित्यगोष्ठीक परिसमाप्ति 'मधुरेण' होईत छलैक।

ओहि माधुर्यमय वातावरण मे मेधाविनी कन्याक प्रतिभा-संस्कार विकसित होइत गेलैन्ह। आइ ओ एक सुकुमार शब्द - शिल्पिनी कवयित्री लेखिकाक रुप मे विख्यात छथि। हम हुनक 'स्मृति रेखा' मे मर्म स्पर्शिनी भावुकता देखि शुभकामना प्रकट केने रहिऐन्ह जे ओ एक दिन 'मैथिलीक महादेवी'

रुप मे प्रसिद्ध हेतीह। आय हुनक 'विप्रलब्धा' मे भावनाक कोमलता और करुण रसक परिपाक देखि ओ आशा पल्लवित भऽ गेल अछि। 'शेफालिका' अपन नाम सार्थक करैत निरंतर शृंगरहारक माला गाँथि वाणी देवीक मुकुट पर अर्पित करैत रहथु, यैह आशीर्वाद दैत छियैन्ह।

**हरि मोहन झा**
टिकिया टोली, पटना
मिति 17.12.77

श्रीमती शेफालिका वर्माक हस्ताक्षर मे मैथिलीक एकटा एहन कवयित्रीक उदय भेल अछि, जे थोड़बे काल मे साहित्य-जगत पर अपना प्रभाव जमा लेने अछि। हुनक कविता-संग्रह ''विप्रलब्धता कें देखबाक अवसर हमरा हस्तलेखे रूप मे भेटल छल, जखन हम कोनो कवि-गोष्ठी मे सम्मिलित होयबा लेल सहरसा गेल छलहुँ। मंच परक भीड़-भाड़ एवं अस्तव्यस्तता रहितहुँ जे किछु उनटा-पुनटा कऽ देखल आ पुनः कवयित्रीक मुँह सँ सुनल से मोन मुग्ध कऽ लेलक। शेफालिका जीक कविता मे नीवनताक संग-संग मौलिकता अछि। समाजक बदलल परिवेश मे वर्तमान व्यक्ति केर मनोदशा भावना एवं अनुभूति जाहि प्रकारें प्रभावित भेल अछि, से ''विप्रलब्धा'' क कवयित्रीक द्वारा एकदम आधुानिक संदर्भ मे वाणी पाओल अछि। से ग्रन्थक नाम ''विप्रलब्धा'' कोनो रीतिकालीन अतीतक खाहे जेतेक विज्ञापन करओ, मुदा ओर प्रत्येक रचना अपन एक-एक पांती मे युग-बोधक अदम्य स्वर झंकृत कऽ रहल अछि। की भाषा, की भाव? दुहू मे शेफालिका जीक परतरि नहि! प्रेम-प्रसंग पर हुनक चुटकी, व्यंग..... दाम्पत्य जीवन सँ प्रेरणा ग्रहण करितहुँ कतेक असंपृक्त भऽ जाइत अछि-से केओ मर्मी व्यक्ति सहजें बूझि सकैत अछि। काव्यक सरसता रखैत किछु एहेन बात कहि देब 'जे अजगुत लागय-एकाएक चौंका दिए से शेफालिका वर्मा सँ भऽ सकै।

भरल पूरल परिवार, छह सन्तान कें जन्म देनिहारि, आ तें स्वास्थ्य सँ दुर्बल, पेशा सँ वकील पति कँ सब तरहें सुखी करइत नगर आयुक्त क पद-भार ग्रहण करइत..... ओ कोना काव्य रचना कऽ लैति छथि? कोन तरहे गुनगुनयबाक लेल समय निकालि लैति छथि? गृहस्थीक जाहि मरूभूमि मे कतेक कवि-कवयित्रीक रस श्रोत सूखी गेल ताही प्रपंच मे हुनक कवि हृदय कोना मात्र जीविते नहि-सरसता एवं वचन-विदग्धता क प्रचार-प्रसार कऽ रहल अछि से वास्तव मे अभिनन्दनीय, बारम्बार वन्दनीय अछि।

हुनक नाम ''शेफालिका'' क उत्प्रेरक सन्दर्भ। तखन हमर एकटा रचना ''शेफालिका'' शीर्षक प्रकाशित भेल छलैक। आ लागले कवयित्रीक जन्म होइत छनि। पिता साहित्य-प्रेमी। तें स्वाभाविके, जे अपना नवजात कन्या केर नाम हमर ओहि कविता पर ''शेफालिका'' राखि देलनि। एके संग ओ कविताओं ई कन्या-दूनू सार्थक भऽ गेली। ता देखू-सरस्वतीक कृपा। बालिका भऽ गेली

कवयित्री भावुकता सँ भरल ममता सँ ओत-प्रोत; आ हमर ओ कविता एक जीवंत काव्य प्रतिमा मे रूपांतरित भऽ गेल अछि। ई केकर सौभाग्य?

**आरसी प्रसाद सिंह**
एरौत
(समस्तीपुर)
9.7.75

........... श्रीमती शेफालिका वर्मा स्वयं साकार विप्रलब्धा छथि। भावनाक एकटा सहज सिहकी मे हिनक अश्रु विन्दु जे झहरि जाईत छनि तही मुक्ता सँ, सज्जित आखर मे ई कविताक फूल अंकित करैत छथि। एकटा कलामयी मैथलानी, एकटा सिसकैत कवयित्री आ एकटा भावभिजल व्यक्तित्व, हमरा बंगलाक सुप्रसिद्ध कवयित्री अरुदत्त आ तरुदत्तक झांकी भेटय लागैत अछि हिनक पांती सभ मे। .....

**मणिपद्म**
बहेड़ा
सतुआनि (14.4.78)

श्रीमती शेफालिका वर्मा आधुनिक मैथिली कविताक पारिजात-पत्र पर अंकित एकटा सिन्दूरी हस्ताक्षर छथि। श्रीमती शेफालिका वर्माक परिगणना ओहि स्कूलक कलाकार मे हेतनि जकर विचार-धारा श्री रविन्द्रनाथ ठाकुर प्रतिपादित करैत छथि। ई कविता सभ शेफालिका क व्यक्तित्वक निरभ्र-पारदर्शी रूप केँ हमरा सभक समक्ष सम्पूर्ण चारुता आ मनोज्ञताक संगे प्रस्तुत करवा मे सफल-समर्थ सिद्ध भेल अछि।

मुक्त छंद मे रचित अपन कविता मे जेना शेफालिका नव-अभिनव उपमान आ चित्र-धर्मी शब्द-वितान सँ अपना भावक रूप-विन्यास करवा से सफल सिद्ध भेलीह अछि तहिना अपन गीत सभ मे सेहो ओ एक विलक्षण मार्दव आ सौकुमार्य प्रस्तुत कयलनि अछि। हुनक गीत मे नारी सुलभ भावनाक स्वच्छ-स्फटिक अभिव्यक्ति भेल अछि। हिनक प्राणक अतलता मे सुकुमार भावक जे मधुरिमा आ कमनीयता अपन प्रकाश विकीर्ण करैत अछि तकरा तद्रूपे रमणीय शब्दावली मे प्रस्तुत करवा मे ई सहज समर्थ छथि।

ई कहब आवश्यक नइ जे मैथिली काव्यक विशाल व्यापक संसार मे अनेक कवयित्री उत्पन्न भेलीह जिनक काव्य-सुमन सँ ई संसार सुरभित अछि मुदा श्रीमती शेफालिका वर्मा आन कवयित्री सभ सँ अपन सर्वथा एकटा पृथक् फराक विलक्षण आ अनुपम स्थान बनौलनि अछि।

**डॉ. केदारनाथ लाभ**
राजेन्द्र कॉलेज, छपरा

.......... अन्तिम साँस सँ पहिने आस रहैत छैक, जे कोनो आसरा भेटय ओ साँस जे जा रहल हो, तँ रुकि जाय। तहिना मैथिलीक महादेवी (प्रो. हरिमोहन बाबूक शब्द मे) एहि सँग्रह सँ मैथिलीक डुबैत आस कें निश्चय बचा लेलन्हि। चि. शेफाली मैथिली लेल आब केवल हस्ताक्षरे नहि महत्वपूर्ण दस्तावेज छथि। हुनक कविता पढ़ी प्रत्येक पाठक-पाठिकाक आँखि नोरा जेतन्हि। शब्द कें पीड़ा कें माध्यम उद्घोष करब ओ पीड़ा कें पुनः शब्द से आनब सोझ अग्निपरीक्षा नहि। हमरा हर्ष अछि जे शेफालिका एहि परीक्षा मे सवा सोलह आना खरा भेल छथि। .....

**डॉ. सुधाकान्त मिश्र**
मंत्री
मैथिली एकेडमी - इलाहाबाद
मिति 13.7.77

.......... अहाँक कविता सभ खास कय 'भावाञ्जलि' भाव जगत् केर यात्रा, आत्माक लहरि, भक्तिक आलोड़न, ओहि अदृश्यक दृश्य सृजन ... की की कहू तत्काल आओर पुनः चिरकाल अवगाहनक वस्तु थीक। हम बूझैत छी ई वास्तविक कविता थीक जकरा विषय मे अंग्रेजीक कवि टी.एस. ईलियट कहलैन्ह- ॅम मदरवल चवमजतल इमवितम ूम नदकमतेजंदक पज कविता कैँ बुझबा सँ पहिने हम ओकर रस मे लुब्ध भऽ जाइत छी, ओकर रसास्वादन करय लगैत छी। तैं जेना प्रथमहि हमरा आकृष्ट केलक तहिना निरन्तर ई आकृष्ट करत - सेहो पीरीत अनुराग बखानिय तिल तिल नूतन होय। क्षणे क्षणे यन्नवत्यमुपैति तदेव रूपं रमणीयतायाः। एके साँस मे पढ़बा योग्य आ साँस साँस मे अनुभव करबा योग्य जाहि सँ पाठक मीरा बनि जाय- मैं तो गोविन्द के गुरा गाऊँ।

एकेक पाँति एकर भाव गुम्फन, भाव लहरिक, ओहि अरूपक जे शब्दगत अहाँ आरती सजाओल रचाओल अछि तकर आरती उतारल जायत: हम केवल अपन भावावेग किछु व्यक्त कैल अछि जे शब्दगत रोकने नहि रुकि सकैत अछि। अहाँ अपन डुमरा गामक (माटिक) नहि भू माताक ओहिना भक्ति पूर्रा पूजन कैल अछि जेना अयोध्या के सीमा पार करैत काल स्वयं श्री राम मातृ भूमिक माटि अपना रथ मे राखि पुनः अयोध्याक भूमि कैँ प्रणाम क तखन आगू दोसर राज्य वा प्रदेश मे प्रवेश कैलन्हि ......

**जगदीश प्र. कर्ण,**
लहेरियासराय
22.10'97

---

*अनेक शुभकामनाओं सहित। शेफालिका जी, आप साहित्य की दुनिया में अपना अलग अस्तित्व बनाएँ।............* *–राजेन्द्र अवस्थी 1/6/83*

---

आयु. शेफालिका जी,

...अभिमत मैथिली मे किछु दिनसँ कविता के अर्थ भए गेल अछि अव्यस्था-दुरवस्था सत्र प्रपीड़ित-पराजित आत्माक नपुंसक चीत्कार, जेना विपक्ष नेताक भाषण होवा वा अखबारक अभाव-अभियोग स्तम्भ हो। एहना मे ई मधुगंधी बसात एक टा नबे स्वाद देलक आ एकटा भिन्न वायुमंडल मे लए गेल। एहि मे स्वर तँ ओएह अछि जे कालिदास-विद्यापति-महादेवी वर्मा सँ लए आइ धरि गुंजित होइत आएल अछि; किन्तु नव अछि एकर अभिव्यक्ति जे युग-युग मे बदलैत रहल अछि। एके मूल अनुभूतिकेँ अहाँ जे नाना नव-नव रूप देल अछि ताहिसँ भवभूति मन पड़ैत छथि आ हुनके नकल करैत कहि सकैत छी – एकाऽत्र नामरहिता गहना ऽनुभूतिर्भिन्ना पृथक्-पृथगिवाश्रयते विवर्तान्। मैथिली कविता मे आधुनिक युगक अवतरण विलम्बसँ भेल; ता हिन्दी तथा अन्य भाषा सभ मे कविताक अनेक युग बीति चुकल छल। परिणाम ई भेल जे मैथिली मे रहस्यवादी, छायावादी आ रूमानी कविता नाम मात्रे लिखाएल आ चलि पड़ल प्रगतिवाद, यथार्थवाद, प्रयोगवाद, अस्तित्ववाद.....।एहिसँ मैथिलीक कविताक क्षेत्र मे जे एकटा खाधि रहि गेल छल तकरा भरबा मे शेफालिका अहाँक ई संग्रह बहुत दूर धरि सफल भेल अछि।

**गोविन्द झा**

साहित्यकार : अनुवादक : भाषाशास्त्री

''हम 1961 क अगस्तक आरम्भ मे एम.ए. क परीक्षा द गाम चल अयलहुँ। परन्तु ओही मासक अन्तिम सप्ताह मे मिथिला मिहिर मे शेफालिका मल्लिक (वर्मा) क नाम सँ 'पावस-प्रतीक्षा' शीर्षक कविता प्रकाशित भेला। ई देखि मोन मे अत्यन्त प्रसन्नता भेल। पुन: अक्टूबर मे शेफालिका मल्लिक (वर्मा) क दोसर कविता 'विस्मृत फुलडाली' सेहो प्रकाशित भेलनि। तकर बाद तँ शेफालिकाजी अव्याहत रूप मे मैथिली मे अपन सर्जनात्मक क्षमताक प्रयोग करऽ लगलीह।

हमर मित्र ललन कुमार वर्मा शेफालिका कँ हमर आग्रहेँ मैथिली मे साहित्य-सर्जनक आग्रह कयलथिन। शेफालिका मैथिली मे रचना करऽ लगलीह आ आइ, ओ मैथिली साहित्य-जगत मे शीर्ष पंक्ति मे आसीन छथि। ई हमरा लेल अवश्ये अविस्मरणीय बात अछि।

**श्री रामदेव झा**

...शेफालिका क पदार्पण मैथिली साहित्यमे ओहि समयमे भेल अछि, जखन मैथिली साहित्यमे महिला-लेखक नाम पर सप्पतो खएबाक स्थिति नइ छल। अहू दृष्टिएं हिनकर सृजनक संज्ञान लेल जएबाक चाही। एहि मे संकलित कविताक विषय मुख्यत: स्त्री-जीवनक नानाविध अनुभव, आ थोड़ेक समाजपरक परिस्थितिसं संबद्ध अछि। पितृसत्तात्मक समाजमे स्त्रीक उपेक्षा, नारी जातिकें निम्नतर बुझबाक प्रवृत्ति पर हिनकर कविता हंसैत अछि, दहेज प्रथाकें धिक्कारैत अछि, भारतक न्यायिक व्यवस्थाक विडम्बनाकें दुत्कारैत अछि। मुदा, अपेक्षाकृत अपन प्रेम-कवितामे

कवयित्री अइ सभ प्रसंगसं बेसी सफल आ स्पष्ट छथि। कहबाक चाही कि 'प्रेम-कविता' मे हिनकर संवेदना बेसी घनीभूत देखाइत अछि।

**देवशंकर नवीन**

नेशनल बुक ट्रस्ट, ए-5, ग्रीन पार्क,
नई दिल्ली-110016.
मधुगंधी बसात सँ

कथा शिल्पक दृष्टि सँ श्रीमती शेफालिका वर्माक कथा पूर्णत: भावपूर्ण होइत अछि। हिनक पचीसो कथा मिथिला मिहिर अग्निपंग तथा आखर आदि प्रत्रिकाक माध्यम मे पाठकक समक्ष उपस्थित भय चुकल अछि।

हिनक कथा मे नारी हृदयक कोमलता औचत्यक दिगदर्शन सभ्यक रूप मे होइत छैक जाहि मे रहैत अछि गतिशील साँसक लय तथा जीवनक आकर्षण बिन्दु के प्रति हृदयक अस्पष्ट मधुर आ गुंजायमान ध्वनि। इ युग युग सें आति रहल नारी सौंदर्यक ओहि रूप कें नहि स्वीकार करैत छथि जकर लक्ष्य विलासिता के प्रदर्शन मात्र होय छैक। एकरा संगहि ई स्त्री पुरुषक पारस्परिक आकर्षण कँ सेहो अस्वीकारैत नहि छथि वरण् ओहि आकर्षण कँ मर्यादाक सीमा रेखा मे आबद्ध रहब स्वास्थप्रद मनैत छथि।

''स्त्रीक रूप मे आकर्षित भऽ पुरुष किछ कऽ देखेवाक... अपूर्त सुन्दरताक शृंगार करैत अछि''- हिनक एकटा कथाक ई पंक्ति उच्छृंखल प्रणयक प्रति विरोध प्रकट करैत अछि।

एहि भौतिकवादी युगक जिनगी आ नारीक कोमल, भावुक हृदयक बीच होइत संघर्ष मे इ अनेक कथाक माध्यम से जेना ''नोरक साँस (मिथिला दूत कथा)'' हरियर कागजक एकटा मन: स्थिति (सोनामाटी) आदि कथाक माध्यम मे बड़ रोचक आ मार्मिक ढंग से अभिव्यक्त केने छथि। हिनक कथा मे निर्वैयक्तिकता (सेल्फ डिटेचमेंट) अंग्रेजीक लेखिका जेन ऑस्टेन जकाँ रहैत अछि।

हिनक इएह प्रतिभा हिनका मैथिली एकेडमी द्वारा म.म. उमेश मिश्र स्मृति स्वर्ण पदक देआय 1974 क सर्वश्रेष्ठ गद्य लेखिका कयैलक। हिनक एकटा कथा संग्रह शीघ्रे पाठकक समक्ष उपस्थित होयत। मैथिलीक पाठक बून्ह हिनका सँ बहुत किछ आना रखेत अछि।

मैथिलीक आधुनिक लेखिका लोकनि जे काष्यक प्रत्येक विधाक माध्यम सँ अपन अपन प्रतिभाक परिचय देलनि एहि श्रेणी मे श्रीमती शेफालिका वर्मा, श्रीमती गौरी मिश्र, डॉ. श्रीमती इलरानीमिद।

मिथिला मिहिर

**ले. नीरजा रेणु**

रविवार 7 दिसंबर, 1965

मूलतः कवयित्री साहित्यकार शेफालिका वर्मा मैथिली कथा साहित्य में एकटा नहिं बिसरयवाली मजगुत स्तम्भ छथि। तँ मैहिला कथाकारक रूप मे ओ अग्रणी लेखिका छथि हुनकर कथा पर कल्पना अरिपन रहैत छन्हि। छोट-छोट वाक्य सुन्दर भाव-बन्ध आ कोमल कोइलीक स्वर सन प्रवाह। शेफालिका वर्माक कथा मे प्रेम केन्द्रविन्दु मे रहत अछि। ओ तीस वर्ष सँ कथा लीखि रहल छथि। हुनकर कथा मे तीस वर्षक अवधि मे जीबैत, जन्मैत, युवा होइत, प्रौढ़ होइत प्रेमक बानगी छन्हि। सफल प्रेमक उल्लास, असफल प्रेमक हाहाकार, हेतु हेतु मद्भूत प्रेमक भकजोगनी सँ चोन्हियाइत नीरस जिनगीक आस, सभटा छन्हि शेफालिका वर्माक कथा मे। फुलपाँकी बला प्रदेशक महीन रसगर माटि कँ जौं नहिं बिसरबाक होअय तँ शेफालिका वर्माक कथा सदति सँग राखी।

श्रीमती शेफालिका वर्मा प्रथम कथा 'झहरैत नोरः बिजुकैत डोर' 1965 मे 'वैदेही' में प्रकाशित भेल। हिनक प्रारंभिक कथा सभ जेना नोरक एकटा निसाँस, अछि। हिनक 'फँसड़ीक दू छोड़' कथा मे स्त्री जीवनक पराधीनता देखाओल गेल अछि। भारतीय समाज मे स्त्रीक स्थान सदैव नीचँ रहल। अपन अस्तित्व रक्षाक लेल हुनका पति पति ओ पुत्रक अधीनस्थ रहय पड़ैत छैन्हि। पिताक इच्छाक विरोध नहि कय शैली सौम्य सँ संबंध विच्छेद क' लैत छथि। माय बेटीक हृदय कँ जनितो पतिक भय सँ मौन भ' जायइत छैक। नारीक सामाजिक स्थितिक आकलने एहि कथा मे भेल अछि। लेखिका अपन नायिकाक पक्ष लैत कहैत छथि, ''माय-बाप एक दिस तँ बेटी कँ संपूर्ण पति भक्तिक उपदेश दैत छथि आ दोसर दिस बेटीक प्रदर्शनी लगाए ओकर बर स्वयं तकैत छथि। फँसरीक दूनू छोर माय बापाक हाथ मे अछि आ गरदनि फँसल अछि कुमारि कन्याक। आ फँसरीक वैह दूनू छोर पतिक हाथि आबि जाइछ। एकान्त सेवा, संपूर्ण समर्पणाक बादो पतिक घर मे ओ अन्नक बोर सन राखल रहैछ आ पति आन जान घर मे मुँह दैत अछि।''

श्रीमती वर्माक अन्य कथा 'अर्थयुग' में एकटा जूनियर इंजीनियर द्वारा अनैतिक ढंगे द्रव्योपार्जन कय सुख शांति कँ तिलांजलि देबाक कथा अछि। आलोक बाबूक' पत्नी साड़ी, गहना आ सुख सुविधाक सभ वस्तुक उभोग करैत छथि मुदा पति सुख सँ वंचित होइत छथि। मानवमूल्यक उपहास करैत आलोक बाबू कहैत छथि- ''मानव मूल्य? हा-हा-हा। हे उदय, मानव मूल्य मात्र टाका रहि गेल अछि। टाका मे किछु शक्ति छैक तखन ने दोस्त, टाकाहि धर्मः टाकाहि धर्मः टाकाहि स्वर्ग क युग सरिपहु आबि गेल अछि।''

**उषा किरण खाँ**
पटना

---

*शेफालिका जी,*

*निष्ठा को जीवन का धर्म रखें। सफल एवं सुखी जीवन की कामना के साथ।*

*–शीला झुनझुनवाला, 01.06.83*

---

## समालोचनात्मक खुंडी

शेफालिका जी !

.......... अहाँक "उपेक्षित" कविता हमरा पर टोना कय देलक अछि। हम 'त बिसरिये गेल रही जे हमरो बेडिंग अछि। ई कविता पढ़ि काल्हिये सँ हम बेडिंग ताकि रहत छी आ भेटि नहि रहल अछि। भेटिते सूचना देब। अहींक शब्द-एहि समालोचनाक "खुंडी" आदरणीय वकील साहबे कें देखेबन्हि जे कोना अपनेक निश्छल साहित्यिक हृदय-स्नेह स्निग्ध-वेदना विह्वल-असीम सँ संबंध जोड़ने कोमलतम भावना हमरा ऊपर निखिलेशो सँ बेशी हावी भै गेल - ई बात अहाँ सँ बेसी वकील साहेब बुझथिन्ह कियेक त बार आ बेन्च भेने हमरा लोकनि समानधर्मी छी - दियाद-गोतिया छी। अनंत वर्ष धरि अपनेक लेखनी साहित्य-धरा पर शेफालिकाक वृष्टि करय एतबेक मात्र हमर शुभकामना। अस्तु

मर्यादा पुरुषोत्तम कें नाक मे बड़दवला

**(स्व.) रामनाथ झा**

डी.सी.एल.आर. सहरसा

शेफालिका वर्मा के काव्य का मूल स्वर यही वेदना है जो काव्य का मूल उत्स होता है। वेदना कुंठा नहीं दृष्टि है। वेदना जब दृष्टि बन जाती है तभी ससीम से असीम की ओर महाभिनिष्क्रमण होता और साहित्य में शाश्वत सत्य उद्घाटित होता है। प्रेम की वेदना जब कृष्ण की बाँसुरी की रागिनी बन जाती है तभी राधा की मूर्च्छना मीरा का भजन बन पाती है और इस मूर्च्छना और रागिनी का संबंध सूत्र है अटूट विश्वास।

महादेवी जी अपने परिचय में कहती हैं- ''मैं नीर भी दुख की बदली'' और शेफालिका जी अपना परिचय देती हैं- ''सांध्य गगन की मैं अकेली तारिका।

कवि भी सामाजिक प्राणी होता है-युग की चेतना के शीर्ष बिन्दु पर का जीव। अत: देश, काल, परिवेश और परिस्थति से आँखें मून्द लेना, उन्हें झुठला देना, सदा सम्भव नहीं होता। यदा-कदा ही सही, सामाजिक विसंगतियों, कुरूपताओं और बदलते जीवन-मूल्यों के प्रति दृष्टिक्षेप कवयित्री की सामाजिक चेतना के प्रति जागरूकता का प्रमणा है। इस युग की सबसे बड़ी विडंबना है- विचारों की संकीर्णता और आचरण और अनैतिकता। कभी कवि बच्चन ने गाया था- ''युग बदलेबा किन्तु न जीवन'' किन्तु आज- ''आदमी। अब आदमी नहीं रहा/उसमें सोचने-समझने की सारी शक्तियाँ/अन्तर्मुखी हो गई हैं/उसकी सारी संवेदनाएँ/सिर्फ अपने लिए रह गई हैं/ वह एक सुसंधहीन फूल की तरह है/जो अपने ही खिलने में मस्त है।''

शेफालिका जी की उपर्युक्त पंक्तियाँ ''सोसलिज़म'' और 'कॉमनिज़म'' पर 'सेल्फिज़म' की करारी चोट है।

कवयित्री डॉ. शेफालिका वर्मा की काव्यानुभूति का फलक बड़ा ही विस्तृत है। वैयक्तिक पीड़ा और सामाजिक उत्पीड़न के प्रति उनकी सजगता को देखते हुए हिन्दी-जगत उनसे बहुत-कुछ अधिक की आशा करता है।

**रामेन्द्र कुमार यादव 'रवि'**
सांसद, कुलपति
बी.एन. मंडल, वि.वि. मधेपुरा।

---

*शेफालिका,*

*तू न अपनी छाँह को अपने लिए कारा बनाना जाग तुझको दूर जाना*

*–महादेवी वर्मा', 78*

---

*Presented with greatest of love to my dearest damsel darling photogenic wife in the last days of 1983 this book Rajyog is addition to 'Raj'.*

*-Lalan Verma, 24.12.'83*

---

## *शेफालिका हमर दृष्टि में*

............. नारीक रूप मे शेफालिका शक्ति स्वरूपा सेहो छैथ जे महिषासुर रूपी दहेज दानव, नारी शोषनक प्रतीक शुम्भ निशुम्भ आ स्त्री समाज के गर्त में राखवाक प्रयास करै वाला रक्तबीज के बध करवाक संकल्प नेने छथि आ निर्भीक भ एही लेल सतत प्रयन्तशील रहैत छथि। हुनक क्रांतिकारी हृदय स्यात हुनक जन्म दिन 9aug.(quit india movement) भारत छोड़ो आंदोलन से प्रेरित छैक।

......... एक दिसि प्रेम, करुणा आ दया से सहजे पसिजय वाली शेफालिका आ दोसर दिसि क्रांतिकारी शेफालिका...दुनू व्यक्तित्व क रस्साकसी में बढ़ैत साहित्यधर्मी शेफालिका स्वत: एक अद्‌भुद व्यक्तित्व स्वामिनी बनि गेल छैथ जे बुझवा में कखनहु काल हम सेहो अपना के अक्षम पबैत छी..........

**ललन**

ठीके छैक हिनकर कहब... हमरा एकदम कर्मकांड में विश्वास नै ऐछ। मृत्यु उपरांत जखन हम बाबूजी, बड़का बाबूजी, काकाजी सबहक श्राद्ध कर्म देखलौं, पंडित सबहक...हाहारोह हुनका छाता देवैक तखन ने वर्षा, जेता, कतेक तरहक पलंग, सेज, मच्छरदानी आदि आदि जे देवैक से हुनका स्वर्ग में भेटतैक! परुहार में डोमि छल, पाइक अभाव में इलाज माय के नहि करा सकल, मुदा जमीन बेचि हुनक श्राद्ध कइ भोज भात केलक... एहि सब से हमरा मोने बड वितृष्णा भ गेल. ..हम हिनका कहियेंक .... हमरा मरैक बाद अहाँ किछ नै करब बस भिखमंगा सब के खुआ देवैक. ..ई हँसैत बजैत छलाह... बाप रे भिखमंगा हम ते बिकैये जायब... हमरा तखन तामस उठे.... बाद में बहुत सोची विचैर हिनका से सत लेलों..... एक सत, दुई सत, तीन सत 1. आर्य समाज रीति से हमर संस्कार करब-तीन दिन मे खतम, 2. केओ केश नहि कटाबे, 3. बरखी नै होई.... सब काज 3 दिन मे पूरा भ जाय.... तखन ओ जाहि दृष्टि से हमरा तकलैथ... जेना हमरा चीन्हि रहल होइथ. ...जेना अपना दे सोचैत हम रहब की नहि रहब...किन्तु हम आय धरि हुनक ओ दृष्टि आ तकर बाद मौन मूक हमरा चुपचाप अपन करेजा से सटौने रहलैथ कतेक काल धरि.....आय जखन हम अगसर छी ते जेना ओ मौन मुखर भ सब किछ बाजि रहल ऐछ ..............

26 मई 2008 कें हमर आत्मकथा 'किस्त किस्त जीवनक' विमोचन-पटनाक विद्यापति भवन मे मुख्य अतिथि जस्टिस मृदुला मिश्रा द्वारा भेल छल! अध्यक्षता जीवकान्त केने छलाह। विमोचन समारोह क समस्त आयोजन शरदिन्दु चौधरी मधुकांत झा एवं पंचानन मिश्रक सहयोग सं केने छलैथ। सोचैत नहि छलौं जे ई समारोह एतेक भव्य होयत। हाल मे लोग खचाखच भरल छल। मंच पर मृदुला जी, जीवकांत जीक संगे, विजय नारायण मिश्रा, राजमोहन झा, मधुकान्त जी, शरदिन्दु आदि सभ उपस्थित रहैथ।

जस्टिस मृदुला मिश्रा जखन बजलीह-ई पुस्तक हम पढ़ऽ लागलौं तँ हमरा लागल हम अपने

जीवन पढ़ि रहल छी– सहरसा मे हमर स्कूली जीवन बीतल अछि– हम घरक सभ काज हाथ मे पोथी नेने करैत रहलौं– हमर अंगुर बुक मार्क बनि गेल– आँखि नहि हटैत छल पोथी पर सँ। शेफालिका जी कें हम पहिने सँ जनैत छलहुँ किन्तु ई नहि जनैत छलौं जे ओ हमर श्वसुर स्व० सतीश चन्द्र झा, चीफ जस्टिसक संगी ब्रजेश्वर मल्लिकक बेटी छथि। एतेक नीक आ मार्मिक ई पोथी छैक जकर बड़ाई लेल हमरा शब्द नहि भेटैत अछि– आ हुनक वक्तव्य क एक एक पाती आ हमरा स्नेह–स्नात करैत गेल, हमर पुस्तके नहि जेना हम स्वयं सार्थक भऽ गेलहुँ– मुदा, हमर एहि सार्थकताक सुख भोगऽ लेल नहि तँ पापा छलाह नहिते वर्मा जी अपने–

रामानंद रमण, बासुकी नाथ झा सभ एहि कृतित्वक परिचय देलनि, किन्तु पंचानन मिश्र जखन व्यक्तित्व आ कृतित्व पर बाजऽ लगलाह तँ सहरसा मे जखन हम नगर आयुक्त छलौं ओहि प्रसंगक किछ गप सुनाय हमरा चमत्कृत कऽ गेलाह। मोहन भारद्वाज कहलनि– आत्मकथाक अंत नहि– सरिपों हुनक एहि बात पर आत्मकथा किस्त–किस्तक दोसर खंड पत्र मे छिरिया रहल छी। उषा किरण खाँ, शीला चौधरी, प्रेमलता प्रेम, सरिता झा आदि महिला सशक्तिकरणक बसात सेहो संगे छल–

वास्तव मे आत्मकथा किस्त किस्त मात्र आप बीती नहि, जीवनक महत्व पूर्ण घटना सभक उल्लेखे नहि अछि मुदा, कोनो घटना कें जीवन–क्रम मे कोन उन्माद मे, कोन आवेग मे जीवलहुँ एकर लेखा जोखा सेहो अछि। किस्त किस्त मे हम अपन मानस दृष्टि, अपन भाव बोध कें व्यक्त केने छी– लकीरक फकीर जकाँ आत्मकथा कें रूप नहि देलौं, नहि तँ आत्मकथा कें पारम्परिक तटबंध मे बान्हने छी। भऽ सकैत छैक केओ एकरा उपन्यास बुझैथ, केओ एकटा भावुक नारीक संवेदनशील हृदय नगरीक दर्शन ई तँ पाठक जनैथ आय काल्हि जमाना एतेक तीव्र गति सँ भागि रहल छैक जे ककरो लेल ककरो फुरसत नहि छैक। रिस्ता नाताक संबंध टूटनाय–न्यूक्लियर परिवारक सर्जन–ताहु मे पटान नहि–हम देखलौं एकर एकटा बड़ पैघ कारण अछि सहिष्णुताक अभाव। खास कय आजुक लड़की मे, स्त्री मे सहवाक शक्ति नहि छैक। नीक बेजा किछ कहु तुरत जबाब दऽ देत। तखन हम चाहलौं अपन जीवन लिखवा लेल–यदि ओ पढ़ि सकैथ– बुझि सकैथ. .....

आत्मकथाक पांडुलिपि तैयार करैत काल कतेक तरहक मानसिक व्यवधान आयल आ तखन हम पंचानन जी कें मोन पाड़लौं। ओ सदिखन हमरा प्रेरित करैत रहलाह–इजोत बाँटैत रहलाह–

आदरणीया,

अहाँ स्वस्थ–प्रसन्न होएब करब, ई अटूट विश्वास एहि ओजह सँ अछि जे मैथिली एखन अपना आकांक्षा अहाँ लग अवशेष रखनहि अछि, मैथिली कँ कोनहुँ लेखिकाक 'आत्मकथा' सँ श्री सम्पन्न होएवाक पहिल अनुभूतिक प्रतीक्षा थिकैक आ मैथिल समाज कँ एहन नारी रत्नक मूल्यांकन करब बाँकी अछि जकर योगदान परिवार, समाज आ राष्ट्र लेल एकहि काल–खण्ड मे पारस्परिक महत्ता रखैत अछि। पछिला मास जमशेदपुरक सेमिनार मे बमुश्किल दस मिनटक गप भेल आ

ताहिसँ पहिने 1993 मे राँचीक मैथिली सम्मेलन मे भेंट भेल छल आ एकबेर पटनाक मिथिला मिहिर कार्यालय मे कुशलक्षेम धरि। मुदा बौद्धिक स्तर पर, अहाँक कथा-कविताक पाठकीय स्तर पर, अहाँक समाज सेवाक प्रत्यक्षदर्शीक स्तर पर हम कम सँ कम साढ़े तीन दशक सँ अधिके अवधि जुड़ल रहलहुँ अछि आगहुँ जुड़ल रही से इच्छा ते अछिये। 'मिहिर' अहाँकेँ कथा संसार मे प्रवेश करबाक अवसर देने छल। पछाति 'एकटा आकास' हमर पाठकीयता केँ संपुष्ट कयने रहय। ओना मिहिरक पाठीकीय मंच मे कैक हमर अभिमत अहाँक कथा प्रसंग छपल अछि से ने तँ 'कटिंग' अछि आ ने स्मरण। मुदा मोन अछि अगवे कथाक पात्रक संवेदनाक देखार होइत स्पर्श, अपन संस्कृति-परिवेशक सम्मानित करैत कथाकारक दृष्टि आ पछिला शताब्दीक सातम दशक धरि अपन कुंठा, वेदना आ शोषण केँ खूँट मे बन्हैत मानसिकता।

मोन पड़ैत अछि 1976 । कथा लेखिका गौरी मिश्रक सम्पादकत्व मे साहित्य अकादेमी सँ प्रकाशित कथा संग्रह पर उठल बबंडर आ मिहिरक 'विचार मंच' छल अखाड़ा। अहाँक कथा चयन केँ हमहूँ तार्किक निर्णय मानने रही।

हमरा 1965-70 ई.क सहरसा मोन पड़ैत अछि। जिला मुख्यालय रहितो एकदम गमैया वातावरण आ ताहि झांपल परिवेशक बीच सहरसा नगरपालिका आयुक्तक अहाँक दस वर्षीय समाज सेवा। आ, समाजक प्रति दायित्व पालनक व्यस्तमतम अवधिमे तँ अहाँ मैथिलीक कथा ओ कविताक मूलाधार केँ लेखिकाक स्तर पर बलिष्ठ बनौलहुँ। स्वराज्यक दू अढ़ाय दशकक उपरान्त जँ निष्पक्ष अनुशीलन होअय तँ कथा ओ काव्य दुनू विधा मे अहाँ छोड़ि क्यो नजरि नहि अवैत अछि। गौरी मिश्र, चित्रलेखा देवी, लीली रे आदि अगवे कथा लिखैत रहथि। जाहि नीरूजा रेणु केँ साहित्य अकादेमी पछाति पुरस्कृत कयलकन्हि तनिक तँ जन्मो नहि भेल छल। कखनहुँ शरदिन्दु चौधरी, सम्पादक समय-सालक कहब (26.03.07/दूरभाष) सटीक लगैछ जे अहाँक योगदानक तटस्थ मूल्यांकन लेल काव्य कृति 'विप्रलब्धा', 'भावांजलि', 'एकटा आकास' (कथा संग्रह) 'नागफाँस' (उपन्यास), 'यायावरी' (यात्रा वृतांत) 'स्मृति रेखा' (संस्मरण) क अतिरिक्त शीघ्र प्रकाश्य 'अर्थयुग', 'अनाम अनुभूति', 'रजनीगंधा', 'आ बान्ह टुटि गेलैक' अतिरिक्त कैक संग्रह मे स्थान पओने रचना, पत्रिका मे छिड़िआइल कथा कविता केँ सेहो सोझा पथार लगबय पड़तैक।

1974 मे अहाँक 'स्मृति-रेखा' (संस्मरण) पोथी बहराएल। हम मैथिलीक संस्मरण विधा मे ओहि काल खण्ड मे लेखिका लोकनिक पोथी तकैत छियन्हि, आर कोन-कोन कृति अछि? जेना कि पछिला खेप अहाँ कहलहुँ 'किस्त-किस्त मे' शीघ्र अहाँक आत्मकथा प्रकाशित होमय जा रहल अछि। एकर प्रकाशन मैथिली केँ नवीनतम उपलब्धि हैत। कोनहुँ लेखिकाक आत्मकथा पहिले-पहिले मैथिली देखि पाओत। अगिला खाढ़ी अहाँक संघर्ष, समर्पण आ दृष्टि सँ नव भूमिका स्थिर कऽ सकत।

1993 मे हमर प्रधान सम्पादकत्व मे हजारीबाग सँ पहिल टेवलायड मैथिली मासिक 'बागमती दोमोदर टाइम्स' प्रकाशित होमय लगल। दोसरहि अंक मे मैथिलीक महदेवी : शेफालिका वर्मा अग्रलेख छपल। मौखिक आ लिखित विरोध भेल की गलत छपल छल? हम मानैत छी महादेवी कोटिक गीतमयता अहाँक काव्य मे नहि अछि, बिम्ब आ प्रतीकक विशाल परिधि अहाँ नहि अर्जित

कऽ सकलहुँ मुदा महादेवी तँ संवेदनात्मकता, हृद्यविह्वलता आ स्पर्शजन्यता लेल प्रसिद्धि पओलनि। अहाँक काव्य संसार तँ इएह अनुभूतिजन्यता कैँ प्लावित कयने अछि।

मैथिली काव्य मंचक कवयित्रीक रूप मे अहाँ छोड़ि पर्याय के बनल? अपन प्रान्ते नहि, अन्यत्रहुँ अहींने मैथिलीक प्रति आकर्षण जगौलहुँ?

जतय धरि हमरा बूझल अछि, 'काउबेल्ट' क एहि पूर्वी भाग मे स्त्रिगणक सामान्य आयु 69 सँ 73 मानल गेल अछि। अपन जीवनक साढ़े छः दशक बीतैबतो मैथिली लेल अहाँक ऊर्जा, उत्साह आ निष्ठा देखि हमरा झुम्पा लाहिरी (''नेमसेकक - लेखिका) मोन पड़ैत छथि।

बंगला लेखिका तसलीमा नसरीनक हेवनि मे एक साक्षात्कार पढ़लहुँ, यूरोपीयन देशक नागरिकता एही कारणे नहि लेलीह जे अपन भाषा बजनिहार क्यों नहि भेटैत छलन्हि, आन भाषा मे लिखवाक अन्तरात्मा अनुमति नहि दैत छन्हि। अहूँ आइ सहरसा छोड़ि पटना-दिल्ली रहय लागल हुँ, भगवती अहाँ कैँ हिन्दीयो मे यशस्वी बनवाक अर्हता प्रदान कयने थिकीक मुदा अहाँ आइयो तसलीमा बनल छी जकर प्रमाण अछि, शीघ्र प्रकाश्य किस्त-किस्त मे।

मिथिला सभ दिन मीमांसक भूमि रहल अछि। एतुका साहित्येत्ता, बुद्धिजीवी आ पाठकक मनन-चिन्तन मध्य अहाँक चारि दशकक मैथिली सेवा स्थायी परिचित देतनि, साहित्यानुभूतिक नवीनता।

सादर।

**पंचानन मिश्र**

02.04.05.

हमरा आब अचरज होइत अछि-ओहि समय दिल्ली स्थायी रूप सँ बसवाक एक रत्ती नहि तँ आस छल आ नहि तँ सोचने छलौं। किन्तु, एखन पंचानन जीकें पढ़ैत छी तँ लगैत अछि शब्द ब्रह्म थीक।

पंचानन जीक आग्रह आ विचार सँ एकर प्रकाशनक भार शेखर प्रकाशन पर देल गेल, शरदिन्दु चौधरी स्वयं डेरा पर आबि 700 पन्नाक पांडुलिपि लऽ गेलाह। शरदिन्दुक उत्साह देखि हम बुझलौं जे कोनो काज हेवाक रहैत छैक तँ कोना अनुकूल बसात बहऽ लगैत छैक- कोना विधि दहिन भऽ जायत छथि। हमरो उत्साह बढ़ि गेल- तखन पांडुलिपिक संग ई पत्र-

आदरणीया

आत्मकथा पढ़लहुँ। नीके नहि, कतहु अत्यन्त मार्मिक ह्रदयस्पर्शी आ कतहु-कतहु तँ अन्यत्र नहि भेटल शब्दावलीक विलक्षण प्रयोग। बहुत मोन लागल। प्रसंग सभ रोचक, एक दोसराक संग जोड़ैत अगाँ अविरल बढ़ैत। मात्र खटकैत अछि भाषा, जे अहाँ स्वयं स्वीकार करैत छी जे मैथिली हम बहुत प्रयत्न सँ सिखलहुँ किछु 'शब्द' कैँ बदलबाक आवश्यकता छैक आ किछु अशुद्धि कें दूर करबाक छैक। आ कोनो कठिन नहि छैक। हमरासँ कोनो प्रसंग नहि हटाओल गेल। कारण, कतहु ई नहि बुझना गेल जे लिखबाक बहन्ने पाठक पर धौंस झाड़ि रहल होइऐक। अहाँक भोगल यथार्थक

अभिव्यक्ति कें कपचबाक धृष्टता करबामे असमर्थ पाबि रहल छी, से एहि कारणे जे 'पापाक बताहिया बेटी' क असाधारण सम्प्रेषणीयता कँ बाधित-खंडित करबा योग्य हम असाधारण कलमक पुजारी नहि छी तँ। ओतँ निवेदन जे जेना ब्रह्मा बनि अपने एकर सृजन कयलिऐक अछि तहिना विश्वकर्मा बनि एकरा सुन्दर बनयबा लेल अपने स्वयं हाथ चलबियौ। हँ, शुद्धताक दृष्टिसँ हम एहि पर काज करबा लेल सतत् तत्पर भेटब।

**शरदिंदु चौधरी**
शेखर प्रकाशन

*एहि पोथीक प्रकाशनक क्रम में शरदिन्दु हमर परिवारक अभिन्न अंग बनि गेल छलाह। हम दूनू गोटे कखनो काल पारिवारिक दुख सुखक गप करैत रहैत छलौं। विमोचन समारोह मे ओ कतेक स्नेह उत्साह सँ मंच पर हमर परिवारक बखान करैत रहलाह संगे हमरा कहलनि-अहाँ एतेक भीड़ कोनो समारोह मे देखने छलियैक आ ताहि मे विमोचन समारोह मे? आब अहाँ उदास नहि रहियौक-हँसइत रहु- हमर उदासी सँ शरदिन्दु उदास भऽ जाइत छलाह ई अनुभूत हम केने छलौं।*

*जखन नचिकेताक विचार किस्त किस्त पर आयल हम अभिभूत भऽ उठलौं-सरिपों कोनो रचना कें बुझवा लेल सहसंवेद्य हृदय चाही.......*

माननीया शेफालिका जी,

नमस्ते!

*''तेरी हर चाप से जलते हैं खयालों में चिराग*
*जब भी तू आए जागता हुआ जादू छाए*
*तूझको छू लूँ तो ऐ जाने तमन्ना मुझको*
*देर तक अपनी बदन से तेरी खूशबू आए-''*

ई ओहि शायरीक अन्तिम अंश थीक जकर प्रशंसा सँ अहाँ किस्त किस्त जीवन प्रारंभ केने छी।

सरिपहुँ, अहाँक प्रत्येक कृतिक आहट सँ पाठकगण भाव-विभोर भऽ जायत अछि आऽ जखन ओहि कृतिके (पढ़ि) लैत अछि तँ बहुत देर धरि ओ चिन्तन मनन करवा लेल बाध्य भऽ जायत अछि, सत्य-सरल-सुबोध भाषा में लिखल गेल अपनेक एहि आत्मकथा 'किस्त किस्त जीवनक' इएह विशेषता थीक।

**उदय नारायण सिंह 'नाचिकेता'**
निदेशक
केंद्रीय भाषा संस्थान, भारत सरकार

तखन मोन पड़ि गेल ओहि गीतक प्रथमांश–जाहि सँ हम किस्त किस्त प्रारम्भ केने छी–

*''ज़िन्दगी में तो सभी प्यार किया करते हैं,*
*मैं तो मरकर भी मेरी जान तुझे चाहूँगा।''*

*आ पत्रक हुजूम सँ साहित्यकार शंकर दयाल जीक पत्र मुस्कुरा उठैत अछि–*

प्रिय शेफालिका वर्मा जी,

आपने जिस प्रेम और अपनापन के साथ वर्ष की शुभकामनाएँ भेजी हैं, उनका जबाब शब्दों में दे पाना कठिन है। मैं ऐसे कार्डों को संभालकर साल भर अपने सामने रखता हूँ और इसी रूप में अपनों को याद करता हूँ।

आपके साथ मेरा जो अनौपचारिक संबंध है, उसका निर्वाह इसी भांति हो, यही मेरी कामना है। आपकी कविताओं के दौर से गुजरते हुए ऐसा लगता है मानो अक्षरों के भी हाथ पाँव होते हैं-वे कभी छटपटाते कभी दौड़ते हैं, कभी भाग खड़े होते पर पीछा नहीं छोड़ते... आपकी कविताओं से गुजरते मुझे 'आँसू' ग्रंथि तथा 'मैं नीर भरी दुख की बदरी' की याद आ जाती है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने साहित्य की परिभाषा साधारणीकरण के रूप में की है यानी पाठक रचना के साथ-साथ अपने को भी सहभागी बना ले-तब किसी रचना की सफलता होती है। शेफालिका जी, आपकी कविताओं को पढ़ते हुए मेरी भी स्थिति कई बार ऐसी ही हुई है।

निश्चय ही नया साल आपके लिए नई अनुभूतियाँ और विश्वास लेकर आए-यही मेरी संकल्पना है।

आपका
**शंकर दयाल सिंह**
(एम.पी.)
कामता सदन, बोरिंग रोड, पटना
दिनांक 17 जुलाई, 89

भीम भाईक फोन आयल आँखि नोरा गेल छल। एक समय छल कतेक अंतरंगता हमरा सभ मे छल-हम सभ एक दोसर कें ह्रदय सँ चीन्हैत छलहुँ-आ पत्र कँ पढ़ितहि टेप मे गाओल तरुणाक संग हिनकर गीत मोन पड़ि गेल 'हर पल तुझे मैं याद किया करता हूँ तुझे भूला कर मैं एक पल कभी जीया तो नहीं।' विमोचनक बाद लगले चन्द्रेश कें फोन आयल-हम किस्त किस्त पढ़लौं। एतेक अपूर्व-एतेक भावना एतेक दर्द अहाँ मे कतऽ सँ आयल हमरा अहाँ सँ ईर्ष्या होयत अछि। हम किएक नहि ओना लिख पबैत छी..... बजैत-बजैत भावावेश सँ हुनकर गर बाझि गोल छलैक-आ झट दऽ फोन राखि देलनि-हमरा जेना सौंसे संसारक सम्पदा भेटि गेल-हुनक आँखिक नोर जेना हमर आँख मे आबि गेल। एहिना हमर गुरुदेव डॉ. अनंत लाल चौधरी, अवकाश प्राप्त प्रोफेसर पटना वि.वि. क फोन आयल- शेफालिका! अहाँक किस्त किस्त पढ़लौं। कतेक व्यथा अहाँक पाती-पाती मे भरल

अछि। विद्यार्थी जीवन में अहाँ एतवे संवेदनशील छलौं जेना हमरा मोन पड़ैत अछि- अहाँक व्यक्तित्व आ कृतित्व मे हमरा कोनो अन्तर नहि देखा पड़ैत अछि-कतेक एकरूपता! पति पत्नीक प्रेम, विश्वास, आपसी सामंजस्य एकर अभूतपूर्व चित्रण केने छी। स्त्रीक प्रत्येक रूपक वर्णन-कोनो एकटा लड़की परिस्थितिक अनुसार अपना कें समर्पित कऽ दैत छैक, कोना सभकें खुश राखवाक प्रयास करैत एहि ऊँचाई पर पहुँचल- आजुक पीढ़ी लेल प्रेरणादायी अछि प्रत्येक परिवार मे रामायण-गीता जकाँ एहि पुस्तक कें राखवाक चाही- जाहि सँ नव पीढ़ी कँ आलोक भेटय-कतेक ठाम हमर आँखि भरि आयल-अहाँकँ फेर बधाई अनेको आशीर्वाद।

दिल्ली मे मंजर आलमक फोन दरभंगा सँ आयल हम एकदम चिहुँकि उठलौं- विहुँसि उठलौं- अहाँक किस्त किस्त पढ़लौं- मैडम, एतेक नीक लागल जे रहल नहि गेल। अपने कँ बधाई देवा लेल लगले फोन कय देलौं-

विमोचन उपरांत इंगलैंड जेवा काल दिल्ली मे राजीव लग छलौं कि भीम भाईक पत्र राजीवक पता सँ आयल। आ दरभंगाक शुभ्रता, शुचिता मोन पड़ि गेल-

बान्धवी शेफालिका जी,

सोझाँमे 'किस्त-किस्त जीवन' अछि। एहन सुन्दर पोथी लेल हार्दिक बधाइ लिया।

मुदा शेफालिकाजी, 'किस्त-किस्त जीवन' हमारा अहाँक आत्मकथा कहाँ लागल? हमरा तँ अहाँक 'आत्माक कथा' बुझि पड़ल। सोझे आत्मासँ बहरायल उद्‌गार। आत्मा जेना निर्बन्ध, निर्लेप, निस्सीम होइछ आ ओकर तार सोझे परमात्मासँ जुड़ल रहैछ, तहिना अहाँक ई आत्माक कथा हमरा उन्मुक्त, निश्छल, निर्मल लागल अछि आ एकरो तार सोझे परमात्मा (ललन बाबू) सँ जुड़ल लगैत अछि। आत्माक अदृश्य अनुराग-तागसँ जुड़ल अहाँक जीबट भरल जीवनक ई सम्मोहक सतरंगी गुड्डी मैथिली साहित्याकाशमे अगराइत-उधिआइत अपन अपरुप छटा छिड़या रहल अछि, छिड़यबैत रहत।

अहाँ भनहिँ अपन जीवनकँ किस्त-किस्तमे कऽकऽ तकर विस्तृत फिरिस्त तैयार कयलहुँ अछि, मुदा अहाँक समस्त व्यस्त जीवन, हमरा जनैत, ओहि अलमस्त प्रशस्त स्वर्गस्थ जीवनधन ललन बाबूक तिल-तिल नूतन पुण्यस्मृतिमे विगलित भेल चल गेल अछि।

भवदीय

**भीमनाथ झा**

30.05.08

*देख रहा हूँ इस दुनिया को आपकी मुहब्बत है,*
*आज मेरी दोनों आँखें आपकी इनायत है, आपकी इनायत है।*

*–ललन, 17.04.92*

*मोन पड़ि जायत अछि दिनेश्वर लाल आनन्दक उद्गार.....*

.....मिलनक मधुरतम क्षण में विरह वेदनाक अनुभव करैवाली, प्रेमक चरम सफलताक समय मे असफल प्रेमक भावना मे जीवैवाली, अनवरत मिलयामिनीक अनुभूतिमे डुबल विप्रलब्धाक सर्जन करैवाली कवयित्री श्रीमती शेफालिका वर्मा स्वयं अपनहि मे विरोधाभासक प्रतिमूर्ति छथि। हिनक प्रेमी आ पति श्री ललन कुमार वर्मा (सहरसाक प्रमुख सुविख्यात अधिवक्ता आ हमरपत्नीक भ्राता) हिनक समस्त काव्यक प्रेरणा श्रोत आ हिनका लेल साक्षात् काव्य स्वरूप छथि। तैं प्रेमक चरम (सौभाग्यपूर्ण) परिणति विवाहक बाद जखन अधिकांश कविक कवित्व नूल तेल लकड़ीए मे समाप्त भए जाइत अछि ताहिठाम हिनक काव्य सर्जनाक प्रारम्भे चिरइप्सित विवाहक पश्चात भेलन्हि अछि तैं महाकवि आरसी बाबू कें भनहि आश्चर्य लागैन्ह जे ''गृहस्थीक जाहि मरूभूमि मे कतेक कवि कवयित्रीक रस स्रोत सूखि गेल ताहि प्रपंच मे हिनक कवि हृदय कोना मात्र जीविते नहि सरसता एवं वचन विदग्धताक प्रचार प्रसार कऽ रहल अछि...।'' मुदा, यथार्थ मे कोनो आश्चर्यक गप्प नहि थीक। ओना, सुविख्यात एवं सिद्धस्त प्रौढ़ लेखक स्व. ललितेश्वर मल्लिकक भतीजी एवं विहारक सुप्रसिद्ध अधिवक्ता एवं मैथिली तथा हिन्दीक प्रौढ़ लेखक श्री ब्रजेश्वर मल्लिक क पुत्री एहि कवयित्री के लेखन कला उत्तराधिकारे मे भेटल छन्हि। दैनिक जीवन मे कवयित्री अपना पति संग तन मन प्राण सँ तेहन एकाकार छथि जे हिनक काव्यक मर्म हिनक सफल दाम्पत्य जीवने मे समाहित छन्हि।

भाषाक संबंध मे ई ज्ञापित कए देब आवश्यक जे कवयित्री जानि बुझि कए एहन कतेक शब्दक प्रयोग कएने छथि जे एहि क्षेत्र मे बाजब प्रचलित छैक मुदा मैथिली साहित्य मे जकर प्रयोग आय धरि नहि होइत छैक जेना 'यादि हारि प्यार' किछ गोटा कें कठाइन भने लगनि मुदा ई एहि क्षेत्रक भाषाक अपन रंग थीक।

**दिनेश्वर लाल 'आनंद'**
साहित्यकार, पटना

शेफालिका जी,

आपकी आत्मकथा मैंने पढ़ी.....

जिंदगी बीत गई–जीने की तैयारी में। आँचल में दूध, आँखों में पानी और जिह्वा पर बतरस का शहद लिए मिथिलांचल की यह स्त्री किश्तों में जीवन जीती है और जो कथा कहते चलती है जीवन की– वह भी किश्तों में ही पूरी होती है।

भूमण्डलीकरण, कहिए भू+मण्डी+करण, के बाद के इन धड़फड़िया दिनों का बीज-शब्द है– 'किश्त'! 'ऋण कृत्वा धृतं पीवेत'– चार्वाक का यह दर्शन घर घर में चरितार्थ है। प्रेमचंद और यशपाल के समय ऋण की किश्तें शर्मिन्दगी और त्रासदी का उत्स थी। अब 'किश्तें' फक्र का विषय है! लोग फक्र से कहते हैं–इतनी किश्तें गईं!...किंतु किश्तों और पालियों में जिया जाने वाला मध्यवर्गीय, स्त्री-जीवन इतना आसान नहीं होता! हँसी नए जमाने का घूँघट है– हर मुस्कान के पीछे

लजाई बैठी इतनी ढेर-सी छोटी-बड़ी तकलीफें होती हैं कि उनका व्योरा लिखने में 'धरती सब कागद कारौं/लेखनी सब बनराई की स्थिति घिर आती है! पूरी धरती को कागज बना लें, समस्त वनों की लकड़ी से कलम गढ़ें तो भी 'हरि-गुन' की तरह अगाध और अनंत 'स्त्री जीवन' अपनी पूरी मार्मिकता में लिखा नहीं जा सकता।

शेफालिकाजी को अपने कर्मठ प्रज्ञावान सहयोगी और हिन्दू कॉलेज के दिनों के अपने प्रिय साथी राजीव की 'मिष्टी मुखी' माँ के रूप में तो वर्षों से पहचानती थी, किंतु एक लेखिका के रूप में उनकी भास्वर पहचान कराई मशहूर अमरीकी भाषाविद् और अनुवादक, आर्लीन ज़ाइद ने। 'पोंग्विन सीरीज ऑफ इंडियन विमेन्स पोएट्री' के दूसरे खण्ड के अनुवाद के सिलसिले में वे भारत आई थीं। मेरे घर अचानक ही आईं, उस समय मेरे भण्डार में उन्हें खिलाने-लायक कुछ और था नहीं, मध्यवर्गीय गृहस्थी में सहज संकोच से मैंने उनके लिए ताल-मखाना भूना जो पिछले हफ्ते ही माँ ने मुजफ्फरपुर से भेजे थे। मखाने देखते ही उनके मन में शेफालिकाजी की याद ताजा हो गई। उन्होंने कहा- 'दिस इज़ वॉट फिगर्स इन शेफालिकाज़ पोएम।' फिर उन्होंने उस कविता का अंग्रेज़ी अनुवाद सुनाया जो उन्हांने किया था और मेरे मन में लड्डू और मखाने एक साथ ही लगे फूटने कि इतनी बढ़िया कविता की इस रचयिता का नैतिक भूगोल मेरा अपना नैतिक भूगोल है, मेरी प्रतिवेशिनी होगी यह, मेरे घर मे पास ही कहीं इसका घर होगा!

...वर्षों बाद जब बम्बई ने 'स्पैरो' के तत्वावधान में विभिन्न भाषाओं के स्त्री-लेखकों को बुम्बई बुलाया और काशिद के रिसोर्ट में हम साथ ठहरे तब जाकर पता चला कि यह शेफालिकाजी तो और कोई नहीं, अपने राजीव की माँ है। चकित रह गई!

और अभी जब, 'किस्त-किस्त जीवन' पढ़कर ख़त्म किया-तब से यही सोचती बैठी हूँ कि यदि राजीव के पिता की तरह निश्छल धीरोदात्तता सब पुरुषों में होती, सब पुरुष इसी तरह के प्रेमी होते तब तो स्त्रीवाद का भट्ठा ही बैठ जाता! स्त्री आंदोलन की ज़रूरत ही कहाँ होती। सबसे दुर्भाग्य का विषय है कि हमारे ज्यादातर पुरुष अतिवादी अधिनायक, प्रजातांत्रिक सम्यक् दृष्टि का उनमें विकास ही नहीं हो पाया।

छोटी-छोटी मार्मिक घटनाओं और चुटीले संवादों से स्मृतियों का जो प्रतिसंसार शेफालिकाजी ने इस सहज-सरस आत्मकथा में गढ़ा है- उससे गाँवों-कस्बों की नई औरत का तादात्म्य गहरा बना है। इसी तदात्म्य की ज़रूरत हमें है- बहनापे के विकास का सूत्र यही है। फ्रांसीसी क्रांति ने बराबरी स्वतंत्रता और भाईचारे की बात की थी। स्त्री आंदोलन 'भाईचारे का विकास' 'बहनापे' में देखता है। स्त्री- दृष्टि मोनालिसा नहीं। वर्ग-वर्ण-नस्ल-सम्प्रदाय-सापेक्ष कई समस्याएँ विशिष्ट है लेकिन कुछ समस्याएँ तो साझा हैं जिसके आधार पर विश्वभर की स्त्रियाँ बहने हैं और उनकी भाषा का छन्द ही अलग है।

विषम परिस्थितियों में भी अपनी राह बढ़े जाने की जो मलंग विनय स्त्री-भाषा के साक्षी है, उसका अद्‌भुत उदाहरण है-किस्त-किस्त जीवन!...

**डॉ. अनामिका**
अंग्रेज़ी विभाग
सत्यवती महा. (सांध्य)
दिल्ली विश्वविद्यालय

**बहन के नाम भाई का स्नेह-पत्र-**

बहन की एक 'प्रतीक्षा' देख कादम्बिनी में भाई का मन उल्लसित सा हुआ
मन के कोने से एक गूंज सी उठी कोलाहल और कुछ शोर सा हुआ ।
व्यथित हृदय, भोली सी बहन बनाने का
भाई का मन आकुल और तरस सा हुआ
इस अभाग्य का जीवन हो सफल तुझ जैसी बहन को पाकर
मुझे सौभाग्य कहाँ हमजोली बहन का जो कुछ भी है बाँट लेंगे
एक दूजे का
प्यार, सुख-दुःख तुझ जैसी बहन का पा
मोती तो खूब चुनते हैं खरे वही पाते जो पारखी हैं।
शोकाकुल तो, मूक, दीन ही होते
बुद्धिजीवि तो शोकाकुल होने का
समय ही कहाँ पाते उच्छवासी क्यों कोई हो,
गीत और कविता की सिद्धि।
इस भाई का नाम तापस कुमार दास है,
जो बंगला भाषी है। हिन्दी साहित्य की
एक झलक तक ही पहुँचा
एक भाई तुल्य अजनबी बहन के
जवाब की अपेक्षा में

There is a silver ship, there is a golden ship, there is no ship like Friend ship.

I am Tapas Kumar Das of 20th student of B.Sc. (joining year) My hobbies are great hobbies in my own sens. These are as following :- Photography, Social reforming Reading Hindi, English and Bengali literature, Driving Car Motor cycle) fast, I am a Hindi departmental member of Radio Japan. So many programme has been broadcast through radio Japan.

It's my best and with best compliments to you my sister.

Cordial brother
**Tapas Kumar Das**
Das Estate
Lakanpur, Bhagalpur.
'79

पूज्या दीदी,

....इतने दिनों बाद जब थक गया प्रतीक्षा में कि अब आयेगा पत्र आपका कि अब आयेगा तब लिखने लगा हूँ आपको तंग करने के बहाने, वैसे एक छोटा भाई तंग क्या कर सकता है- हाँ अबोध स्नेह का स्पर्श ही दे सकता है।

...क्या कर रही हैं- क्या लिख रही हैं? क्या सोच रही हैं- इन सब स्थितियों को जन्म दीजिये कम से कम हमारे बगल में बैठे रविकांत नीरज को बताइये न! तभी न आपकी प्रेरणाओं पर चल सकूँगा अविराम लेखनीय दायित्व को लिए साहिय-भू पर। मुझे विश्वास है कि आप पत्र अवश्य देंगी।....

शुभकामनाओं के साथ-

**प्रसूनलतांत**
भागलपुर
'81

स्नेहमयी दीदी!

सादर चरण-स्पर्श।

अहाँक भगलपुर प्रवास जेना हमर सभक हृदय कें एकात्म कर‌ऽ लेल भेल छल। कतेक दिन धरि हम सभ विश्वविद्यालय परिसर मे मिलैत रहलौं- कतेक गोष्ठी मे एक दोसरा के बुझैत रहलौं। किन्तु, दीदी हम नहि देखि सकैत छी अहाँक उदास चेहरा। अपन हँसीक पाछा नुका लैत छलौं अपन उदासी दीदी, किन्तु हमर दृष्टि सँ नहि नुका पबैत छलौं। अहाँक अस्वस्थता सेहो नहि सहन कऽ पबैत छी। दूनू चीज हमरा मोन पड़ैत अछि तँ हम व्याकुल भऽ जाइत छी कोना हमर दीदी फूल जकाँ सदिखन विहुँसैत रहतीह। कोनो बीमारी हमर दीदी के स्पर्श नहि करैक। सभ सँ पहिने दीदी अहाँ अपन स्वास्थ्यक ख्याल राखु। मैथिली साहित्य अहाँ दिसि टकटकी लगौने अछि..............

अहींक भाई
**रविकान्त नीरज**
भगलपुर, '81

*भागलपुर सँ एम.ए. क परीक्षा देवाक कारण हम रविकांत, प्रसून, ध्रुव नारायण, इतिहासकार राधाकृष्ण चौधरी सभक हृदय मे निवास करऽ लागल छलौं। प्रसून लतांत आ रविकांत नीरजक कतेको पत्र हमरा भेटैत रहैत छल–*

आदरणीया मामी जी,

प्रणाम।

पत्र और रचना मिली सम्पर्कों को आपने बड़ी तेजी से रिश्ते का रूप दे दिया। साहित्यिक बंधुत्व के अलावा मामी का यह स्नेह मिल गया जो अबतक मुझे मामियों से मिलता रहा है।

आपकी दोनों रचनायें स्तर की है 'प्रीति की कामायिनी' और 'चश्मे के पानी पर उतर आयी बीमार धूप' का प्रयोग बड़ा अच्छा लगा। अच्छी रचनाओं के लिये पत्रिका के सम्पादक के हैसियत से धन्यवाद दे रहा हूँ। हम रचनाओं के संकलन में व्यस्त हैं, तीन माह की सामग्री होते ही प्रकाशन प्रारंभ कर देंगे जैसे कि आपके पैड से मालूम हुआ, इतना व्यस्त जीवन जीतें हुए भी आपने हमारे लिये समय निकाला इसके लिए हमारा 'विभव' परिवार आभारी है।

छपरे की एक और संस्था नवयुवक परिषद है जो अपने में युवा शक्तियों को समाहित किये हुए समाजिक चेतना को जागरूक करने में सक्रिय है। उसी के तत्वावधान में हम एक विशाल आयोजन करने जा रहे है उसमें एक कार्यक्रम कवि सम्मेलन का भी है यह संभवत: अक्टूबर में आयोजित होगा। इसे आप पूर्व निमंत्रण समझे समय पर हम आपको सादर निमंत्रित करेंगे आशा है आप अवश्य आयेगी।

आपका

**ओम प्रकाश**

भगवान बाज़ार, छपरा

.................................................................................................

**''जूड़ शीतल''**

*शेफालिका जी,*

*''मिथिला नववर्षक शुभकामना''*

*मिथिला जन विकास परिषद*

*–नवेन्दु कु. झा*

*पटना*

.................................................................................................

ॐ

**प्रशस्ति प्रमोद**

मैथिली महाकवयित्री काव्य विनोदिनी डॉक्टर शेफालिका वर्मा जीक कोमल कर कमल मे सादर–

कलित काव्य विनोदिनी डाक्टर सुदृढ़ शेफालिके/

मैथिली सर ''महादेवी'' सुभद्रा सुमरालिके/मनोरम मुदमूर्ति मानसरोवरक मृदुभाषिके/करूण रस सँ सिक्त शीतल भावनाक प्रवाहिके/कवित कानन कोकिले ''किंकर'' कविक कलकण्ठिके/मधुरहास्य विलासिनी हृतहारिणी मनमोदिके।

**बलदेवलाल कुलकिंकर**

झझिहट, जनकपुर रोड, 22/1/79

हमर छोट भाई शरदक दोस्त छथि प्रदीप सिन्हा जे एखन आइपीएस आफीसर छथि। शरदक कारण ओ हमरा अपन सहोदर बहीन सँ बढ़ि कें मानैत छल। ओकर समस्त परिवार हमरा लेल बेहाल रहैत छल– प्रदीप, अरुण, नीलम आ हुनक माँ जिनका हम चाची कहैत छलौं– ह्दयक अटूट रिस्ता बन्हि गेल छल ओहि परिवार सँ– तँ हुनकर सभक सिनेह–सिक्त पाती.....

मेरी प्यारी रजनी,

तुम्हें असंख्य आशीर्वाद, तथा मधुर स्नेह !

तुम्हारी कितनी ही चिट्टियाँ मिलती रही परन्तु मैं तुम्हें उत्तर नहीं दे सकी इसका मतलब तुम्हें भूल जाना कदापि नहीं हुआ। अपनी परिशानी भी मैं तुम्हें लिखकर बोर करना नहीं चाहती। फोन पर भी तुम से दो बातें नहीं कर पायी कि राजन ने झट फोन ले लिया। तुम्हारी तबीयत बहुत खराब हो गई थी यह जानकर हृदय कितना दु:खी और चिन्तित हो गया मैं तुम्हें शब्दों में लिख कभी समझा नहीं सकती। अपना ख्याल करो रजनी, अभी भी समय है, वक्त है समय खो जाने पर तुम स्वयं को भी खो बैठोगी। तुम्हारी याद मुझे बहुत आती है। नारी जीवन की गाथा कथा मैं तुमसे अधिक जान सकूँगी? नारी तेरी यही कहानी अंचल में है दूध आँखों में पानी किसकी लिखी कविता है याद है न?

राजू शरत से मिलने गया था। उसने आकर बताया कि शरत की तबीयत बहुत खराब थी, अब ठीक है। मैं भी उसे देखने जाऊँगी। राजू ने यह भी बताया कि रजनी दीदी 12 को आ रही है यह जानकर मुझे भी बड़ी खुशी हुई परन्तु फिर फोन पर बात करने के बाद पता चला कि तुम नहीं आ रही हो। रजनी मेरी अच्छी रजनी, मेरी चिट्ठी तुम्हें कभी समय से शायद नही मिल सकेगी। तुम्हारी चाची बहुत पापी हैं, बदकिस्मत है कभी उन्हें चैन की रोटी नहीं मिली, पता नही कितनों का कर्ज मैंने ही उठाना पड़ा है। गर्मी सीमा पर है प्राण तो नहीं निकलता, परन्तु सुबह से बारह बजे

रात्रि इस घर में रहना पड़ता है। ..... मैं तुम्हें भूल न सकी रजनी, तुम्हारा प्यार भरा हृदय मुझे बहुत भा गया न जाने क्यों? जिसके हृदय में प्यार नहीं है वह मनुष्य मनुष्य कहलाने योग्य नहीं–

तुम्हारी
**चाची**
सिन्हा भवन,
एक्जीबीशन रोड, पटना
2.5.'74.

चाचीक मृत्यु असमय भऽ गेल मुदा, हुनक पत्र सभ समय असमय हमरा झकझोरि जायत अछि–

पूज्यनीया दीदी,

प्रणाम।

आपके जाने के दूसरे दिन सुबह मैं आपको ये पत्र भेज रहा हूँ। दीदी आपके जाने के बाद मेरी आँखों से भी दो बूंद आँसू निकल पड़े। मुझे बड़ा दुःख हुआ। मिथलेश को भी बड़ा दुःख हुआ। अपना एक फोटो भेज दिजीयेगा। भूलियेगा मत दीदी। आप अपनी तबीयत का ख्याल रखीयेगा। फोटो जल्द भेज दिजीयेगा। नीलम ठीक है। उसे भी आपके जाने का बड़ा दुख पहुँचा। बच्चे को प्यार तथा जीजा जी को मेरा प्रणाम कह दिजीएगा। पत्रोतर शीघ्र देंगी।

आपका
**अरूण**
पटना, 16.8.'74

प्रिय दीदी,

प्रणाम,

.....आप उधर जा रही थी इधर हम ठगे से खड़े रह गए वह लौह उपकरण हमारी दीदी को हमसे दूर कर विजेता दैत्य की भाँति लेकर भाग रहा था और हम विवश आँखों में आँसू लिए खड़े देखते रह गए........ दीदी, क्या रक्त का संबंध ही सब कुछ होता है? हमने तो अपनी दीदी को भगवान के वरदान की तरह अपनाया है.....

आपका ही भाई
**प्रदीप**
17.08.'74

आदरणीया दीदी,

सादर चरण - स्पर्श।

.......... आपको तो न जाने सहरसा में जाते ही क्या हो जाता है कि नीलम सिन्हा दिमाग से निकल जाती है। चिट्‌ठी लिखना और फोटो भेजने की बात ही दूर है। जीजा जी कैसे हैं? मैं समझती हूँ, वो पहले से अच्छे ही होंगे। आप कैसी है? आप अपने दिये गये वचन को निभाना सीखिए, देवी जी हाँ Promise! भेज देंगे - जरूर। सहरसा पहुँचते ही सारे वचन हवा हो गया है ना? माँ को आपसे शिकायत है कि आप ना वहाँ हाल देती है, और न यहाँ का लेती हैं। अत: आपसे निवेदन है महारानी जी, कि अब चार लाइन भी खत लिखकर डाल दिया करें, ले लिया करें।

समझी? फुर्सत यदि न हो तो फुर्सत निकाल कर आइयें।.......

आपकी बहन

**नीलम**

एहिना बीरपुर डारमेट्री सँ हमरा बड़ प्रेम छल। जखन वर्माजी लोक अभियोजक (सहरसा सुपौल मधेपुरा जिला) छलैथ। तँ सर्किट कोर्ट मे बराबर बीरपुर जाइत छलाह। ललित बाबूक बनाओल ओ डारमेट्री बड़ कलात्मक छल- हमरा ओहि डारमेट्री सँ प्यार भऽ गेल छल। ओकर आकर्षण मे हम हिनक संग लागि जाइत छलौं-तँ डारमेट्री लऽ कऽ सभ हमरा किचारइत छल। तखनुक डिस्ट्रिक्ट जज- शरण साहबक बेटा अपन पत्रों में एहि बातक चर्च करैत छल.... हाँ तो चाची आपकी तबीयत कैसी है? एक बार मन कर रहा है कि आपसे कहूँ कि बीरपुर बहुत ही थर्ड क्लास जगह है आपको चिढ़ाने में भी परमानन्द की अनुभूति Public महसूस करती थी। क्यों चाची मेरे पत्र से आप बोर हो रही हैं क्या? ठीक है मैं बन्द कर रहा हूँ।.....

आपका

**अखिलेश शरण**

मुंगेर '82

सुश्री वर्मा जी,

'चमचे' की शुद्ध स्टेनलैस स्टील भरा प्रणाम ।

आशा है सपरिवार सानन्द सकुशल लडडू सी लुढ़क रहीं होगी ।

आपकी एक रचना माह मई 78 कादम्बिनी के अंक में प्रकाशित हुई । पढ़ने का अवसर मिला हार्दिक प्रसन्नता हुई । आपने जिस परिप्रेक्ष्य में रचना लिखी है वास्तव में ही सराहनीय है। भविष्य में कोई अन्य रचनायें प्रकाशित हों तो अवश्य सूचित करें ।

*लोकतंत्र में मँहगाई के कदम सदा आगे चलते।*
*भ्रष्ट उल्लुओं के पट्‌ठे ही फूल रहे फलते-फलते।।*

*मरने को भी मिट्टी का अब तेल नहीं जिस शासन में।*
*तन के दीप जलाते लेकिन मन के दीप नहीं जलते।।*

वैसे मुझे नहीं लिखना चाहिये परन्तु मैं भी अवगत करा दूँ कि मैं भी अखिल भारतीय स्तर के हास्य–व्यंग कवि सम्मेलनों का मंचीय कवि हूँ । दिल्ली बम्बई, उ॰प्र॰, म॰प्र॰, राजस्थान, बिहार, पंजाब प्रान्तों के क्षेत्रों में काव्य पाठ करके अबतक लोगों की चमचागीरी कर चुका हूँ । आकाशवाणी के विभिन्न केंद्रों से भी रचनायें प्रसारित होती रहती है। पत्र–पत्रिकाओं में भी रचनायें प्रकाशित होती रहती है।

शेष शुभ सदैव कृपा पत्र द्वारा सद्भाव बनाय रहें। आशा है आप भी लोकतंत्र का बोझा ढो रहे होंगे। हमारी आत्मा को शान्ति प्रदान करने के लिए अपने हृदयोद्गार भरा एटमबम पत्र द्वारा हमारे पास तक अवश्य धमकायेंगे।

**चमचा हाथरसी**
विनोद सिर्फ अपका ही
हाथरस (उ.प्र.) 26.5.'78

शेफालिका जी,

नमस्कार ।

आपका पत्र मिला, कल ही । धन्यवाद

मिथिल मिहिर में प्रकाशित आपकी सभी कहानियाँ पढ़ चुका हूँ । उपन्यास भी पढ़ चुका हूँ । सोना माटि, 'वैदेही' आखर 'मिथिला दूत' अग्नि पत्र एवं चांगुर मुझे कहीं नहीं उपलब्ध हो रहा है।

एक बात । मैं आपके पास कुछ प्रश्न भेज रहा हूँ जो अलग कागज पर संलग्न है। कृप्या इसका उत्तर भेज दें । इसे एक भेट वार्त्ता ही समझ सकती हैं। इसका उल्लेख मुझे शोध में कहानी का परिचय के समय देना पड़ेंगा ।

हाँ! मैं भागलपुर जा रहा हूँ और कोइ 15/20 रोज रहूँगा कारण पी॰एच॰डी॰ हेतु मैं भागलपुर वि॰वि॰ में पंजीकृत हूँ । गाईड भी वहीं रहते है और मेरे अग्रज भी अत: अग्रज के पास जा रहा हूँ तो देरी तो लौटने में होगी ही । अत: कृप्या मेरे प्रश्नों का उत्तर भागलपुर ही भेजें ।

**शेखर प्रसाद**
C/o डॉ. सी एस लाल
फोरेनसिंक मेडीकल कॉलेज,
भागलपुर
20.9.'74

*ई पत्र हमरा एकटा मानसिक उलझन मे दऽ देने छल। एहि पत्रक संग संलग्न प्रश्नपत्र मे एकटा प्रश्न छल- ''आपकी तुलना लोग महादेवी वर्मा से करते हैं। महादेवी वर्मा के जीवन से हम सभी परिचित हैं! फिर आप क्या कहती हैं?''*

*कहियो काल हम अपन बाल बच्चा, परिवारक संग संगत नहि वैसा पाबैत छी। कहबा लेल चाहैत छी किछ, कहि दैत छी किछ-हमर कथनक शल्य क्रिया होभऽ लगैत अछि। आ ई तँ कोनो अनचीन्हार शेखर प्रसाद छलाह। हमर आँखि नोरा गेल छल उत्तर सोचैत, खोजैत। हमरा असहज देखि वर्मा जी सहज कऽ देलनि- एकर उत्तर तँ स्पष्ट छैक- अहाँ लिखि दिऔक जे हम बुझैत छी लोग हमर रचनाक तुलना महादेवी सँ करैत छथि नहि कि हमर जीवनक.....*

*सहरसा जिला मे जे.पी. आंदोलन मे हम बड़ सक्रिय छलौं। घर मे घुसल पर्दाशीन स्त्रियों के हम बाहर जुलूस मे अनने रहीं-*

आदरणीया शेफालिका वर्मा जी,

सादर प्रणाम मैं सहरसा आया था । आप नहीं थी । दि॰ 05 नवम्बर की अ॰ भा॰ महिला संगठन की प्रांतीय संयोजक मंदाकिनी दानी सहरसा आ रही है। तीन तरह के कार्यक्रम अपेक्षित है। 1. महिला कार्यक्रम 2. कार्यकर्त्ता कार्यकर्ती बैठक 3. सार्वजनिक कार्यक्रम! इसी संबंध में विशेष विचार विमर्श के लिय प्रांतीय संयोजिका दि० 25 अक्टूबर रविवार प्रातः जानकी एक्सप्रेस से सहरसा आ रही है। उसी दिन रात को लौटेगी - कार्यकर्त्ता की बैठक हो ।

दिनांक 3, 8 नवम्बर के बेगुसराय को कार्यकर्त्ता सम्मेलन में आपकी प्रतीक्षा करूँगा।

इस बीच नागपुर में आयोजित एक बैठक को लेकर कुछ गलत फहमी सी हो गई ऐसा कुछ भी सुब्रह्मण्य भारती से और कार्यालय मंत्री श्री पंचनदीकर..... से बातों से और कुछ आपके पत्र को पढ़ने से अनुभव हुआ। क्योंकि अभी किसी भी प्रदेश में विधिवत महिला विभाग का स्वतंत्र कार्य नहीं हुआ हुआ था, केंद्र से महिलाओं के संबंध के पत्रक जो मंदाकिनीदाणी (महिला कार्य की प्रमुख) ने भेजा प्रदेश संगठन मंत्री के नाम भेजा जो 1999 का लिखा था। क्योंकि उन्होंने कथा था कि कोई 5 महिलाएँ नागपूर पहुँच कर कार्य समझ लें हमने अपने विभाग संगठन मंत्रियों को 912 नाम पूछ कर उन्हें भेजने की दृष्टि से बातें करने को कहा था। श्री सुब्रह्मण्यम भारती जी ने हमें यह स्पष्ट बताया था कि सहरसा जिला का महिला संगठन का कार्य आप करेंगी और सहरसा नगर का कार्य आपके Guidance में श्रीमती निर्मला वर्मा करेंगी। क्योंकि एक महिला से दो जाना वहाँ से ठीक रहेगा ऐसा भारती जी ने सोचा होगा और आप दोनों को जाने का आग्रह किया होगा।

पत्र देकर उधर के क्षेत्र की कार्य प्रगति का विवरण देती रहेंगी। मैथिली महासम्मेलन के महिला विभाग की अध्यक्षता आप सफलतापूर्वक कर लौटेंगी। आपके मैथिली लेखिका में सर्वश्रेष्ठ स्थान प्राप्त करने की बात तो हमें पत्र पढ़कर ही ज्ञात हुई। किस भाई को अपनी बहन के इस प्रकार के गौरव से अभिमान न होगा? हम प्रदेश समिति की ओर से भी आपको इस उपलक्ष्य में बधाई

देते हैं। दिन पर दिन मेरी यह प्रतिभासम्पन्ना बहन ऐसी ही प्रगति पथ पर अग्रसर हों यही भगवती से प्रार्थना है।

**नाना भागवत**
विश्व हिन्दु परिषद
नाला रोड, पटना
24.10.'73.

*विश्व हिन्दू परिषदक एहि लेटरपैड मे अध्यक्षक जगह पर पं. जयकांत मिश्र, पटना छल, कोन जयकांत मिश्र छलथि कहियो जिज्ञासा नहि रहल-*

आदरणीया बहन
शेफालिका जी,

आपको ज्ञात ही है कि बिहार आंदोलन में आज़ादी के बाद दूसरी बार महिलाओं की व्यापक हिस्सेदारी हुई । सत्याग्रह के कार्यक्रमों की मुख्य शक्ति बनकर वे उभरी । उनका अपूर्व जागरण हुआ वैसे तो बिहार आन्दोलन ने बहुत कुछ बदला पर महिलाओं के मानस में उसने बड़ा परिवर्त्तन किया, वह परिवर्त्तन क्या फिर सो जायेगी ? यदि हम सो गयी तो कौन महिलाओं को उनकी सही सामाजिक स्थिति तक पहुँचायेगा ?

इसलिये आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक आदि सभी मोर्चो पर हमें अपनी लड़ाई पूरे समाज के संदर्भ में स्वयं लड़नी होगी और इसी का ध्यान में रखते हुए 29 जुलाई '78 से 2 अगस्त '78 तक पटना में एक बिहार प्रान्तीय महिला शिविर-सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है।

बिहार प्रान्तीय महिला शिविर-सम्मेलन का उदेश्य सम्पूर्ण क्रांति की दिशा में महिलाओं की भूमिका खोजने, कार्यक्रम बनाने और संगठन खड़ा करने का है, अतः आप से आग्रह है कि आप इसमें भाग लेकर हमें सहयोग करें ।

आपकी सेवा में शिविर-सम्मेलन संबंधी कागजात भेजे जा रहें है आप से प्रार्थना है कि संलग्न आवेदन पत्र भर कर तुरंत भेजें ताकि अन्य जानकारी भी आपको भेजी जा सके ।

समस्त शुभकानाओं के साथ -
सादर -

आपकी बहन
**नुतन**
बिहार महिला संघर्ष समिति, पटना
18.6.'78.

प्रिय बहन।

....कटिहार जिला हिन्दी साहित्य सम्मेलन का वार्षिक अधिवेशन आगामी 5 फरवरी को सम्पन्न करने का निश्चय किया गया है, अधिवेशन के अवसर पर आयोजित कवि सम्मेलन के लिए आमंत्रित कर रहा हूँ ।

श्री मार्कण्डेय प्रवासी जी द्वारा आप का पता मालूम हुआ। अपनी की ओर से मार्ग व्यय एवं सम्मान देने की स्थिति में हूँ ।

इस अवसर पर बहार के राज्यपाल महासचिव श्री जगन्नाथ कौशल ने उद्घाटन के लिए हमें स्वीकृति दी है।

मैं आशा करता हूँ कि आपका सहयोग हमे अवश्यक प्राप्त होगा । कृप्या सेवा के लिए स्वीकृति पत्र भेजने की कृपा की जाय।

स्नेहाधीन

**रतनकुमार किशोर**

सचिव

कटिहार जिला हिन्दी साहित्य सम्मेलन

पो० गुरू बाजार, जिला – कटिहार

17.1.'78.

*ओहि काल बीजेपी नेता बाद मे मुख्यमंत्री बिहार भऽ गेलैथ कैलाश जी क पत्र–*

शेफालिका जी एवं ललन जी,

आत्मीयता एवं स्नेह भाव से दीपोत्सव के अवसर पर आपकी शुभकामना प्राप्त हुयी। मैं इसे आशीर्वाद समझकर शिरोधार्य कर रहा हूँ। आप लोगों की यह भावना ही जीवन पथ पर चलते रहने की शक्ति प्रदान करती है। निरंतर प्रवास पर रहने के कारण प्राप्ति के पश्चात प्रणाम भेजने में बिलम्ब हुआ है। सदा स्नेह बना रहे यही आकांक्षा है।

भवदीय,

**कैलाशपति मिश्र**

'79

प्रिय शेफालिका जी,

'आखर'क प्रवेशांक पठा चुकल छी, भेटत होएत। आखर केहेन लागल? अपनेक सम्मति अपेक्षित अछि। आखर'क अग्रिम अंकक लेल अपनेक रचना आमंत्रित अछि, तैं कम स' कम समय मे अपन नवीनतम अप्रकाशित रचना पठा देल जाए।

एखन धरि हम एहि आश मे छी। अंक देखैत अहाँ अपन सम्मति आ रचना पठा देब। दोसर अहांक सामग्री प्रेस मे चलि जाएत समय पर एम्हर बहुत दिन स' अपनेक कोनो रचना नहि देखबा मे आएले-से की कारण? ...अहाँक सभ पत्र, रचना, उपराग आओर यदा-कदा विभिन्न व्यक्तिक द्वारा पठाओल गेल समाद भेटैत रहल अछि, महानगरक कर्म-संकुल जीवनक दुर्वह भार के वहन करबा में ततेक ने समय व्यतीत भऽ जाइत अछि जे ककरो यथासमय पत्रोत्तर दऽ सकी, तकरो पलखति नहि भेटेत अछि, एम्हर 'अग्निपत्रक प्रकाशन मे बेस विलम्ब भेल, नव अङक बहार भऽ गेल अछि जे अपनेक नाम पठा चुकल छी, आशा जे एहि अंकक विषय में अपन अभिमत शीघ्र लिखि पठायब।

उल्थाक कार्य चलि रहल छैक। अहाँक रचना जा रहल अछि आओर बात अन्य पत्र मे विस्तार सँ लिखब, अपन स्वास्थ्यक विषय में सूचित करी। प्रसन्नता होएत, आओर कोना की? पत्र वाहक हमर अभिन्न छथि।

शेष शुभ,

**वीरेंद्र मल्लिक**

कलकत्ता

13.11.'71

*मैथिली साहित्य मे नहुनहु पैर राखैत छलौं कनिया बहुरिया जकाँ स्यात् साठिक दशक छल तखने ई पत्र भेटल छल।*

श्रीमती शेफालिका जी,

यथोचित,

किछु आश्चर्य होएत एक अपरिचितक पत्र पावि। बम्बई में हम सब ''कर्ण कायस्थ'' विकासक हेतु एक ''कर्ण गोष्ठीक स्थापना केलहुँ ओ अपन सामाजिक, सांस्कृतिक अध्याविधि प्रगतिक क्रमिक विकास एक प्रामाणिक पुस्तिकाक प्रकाशन कए रहल छी जाहि सं अपन संस्कृतिक एक पक्ष सुरक्षित रहत ओ भविष्य में हम अपना कें पहचानि सकी जे ''हम के छी''।

सीमित सम्पर्क रहलो उत्तर हम सब अधिकाधिक समाजक गण्यमाण्य व्यक्ति सं सहयोगक ले हाथ पसारने दी।

पत्रिका की रूप देल जाय एकर आभास संलग्न पत्र सं ज्ञात होएत। विषयक एक सूची (कर्ण कायस्थ) में ओकर स्थिति आदि संबंधी एक विवेचना पूर्ण रचनाक आकांक्षी छी। सुविधानुसार शीर्षक या विषय अपने चयन कऽ सकैत छी मुदा रचना पूर्ण कायस्थ समाजक परिधि में हो।

आशा नहि पूर्ण विश्वास अछि अपनेक सहयोग भेटत।

भवदीय

**राम चन्द्र दास**

83/2969, तिलक नगर चेम्बर,

बम्बई

अखिल मिथिला मैथिली प्रचारक संघ सँ पत्र आयल छल जकर शाखा संपूर्ण भारत नेपाल मे छल।

जमशेदपुर
04.01.1969

पत्रांक - 81/69

स्नेही शेफालिका जी,

जय मैथिली,

विश्वास अछि, टटकाक संग-संग पत्र सब सेहो भेटि गेल होयत। टटकाक विचारधारा संपूर्ण देशक विचार धारा अछि। अपने सँ आग्रह जे सह-सम्पादनक भार अपने कें देल जा रहल अछि। स्वीकार करू। सह सम्पादकक रूपे अपने सँ सम्पूर्ण प्रचारक बन्धु निवेदन कय रहल छथि जे अपने कँ कोनो झंझट नहि होइत। अपने गंगजले रहब तथा प्रत्येक अंकक लेल अपन सम्पादकीय पठा देल करब.....।

आधा पत्रक अक्षर सभ उड़ि गेल अछि-

*डॉ. केदारनाथ लाभक एकटा टिप्पणी अपन कविताक विषय मे कोनो पत्रिका मे पढ़ने छलौं-हमरा बड़नीक लागल। फलतः अपन प्रथम कविता संग्रह विप्रलब्धाक पांडुलिपि भूमिका लिखवा लेल हुनका पठा देलौं-आ हृदयक एकटा संबंध हुनका सँ भऽ गेल आ हमर ज्येष्ठ भाईक रूप मे हमर जीवन मे अपन स्थान लऽ लेलथि-*

प्रिय रजनी,

मेरे स्नेह तुम्हे

अर्पित सौरभ के मेह तुम्हें / सचमुच कितने दिन बीत गये/ क्षण के कितने घट रीत गये ।/ पर, तुम्हें पत्र लिख पा न सका/ जब-तब ऐसा हो जाता है/ मन का धन ही खो जाता है।/ जो लिखना चाहो लिखना सको/ ज्यों दिखना चाहो दिख न सको।/ उन्मन-उन्मन-उन्मन जीवन/ अम्बर में केवल धन ही धन।/ बिजलियाँ कौंध कर सो जाती/ केवल विह्वलता बो जाती।/ आकाश देखता रह जाता/ चुपके-चुपके सब सह जाता।/ कहने की कोई बात नहीं/ इस मरु में है बरसात नहीं।/ चंदन-वन का मधुबात नहीं/ तट पर तरंग का घात नहीं।/ केसर वन सा मधु प्रात नहीं/ कस्तुरी वाली रात नहीं/ कोयल की प्रीति पुकार नहीं।/ कोई नर्तन झंकार नहीं।/ मधुगंधी मृदु वातास नहीं।/ बादल बिजली आकाश नहीं।/ मंजरी न कोई न पानी/ झुक लता न कोई छू पानी।/ प्यासा पंछी अकुलाता है/ उड़ने को पर फैलाता है।/ लेकिन मिलती रसधार नहीं/ शीतल सावनी फुहार नहीं।/ ऐसे में चुप हो जाता हूँ।/ बाहर से मूँदे हुए नयन/ पढ़ने लगता हूँ अपना मन।/ एकान्त सहेली बन जाता/ जोड़ता मौन से मधु नाता।/ कोई वीणा बजने लगती/ कोई पायल सजने लगती।/ संगीत गूँजने लगता है/ मन

स्वयं झूमने लगता है।/ चेतना तरंगित हो जाती है/ अन्तर की कलिका मुस्काती।/ नव सूर्योदय हो जाता है/ आलोक नया अँगड़ाता है।/ कोई सुगंध भर जाती है। शेफाली-सी झर जाती है।/ मन स्वयं मुग्ध हो जाता है/ शिशु सा सहसा सो जाता है।/ लेकिन फिर कोई एक शाम/ ले-लेकर मेरा सरल नाम।/ सोये से मुझे जगा जाती/ फिर गीत वही दुहरा जाती।/ फिर स्वयं कहीं छिप जाती है/ मुझको उदास कर जाती है।/ जुड़-जुड़ कर ऐसा टूट गया/ ज्यों फल डाली से छूट गया। अपना कोई आधार नहीं/ खिलता खुलता संसार नहीं।/ लगता है यही नियति मेरी/ टेढ़ी-मेढ़ी संसृति मेरी।/ इसलिए मौन हो जाता हूँ/ अपने में यूँ खो जाता हूँ।/ लेकिन इन बातों को छोड़ो/ खुद को जीवन-जग से जोड़ो/ तुम ग्राम्य-प्रकृति में नहा गयी/ शोभा में सुस्मिति बहा गयी।/ भर गयी तुषार - तरंगों से/ रंग गयी उषा के रंगों से।/ अनुपम उमंग से झूम उठी/ उल्लसित धरा को चूम उठी।/ सचमुच नैसर्गिक सम्मोहन/ भर देता है रस से जीवन।/ अपनी ही सुधि खो जाती है/ कल्पना पंख फैलाती है।/ नूतन सपने जग जाते हैं/ कितने लालस अँगड़ाते हैं।/ दुनिया ही नयी-नयी लगती/ आधी सोती आधी जगती।/ कुछ ऐसा ही हो जाता है/ अहरह अन्तर अकुलाता है।/ ऐसा ही जीवन हास भरा/ वासंती बिभा हुलास भरा।/ रजनी ! यदि सबका हो जाये/ जग कितना सुन्दर हो जाये।/ तुम बनी रहो चिर हासमयी/ मधुमासमयी उल्लासमयी,/ अपने जीवन में राग भरो/ रस गंध भरो अनुराग करो।/ जीवन को जीवन रहने दो/ इसमें मधु धारा बहने दो।/ फिर देखोगी क्या है जीवन/ सुख का पुलकित नूतन उपवन।/ जीवन विराट का दर्पण है/ शोभा सुषमा का मधुवन है।/ आनन्द भरा कैलास-लोक/ है जहाँ न कोई रोग-सोक।/ केवल शिव-गौरी का नर्तन/ ऐसा-ऐसा ही है जीवन।/ लो, कितना तुमको बोर किया।/ बिन बरसे, गर्जन घोर किया।/ कहते-कहते कह गया बहुत/ भावों में ही बह गया बहुत।/ अब और न मुझको बकना है/ यह व्यर्थ थकाना-थकना है।/ यह पत्र न, है बकवास मात्र/ भाई का है यह हास मात्र।/ अन्तर तरंग - उल्लास मात्र/ समझो है शब्द-विलास मात्र।/ देखो, अब दुखने लगा हाथ/ सस्नेह-

**लाभ केदार नाथ**
राजेन्द्र कॉलेज,
छपरा।
'77

*एखन धरि हुनका सँ हमरा भेंट नहि भेल छल। ई पत्र हमरा ओ सहरसाक पता सँ देलनि-हम डुमरा मे छलौं।*

प्रिय रजनी

मेरे स्नेह ।

राखी का त्योहार आने के बहुत पहले से तुम्हारी स्नेहिल स्मृतियाँ घनीभूत होने लगती हैं और मैं राखी की, तुम्हारी राखी की प्रतीक्षा करने लगता हूँ । और हर वर्ष की भाँति इस वर्ष भी सही

समय पर तुम्हारी राखी–तुम्हारी स्नेह–सुगंध से महमहाती – आ गयी । हृदय जुड़ा गया, मन–प्राण आप्यापित हो उठे, आँखे हर्ष–उल्लास से फैल गयी ।

सलोनी पूर्णिमा को वह राखी मेरी कलाई में बाँधकर मानो दो प्राणों को जोड़ गयी । यह सलोनी पूर्णिमा भी क्या गजब का दिन है। भाई–बहनों को स्नेह–सूत्र में बाँधकर आनन्द की ज्योत्सना उड़ेल देती है उस दिन की हर घड़ी । राखी के सूखे धागे मे स्नेह का काव्य–रस छलक उठता है, छूट उठती है किसी दूर से आनेवाले संगीत की मादक स्वर लहरी, नाच उठता है प्रसन्नता से मन का मयूर और राखी भेजूनेवाली बहन को मेरा हृदय अशीषने लगता है। तुम्हारा जीवन सुख शान्ति और समृद्धियों के संगीत स गूँजता रहे, तुम शतायु होकर अपनी साहित्य–साधना से लोक मंगल करती रहो – यही इस भाई की अशेष कामना है।

विश्वास है तुम सबके सब सानन्द हो । वर्मा जी को मेरे स्नेह निवेदित हैं। शुभकामनाओ सहित।

तुम्हारा भाई<br>
**केदार नाथ लाभ**<br>
भारत छोड़ो स्वर्ण जयंती<br>
9 अगस्त '93

आदरणीया शेफलिका जी

यथोचित

भाई नीरज से और आपके पत्र से भी, यह विश्वास जगा कि आप जैसी सशक्त लेखिकाओ के मन–मस्तिष्क में भी निशांत के प्रति किसी न किसी अनुपात में जगह हैं । बस इसी समर्थन भाव के बल पर ही तो निशांत धारा के प्रतिकूल जूझता हुआ अपने महान उद्देश्यों को प्राप्ति की ओर बढ़ रहा है। अत: आपलोगों का यह समर्थन हमारे लिए काफी बहुमूल्य है। और इस समर्थन भाव के प्रति आप जैसी महानुभावों का निशांत सदाऋणी रहेगा ।

पत्र–पत्रिकाओं के जरिये शायद पता चला हो कि पिछले महिने 19 जनवरी 1960 को महान साहित्यकार व चिन्तक माननीय आनन्द शंकर माघवन जी के संरक्षकत्व तथा श्री रामाधिकारी शर्मा की अध्यक्षता में लेखकों के हितों की रक्षा एवं उनके मूलभूत उद्देश्यों की पूर्ति के उद्देश्य से भारतीय राष्ट्रीय लेखक संघ को स्थापना की गई है।

राष्ट्रीय स्तर के इस संघ का विभिन्न राज्यों तथा जिलों में शाखाएँ तेजी से खोली जा रही है। बिहार के बतीसो जिलों मे से अधिकांश में तथा कुछ राज्यों में यथाशीघ्र इसकी शाखाएँ खोलकर एक जबर्दस्त अधिवेशन आहूत करने की घोषणा है।

आप भी संभवत् इस बात से सहमत हों कि वर्त्तमान समय में बिना एकजुट हुए लेखक

अपने अस्तिव की रक्षा नहीं कर सकते । इन्हीं सब महत्त्वपूर्ण उदेश्यों की पुर्त्ति के लिए 'writers club' की स्थापना की गई है। जिसमें आप जैसे सशक्त और समृद्ध लेखिकाओं का योगदान अपेक्षणीय है।

चाहता हूँ आप भारतीय राष्ट्रीय लेखक संघ के संयोजन का भार स्वीकार कर, सहरसा में इसकी जिला शाखा खोलकर अपना महत्पूर्ण योगदान दें । निश्चय ही आपका ऐसा समर्थन हमारे लिए एक गौरव की बात होगी । आप इस सम्बन्ध में वहाँ के अन्य लेखक-लेखिकाओं से संपर्क साध कर हमें सूचित करें । फिर मैं आपको विवरण सहित संयोजक मनोनयन पत्र डाक से भेज दूँगा कार्यकारिणी गठन के पश्चात आपके सुविधानुसार भा० आनन्द शंकर माधवन जी के द्वारा इसका उद्‌घाटन समारोह भी सम्पन्न कराया जा सकता है। जिससे भारतीय राष्ट्रीय लेखक संघ के सम्पूर्ण उद्देश्यों की जानकारी वहाँ के लेखकों तथा बुद्विजीवियों को मिल जायेगी ।

हमलोगों को भी आपसे मिलकर प्रसन्नता होगी । तत्काल में परीक्षा में व्यस्त हूँ, फिर भी आपको इस सम्बन्ध में पत्र लिखते हुए रा.ले.सं. की शाखाएँ खुल चुकी है आशा करता हूँ आपका भी हमें भरपूर सहयोग समर्थन प्राप्त होगा।

इन्हीं आशाओं के साथ ।

**शुभकामनाओं सहित**

**विकास पाण्डेय**
मंत्री, भारतीय राष्ट्रीय लेखक संघ
भागलपुर 25.7.'79.

मान्यवर शेफालिका जी,

...बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर से हम 'अभयुक्ति मैथिली गीतिकाव्य मे प्रगतिशील चेतना पर शोध कऽ रहल छी। प्रगतिशील एवं मैथिली गीतक संदर्भ में हमरा अपने सँ किछु जिज्ञासा अछि। अपने सन प्रसिद्ध साहित्यकार, विद्वान आ महान लेखिका हमर जिज्ञासा कँे सिद्ध कऽ सकथि। इएह सोचि किछु प्रश्नावली अपनेक सेवा मे प्रस्तुत कऽ रहल छी, कृपया पन्द्रह दिनक अनन्तर एकर उत्तर लिखिक कृतार्थ कएल जाए।

हमरा आशा नहि पूर्ण विश्वास अछि जे अपने हमर कार्य सिद्धिक श्रेय अवश्य लेब।

अपनेक,
**पूनम कुमार बर्मा**
द्वारा, डा. शान्ति सुमन,
मिठनपुरा, मुजफ्फरपुर

महोदया शेफालिका जी,

.....फगुआ आबि रहल अछि। फगुआ मे तीत मीठक अनुभव लेने होयब। किछु घटना एहनो भेल होयत जे फगुआ के नामे सुनला सँ मानस पटल पर नाचऽ लगैत होयत। किछु मनलगगु होयत तँ किछु अनसोहांत आ किछु तँ निठ्ठाहे जोगरक एहने सन किछु अविस्मरणीय घटना मिहिरक पाठककें सुनाबी से आग्रह.........

भवदीय,

**दिलीप कुमार सिंह झा**

मिथिला मिहिर 7.2.89.

*इ पत्र पढ़ि मोन पड़ि जायत अछि डुमरा.......*

बाबू जी संग केओ होली नहि खेलि सकैत छल लेकिन सूकू बाबूजीक मुँह मे अबीर आ देह मे रंग दय खूब थपड़ी पारैत छली। पाछा पाछा पींकी लीली-दादाजी हम्मु-

बाबूजी खिलखिलाके हँसैत छलाह। ब्याहक बाद एक बेर फगुआ मे वर्मा जी अपन जिगरी दोस्त कहु वा कि लंगोटिया यार बच्ची बाबूक संग भांगक लोटा लय पहुँचि गेलैथ रंग अबीरक नशा मे मातल,- हमरा सँ भांग पीबाक आग्रह केलन्हि। आय धरि कहियो हम वर्मा जी के भांग पीबैत नहि देखने छलौं।

भरि दिन सीरा आगुक पूआ पकवान बनवैत, गौआं संग रंग खेलैत हम एकदम थाकि गेल रही! आब अबीर खेलय बलाक टोली देओर ननदि सभ बाँचले छल! चूँकि ब्याहक तीन चारि बरीस बाद होली मे रहबाक अवसर भेटल छल! पढ़ैत छलौं तँ होलीक छुट्टी एक हफ्ताक मात्र होइत छल- पटना सँ डुमरा काशी जकाँ त्रिशूल पर छल!

साँझ भ' गेल छल! जल्दी जल्दी गोसाँय कें साँझ देलौं। समस्त वातावरण सिनुरिया भऽ गेल छल! सभ अलमस्त ताहि पर बेर-बेर हिनक आग्रह भाँग पीबाक! तामस बड़जोर छल, जकरा पान, बीड़ी, सिगरेट, सुपारी, चाह, काफी पीबाक हिस्सक नहि छल ओ एकदम सँ सीधे भांग पर उतरि गेल छलाह। अनटेटल कथा सुनिते बिथा- हमरा हिनक जिद बड़ विचित्र लागि रहल छल- पता नहि भांग पीबाक बाद हमर की दुर्गत होयत? हम निहोरा करैत बाजलौं- हम सासुर मे छी, पटना मे नहि कोनो उच्छृंखलता भऽ जायत तँ अन्हेर भऽ जायत।

और मुँह फुलाय कोना मे बैसि गेलाह-

सोचैत रही, हमहु रूसि सकितहुँ मुदा तुर्रा तँऽ ई छल गलतीयो वएह करैत छलाह आ मनाबऽ हमरे पड़ैत छल। ओ तँ तामसे कबाब जकाँ जरल जरल रहैत छलाह। नहि जानि ई पति नामधारी जीव किएक अपन पत्नी पर एतेक रोब झाड़ैत छथि जेना हुनक जन्मसिद्ध अधिकार होय-

आ आइ फगुआक राति ई अप्रसन्न भऽ जेताह तऽ हमही अपन प्रसन्नता लय की करब? 'हमर प्रतिष्ठा आब अहाँक हाथ अछि। जँऽ बाबूजी जानि जेताह तऽ नहि जानि कोन अनर्थ भऽ

जायत?' हम हिनका समक्ष विवश भऽ गेलौं?

एक दिसि बाबूजीक धियान अबैत छल जे अपना जमानाक प्रभुत्व सम्पन्न जमींदार, मुखिया आ हिमालय सन व्यक्तित्वक स्वामी छलाह, जिनका सँ बात करबाक अपन बेटा सभकें साहस नहि होयत छल, दोसर दिसि ललित लवंग लतापरिशीलन सन अपन सुन्नर पति देवताक निर्दोष प्रेममय पहिलुक आग्रह–

जीत हुनक भऽ गेल! हमरा एक गिलास दूध सँ भरल शरबत पीआय, एकटा विजयिनी मुस्कीक संगे यार दोस्तक टोली मे कचहरी पर चलि गेलाह।

सासुर मे पर्दाप्रथा तँ कठोर रूपें लागू छल। हवेली सँ बाहर नहि निकलि सकैत छलौं। दलान पर नहि बैसि सकैत छलौं। गामक इजोरिया, पूर्णिमाक इजोरिया अगनाक कोन कोन मे पसरि गेल छल मदमस्त भऽ। गामक टोली पर टोली ढोल, झाल, मृदंग, हरमुनिया लऽ कऽ फाग गबैत निसाँ मे चूर अबैत छल–जल कैसे रे भरी जमुना गहरी–नामी नामी केसिया भुंइयाँ मे लोटै हे पिया परदेश मोरा दीयरा लुभेलक गीतक समवेत स्वर लहरी पर आसमान झूमि रहल छल, धरती नाचि रहल छल–चान निर्मिमेष ताकि रहल छल–

अचक्के हमर कान मे सन्न सन्न स्वर अबय लागल! जेना कतेको माईकक स्वर, कतेको घड़ी घंटक स्वर गूँजित भऽ रहल होय। हमर माथ घूमऽ लागल आ अचक्के लागल जे हम एकमद हल्लुक भऽ गेल छी। हम अपना के जाँचवा लेल उठि के ठाड़ भऽ गेलौं। एक डेग धरती पर राखलौं कि हम धरती पर छी वा कि हवा मे! फेर दोसर डेग आस्ते सँ राखलौं– डेगा डेगी नपैत हम किछ दूर चलैत रहलौं आ लागल जेना हवा सँ हल्लुक हम भऽ गेल छी– हम अन्तरिक्ष मे परी जकाँ उड़ि रहल छी। चारू कात निस्तब्धता पसरल छल। रात्रि तीति भीजि अलसाय सूतल छल इजोरियाक कोर मे।

नहि जानि कोन ज्वार उठल, हम एहिना डेगा डेगी दैत, उड़ैत दलान पर पहुँचि गेलौं जे पुतौह सभ लेल वर्जित स्थान छल! हमर आँचर अस्त व्यस्त, दलान एकदम सून्न, इजोरियाक शुभ्र वसन समूचा प्रकृति कें धवल बना देने छल। ओसाराक पाया पकड़ि हम खूब हँसय लागलौं। हमर अचेतन मे ई भाव स्पष्ट छल जे हम अनुचित कऽ रहल छी मुदा, चेतन मे अपना कें संभारि नहि पबैत रही। अचानक बाबूजी गाम दिस सँ घूमैत दलान पर आबि गेलाह। हमरा ओहि अवस्था मे देखि निश्चित रूप सँ ओ अचंभित भऽ गेल हेताह। हमरा लागल जे दूर सँ आँखि फाड़ि फाड़ि देखि रहल छलाह जे ई 'कनिये' थीकिह ने?

हम तँ भांगक मस्ती मे छलौं। हुनका देखि आर जोर सँ ठहाका लगबए लगलौं। मुदा, हम जानि रहल छलौं जे हम गलत काज कय रहल छी। तावत बाबूजीक पाछा पाछा ई अपने आबि गेलैथ। दलान पर हमरा एसगरे देखि, बताहि जकाँ ठहाका लगबैत देखि हिनका बहुत जोर तामस उठि गेलैक ताहि पर बाबूजीकें ठाड़ देखि– अचक्के हिनका अपन करनीक धियान एलैक तऽ भागि कें अंगना चलि एलैथ– पाछू पाछू बाबूजी धीर गंभीर चालि सँ चलि गेलैथ। राति कछमछी मे हिनकर बीति गेल– अहाँ हमर करनी सभ कें तँ नइ कहि देलीयैक? हम आय धरि सोचि रहल छी – बाबूजी

अपना मने की सोचैत हेथीन–? किएक ककरो लग एकर जिज्ञासा नहि केलखिन– कहीं बाबूजी सेहो तँ नहि भाँग सँ मातल रहथीन– मुदा, ई सत्य छैक जे हमरा मे एखनो ई घटना एकटा अपराध बोध जगा जायत अछि–

सेवा में,

चिर सौभाग्यवती श्रीमती शेफालिका जी,

अशेष आशीष ।

अहाँक पत्र भेटल । श्री गोपी बाबू अहाँक सम्बन्ध मे वड़ आकुल छथि । स्थिति सँ अवगत भेलहु । अहांक जे व्यवधान से किन्हु नहि रहत माँ भगवती श्री 108 उग्रतारा माइ अहांक समस्त व्याकुलता के हरण कै लेती । हम दिसम्बर कें वनगामक हेतु चलब आ 3 दिसम्बर के वनगाम पहुँचि जायब । अहाँ कृप्या 2 से 3 दिसम्बर धरि वनगाम हमरा से सम्पर्क करी । 2 कै सम्पर्क करी तें सर्वश्रेष्ठ । हम अहाँ कऽ लऽ कऽ उग्रतारा माईक शरण मे जायब संग मे ओकिल साहेब रहथि तै आर नीक । कृपया एकटा श्वेत शंख, एकटा रूद्राक्ष आ नौ टा मूंगा क प्रबन्ध कै के राखव । एकटा आर अनुरोध । कृप्या कोनो प्रकारक भोजनक आग्रह नहि करव । मात्र हम चायटा पीयव । अहि प्रक्रिया लेल आवश्यक छैक । त अहाँ गुगल, लौहवान, जटामसी, सड़ड़ चन्दन, कूर्पर क मिश्रण से अपना घर में साँझ भोर धूप देव ।

भगवती अहाँक कल्याण करथि ।

कोनो तरह क चिन्ता नहि करब । माय चिन्तामणि छथि ।

सस्नेह

**मणिपद्मम**

बहेड़ा 5.11.'82.

*ताहि वनगामक कवि सम्मेलन मे मनोरंजन जी हमरा अपना संगे सहरसा लऽ गेल छलाह। सम्मेलनक अध्यक्षता मणिपद्मम केने छलाह। हमरा बजवैत काल ओ बजलाह आउ–शेफाली–अहाँ झहरि जाउ–झहरि जाउ...*

शेफालिका जी,

स्थानीय 'निराला माहित्य परिषद' ने देश के लगभग 100 कवियों का एक उत्तम काव्य संकलन प्रकाशित करने का विचार किया है।

1. कृप्या संकलन हेतु यथासम्भव अप्रकाशित 3 रचनायें (छन्दोबद्ध एवं गेय) 31 जनवरी 8 तक भेजें ।
2. रचनायें पृष्ठ के एक ओर सुलिखित या टाइप होनी चाहिए।
3. संकलन की शेष प्रतियाँ देश के मूर्धन्य कवियों, समीक्षकों एवं देश तथा विश्व के अनेक

विश्वविद्यालयों के हिन्दी विभागों को मूल्यांकन हेतु भेजी जायेगी।

आपके सक्रिय सहयोग एवं शुभ कामनाओं से ही यह गुरूतर संकल्प पूर्ण हो सकेगा। रचनायें निम्न पते पर भेज कर अनुगृहीत करें।

**सम्पादक**
**महेन्द्र कुमार 'सरल'**
निराला नगर, लखनऊ 28.2.'82.

प्रिय शेफालिका जी,

आपका पत्र मिला । धन्यवाद । आपकी कविता का मनन करने के बाद उसे राष्ट्रभाषा सन्देश में प्रकाशनार्थ भेज दिया है।

भावमयी कर्मशाला की शुष्क कार्यविधि को आपने रोचक संस्मरणात्मक रूप प्रदान किया है जिसके लिए सम्मेलन की बधाई स्वीकार करें । भारतीय मनीषा का यह संकल्प है कि वह विविध भाषा - भावनाओं से अर्जित उपलब्धियों का आह्लाद प्राप्त करें, इस दृष्टि से पाँच भाषाओं के वर्त्तमान कवियों की कर्मशाला के महत्व को स्वीकारते हुए आपने जो वृत्त प्रस्तुत किया है वह न केवल जिज्ञासापूर्ति की दृष्टि से अपितु ललित दृष्टि से भी उपयोगी है।

आपकी कवि-प्रतिभा के कारण भाषा सज उठी है। और उसकी सम्प्रेषणीयता अबाधित है। सचमुच आपने एक अच्छी रचना पढ़ने का अवसर प्रदान कर अनुगृहीत किया है। आपने जिस ढंग से इसे प्रस्तुत किया है उससे तो वही लगता है कि संस्मरण व रिपोर्ताज की विधा से हिन्दी जगत को समृद्ध करने का दायित्व आपको अवश्य ही वहन करना चाहिए ।

कवि रूप में आपका बहुत पहले से मैं प्रशंसक रहा हूँ, पर इस संस्मरण ने तो एक और नई प्रतिभा के तेज से अवगत करा दिया है। 'पाँच भाषाओं का संगम आत्मा एक, चेहरे एक दूसरे के लिए अनजाने' शीर्षक के संस्मरणों में सम्मिलित इन शब्दों को तो मैंने उद्धरण के लिए अपनी डायरी में उतार लिया है। ''कविता के जन्म के समय कितनी विकलता और छटपटाहट रहती है। जनम के पश्चात् उतनी ही सरलता, उतनी ही तृप्ति भी रहती है। आकार देने के बाद जिस तरह माता शिशु के रूप को संवारने में कभी उसके माथे पर धीमी थाप से उसे सहलाती है तो कभी उसकी नासिका को उगलियों से दुलारती है--ठीक यही हाल कवियों का है।''

समस्याओं को जिस चुटीले पर सुलझे ढंग से इस संस्मरण में आपने प्रस्तुत किया है उसी में समाधान का सूत्र खोजने में अनेक महत्त्वपूर्ण परिवेश निकल सकते है। ''राष्ट्रभाषा हिन्दी निर्वासिता सीता की तरह अरण्य रोदन कर रही थी जिसकी अस्पष्ट ध्वनि कभी-कभी वातावरण में फैल जाती थी'' इसी वाक्य से पूर्वांचलीय कवियों की कर्मशाला में हिन्दी की बात सारगर्भित रूप में प्रकट कर आपने कमाल कर दिया है................।

आशा है, आप, डा. वर्मा और बच्चे स्वस्थ-सानन्द हैं।

सधन्यवाद,

आपका शुभाकांक्षी

श्रीमति शेफालिका वर्मा,
गंगजला, सहरसा

**(श्यामकृष्ण पाण्डेय)**
सहायक मंत्री
हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग
17.6.'80

*एहि राष्ट्रभाषा संदेश मे हमर मैथिलीक कविता लगातार प्रकाशित होइत छल जाहि मे उर्दूक शायरी जकाँ मैथिली शब्दक अर्थ केर फुट नोट हिन्दी मे कविताक नीचा मे देल जायत छल।*

............................ राष्ट्रभाषा संदेश को आद्योपांत पढ़ने का मुझे सुयोग्य प्राप्त हुआ। इसके माध्यम से हिन्दी की उदीयमान प्रतिभा श्रीमती शेफालिका वर्मा से परिचित होने का सौभाग्य मिला। एतदर्थ धन्यवाद ................ संपूर्ण देश में एक सर्वमान्य संपर्क भाषा को स्थापित करना एक गंभीर राष्ट्रीय समस्या है जिसे सुलझाने के लिए हमारी सरकार प्रयत्नशील है। राष्ट्रभाषा देश के माध्यम से देश की विभिन्न भाषाओं के सन्निकट एवं संपर्क में हिन्दी भाषा को लाने की दिशा में किए गए आपके प्रयास अत्यंत सराहनीय एवं प्रशंसनीय है। हमारा देश बहुजातीय एवं बहुभाषिय राष्ट्र होने से भाषा ज्ञान के अभाव में कठिनाई अनुभव करते हैं। हिन्दी भाषा के साथ-साथ अन्य भारतीय भाषाओं की समृद्धि के लिए किए गए आपके कार्य समयोचित है। इस गंभीर राष्ट्रीय समस्या को सुलझाने में आपको सफलता मिले यही कामना है.........

**डॉ. रत्नशंकर मिश्र**
कुलपति कानपुर विश्वविद्यालय
22/5/79

सुश्री शेफालिका जी,

प्रयाग से विभिन्न साहित्यकारों/रचनाकारों का एक 'काव्य-संकलन प्रकाशित करने की योजना प्रस्तावित है।

आपसे विनम्र निवेदन है कि कृपया आप अपनी 1. दो प्रतिनिधि रचनाऐं/गीत 2. संक्षिप्त जीवन परिचय तथा 3. एक पासपोर्ट साइज छाया-चित्र भेजने की अनुकम्पा कीजिएगा । मई 85 के अंत तक यदि आप अपनी उपर्युक्त सामग्री भेज देते तो बड़ी अनुकम्पा होगी । ........

सादर–स्नेह।

आपका हि
**'चंचल'**
ब्रजमोहन श्रीवास्तव
इलाहाबाद 3.5.'85.

*निम्न पत्र जखन हमरा भेटल तँ हम खुशी सँ रोमांचित भऽ उठल छलौं! हमर पापा 55-56 ई. मे सहरसा मे सीनियर डिप्टी कलक्टर छलाह। हम बारह तेरह वर्षक किशोरी छलौं। जगदीश्वर झा जी कहियो काल पापा सँ भेंट करवा लेल डेरा पर आबैत छलाह। ओना रोज साँझ के ओ हमर घरक सामने से टहलैत बजार दिसि जाइत छलाह। हर समय हुनका सुन्दर सूट मे सजल हमरा सहरसा मे बड़ स्मार्ट बुझा पड़ैत छलाह। हेबा प्रिंसिपल साहब जाइत छथि-कि खेलब छोड़ि हुनका देखऽ लगैत छलौं- ओ कहियो सोचबो नहि केने हेताह- आय हुनके पत्र हमरा भेटल की ई हमर सौभाग्य नहि?*

चि. शेफालिका,

आशीष ।

सितम्बर 1975 क मिथिला मिहिरक कथा अंक, अकस्मात आय भेट गेल । एक-दू टा कथा पढ़लहुँ मुदा संतोष नहि भेल । अहाँक बारे में सोचलहूँ जे अहाँ तै कवयित्री छी, तँ अहाँक कथा मे कोनो खास विशेषता शायद नै होयत । मुदा एक लेखिका क रूप मे अहाँक विचार समाजक समस्या पर की अछि, ताहि जिज्ञासा सँ अहाँक कहानी 'मुक्ति' पढे लागलहुँ। पढ़ैत-पढ़ैत कखनहु चमत्कृत भ गेलहुँ, कखनहुँ सिहरि उठलहुँ आ कखनहुँ आँखि मे नोरो आबि गेल । हमरा बढ़ नीक लागल । हम कोनो साहित्यिक त नै छी । मुदा विश्वक नीक साहित्य पढ़ने छी । अहाँक कथाक आरंभ मे हमरा बुझायल जे ई कथा मे कोनो आधुनिक नारी मुक्ति संग्राम क पक्ष-विपक्ष क बात होयत । तैं पढ़वाक क्रम मे अनमनस्क रही । सोचैत रही जे कहानी सपाट कियैक अछि, अंतर्द्वंद्व कहाँ अछि, ससपेन्स कहाँ अछि, मात्र सुन्दर शब्द सँ की होयत छैक इत्यादि । मुदा जेना-जेना कहानी पढ़ैत गेलहुँ वो बढ़ैत गेलहुँ कहानी मे आकर्षण बढ़ैत गेल, मन पर हावी हुए लागल, अपन गिरफ्त मे लेवे लागल, आ तखने सिहरन, आँख मे नोर इत्यादि हुए लागल । अंततोगत्वा चमकृत भऽ गेलहुँ। सोचलहुँ एकटा पत्र अहाँ कें अवश्य लिखव ।

मैथिली कथा साहित्य मे अहाँक विलक्षण प्रतिभा एवं शब्द विन्यास देखि हमरा विश्वास भ रहल अछि जे जहाँ मैथिली साहित्य क रेणुजी बनू ।...

विशेष कहियों भेंट भेला पर ।

...एकबेर पुनः अहाँक सुन्दर कथा पर बधाई । (हमर मैथिली भाषा कमजोर अछि तैं हमर गलती पर ध्यान न देव)

**जगदीश्वर झा**
प्रो॰ इन्चार्य, स्नात्कोत्तर केन्द्र
सहरसा 15.5.'88.

मैडम,

रेगिस्तान का भटका एक शावक,/ नीचे रेत उपर पावक।/ झुलसा था तन आहत था दिल, / थके पैर पर साहस दलील।/ बेजान किस्ती का अन्जान साहिल, / गमों के डोरे पे चला ये काफिला/ चौराहे पे अटका ओझल थी रातें,/ गमों की बाहों में सहमी थी आँसुएँ।/ आँसुओं के थपेड़ो में दिल दहला इस कदर,/ अरमानें टूटकर बह गई दर-बदर।/ अनायास किसी ने आँसुऐं पोछ दिए,/ नजरें उठाई तो आप मुस्कुरा दिए।/ जीर्णपात को जैसे बसंत मिल गया,/ मेरी गुमराह राहे, अपने आप खुल गयी।/ मिल गया मेरा रहवर : मिलेगी अब मंजिल,/ जुग-जुग जिए मेरी किस्ती का साहिल।/ क्या दूँ मैं उसे दे पाऊँगा कुछ,/ स्वीकार्य हो ये मेरा बौना सा हक।/ जन्म-दिन मुबारक हो।

**दीपक कुमार गुप्ता**
छात्र बी.ए. सम्मान (हिन्दी)
सर्व. राम. महा. सहरसा।

*आय दीपक कत्तौ पत्रकार छथि- नहि जानि कतऽ-*

प्रतिष्ठा में,
शेफालिका जी,
गंगजला
सहरसा - 852201

शेफालिका जी,
नमस्कार ।

साहित्यिक एवम् सामाजिक कुरीतियों के तहत किसी पत्रिका का प्रकाशन जोखिम भरा कार्य है फिर भी 'मन्तव्य' के प्रथमांक से यह कार्य करने जा रहे है और 1 अक्टूबर '89 तक प्रथमांक लोगों के हाथ में दे देने को हम वचनबद्ध हैं। 'मन्तव्य' की नेकनीयती और ईमानदारी को सफलता की सीढ़ियों तक पहुँचाने का कार्य एवं दायित्व रचनाकारों की ही देय है।

इसी क्रम में आप से आग्रह कर रहे हैं। 20 सितम्बर के पूर्व तक रचनाएँ सम्पादकीय कार्यालय को प्रेषित करा पारिश्रमिक स्वरूप धन्यवाद देने का सुखद मौका दें ।......

स्नेहभाजन

**वीरेन नन्दा**

शालवन, मुजफ्फरपुर

28.8.'81.

मान्यवर, शेफालिका जी,

सस्नेह नमस्कार।

हिन्दी सहित्य सम्मेलन का त्रि-दिवसीय अधिवेशन आगामी 17-18 एवं 19 सितम्बर 1993 को उत्कल प्रदेश की सांस्कृतिक नगरी पुरी में सम्पन्न हो रहा है।

अधिवेशन में देश के विभिन्न अंचलों में लगभग पाँच सौ लब्धप्रतिष्ठ साहित्यकार, शिक्षाविद् विचारक एवं हिन्दी-सेवी प्रतिनिधि भाग ले रहे हैं।

सम्मेलन का यह अधिवेशन पुरी स्थित नगर पालिका के टाउन हाल (प्रेक्षागृह) में आयोजित किया जा रहा है। इसकी सफलता एवं सार्थकता आपके स्नेह, सौहार्द एवं सन्निध्य से ही संभव है।

अधिवेशन के त्रि-दिवसीय कार्यक्रम में साहित्य परिषद एवं राष्ट्रभाषापरिषद जैसी महत्वपूर्ण संगोष्ठियाँ सम्पन्न होंगी, जिसमें वरिष्ट रचनाकारों द्वारा राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार एवं अन्यान्य संदर्भों पर व्यापक विचार-विमर्श तथा समीक्षण होगा। इसके अतिरिक्त हिन्दी एवं उड़िया भाषा के विशिष्ट कवियों द्वारा कवि-सम्मेलन एवं अन्यान्य सांस्कृतिक कार्यक्रम में भी सम्पन्न होंगे।

निश्चय ही यह अधिवेशन हिन्दी के प्रचार-प्रसार के साथ ही प्रादेशिक भाषाओं के विकास को एक नई दिशा देगी, साथ ही इसके माध्यम से राष्ट्रीय भावात्मक एकता को बल मिलेगा। अभी से इसीलिए निवेदन किय जा रहा है कि आपको कार्यक्रम बनाने में सुविधा हो।

विश्वास है अधिवेशन में आप अवश्य भाग लेने का कष्ट करेंगे।

शुभकामनाओं सहित,

संलग्नः यथोपरि,

भवदीय,

**प्रभात शास्त्री**

प्रधानमंत्री,

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग

'93

आदरणीया,

सादर प्रणाम।

निवेदन है सम्मेलन का 41वाँ वार्षिक अधिवेशन 10-11 दिसम्बर 83 को मध्य प्रदेश के महानगर 'इन्दौर' में होगा।

सम्मेलन और इन्दौर के महत्व को आप स्वयं मुझसे अधिक जानती हैं, मैं तो सिर्फ इतना ही निवेदन कर रहा हूँ कि आप पर मेरा जो अधिकार बनता है, उसके नाते किसी भी तरह, किसी भी स्थिति में इंदौर अधिवेशन में चलने का कष्ट करें।

विश्वास है निराश नहीं करेंगी।...

सादर आपका
**श्रीधर शास्त्री**
प्रबंध मंत्री, हिन्दी साहित्य सम्मेलन
प्रयाग 2 दिस. '83.

प्रिय महोदया,

शेफालिका जी,

राष्ट्रीय एकता और साम्प्रदायिक का सद्भाव की प्रगति पर आधारित आपको छः कविताएँ, आकाशवाणी दरभंगा, पटना, राँची, भागलपुर से प्रसारणार्थ आमंत्रित है। प्रत्येक कविता की अवधि छः मिनट होनी चाहिए । चयन आकाशवाणी पटना के द्वारा किया जायेगा ।

अतः अनुरोध है कि आप अपनी रचनाएँ 31 जुलाई, '89 तक हमारे पास भेज दें । आशा है आपका सहयोग हमे प्राप्त होगा ।

धन्यवाद ।

भवदीय
**डा॰ तपन कुमार**
केन्द्र निदेशक दूरदर्शन
दरभंगा

# कर्ण कल्याण समिति, राँची

माननीया श्रीमति शेफालिका वर्मा जी,

सादर नमस्ते,

...वनस्थल मे बसल किछु कर्ण परिवार 'कर्णधार' पत्रिकाक प्रकाशन हेतु तत्पर भेल छी । ज्ञानक विशिष्ट प्रकाशक हेतु अपनेक सक्रिय सहयोगक आवश्यकता परिलक्षित होइत अछि । तें साग्रह अनुरोध अछि जे तिथि 15.10.82 तक अपन लिखल कविता, कहानी, लेखवा समाजोपदेशक रचना नीचा लिखल पता पर प्रकाशनक हेतु पठाबी जाहि सॅम्‍ सुप्त समाजक किछु जागरण भए सकत।

धन्यवाद सहित।

अपनेक

**(प्रभुनाथ दास)**

कर्ण कल्याण समिति, राँची।

24.9.'82

प्रियरेषु आदरणीया शेफालिका जी,

अपने कें ई जानि कए हर्ष हैत जो सूरत-स्थित दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय और बड़ौदाक महाराजा सायाजी राव विश्वविद्यालयक आर्थिक सहायता से एवं दुई गोट समाज विज्ञानी (डॉ. प्रदीम कुमार बोस, सेण्टर फार सोशल स्टडीज़, सूरत आ' प्रो. एन. राजाराम, बड़ौदा) केर सहयोगिता सँ मैथिली-भाषा-आंदोलन क एकटा समाज-भाषा वैज्ञानिक अध्ययन प्रस्तुत कैल जा रहल अछि। एहि महत्वपूर्ण रिपोर्ट मे आंदोलन सँ प्रत्यक्ष वा परोक्ष रूप सँ संबंधित नेता, सहानुभूतिशील राजनीतिकगण, सजग मैथिली साहित्यकार लोकनि और मैथिली सेवा संस्था सभक कर्णधार लोकनिक एहि आंदोलन क विषय मे अपन अनुभव आ' मूल्यांकनक विशेष महत्व छैक। तें मैथिली भाषा आंदोलन मे अपनेक गुरुत्वपूर्ण भूमिका स्मरण मे रखैत हम अपने सँ प्रार्थना करब जे एहि विषय मे अपने स्वकीय मूल्यवान अभिपत पठा कए हमारा सब कें लाभान्वित करब। एहि लेल एहि पत्रक संग एकटा छपल प्रश्नावली पठायल जा रहल अछि.....

भवदीया,

**डॉ. उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'**

दक्षिण गुजरात विश्व विद्यालय

11/5/82

दीदी,

नमस्कार।

बहुत दिन सँ अहाँ सँ भेट नहि भेल, गाम मे नहि रही, दू मासक उत्तर प्रदेशक पर्यटन मे गाम आयल छी। थाकल-ठेहिआयल.....

13 दिसम्बर के हमरा लोकनि महिसी मे राजकमल जयन्ती समारोहक आयोजन कऽ रहल छी। चाहै छी, एहि बेर अहुंक सहयोग हमरा भेटय। हम नहि बुझैत छी जे कोनो तरहक विघटन हमर कार्यक्रम में भऽ सकतैक.....

जानै छी, अहां बड़ा व्यस्त लोक छी मुदा व्यस्ते लोकक लेल ने कोनो कार्य विशेषक महत्व होइत छैक।

अस्तु, एहि कार्ड के पूर्व सूचना बूझब, अहां सँ जल्दि भेंट करब, बहुत रास गप-सप (मिठाई सहित) बांचल अछि। दू चारि दिन मे भेंट कऽ सकी प्राय:।

अहिंक अप्पन-तारानन्द वियोगी। महिपी

26.11.'82

प्रिय शेफालिका,

- अंक आगां नियमित प्रकाशित होइत रहत से आशा अछि।
- अपनेक सहयोगक बिना अंकक नियमितता संभव नहि भएं सकत।
- तत्काल साहित्यिक कोनहुँ विधाक आलेख अपने पठाबी।
- शीघ्र 'भाखा' अपन योजनानुसार अपनेक सेवामे ''अनुरोध'' लए उपस्थित होयत।

अपनेक सहयोगक सतत आकांक्षी -

**डॉ. जयकान्त मिश्र**
15.03.'98

श्रीयुत् वकील साहब,

स्वस्ति/नतय:

अपनेक डेरा फोन कएल पता लागल अपने 16/03/98 क बाद दिल्ली सँ आयब। एहि बीच श्रीमती शेफालिका वर्माक 15 टा पोथी भावांजलि के आडर आएल अछि कृपया शीघ्र बिल पठा दिय, 40% कमीशन दय हम पुराना बिल सेहो भुगतान एके संग कऽ देब।....

स्नेहाधीन
**जयकांत मिश्र**
15.03.'98.

सेवार्थ,

श्रीमती शेफालिका जी,
आनन्दपुरी,
पटना।

विषय : श्री श्री 108 चित्रगुप्त समारोहक सुअवसर पर आयोजित सांस्कृति कार्यक्रमक रूप में आसन्न ग्रहण करेक सम्बन्ध में ।

मान्यवर,

श्री चित्रगुप्त सभा अपन गौरवशाली परम्परानुसार अहू वर्ष कार्तिक शुक्ल पक्ष द्वितीया तदनुसार 15 नवम्बर 93 कॅ श्री श्री 108 चित्रगुप्त पूजनोत्सवक सुअवसर पर संध्या 6 बजे सँ एकटा रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रमक आयोजन क रहल अछि ।

अपने सॅ 'सभा' अहि सांस्कृतिक कार्यक्रमक मुख्य अतिथिक रूप मे आसन ग्रहण करबाक आग्रह करैत अछि ।

हमरा लोकनि के पूर्ण विश्वास अछि जे अपने अहि आग्रह कें स्वीकार कय हमरा लोकनि कॅ कृतार्थ करब ।

भवदीय

**( जगन्नाथ लाल कर्ण )**

अध्यक्ष

चित्रगुप्त समिति, पटना

शेफालिका जी,

नमस्कार !

विजयाक अशेष मंगल कामना अहाँक परिवारक हेतु अहाँकैं अनैक धन्यवाद जे अत्यन्त तत्परता पूर्वक अपन साहित्यिक परिचयक संगहि संग 'स्मृति रेखा', 'विप्रलब्धा', 'एकटा आकाश' एवं सद्यः प्रकाशित 'यायावरीक' प्रति उपलब्ध कराओल एहि सहायोगक हेतु हम हदय सँ आभारी छी।

'यायावरी' कँ उनटाओल देखल ज्ञात भेल जे इला सँ अहाँ परिचित छलहुँ। विशेष जानकारीक हेतु अहाँ वैदेही कँ अगस्त 1995 अंक पढ़नहि हैब, वैदेहीक उक्त अंक उपलब्ध क' कए अवश्य पढू अपन प्रतिक्रिया सँ अवश्य अवगत कराउ।

मैथिली सलाहकार समितिक वैसक मे अपन वक्तव्य कँ स्पष्ट करवाक चेष्टा करू मैथिली पर सभक समान अधिकार छैक।

विद्यापति जयन्ती मे पटना आयब अहाँसँ निश्चिन्त भ, कए गप्प करब सभक समस्या दिशामे विशेष बात भेंट भेला पर विस्तार पूर्वक हैत।

श्री युत ललन बाबू सॅ हमर प्रणाम निवेदित करब, बच्चा सभकेॅ अशेष स्नेह पत्रोत्तर अवश्य

देब। शेष शुभ !

शुभेच्छु
**प्रेमशंकर सिंह**
भागलपुर '95

आदरणीया शेफालिका जी,

समाकालीन भारतीय साहित्य के नए अंक में आपकी लिखी कविता 'इतिहास हूँ' पढ़ी। बेहद अच्छी लगी। ऐसी कविताएँ पढ़कर ही लगता है कि अच्छी कविताएँ लिखी जा रही है। मैंने एम.ए. हिन्दी से किया है और कविताओं में मेरी विशेष रुचि है। अगर आप अपनी कुछ कविताओं की फोटो प्रति भेज सकें तो अच्छा लगेगा। यदि 'ठहरे हुए पल' कविता संग्रह भेज सकें तो आभारी रहूँगा। अन्यथा यह कहाँ से प्रकाशित हुआ है इसकी जानकारी दें। आशा है पत्रोतर देंगी....

**अनिल कुमार अग्रवाल**
रामपुर, उत्तर प्रदेश

शेफालिका जी,

यह प्रीतिकर प्रसंग जानकर आपको प्रसन्नता होगी कि हिंदी, संस्कृत और अँगरेजी के अधिकारी एवं अधीती विद्वान् और राष्ट्रचेता व्यक्तित्व आचार्य निशांतकेतु की बहुमुखी सारस्वत साधना के अभ्यार्चन के लिए 'आचार्य निशांतकेतु-सत्कार-समिति' का संगठन 10 अक्टूबर 99 को हुआ है। आचार्यश्री निशांतकेतु के साहित्यिक-सांस्कृतिक-सामाजिक अवदान से अहाभावित रचनाथर्मियों एवं कृतज्ञ लोकबद्ध सत्पुरूषों की इस बैठक में प्रख्यात समाजशास्त्री तथा साहित्यकार पद्मश्री (डॉक्टर) श्याम सिंह 'शशि' को इस शुभसंकल्प के निमित संघटित समिति को अध्यक्ष चुना गया तथा श्री रविशंकर प्रसाद 'अमरजीत' (पत्रकार, जनसत्ता) को महासचिव संरक्षक-मंडल, राष्ट्रीय संरक्षक-मंडल, संपादक-मंडल, अर्थ-समिति, संपर्क-समिति, समारोह-आयोजन-समिति और ग्रंथ-प्रकाशन-समिति के गठन का प्रस्ताव पारित किया गया ।

आपकी गवेषणा-दृष्टि और सन्निधान-संस्मरण से आचार्यश्री के कृतित्व के अनेक अनाघ्रात और अदृष्टपूर्व पक्ष उद्घाटित होंगे, ऐसा हमार विश्वास है। स्वीकृतिपत्र, निबंध एवं संस्मरण दो सप्ताह के भीतर भेजने की कृपा करें, ताकि मुद्रण के लिए यथासमय सामग्री प्रेस जा सके ।
हार्दिक मंगलकामनाओं के साथ ।
सादर।

आपका
**( डॉ॰ कमल किशोर गोयनका )**
हिंदी-विभाग (दिल्ली-विश्वविद्यालय),
दिल्ली '99.

शेफालिका जी,

किवैक

...उत्तर देलहुँ नहि?/ की आतिथ्य मे कभी भेल/ श्रोताक कमी रहल/ अपनो अधूरा रहल/ दायित्व कठिन भेटल/ वा हमर पटनाक व्यथा सँ/ व्यथित भए गेलहुँ।/ पटना मगह अछि/ हमरा बुझल अछि।/ हमरहुँ मन में उठैत अछि/ एक प्रश्न/ सीता सँ पूछवा लेल/ अहाँ किऐक... स्वयंवर केलहुँ/ जखन स्वयं सनेस छलहुँ / सनेस लए अयोध्या गेलहुँ?

**डॉ. धनाकर ठाकुर**

श्यामली, राँची 9.9.93'

प्रतिष्ठा में,

परम पूज्यनीया

डॉ. शेफालिका वर्मा जी

सादर प्रणाम!

अपनेक पठौल नव वर्षक शुभकामना भेटल। आभारी छी। हमर हार्दिक अभिलाषा अछि जे अहाँ एवं अहाँक परिवारक प्रत्येक सदस्य सदैव सब तरहें प्रगति पथ पर बढ़ैत रहथि। अपने लोकनि सर्वथा सुख सँ रही, हमर ईश्वर सँ सैह प्रार्थना अछि।

अपनेक अपनहि

**सुधाकान्त दास**

नई दिल्ली 7.5.'93.

आदरीणीया शेफालिका जी

सप्रेम नमस्कार।

आपकी मैथिली कविताएँ, तो पढ़ता ही रहा हूँ, प्रशंसक भी रहा हूँ। कुछ वर्षो में मिथिला महान मे आप की रचनाएँ नियमित पढ़ रहा हूँ। 'मिथिला महान' के संपादक अर्जुन नारायण चौधरी मेरे ही विभाग मे थे और बेगुसराय, हाजीपुर मे साथ-साथ पदस्थापित भी रहे हैं। मिथिला महान मे मेरी भी कविताएँ यदा-कदा छपी हैं। आप शायद मुझे भूल गई होंगी। मैं सहरसा में 14 वर्षों तक पदस्थापित रहा था। उस समय मैं भी लेखन की शुरुआत के दौर में था और आप भी। सहरसा में उन दिनों हमारे साहित्यिक साथी थे चित्तरंजन कुमार रंजन, शालिग्राम आदि। कई कवि गोष्ठियों में हमलोग साथ थे। आप बाद में रमेश झा महिला कॉलेज मे पदस्थापित हो गई थीं। मुझे पता चला कि वकील साहब अब नहीं रहे। बहुत दुख हुआ। मगर चिरंतन सत्य से हमलोग भी तो साक्षात्कार करने ही वाले हैं मैंने हाजीपुर में घर बना लिया है। सोचा आपसे पत्राचार करूँ। पुराने मित्रों से संपर्क

करने की एक अलग सुखानभूति होती है।

आपका ही
**राजनारायण**
हाजीपुर 20.9.'05.

परमादरणीया प्राध्यापिका महोदया।

सादर वन्दन।

मिथिला महान के सम्पादक श्री अर्जुन ना. चौधरी के अनुसार प्रो. शेफालिका वर्मा पर एक Article प्रकाशित करने की योजना है। सभी उपलब्धियाँ ज्ञात है, भावांजलि पर। मात्र दो बातों की जानकारी चाहिए।

1. आपकी जन्मभूमि (ग्राम का नाम) पिता जी का पूरा नाम, माता जी का नाम।
2. नाना जी का नाम तथा ननिहाल के ग्राम का नाम।
3. ससुराल के ग्राम का नाम। ससुर का नाम, पति का नाम।
4. डुमरा नैहर है या ससुराल, कष्ट हेतु क्षमा प्रार्थी।

भवदीय
**अरूण कुमार पाठक**
गोलघर पार्क रोड, पटना-1.
20.4.'06.

श्रद्धेय श्रीमती शेफालिका वर्मा जी।

चरण स्पर्श

कुशल कुशलापेक्षी! पत्राचारक विशेष कारण ई जे हम पटना विश्वविद्यालय सँ मैथिली कथा-साहित्य पर शोध कए रहल छी। इतिहास ग्रंथादि मे अपनेक लिखल 'एकटा आकास' (1988) नामक प्रकाशित कथा-संग्रहक अतिरिक 'स्मृति रेखा' (1977 ई. कतहु 1966 ई.) क सूचना भेटैत अछि। यद्यपि 'मैथिली कथा धारा' (1982) सा.आ.) क परिशिष्ट मे परिचय पातक क्रम मे तथा 'समकालीन मैथिली कथाक मूल्यांकन' (1989- वैदेही समिति) क रचनाकारक परिचय मे 'स्मृति रेखा' क प्रकाशन वर्ष 1977 ई. बनबैत एकटा कथा-संग्रहक कोटि मे राखल गेल अछि, किन्तु मैथिली अकादमी पटना द्वारा प्रकाशित अपनेक कथा-संग्रहक प्रकाशिकी मे निदेशक महोदय 'स्मृति रेखा' क प्रकाशन काल 1966 ई. बनबैत एकरा 'संस्मरण' आओर 'रेखा चित्रक' कोटि मे रखलनि अछि।

उपर्युक्त चर्चित पोथीक संबंध मे जखन पं. श्री गोबिन्द झा जी सँ जिज्ञासा कएल तँ ओ कहलनि- 'एहि पोथीक पाण्डुलिपी प्रेस के देल गेल छल अवश्य, किंतु ओ पाण्डुलिपि वापस भए

गेल अछि से हमरा नीक जकाँ बुझल अछि, अर्थात् 'स्मृति रेखा प्रकाशित नहि भेल'। (बीसम कथा चेतना रैली, 22.10.1994 क अवसर पर कएल गेल हुनक भेंटवार्ता मे ई स्पष्ट भेल अछि)।

उपर्युक्त विवादित चर्चाक कारणों आ पोथी उपलब्ध नहि होयबक कारणें अपने कँ कष्ट देबाक हमर बाध्यता भऽ गेल अछि। एतदर्थ हम क्षमाप्रार्थी छी।

उपर्युक्त पोथीक संबंध मे कृपया स्पष्ट कएल जाय जे ई प्रकाशित पोथी अछि, अथवा एखन धरि अप्रकाशित। जँ प्रकाशित अछि तँ एकर प्रकाशन वर्ष 1966 ई. छैक अथवा 1977 ई. छैक अथवा 1977 ई., ई पोथी मैथिली एकेडेमी, इलाहाबाद सँ प्रकाशित भेल अछि। ई पोथी अपनेक विचार मे कथा-संग्रह थिक, संस्मरण थिक आकि रेखा-चित्र?............

अपनेक उपर्युक्त सूचना पाबि हम कृतार्थ होयेब एहिमासक अन्तधरि 'शोध-प्रबंध' विश्वविद्यालय कँ सुपुर्द कए देल जायत तँ।

अपनेक

**मेघन प्रसाद**

+2 व्याख्याता (मैथिली)

राजकीय उच्च विद्यालय,

कंकड़बाग, पटना।

*मेघनक एहि पत्र क कारण हम स्मृति रेखाक विमोचनक कार्डक सामग्री दय रहल छी जाहि सँ भविष्य मे केओ अन्हार मे नहि रहथि-*

मैथिली एकेडेमी, प्रयाग अपन नव-प्रकाशन
श्रीमती शेफालिका वर्मा कृत ''स्मृति-रेखा'' क
मैथिलीक सुप्रसिद्ध कथाकार एवं विद्वान मान्यवर
प्रो॰ हरिमोहन झा जी द्वारा ग्रन्थ - विमोचन समारोह
मे अपने कें सादर आमन्त्रित कैरत अछि ।

समय : साँझ, 7 बजे
दिनांक : शनि, 28.05.77
स्थान : अधीक्षण पुरातत्वविद् कार्यालय
अन्टाघाट (स्टेट बैंक के सामने)
पटना।

उत्तरापेक्षी

**डा॰ सुधाकान्त मिश्र**

फोन - 53382

प्रिय बहन शेफालिका जी शुभशी: - सारिका' झंझारपुर मे कीनलहुँ ओ अहाँ क कथा पढ़ल। अनुवाद ठीक नहि लागल परन्तु कथा त निश्चिते उत्तम अछि।

एहि सुन्दर रचना लेल कृपया हमर हार्दिक शुभकाना स्वीकार करी। कथा के स्केच चित्र बड़

नीक भेल छैक, तँ भाव-मानक कँ पुष्ट करैत अछि। ओना ई कथा तँ पैघ भए उपन्यास भए सकल तऽ बड़ उत्तम कृति हएत, कारण व्यक्तिगत लगैत अछि। मैथिलीक तेसर पीढ़ी मे अहाँक नाम देखि मोन किछु उदास, खिन्न अछि तइयों गौरी जी संगे से संतोष। जे कहत सारिका से ठीके कहल जाइत। गानू झा क एकदम बचकाना प्रयोग भेलैक।

**सुधाकान्त मिश्र**
बनारस

पूज्या दीदी,

सादर प्रणाम,

अहाँक स्नेहसिक्त आशीष पत्र भेटल आ संगहि 'प्रवासि' क लेल अहाँक रचना। साहित्यिक क्षेत्र में स्थापित आ एहेन प्रतिष्ठित लोकनिक रचना पाबि हम सब धन्य छी। प्रवासी क लोकप्रियता में ई अवस्से चारि चान लगाओत, से विश्वास अछि। पत्रिका प्रकाशन में अछि 19 दिसम्बर कँ समारोहक आयोजन कयल गेल अछि, समारोह मे उपस्थित भए हमर सबहक उत्साह बढ़यवाक लेल आमंत्रण भेजल जाएत वोहि में देर सबेर भऽ सकैछ। कृपया एहि पत्र कँ आमंत्रण स्वरूप मानब आ अयबाक प्रयास अवश्य करब।

एहि सँ पूर्व अपनेक पुस्तक 'यायावरी' अनने रही। आद्यान्त पढ़ल आ खूब नीक लागल नीक साहित्यकारक अभाव में एखन धरि प्रवासी कँ बहुआयामी स्वरूप नहि भेटलैक अछि। सम्पादन कार्य सेहो निर्बले बूझि पड़ैछ भाषा टीकाक दृष्टियें कोनो श्रेष्ठता नहि तखन महज सबहक उत्साह अछि आ अहाँ सभ सन उत्कृष्ट रचनाकार लोकनिक सहयोग जे प्रवासी क पालन भऽ रहल अछि।

अहाँ सन जेठ बहिनक स्नेहक छाँहरि जकरा भेटैक, भला से धन्य कोना ने होऊ ! निश्चिते जखन हम पटना आएब तँ अहाँक पएर छूबाक प्रयास करब। परिवार मे, पत्नी (ललिता) आ तीनू बच्चा - दीपक, मीनू, साकेत के प्रणाम सेहो स्वीकार करब ।

अहाँक छोट भाए

**चन्द्रमोहन कर्ण**
ओ एन जी सी
हैदराबाद 2.12.'96.

आ. बहिन शेफालिका,

नमस्कार।

27.02.91 को जागरण में आपका वक्तव्य ''फागुन क्यों गुलाबी करे'' मेरी परिचर्चा के अंतर्गत छपा था। उसकी Cutting मैंने आपको भेजी थी, परंतु तभी से आपका कोई पत्र नहीं मिला (शुभकामनाएँ छोड़कर), क्या कारण है।

इधर दो विशेषांकों के लिए फागुनी परिचर्चाएँ आयोजित करने का दायित्व मुझ पर था।

विषय हैं–

(1) अधरो पर क्यों आने लगे छैलाओं के नाम? (क्या फागुन आयो रे)

(2) छेड़छाड़ मन भाने लगी, देख पलाश के फूल।

आपसे विनम्र अनुरोध है कि उक्त विषयों पर अपने फागुनी वक्तव्य व दो फोटो शीघ्रतिशीघ्र भेजने का कष्ट करें। आभार मानूँगा।

आपका

**जगदीश किंजल्क**

D/6 रेडियो कॉलोनी

छत्तरपुर – 471001

मध्य प्रदेश।

आयुष्मती शेफालिका जी,

.... कालिदास सँ लए विध्यापति धरि पढ़ैत-पढ़ैत श्रृंगार रससँ मन उकठि गेल अछि। मुदा भावांजलिक श्रृंगार ने भोजपुरी फिल्मी गीत जकाँ अश्लील अछि, ने कालिदासक श्रृंगार जकाँ चर्ममय। एहि मे जे रस अछि से दैहिक नहि, आत्मिक वा आध्यात्मिक अछि। व्यष्टि विराट् कँ छुबैत तँ बिन्दु सिन्धु कँ। ऐहि मे अछि छायावाद-युगक भावुकता, कोमलता, सरसता आ प्रशान्ति। की एकरा कविताक, वास्तविक कविताक प्रत्यावर्तन नहि कहि सकैत छी? एम्हर मैथिली कविता मे अधिकतर राजनैतिक भ्रष्टता, आर्थिक दीनता आ वर्तमान स्थिति पर खौंझाइटि-इएह सभ भेटैत रहल; शाश्वत मूल्यक वस्तु बड़ थोड़। तँ भावांजलि मे शाश्वत मूल्य पाबि विशेष आह्लादित भेलहूँ।

**पं. गोविन्द झा**

पटना

आदरणीया शेफालिका जी,

सादर नमस्कार!

हमरा अहाँ प्राय: नहिये चिन्हैत होयब। हम मैथिली लेखन दिस गत पाँच बरखहि सँ छी-'प्रवासी' (हैदराबाद) क सम्पादक सेहो छी (जाहि मे गत वर्ष अहाँक कथा छपल छल)। शिक्षा सँ हम BIT Sindri सँ 1963 ई. में B.S.C. Engineering (Mechanical) Ist Class छी। (अहाँक ताहि समयक परिचित श्री कमल नारायण कर्ण हमर लंगोटिया यार रहथि)। हम गत आठ वर्ष सँ एहिठाम एक भारत सरकारक कंपनी में General Manager छी। हमर गाम राँटी (मधुबनी) अछि।

हम अपन पहिल पोथी ''वैदेही पुष्पहार' लीखि रहल छी- प्राचीनतम समय सँ लऽ कऽ एखन धरिक 51टा विशिष्ट वैदेही (विदेह देशक बेटी/पुतोहु/माता) लोकनिक विशिष्टताक सुगंध रहत एहि पुष्पहार मे। एहि मे अहूँ एकटा वैदेही छी जे साहित्य क्षेत्र मे अपन कीर्तिमान स्थापित कयने छी भऽ सकैत अछि जे आनहुँ क्षेत्र मे एही तरहक उपलब्धि हो।

हम 'दण्डकारण्य' मे गत 28 वर्ष सँ छी (रामचन्द्र-सीता के तँ 14 वर्षहि मे त्राण भेटि गेल छलन्हि) तैं अहाँ लोकनि सन वैदेही सँ नीक परिचय नहि भऽ सकल अछि। की हमर पर कृपा दृष्टि राखि, हमर अज्ञानता कँ ध्यान मे राखि अहाँ अपन Detail Bio-data including details of literary & other activities एहि पत्र भेटबाक 15 दिन मे पठा सकबाक कष्ट कऽ सकब? अहाँ पर एक निबंध लीखि अपन पोथी मे छापी?

हमरा मैथिली केर शीर्षस्थ लेखक कथाकार कविक शुभकामना सहयोग एहि लेल भेटि रहल अछि। विश्वास अछि जे अहाँ सपरिवार सानन्द होयब।

एहि धृष्टताक लेल हमरा क्षमा करब। कि बहुनेति? शुभम् भयात्।

कुशलाभिलाषी/शुभाकांक्षी-

**सतीश चन्द्र झा**

हैदराबाद 5.6.'98.

डॉ. शेफालिका वर्मा,

मैथिली मे पत्रिकाक प्रकाशन समस्यामूलक रहितो आवश्यक अछि एहिमे दू मत नहि। पत्रिका कोनो भाषाक जीवन्तता एवं समृद्धिक द्योतक थीक। नव पत्रिका प्रकाशन हेतु ई आधारभूत नत्व मूलप्रेरणाक काज करैछ। एहि उद्देश्यसँ एक नव मासिक पत्रिका **कोशी कमला?** साहित्य संसार मे प्रवेश करऽ चाहैत अछि। नव लेखक कवि लोकनिकँ उत्साहित करब, उत्कृष्ट किंतु अप्रकाशित लेखन कें प्रकाशित करब, भाषा एवं साहित्यक बहुविध उत्थान करब एवंनवयुगक आशा-आकांक्षा कें प्रतिविम्बित कय मातृभाषाक प्रतिलोकभावनाकें उन्मुख करब एकर लक्ष्य रहत। मुदा अपनेक सृजनात्मक ओ व्यावहारिक सहयोग बिना एहि मे सफलता नहि भेटि सकैत अछि। तँ अपने सँ हार्दिक आग्रह जे अपन रचना मध्यकथा, कविता ह्रास्य-व्यंग सम्मति एवं सहायोग द्वारा एहि साधनाकें सफल बनाबी।

निवेदक संपादक

पत्राचार- **श्री त्रिलोकनाथ मल्लिक**

C/0 श्री हीरानन्द लाल दास

एम०एल० एकेडमीक बगल मे

बेंता रोड, लहेरियासराय (दरभंगा)

आ. शेफालिका वर्मा जी,

जय हिन्द!

देश के पहले देशभक्तिपूर्ण-सामाजिक टी.वी. चैनल सुदर्शन का शुभारंभ स्वतंत्रता दिवस के शुभ अवसर पर होने जा रहा है। 24 घंटे प्रसारित होने वाले इस मैच का उद्देश्य अपनी संस्कृति,

परंपरा और धरोहर की रक्षा कर समाज में धार्मिक सद्‌भावना। और सामाजिक सौहार्द को बढ़ावा देना है। **सुदर्शन T.V.** के शुभारंभ पर आप सादर आमंत्रित हैं।

निवेदक:
सुरेश चव्हाणके
(चेयरमैन)

स्थान- एफ सी- 16, फिल्म सिटी, सैक्टर- 16ए, नोएडा-201301.

प्रिय शेफालिका जी,

ई लिखैंत आपार हर्ष भए रहल अछि जे दिनांक 29.06.03 के वर्ष 2003-05 सत्रक लेल निर्वाचित घोषित समितिक पदाधिकारी लोकनि अपन बैसार कए, समितिक संविधानक धारा 6(1) द्वारा प्रत्यायोजित अधिकारक अंतर्गत सत्रक हेतु अपनेकें कार्यसमितिक सदस्यक रूप में मनोनीत कएल अछि।

अपने मिथिला, मैथिल एवं मैथिलिक बहुविधि विकास आ प्रचार प्रसार लेल सदैव सक्रिय रहलहुँ अछि। हमरालोकनि के केवल भरोसे नहि अछि, अपितु पूर्णत: आश्वस्त छी जे चेतना समिति कें अपन लक्ष्यक प्राप्तिक प्रयासमे अपनेक पूर्ण सहयोग भेटतैक।....

... अपनेक सहयोगक आकांक्षी,

भवदीय
**(गणेश शंकर खर्गा)**
'06.

मान्याश्री,

... मुदा, संदर्भ इतिहास छैक संभवत: भाषा-साहित्य इतिहास अथवा सामान्य इतिहास ई स्पष्ट नहि भए रहल अछि। पछिला दिन चन्द्रेशसँ फेर भेटि भेल छल। पुन: तकादा भेल। अहाँ संपादकक हैसियतो पत्र लिखलहुँ। हमरा लग दूनू प्रकारक आलेख तैयारो अछि, लगले सूचितकरू तँ पठा देल जायत। विलम्बक कारण मात्र हमही नहि छी। पता हमरा अहाँक चेतना समिति (पटना) मे भेटल।....

**प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन'**
प्रोफेसर कॉलोनी,
महनार, वैशाली

अ० शा० पत्र संख्या : डि० का०-28/प्रशा० दिनांक: 29.12.95

प्रिय डॉ० शेफालिका वर्मा,

हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार के पुण्य उद्देश्य को लेकर इंडियन ऑयल द्वारा हर वर्ष दिल्ली में एक विशाल कवि सम्मेलन आयोजित किया जाता है। इस वार्षिक आयोजन में हर प्रकार की काव्यधारा का प्रतिनिधित्व करने वाले देश के लब्ध प्रतिष्ठ कवि आमंत्रित किए जाते हैं। हमारे कॉर्पोरेशन की ओर से इस प्रकार का एक कवि-सम्मेलन दिनांक 9 फरवरी, 1996 को सायं 6:00 बजे मावलंकर हाल, रफी मार्ग, नई दिल्ली-110001 में आयोजित किया जा रहा है।

हिन्दी साहित्य में कवि के रूप में आपकी प्रतिष्ठा सुविदित है। यदि आप इस कवि सम्मेलन में सम्मिलित होने की स्वीकृति प्रदान करें तो हम अत्यन्त आभारी होंगे।

पुष्प पत्र के रूप में मार्ग व्यय सहित हम रु० 3000/- रुपये तीन हजार मात्र की राशि आपको भेंट कर सकेंगे। उक्त सम्मेलन में सर्व श्री अशोक चक्रधर, ओमप्रकाश आदित्य, गोपाल दास 'नीरज' प्रदीप चौबे, शेरजंग गर्ग आदि कविगण भी आमंत्रित हैं..........

सादर, नव वर्ष की शुभकामनाओं सहित,

आपका

**डॉ० एच०के० पालीवाल**

15 गुरुद्वारा रकाब गंज रोड,

नई दिल्ली- 110001.

*शेरगंज गर्गक नाम देखि मोन पड़ि गेल-साप्ताहिक हिन्दुस्तान पत्रिका क एके पन्ना पर हमर आ शेर जंग गर्गक कविता छपल छल- मोन जेना खिलखिलि उठल-*

आदरणीया बान्धवी,

नमस्कार।

आपका पत्र व रचनाएँ मिलीं, कृतज्ञ हूँ। आशा है स्वस्थ व आनंद होंगी। समसामयिक विषयों पर यदि बन पड़े तो शीघ्र ही कोई लेखादि भेंजें तो अच्छा हो। लेख के साथ संक्षिप्त रचनात्मक जीवनवृत अवश्य भेजें ताकि सदुपयोग हो मंतव्य में।...

स्नेह भाजन

**जीतेन्द्र जीवन**

पू. दीदी,

सादर चरण स्पर्श।

पटना सँ हमरा सीधे सहरसा अएवा मे विलंब भेल तँ हेतु अहाँक निदेशानुसार समय पर मधेपुरा मे श्री विवेकानन्द झा सँ नहि मिलि सकलहुं। किछु दिन विलंब भेल तँ हेतु अहाँ के पत्र देवा मे विलंब भेल से क्षमा करब।

मधेपुरा मे हुनका सँ भेंट भेल मुदा उत्तर नकारात्मक सन। किएक तँ हुनका निर्देशन मे दू व्यक्ति रजिस्ट्रेशन करौलन्हि से लगभग आब पाँचम वर्ष पूरा होमऽ चललैक किन्तु एखन धरि ओ दुनू व्यक्ति रजिस्ट्रेशन करेलाक बाद हुनकर दर्शन नहि करैत छन्हि तँ हेतु ओ हतोत्साह सन। लेहाजे अपन असमर्थता व्यक्त करैत कहलन्हि जे यदि अहाँ के 'रजनी' पठौली ते हम मदति अवश्य करब किन्तु दोसर गाइड के अन्दर मे अपन कार्य करू।...

...पत्रोत्तरक माध्यम मे हमरा निर्देश देवाक कष्ट करब। हम अपनेक पत्रक प्रतीक्षा मे छी अपने आगू लिखल पता सँ देवाक कष्ट करब।

अपनेक छोट भई–
**मृगेन्द्र कुमार 'मगन',**
बड़गाँव, सहरसा
30.08.'91.

**महाप्रकाश नया बाजार (दक्षिण) सहरसा 14.1. 92 ई.**

आदरणीया रजनी दीदी,

सादर प्रणाम निवेदित।

हमरा अहाँक स्मरण रहल अछि, अहाँक फोन नम्बरक खोज छल, ठीक दोसरे दिन अहाँक कार्ड प्राप्त भेल। एहि सुखद संयोग मे अहाँक आशिर्वाद आ स्नेह समाहित अछि से आह्लादित करैत अछि।

सहरसा मे रही त होइत छल जे कोनो दिन भेंट भ' जायत। प्रणाम निवेदितकऽ लेब। किन्तु पटनाक दूरी..... एम्हर कतेक वर्ष सँ भेंट नहि भेल अछि। देखी कहिया आबि पाबैत छी। बहुत मोन करैत अछि किन्तु समयक अभाव सुविधा नहि भेटि पाबैत अछि।

आशा अछि अहाँ सभ सभतरि कुशल होयब। आ पाहुन के हमर विशेष प्रणाम कहियनि

**महाप्रकाश**
नया बाज़ार, सहरसा
14.01.'92.

शेफालिका जी,

परसू अहाँक पठाओल कविता भेटल, तदर्थ धन्यवाद। किन्तु खेद आछि जे तात्काल एकर उपयोग हम नहि कऽ सकब। वैदेही समिति द्वारा आहुत पंचम लेखक सम्मेलन दिनांक 6 तथा 7 नवम्बर '94 कऽ होअऽ जा रहल छैक, जकर आमंत्रण पत्र एवं अन्य सूचनादि फराक डाक सँ गेल होयत। एहि अवसर पर प्रकाशनार्थ रचना संग्रह एक मास पूर्व छपिकऽ तैयार छैक। उक्त समय धरिजे रचना हमरा प्राप्त भेल, तकरा सभ कें उक्त सम्मेलन मे समविष्ट कऽ संतोष करऽ पड़ल एतऽ समस्त प्रेस चुनावक हेतु वोटर लिस्ट छपवबा मे व्यस्त भऽ रहल छल, तँ शीघ्रता सँ जतबा जे छपबाक छलैक, छापि कऽ मुक्त भऽ गेल। अस्तु, आब तँ सम्मेलन नगीच आबिए गेल जय- तनि, सैह व्यवस्था छैक। एहि सम्मेलन मे आबी, से हमर आग्रह। आशा अछि सपरिवार सानन्द होयब।

**रामानंद रेणु**
लहेरियासराय

आदरणीया शेफालिका जी,

प्रणाम।

अपनेक भेंट 'यायावरी - भेटल। आइये आचार्य सोमदेवजीक- 'सोम सतसइ' हाथ आयल छल। पढ़ि नेने रही। सोमदेवजीक गम्भीर दोहा, चिन्तनक क्रम मे चर्च कऽ रहल छलहुँ, तखनहि हाथ लागल 'यायावरी'। चाहैत रहि जे आइ किछु गम्भीर रचना (पोथी) नहि पढ़ब। सोमदेवजीक 'सोम सतसइ' पढि सोचबाक लेल मोन बेर-बेर विवश होइत छल। 'यायावरी' हल्लुक ढंग लैम्पक इजोत मे उनटौलहु एम्हर-ओम्हर। मोन नहि मानलक, किछु पढबाक उत्कंठा भेल। पहिने परिचय पाततखन 'शेफालिका हमर दृष्टि मे'। ललन कुमार वर्माक कथन मोने अतिशयोक्ति नहि बुझायल, समीचीन समतूल भाँज पुरैत। पढि लेल सम्पूर्ण पोथी 'यायावरी' यात्रा वृत्तांत थिक। मुदा हमरा ललित निबंध मे रेखाचित्र बुझायल एक संग वैविध्य - विविध परिवेश में अपन माटि-पानि, राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य अंतर्राष्ट्रीय प्रभाव एवं सामयिक विचार ओ समस्या के जीवन्त अलभ। भावुकता कनेक बेसिये बुझयल आ हमर आँखि सेहो भावुकता मे नोरायल गेल। दोष गुण युक्त ई पोथी नीक लागल।

'यायावरी' पर हमर किछ आर लिखल छल। स्थानाभावक कारणे किछु अंश हँटाओल गेल। जे से, मैथिली मे ओना किछ आरो यात्रा वृत्तांत अछि तहि मध्य एहि पोथीक अपन स्थान फराक अछि। एक तँ शैक्षिक दृष्टिसँ दोसर ई मात्र यात्रा वृत्तांत नहि थिक, किछु आरथिक। यैह सोचबाक लेल आकर्षणक बिन्दु बनैत अछि। दोसर, अपनेक रचनाक हेतु ककरो आलोचना आ शुभकामनाक अपेक्षा नहि अछि। कारण, रचनाक ताकतिए आलोचक कँ जन्म द' सकैत अछि।..........

**चन्द्रेश**
मनमीत कुटीर,
मौलागंज, दरभंगा
15.04.'96.

श्रद्धया शेफालिका जी,

हरिस्मरण

21 नवम्बर 1993 कें एकात्मकताक अपनेक शब्द हमरा मानि लेबाक हेतु लाचार नहि कऽ सकल। साँच ई छल जे हम 'भूल करब' क अहंकार सँ ग्रसित छलहुँ। कोनो सत्संगे ई बोध पश्चात मे भेल। अपने कऽ क्लेश देबाक हेतु क्षमा प्राथी छी। विशेष दोसर सम्पर्क।

अपनेक शुभेच्छु

**दिब्यांशु**

19.12.'93.

शेफालिका जी,

...आशा अछि कुशल होयब। आगाँ समाचार जे समिति एहि बेरक स्मारिका मे किछु कथा छपबाक नेयार कलक अछि। अपने सँ आग्रह जे अपन एक गोट अप्रकाशित कथा चेतना समितिक पता पर पठाय कृतार्थ करी।...

संपादक-स्मारिका

**उदय चंद्र झा विनोद**

30//94

सहृदय शेफालिका जी,

नमस्कार,

कुशल रहैत कुशलतापूर्वक कामना करैत छी। पत्रिका पठा रहल छी एतऊ 10.5 तापक्रम छैक। पत्र मित्रता बनल रहबाक चाही। पत्रिका पढ़िकऽ सुझावो पठौनाइ-हमरा लेल जरूरी अछि किएक तँ ई हमर प्रथम प्रयास अछि.... अपनेक।

**भुवनेश्वर पाथेय**

जनकपुर धाम (नेपाल)

11/1/90

प्रिय शेफालिका जी,

आप साहित्य अकादेमी की सलाहकार समिति की भी सदस्या हैं और ''समकालीन भारतीय साहित्य'' की पाठिका भी। इसलिए संभवत: आप ने ध्यान दिया होगा कि आलोचनात्मक पत्र हम अवश्य ही छापते हैं। प्रशंसा में आए हुए पत्र तभी छापते हैं जब वे पत्र किसी विचार को आगे बढ़ाते हों या खंडन-मंडन करते हों। दुर्भाग्य से हमें विचारपूर्ण पत्र कम ही मिलते हैं। यदि आप मैथिली साहित्य की प्रस्तुत सामग्री पर कुछ विस्तार से आलोचनात्मक ढंग से पत्र देना चाहें तो हम उसे भी

प्रकाशित करना चाहेंगें साथ ही, आप स्वयं ''समकालीन भारतीय साहित्य'' की सम्मानित लेखिका होने के नाते शायद हमें यह सुझाव भी देना चाहेंगी कि वे कौन सी रचनाएँ हैं जिन्हें ''समकालीन भारतीय साहित्य'' में स्थान मिलना चाहिए।

यदि आप समय-समय पर ऐसी रचनओं से भी हमारा परिचय कराती रहें तो अवसर और स्थान होने पर निश्चय ही उन्हें प्रकाशित किया जाएगा।

शुभकामनाओं सहित,

आपका
**( गिरधर राठी )**
संपादक,
समकालीन भारतीय साहित्य
साहित्य अकादेमी
4.4.'96.

डॉ. शेफालिका जी,

...अपने कँ आमंत्रित करैत प्रसन्नता भ' रहल अछि जे सगर राति दीप जरयक 15भ.... आयोजन दिनांक 10 जुलाई '93 कँ मिथिला सांस्कृतिक आ साहित्यिक सक्रियताक ऐतिहासिक संगम स्थल कमलाघाट पर आयोजित कएल गेल अछि। अपने सँ विनम्र अनुरोध जे अपन अप्रकाशित कथाक संग सम्मिलित हेबाक कृपा करी...

अपनेक सहभागिताक प्रतीक्षा मे
**रामानंद 'रमण' झा**
संयोजक
लालगंज, सरिसवपाही, मधुबनी
13.6.'93

श्रीमन्महोदया,

आइ अपनेक देल आजीवन सदस्याक मद में 150/- प्राप्त भेल । कृप्या 101/- टका मनीआर्डर द्वारा पठेबाक कृपा करी । सम्मेलनक पैकेट ओ 95'क वैदेही जा रहल अछि । कृप्या प्राप्ति लिखी ।

डा॰ रामदेव झा ओ डॉ॰ भीमनाथ झा कें एक-एक प्रति आइ पठादेल गेलैनि । वैदेहीक अग्रिम अंक मे पोथीक समीक्षा बहार भ जायत । कृप्या सहरसा, पूर्णिया, मधेपुरा आदि स्थान केर उत्साहित महिला सभक पूर्ण पता पठेबाक कष्ट करी । जाहि सँ महिला सम्मेलनक आयोजन सफल होयत ।

अपनेक जे छोट बालक जे आएल छलाह हुनक नाम एवं पता एवं मिथिलाक पर्यावरण पर

सुधार संबंधी लेख चाही । ओ भागिन महोदयक नाम आ पता चाही । अपनेक पूज्य बाबूजी जे प्रथम डिप्टी मजिस्ट्रेट छलाह हुनक जीवन परिचय चाही । फोटो सेहो चाही ।

प्रेमचन्द्र रंगशाला बैठक मे ककरा पठोलिए तकर सूचना पठाबी.....

.....पत्रोत्तरक प्रतीक्षा में

**कृष्णकांत मिश्र**

दरभंगा, वैदेही, '95.

आ. बहिनदाय, प्रणाम!

अपने सकुशल घुरल होयब-विश्वास अछि नव-वर्षक हमर अनेकानेक शुभकामना स्वीकार करी।

आगामी 11.01.89 कँ (रवि दिन) स्थानीय व्यापार संघ मे 'किसुन जयन्ती' मनवाक विचार भेल अछि। पहिने सामान्ये स्तर सँ-आगाँ भविष्यक प्रति हमरा आस्था अछि, कि एतय बहुत किछुक शुरुआत कएल जा सकैत अछि। अपने लोकनिक सहयोग संबल सँ।

किसुन जयन्ती मे अपनेक उपस्थिति अनिवार्य छैक अपने निश्चित आयब से विश्वास अछि।

अहाँक

**केदार कानन**

किसुन कुटीर, सुपौल

*किन्तु हम नहि जा सकलौं किसुन यजन्ती मे 88' दिसम्बर मे वर्माजी के हार्ट एटैक भेल-हम पटना मे हिनका लऽ कऽ अपोलो मद्रासक तैयारी मे छलौं.....*

आदरणीया शेफालिका जी,

जय मैथिली!

सूचित करैत हर्षक अनुभवकऽ रहल छी जे पटनासँ एकटा मैथिली मासिक पत्रिका भाखा नाम सँ प्रकाशित होबऽ जा रहल अछि। फरवरी सँ प्रकाशित होबऽ बला ई पत्रिका अपन भाषा, संस्कृति आ' भू-भागक सम्यक विकासक लेल कृतसंकल्प रहत।

एहिमे अपनेक सहयोग आ' सुझाव अपेक्षित अछि। ई सहयोग-सुझाव लेखनक स्तरपर, विज्ञापनक स्तर पर तथा प्रचार-प्रसार स्तर पर भऽ सकैत अछि।

घुरती डाकक प्रतिक्षामे

अपनेक

**( विभूति आनन्द )**

संपादक, 10.1.'87.

महोदया, शेफालिका जी,

...प्रत्येक वर्ष जकाँ एह वर्ष मैथिली महिला संघ पटना 'जानकी अवतरण दिवस' क अवसर पर अप्रैल–2007, सीता नवमीक दिन एक 'स्मारिका' क प्रकाशन कए रहल अछि। एहि पत्रिकाक हेतु अपनेक लिखल आलेख/ कथा/ कविता/ निबंध/ शुभकामना संदेश/ विविध विषयक लिखित सामग्री दए एहि पत्रिकाक गरिमा बढ़ाओल जाय, तदर्थ संघ अपनेक आभारी रहत।

भवदीय

**( डॉ. अरुणा चौधरी )**

संपादक

मैथिल महिला संघ,

पटना

परम आदरणीया,

नमस्कार,

नव वर्ष 1997 अपनेक समस्त परिवारक हेतु मंगलमय हो– हमर अशेष शुभकामना।

कर्णामृत पथिका नियमित रूपे अपनेक सेवा मे पठवैत छी। शारदीय 96 क अंकक हेतु रचनाक लेल पत्र लिखने रही। मुदा कोनो उत्तर नहीं भेटल। बहुतो दिन सँ अपनेक कोनो लेखकीय सहयोग नहि भेटल अछि। भविष्य मे सहयोग होय करी से निवेदन। शारदीय 96 क अंकक एक प्रति संलग्न अछि।

कर्णामृत क जनवरी–मार्च 97 अंक कविवर स्व. आरसी प्रसाद सिंहक पुण्य स्मृति मे प्रकाशित कएल जायत।

अपने सँ निवेदन जे कविवर क जीवन यात्रा, साहित्य साधना तथा काव्य कृति पर अपन सारगर्भित आलेख पठाय सहयोग दी।

अपनेक

**राजनन्दन लाल दास**

संपादक, कर्णामृत, कलकत्ता

4.1.'97.

पूज्यनीया दयामयी लाल भाभी,

श्रद्धा समर्पित।

आज मेरे लिए एक अनुपम प्रभात हुआ। आपकी लिखी पत्रिका आयी। पत्र पढ़कर जितनी खुशी नहीं हुई वह हमें पत्र आया जानकर हुई। कारण भाभी हमें तो इसके लिए काफी चिन्ता थी

कि लाल भाभी हमें भूल गई। क्या जाने हमसे किस प्रकार की गलती हुई।

भाभी! पत्र में आपने लिखा है कि मैं रचना निरीक्षण के काबिल नहीं। सो भाभी, मैं ये जानता हूँ। जानता हूँ ही नहीं बल्कि ठीक तरीके से जानता हूँ कि समुद्र में कितना पानी रहता तो वह यह नहीं कह सकता कि मुझमें इतना पानी है। अपितु! वह अथाह एवं अगम्य होता है। ठीक उसी तरह आप शांत एवं गंभीर हैं।

लाल भाभी, आप में क्या निपुणता है वह तो मेरा हृदय ही पुकार कर कह सकता है मैं तो आपको पथ प्रदर्शक के रूप में मान लिया हूँ। आप इसे स्वीकार करें या नहीं। आपने बहुत अच्छी तरह उस बेढंगे रचना की जांच की है। मैं इसके लिए सदा अभारी रहूँगा। आपने हमें काफी सहायता की है। जिसके लिए मैं आपको जीवन पर्यन्त न भूलूंगा।

...ज्यादा, पत्र देने में किसी तरह का विलंब न करेंगी। क्योंकि पत्राचार करने से वात्सल्य प्रेम में जागृति आती है।

पत्र के इंतजार में आपका देवर पथ जोहता रहेगा।

आपका श्रद्धाकांक्षी

**राजेन्द्र लाल 'राज', (भगवान जी)**

खम्हौती, मुंगेर (बिहार)

सम्मानीय शेफालिका जी,

आप सरीखे मनीषसम्पन्न सांस्कृतिक-सामाजिक चेतना के धनी विशिष्ट व्यक्तित्ववान आत्मीय सुजन को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि लब्धप्रतिष्ठ समाज-सेवी, चिन्तक, प्रखर वक्ता, लेखक, सारस्वतधर्मा-स्वतंत्रता सेनानी श्री जटाशंकर दास जैसे बहुआयामी आदर्श व्यक्ति के 'कृतित्व एवं व्यक्तित्व' के उदान्त प्रेरणाप्रद पहलुओं पर केंद्रित एक महत्वपूर्ण अभिनन्द ग्रंथ के प्रकाशन के लिए हम सब संकल्पित हैं तथा यह महत्तर सारस्वत-आयोजन आपके मनसा-वाचा-कर्मणा सहयोग/संरक्षरण के बिना कथमपि सुसाध्य नहीं है।.....

साभार विनयावनत,

**कमल नयन,**

पटना

सेवा में,

श्रीमती शेफालिका वर्मा

सहरसा

मुजफ्फरपुरक साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्था ''मैथिली परिषद'' स्थानीय जिला स्कूलक

प्रांगण में द्विदिवसीय 29 तथा 30 अप्रैल, 86 के विद्यापतिस्मृतिक समारोहक आयोजनक क रहल अछि। अपने सँ निवेदन जे 29 अप्रैलक कविगोष्ठी-सन्ध्या मे सम्मिलित होयवाक कृपा कयल जाय।

भवदीय,

**सचिव, मैथिली परिषद,**

मुजफ्फरपुर '86.

सुश्री शेफालिका जी,

आपकी कविता देखी । अच्छी लगी ! बड़ी सजीव । बहुत नजदीक से छू गई । ट्रेन में मई अंक की कादम्बिनी और सा॰ हिन्दुस्तान लेकर बैठा हूँ । केवल एक ही कविता - आपकी ऐसी लगी जैसी मेरी बातें हो ।

फिर लिखूँगा । एक प्रार्थना है 'मृगनाभि' हिन्दी और बंगला में अलग-अलग निकालता हूँ पहले शांति निकेतन (पं॰ बंगाल) से निकलती थी अब (यहाँ से ट्रांसफर हो जाने के कारण) वाराणसी से निकलने जा रही है। संभव हो तो (अनुरोध है) एक ऐसी ही सरस गहन अनुभूति की कविता भेजें । अनुगृहीत रहूँगा ।

**राधेश्याम मिश्र**

**(कमलजीत)**

एफ.ओ., युनाइटेड कमर्सियल बैंक,

वाराणसी 3.5.'78.

महानुभाव,

सगर राति दीप जरय केर एकसठम बैसार 'कथा विप्लव' कांचीनाथ झा 'किरण' क 101 म जयन्तीक अवसर पर 01 दिसम्बर 2007, शनि दिन सांझ 6 बजे सँ व्यापार संघ भवन, सुपौल मे होयत।

एहि आयोजन मे कथा पाठ/समीक्षा/श्रवण हेतु अहाँ सादर आमंत्रित छी। एहि अवसर पर कतिपय पोथी/पत्र-पत्रिकाक लोकार्पण आ पोथी प्रदर्शनी सेहो होयत।

अपन गरिमामय उपस्थिति सँ एहि आयोजन कँ गौरवान्वित कयल जाओ।

**अरविन्द ठाकुर**

विप्लव भवन, वार्ड नं. 7

सुपौल-852131

बिहार

स्नेहशीला शेफालिका जी।

सविनय नमस्कार।

अहाँक 17.8.93क लिखल स्नहेसिक्त पत्र पाबि परम आहलादित भेलहुँ। समितिक बैसक मे भेटक संयोग आब अवश्य पाँच वर्ष धरि होयत। संभव अछि वर्ष मे दुइयो बेर भेंट होअय।

अहाँ सन भावना-स्नाता, कल्पनाशीला लेखिका ओ कवयित्री मैथिलीक हेतु एक उपलब्धि छथि। आ एहि उपलब्धिक समस्त श्रेय हमर मित्रकें छथिन जे हरद्वाराक मंदाकिनी कें हिन्दी प्रदेश सँ मोड़ि कऽ मैथिलीक आँगन मे लऽ अनलनि। अहाँक पहिल रचना मिथिला-मिहिर मे पढ़ि परोक्ष-परिचिता बान्धवीक रचना बूझि जे आनन्द भेल छल से आब यथावत् कहब तँ संभव नहि परन्तु मंडल लॉज मे अपन मित्रकें जे निवेदन कयने रहियनि तकरा सार्थक ओ सफल होइत देखि अपार संतोष भेल छल।.....

आशा अछि जे साहित्य-साधनाक क्रम निरंतर चलैत रहत- अपेक्षा-उपेक्षाक कुहेस कुज्झटिका से ओकरा झाँपब नहि। .....

हमर प्रिय मित्र स्वस्थ ओ प्रसन्न रहथि।

समस्त शुभकामना सहित,

**रामदेव झा**

कबिलपुर, लहेरियासराय, दरभंगा

*सरिपों, अपेक्षा उपेक्षाक कुहेस-कुन्झटिका सँ कतेक बेर हम दिगभ्रमित भेलौं, मुदा कलमक सिपाही (प्रेमचंद बुझवाक साहस नहि) हम छलौं इएह हमर जीवन छल-आइयो इएह सिपाही हमरा जीवन्त बनौने अछि-*

माननीया महोदया शेफालिका जी,

सेवा संस्थानक तत्वाधानमे महाकवि विद्यापतिक पुण्य तिथि सँ त्रिदिवसीय मिथिला विभूति पर्वक शुभ अवसर पर परम्परानुसारे मिथिला मैथिलीक विशिष्ट व्यक्तिकँ हुनक अवदानक लेल सम्मानित कयल जाइत अछि। अपने कँ विशिष्ट सेवाक अलोकमे अपने कँ सम्मानित करबाक निर्णय लऽ सेवा संस्थान गौरवक अनुभव कऽ रहल अछि।

एतदर्थ संस्थान परिवारक सानुनय निवेदन जे अपने कार्यक्रम पहिल दिन 13 नवंबर 2005 कऽ उपस्थित भऽ समारोहकँ समलङ्कृत करबाक कष्ट उठाकऽ अनुगृहीत कयल जाय।

स्वागत समिति अपनेक स्वीकृतिक प्रतीक्षामे रहत।

भवदीय

**वैद्यनाथ बैजू**

स्वागताध्यक्ष/महासचिव

विद्यापति सेवा संस्थान, दरभंगा

पू. भाई साहब एवं पू. भाभी जी,

चरण स्पर्श।

नववर्ष मंगलमय हो, परम सुखद हो, प्रेममय हो। पारिवारिक, सुख शांति, अमन चैन यश वैभव एवं हर्षोल्लास पल्लवित हो। दिव्य पथ दिव्य आलोक सँ आलोकित हो– यह एक छोटे भाई की शुभकामना है। आप दोनों का जो प्रेम मुझे मिला उसे हम अपनी अंतिम साँसों तक नहीं भूल पाएंगे। आप सब हमारे आदर्श हैं......

आपका ही भाई,
**प्रताप नारायण सिंह**
सरोपट्टी, सहरसा,
2.1.'97

श्रीमती शेफालिका जी,

अहाँक 17.09.93 क कार्ड । धन्यवाद !

हम अहॉक ''अर्थहीन'' शीर्षक कथा ''वैदेही'' क अगस्त-सितम्बरक अंकमे प्रकाशित कएलहुँ अछि । अंक पहुँचत । ई अंक बहरएबा मे बड़ विलम्ब भेल कारण, एकर प्रबन्धक कृष्णकान्त बाबू किछु विशेष अस्वस्थ भए गेल छलाह । चिकित्साक हेतु दिल्ली गेलाह । ओ आब स्वस्थ भए दरभंगा आबि रहल छथि । सम्प्रति अहाँ कँ अंक प्राप्त भए सकत ।

आशा अछि अहाँ मद्रास सँ फीरि आएल होएब । केहन यात्रा रहल ओ कोन रूपक ई यात्रा छल से बुझबाक उत्कण्ठा अछि । जँ सम्भव हो तँ अवश्य लिखन ।

साहित्य अकादमीसँ अपनालोकनिक बैसारक विवरणक संग किछु पोथी अहॉकँ भेटल होएत । ओहि पोथी सभ मे ''भाई वीर सिंह'' सेहो भेटल होएत जकर अनुवाद हम कएने छी ।

हमर इच्छा जे ओ अहाँ एक बेर पढ़ी । पढ़ि अपने प्रतिक्रिया स्पष्ट शब्द मे हमरा दी । ओ हमरा हेतु संबलक काज करत । हम ओकरा योगाए कँ राखब । पुनः आग्रह जे अपने प्रतिक्रिया हमरा अवश्य पठाबी ।

फणीश्वरनाथ रेणु पर लिखित विनिबन्धक मैथिली अनुवादक अनुबन्ध अहाँकँ भेटि गेल होएत । एहि काजकँ अनठेबैक नहि । मूल पोथी तँ भेटिए गेल होएत । संगहि ओकर आन-आन भाषाक अनुवाद सेहो जँ उपर कए लेब तँ अनुवाद करबा मे सुविधा होएत । अपन एहि काजक प्रसंग लिखब ।

यावत् उपन्यास लिखैत छी ताबत जे कथा लिखल भए सकए से पठाएब – ''बैदही'' अथवा 'मिथिला प्ररिक्रम' में प्रकाशनक हेतु ।

**हंसराज**
05.10.93

शेफालिका जी

नमस्कार,

अहाँक कथनानुसार अनवतरक बैसार अहींक ओहिठाम होयबाक छैक। 15/3 के संध्या 5 बजे बैसार अनवरतक हमरा लोकनि निश्चित कयलहु अछि। अहाँक ओतय। अपन सम्मति दी।

**महेन्द्र मुनि**
सहरसा कॉलेज, सहरसा

महेन्द्र जी जखन कोनो पत्र लिखैत छलाह एकदम कविताक अभिव्यक्ति मे एक बेर लिखलनि– 'हमर गाम, कविता लिखैत छी, गाम जायत छी हमरा सँ भेंट नहि करैत छी–हुनक उपालंभ एकदम ठीक छल किन्तु ओ हमर कविताक अन्तिम खंड नहि पढ़लैथ तैं तँ अभी तक स्मृति अन्हार अन्हार सन अबैत रहैत अछि जेना कोनो सेट पड़ल पड़ल घिसाय गेल होय। कोनो चित्र साफ अबैंत अछि तँ कोनो तिरछा तिरछी, कोनो घेघिआइत– सर्व नारायण सिंह कॉलेज मे बीपीएससीक परीक्षा चलि रहल छलैक। जहिना हम कॉलेज पहुँचल छलौं कि प्रिंसिपल साहब, रामबहादुर सिंह बजलैथ– आगु आगु, अहींक चर्च होइत छल। बड़ आयु अछि अहाँक मोन मे आयल जे हुनका कही अहाँ ई बात नय बाजु। विजयी एकटा चट्टान जकाँ अछि जकर नीचा मे दबल जा रहल छी–

ओहि दिन कालेज मे प्राचार्यक साक्षात्कार छल। अरबिन्द सिंह कँ प्राचार्य बनेबाक छल जकर इंटरव्यू छल। औपचारिकताक लेल महेन्द्र मुनि, जयपुररियार साहब, चौधरी जी, सुल्तान साहब, अरुण सिंह आदि कतेको प्राध्यापकगण आयल छलाह।

हम महेन्द्र जी सँ कहलौं– मेरे आंगन मे भीड़ लगी, मैं किसको कितना प्यार करुँ–

महेन्द्र मुनि तँ बड़ मस्त व्यक्ति– छुट ताहि बजलाह– नय नय शेफालिका जी, अहाँकें तँ बाजवाक चाही– मेरे अंगने मे तुम्हारा क्या काम है– समस्त वातावरण ठहाका सँ गुँजि गेल छल–

हमरा अपन आन सँ मैथिलीक प्रचार लेल दुइ तीन चीज कें बड़ महत्व बुझना गेल छल– पहिलुक– पहिलुक तँ हरि मोहन झा जीक साहित्य संसार– दोसर रवीन्द्र महेन्द्र गीतकारक जोड़ी– ई जोड़ी मैथिली भाषा कें आम लोकक मध्य लोकप्रिय टा नय लगे लैथ अपितु लोकक ठोर पर मैथिली मिथिलाक मीमांसा सहज सरल रूप मे, तुलसीक सोरठा दोहा जकाँ नय देलक।

महोदया शेफालिका जी,

रंगकर्म के सर्वांगीण विकास के प्रति समर्पित यह अनियतकालीन संचयन नाट्य विद्या के शोध पूर्ण/ उत्कृष्ट रचनाओं, नाट्य लेखों, रपटों एवं नाट्य साहित्य आदि के समुचित मूल्यांकन पर आधारित है।...

कृपया अपनी शोधपूर्ण रचनाएँ, नाट्यालेख, रंग गतिविधियों की रपट, समीक्षार्थ प्रकाशित

पुस्तकों एवं पत्र-पत्रिकाओं की दो प्रतियाँ, चार अंकों का शुल्क-पचास रुपये मात्र (प्रति अंक पन्द्रह रुपये), विज्ञापन आदि जो भी संभव हो, भेजकर कृतार्थ करें।...

आपका

**अनिल पतंग, सम्पादक,**

रंग-अभियान, बेगूसराय

श्रद्धेय!

प्रणाम!

अपनेक पत्र आ प्रतिक्रिया भेटल। दूनूक लेल आभार।

अपनेक प्रतिक्रिया सँ हम पूर्णतः आश्वस्त छी। सर्वमान्य अछि अपनेक विचार। 'सत्य:एकटा काल्पनिक विजय' उपन्यास मे माय बेटीक बीच एकपक्षीय Global Idealism जे सत्यक 215 टा रूप लऽ कें आयल अछि।

श्रद्धेय! लोक से नै बुझैत अछि। कतेक कें बुझाबी। अन्ट-सन्ट प्रतिक्रिया आबि रहल अछि। कियो थूक फेकय छथि। कियो नाक मूनय छथि। कियो-धूर ई कोन पोथि भेल ''मुदा सारस्वत निर्द्वन्द्व भऽ कें चलि रहल अछि। खेद एतबे जे मैथिली मे लिखी रहल छी एखन धरि। प्रणाम अपनेक सारस्वतक शेष दोसर पत्र मे।

**सारस्वत**

माता भवन, महेन्द्रु, पटना

6.3.'95

आदरणीय शेफालिका दीदी,

सादर प्रणाम।

आशा है आपलोग कुशल होंगी। मैं दिसंबर में ही यहाँ आ गया। चंडीगढ़ तथा धर्मशाला से एक साथ प्रकाशित दैनिक दिव्य हिमाचाल में मेरी नियुक्ति उप संपादक के रूप में हुई है। जनवरी में पटना भी गया था किंतु अस्वस्थता के कारण आपके दर्शनार्थ उपस्थित नहीं हो पाया। शेष कुशल है।...

आपका

**अरूण भगत**

दैनिक दिव्य हिमाचल,

पो.बा. नं. 14,

मुख्य डाकघर, धर्मशाला (हि.प्र.)

26.03.'98.

डॉ. शेफालिका जी,

प्रणाम।

...अपनेक पत्र प्रश्नवाचक चिन्ह ठाढ़ करैत अछि। ई चर्च मुजफ्फरपुर मे भेल रहल। दास सत्यनारायण जीक षष्ठि पूर्तिक अवसर पर हुनकर हिन्दी मैथिली कविता-कथा पर विचार गोष्ठी आयोजित भेल छल। हम श्री रेणु जी आ. डॉ. मौन जी, आदि मैथलीक प्रतिनिधित्व कयने रही। जे से अपने विशाल पाठक वर्ग अछि। एकटा हमहुँ छी। अपने कवि सम्मेलनक संचालन मे बजने रही, ओहिना मोन अछि। तें सत्ते अपने महान छी, रहबे करब। हमर सभक गौरव बनि..

**अजीत आज़ाद**
घोघर डीहा,
दरभंगा '95

हमरा मोन पड़ि गेल 1994क विद्यापति पर्व समारोहक अवसर पर दुई मास पहिने हमरा कवि सम्मेलनक संयोजक बनाओल गल छल। हमर नाम सँ सभ ठाम आमंत्रण भेजल गेल। ई प्रथम अवसर छल जे ई कार्य कोनो महिलाक द्वारा संपादित भेल। हम मर्यादाक निर्वाह करैत एकर संचालन कयलौं। मुदा, जखन हम 17.11.94क कार्यक्रम केर पैम्पलेट देखलौं तँ स्वागत, उद्घाटन,? गोसाडजिक गीत, मुख्य अतिथिक भाषण, विशिष्ट अतिथिक भाषण धन्यवाद कर्त्ता आदि सबहक नाम छपल छल। कवि सम्मेलनक संयोजनक नाम नहि जानि किएक रिक्त राखल गेल छल। ओहि पैम्पलेट मे भाग लेनहार सभक नाम सेहो छल। एहि उपेक्षित व्यवहार सँ हम बड़ आहत भऽ गेल छलौं- आ चेतना समितिक कार्यकारिणी समिति क सदस्याता सँ त्यागपत्र दऽ देने छलौं। हम सभ किछ सहि सकैत छी अपन स्वाभिमान पर चोट नहि!

शेफालिका जी,

...धूप-दीप दुर्वाक्षत-चन्दन
शुभ स्वागत-मंगल अभिनंदन...
विनयावनत...

**माहेश्वरी सिंह 'महेश'**

डॉ. शेफालिका वर्मा,
हिन्दी विभाग ए.एन. कॉलेज, पटना

महाशया,

प्रयागक प्रवासी मैथिल लोकनिष्ठ संस्था मिथिला सांस्कृतिक संगमक वार्षिकोत्सव एवं विद्यापीठ समारोह दिनांक 10 तथा 11 दिसंबर 1996 (मंगल ओ बुध दिन) के मनयवाक निश्चय भेल अछि। पिछला साल जकाँ अहु साल दू दिवसीय कार्यक्रम मे मिथिला ओ मैथिलीक अनेको

लब्ध प्रतिष्ठित विद्वान साहित्यकार ओ कवि लोकनि के सम्मिलित करबाक प्रयास अछि। एहि बेर कार्यक्रमक एक विशिष्ट आकर्षण अछ मैथिलीक दधीचिः स्व भोला लाल दास स्मृति समारोह.....

भवदीय

**डॉ. इन्द्र मोहन लाल दास**

इलाहाबाद विश्वविद्यालय

20.11.96.

शुभश्री वर्मा जी,

सादर प्रणाम।

आपकी मंगलकामना मेरे लेखन कार्य में चार चाँद लगा देती है... पुरानी स्मृतियाँ तरोताजा हो जाती है। आपका 10/4/96 का पत्र पढ़ गया। ''बार-बार याद आती है मुझको मधुर याद बचपन की'' इसमें सोने में सुहागा की आपकी मंगल पंक्तियाँ- बिहँसो सपनों के गुलाब नए साल की डाली में जीवन में नई रोशनी भरती है- एक और आग्रह मैं अपना नया कहानी संग्रह आपके पास भेजना चाहता हूँ। मेरी इच्छा है आपके कर कमलों द्वारा मेरी कहानियों पर दो शब्द लिखें जाए आप बिल्कुल नए दृष्टिकोण से लिखती हैं.......... आज मकर संक्रांति पवित्र पर्व जिसे गुजरात में उत्तरायन और पतंगोत्सव के रूप में मनाया जा रहा है। यह पर्व पतंग की तरह कटे जीवन में भी खुशियाँ भर देता है..........

**डॉ. सूर्यदीन यादव**

नडीआद खेड़ा गु.ज.

14/1/99

*कतेक नीक लिखलनि सूर्यदीन जी- ''पतंग की तरह कटे जीवन में भी खुशियाँ भर देता है- ''ठोर पर गीत आव जायत अछि-मेरी जिन्दगी है क्या एक कटी पतंग है- किन्तु नहि----*

आ० शेफालिका जी,

बंधु, आलेख संवाद (दिल्ली) में सूचना अछि, 'अहाँक नागफाँस' उपन्यास आयल अछि। सूचना सँ प्रसन्नता भेल। कोन भाषा मे ई कृति अछि? संभव जे मैथिली मे हो। अहाँ सक्रिय छी आ उत्साहक संग सृजन कार्य में लागल छी से सूचना होइत अछि। हम गाम मे छी। मंद चलि रहल अछि समय। थोड़ समय पढ़वा-लिखना मे दैत छी। सफर पसिन्न नहि। गाम मे महत्वाकांक्षा पल्लवित नहि होइत छैक। सुविधा मे होइ तँ अपन समाचार लिखब सादर।...

**जीवकांत**

5/8/95

स्नेहमयी,

अपनेक कार्ड, पत्र आ कविता भेटल। सभ किछु पठएबा लेल अशेष साधुवाद। अपने 7-8 फरवरी धरि दिल्ली आबि रहल छी, ई जानि अतिशय प्रसन्नता अछि। हम एखनहि सँ अपनेक प्रतिक्षा क' रहल छी। ओहि समय मे हम एतहि रहब। डॉ. गगोश गुंजन जीक डेरा सेहो। JNU Campus क लगे छनि.. अपन एतए अएबाक सूचना आ समय कहि दिअनि तं हम ओहि समय मे डेरहि पर प्रतीक्षा करब। ओतय सँ समाद हमरा भेटि जायत। फोन 1 बजे सँ 5 बजे धरि छोड़ि कए करवनहुँ क' सकैत छिअनि। शेष कुशल। आशा अछि अपने प्रसन्न होयब-

कावेरी जेएनयू 18/1/93
**देव शंकर नवीन**

प्रिय शेफालिका जी,

स्नेह नमस्कार,

........................ आपकी असाधारण प्रतिभा और सारस्वत साधना से अवगत होकर प्रमुदित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। आप जैसी सरस्वती स्वरूपा बहनों पर गर्व का अनुभव होता है। आपकी कीर्तिपताका और ऊँचे लहराये, यही कामना है। मैं बहुत साधारण प्रतिभा का आदमी हूँ। लोग यों ही मेरी प्रशंसा कर मेरी उत्साहवृद्धि किया करते हैं। परिवार में सबों को मेरी ओर से यथायोग्य रहेंगी।

सविनय आपका
**हिमांशु श्रीवास्तव**
21/1/93

आदरणीया शेफालिका जी,

सादर प्रणाम।

हम पी.एचडी. (हिन्दी) में 'मैथिली का आधुनिक गल्प साहित्य' पर शोध करऽ जा रहल छी। ई शोध यू.जी.सी. के सीनियर रिसर्च फैलोशिप के तहत हम करब। अहि मे अहाँक कथा-संग्रह 'एकटा आकाश' के सेहो सम्मिलित कऽ रहल छी मुदा प्रकाशक तथा प्रथम संस्करण वर्ष के अभाव में हमरा synopsis प्रस्तुत करबा में परेशानी भऽ रहल छी। ते अहाँ सँ अनुरोध अछि जे घूरती डाक सँ प्रकाशक तथा संस्करण वर्ष के जानकारी भेजी संगहि संग्रह हम कोना प्राप्त कऽ सकैत छी सेहो लिखबाक कष्ट करू-

**अहींक बन्दना**
महानदी एक्सटेंशन
जे.एन.यू., नई दिल्ली-67
17/4/98

श्रीमती वर्मा जी,

नव वर्षक शुभकामना पत्र सँ आह्लादित छी। गत वर्ष एहि समय मे हम दिल्लीक अस्पताल मे जीवन-मरणक नाप-जोख करैत रही। अहीं सभ सन स्नेही... स्वजनक शुभ कामना सँ जीबि गेलहुँ। जे मनोबल अहाँ सभ देलहुँ से जीबाक कारण बनल, से एखनहु स्वास्थ्य लेल आधार अछि। जाड़ मे किछु लटपटा गेल रही, आब ठीक छी। खोज खबर लैत रही, सैह अनुरोध। अहाँ सबहक स्नेह संबल प्राप्त होइत रहय, यैह कामना अछि। मंगलकामनाक संग अहांक।

**मोहन भारद्वाज**
पटना,
20/11/96

शेफालिका जी को सादर समर्पित

...आँखों का आँसू हूँ कि उतर आऊँगा,
यादों का तसव्वुर हूँ कि बिखर जाऊँगा
दिल तो क्या रूह भी तो कुछ चीज नहीं,
दामने प्यार विछा दे कि संवर जाऊँगा।...

**कूलभूषण कायस्थ**
धर्मशाला

सम्मानीयया शेफालिका जी,

25.11.94 के लिखल अहाँक पत्र भेटल हमरा प्रसन्नता भेल जे अहाँ हमर पत्रक उत्तर देलौंह।

हम वैदेही एवं देसकोस के अपना रचना भेज रहल छी। एहि बीच मे 6 दिसंबर के हमर लिखल नाटक हमारे निर्देशन मे गुवाहाटी मे सफलता से मंचित भेल।

मार्च मे हम गाम जायब अपनेक सँ भेंट करब।

पत्राचार राखब।

**दिनकर**
सहायक संचालक
पूरब कम्यूनिकेशन्स,
गुवाहाटी
8.12.'94

आदरणीया दीदी,

अहाँ अवगत छी जे मैथिली कथा-गोष्ठीक आयोजन तीन मास पर अनवरत होइत रहल अछि। विगत पटना कथा-गोष्ठी में लेल गेल निर्णयक अनुसार आगामी गोष्ठी दिनांक 09.01.99 (शनि) कें बलाईन मे आयोजित भऽ रहल अछि। एहि गोष्ठी मे सगर राति अजस्त्र रूप सँ कथा पाठ आ तकर समीक्षा होयत।..........

निवेदन जे अवश्य पधारवाक कृपा करब।

संयोजक
**पद्मसम्भव**
'98.

आदरणीया शेफालिका जी,

चरण स्पर्श,

'वैदेही' पत्रिका में आपका नाम छपा देखकर मुझे याद आया कि आप शायद पिंकी की मम्मी होंगी। तफ्तीश करने पर पता चला कि मेरी सोच सही है।

वैसे मैं 'सर्जना' की संपादिका नहीं हूँ किन्तु फिलहाल सह-संपादिका के रूप में कार्य कर रही हूँ। 'सर्जना' की एक प्रति मैं आपकी सेवा में भेंट कर रही हूँ। अगले अंक में आपकी रचना प्रकाशित करना चाहती हूँ। साथ ही पत्रिका को दीर्घायु बनाने में आपका सहयोग एवं आशीर्वाद की आवश्यकता है।

'सर्जना' के संबंध में अपनी प्रतिक्रिया अवश्य प्रेषित करेंगी।

विशेष अन्य पत्र में, पत्राशा में-

**मौसमी बनर्जी**
दरभंगा

शेफालिका जी,

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग का 45वाँ अखिल भारतीय अधिवेशन और बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन का 75वाँ स्थापना वर्ष समारोह ''अमृत महोत्सव'' का उद्घाटन दिनांक 14 मई, 1993 को संध्या 5 बजे होना निश्चित है।

अत: आप से अनुरोध है कि उक्त समारोहों के निम्नलिखित कार्यक्रम में सम्मिलित होने की कृपा करें।

निवेदक
**रामदयाल पांडेय**
स्वागताध्यक्ष
बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन, पटना
8.5.'93

प्रिय श्रीमती शेफालिका जी,

अहाँक 18 अगस्तक लिखिल स्नेह सँ सराबोर पत्र भेटल। एडवाइजरी बोर्डक बैसकक हमरो अनुभव बहुत नीक रहल। अहाँ लोकनिक सहयोग सँ हमरा लोकनि मैथिलीक विकासक कार्य को सफल हैब से आशा अथि।

...30 जुलाईक बैसकक बाद अहाँ जतय ठहरल रही, ततय चल गेलहुँ, आ तें अधिक गप नहि नहि भऽ सकल। एहिबेर 12 अगस्तक एक्जक्यूटिभ बोर्ड मे निर्णाय भेटलक अछि जे आब एडभाइजरी बोर्डक बैसक वर्ष मे एक बेरक बदला मे दू बेर हेतैक। मुदा एक बेर नई दिल्ली मे हेतैक आ दोसर बेर अपना-अपना राज्य मे कतहु हेतैक। ते. आब बैसक के एकटाक हेबाक दू बेर कें अवसर भेटत। दोसर बैसक दरभंगा अथवा पटना मे हेतैक।

हम अहाँक कोमल स्वभाव आ शालीन प्रकृति सँ बहुत प्रभावित भेल हूँ। अहाँ अपन लेखन कार्य निरंतर करैत रहू। जीवन के स्थायीत्वक लेल अहाँ कें सभ सुविधा अछि। नीक निवास आ सुन्दर परिवेश मे रहैत छी। जे साहित्यिक निर्माणक लेल अत्यंत आवश्यक छैक।

हम पटना आयब तँ अहाँक भेंट अवश्य करब। हम पटना आयब लागब तँ जें संभव हेतैक तँ अहाँ कें पूर्व सूचित कऽ देब।

अहाँक सस्नेह

**सुरेश्वर झा**

सदस्य साहित्य अकादेमी

26.08.'93

*रामदेव झा बजैत छलाह हम हिनका हिन्दी सँ मैथिली मे आनलौं तँ सुरेश्वर जी लगले जबाब दैत छलाह- हम हिनका साहित्य अकादेमी मे अनलौं.....*

स्नेह प्रवर शेफालिका एवं ललन जी,

नव वर्ष अपने सभ लेले अतीव सुखमय हो। भगवती सँ प्रार्थना जे अपने सभक यश, प्रतिष्ठा दिनानुदिन आगु बढ़य- इति.....

**उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास'**

पटना '93

सेवा में,

डॉ. श्रीमती शेफालिका वर्मा,

पटना।

डॉ. श्रीमती वर्मा,

साहित्य अकादमी दिल्लीक मैथिली परामर्शी मण्डलक सदस्याक रूप मे पाँच वर्ष धरिक

लेल अपनेक मनोनीत सँ, सीमितिक प्रत्येक सदस्य आह्लादित अछि।

अपनेक लेखनी सँ मैथिली साहित्यिक भंडार तँ भरिते अछि, आब अपन न्यायोचित मार्गदर्शन एवं कालबद्ध प्रोगाम सँ साहित्य अकादमीक माध्यमे, मैथिली साहित्य अन्यन्य समृद्ध भारतीय भाषाक समकक्ष समादृत हैत, ताई लेल अपने कोनो कसरि नहिं राखव-से विश्वास अछि।

हमरा लोकनिक बधाई स्वीकार की।

जय मैथिली।

अपनेक

**हितनाथ झा**

इलाहाबाद बैंक

हजारीबाग 01.07.'93

शेफालिका जी,

दिनांक 15, 16, 17 एवं 18 जून, 1994 हिन्दी एवं मैथिली प्राइमर की समीक्षा के लिए एक कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है। आपसे आदर आग्रह है कि इस कार्यशाला में भाग लेकर जनशिक्षा के कार्य में सहयोग देने का कष्ट करें। इसके लिए मानदेय देय होगा।

विश्वासभाजन,

**डॉ. दिनेश्वर लाल 'आनन्द'**

बिहार राज्य वयस्क शिक्षा साधन केंद्र, पटना

शेफालिका जी,

'प्रवासीक' जून अंक मे, जे जुलाई 19-10 कें युवालेखन एवं रजत जयन्तीक अवसर पर प्रकाशित हैत-अहाँक कथाक प्रतीक्षा अछि। हमरा 30 जून सँ पहिने पहुँचि जाय- से निवेदन।

कथा दिशाक महाविशेषांक हेतु पत्र जाइत अछि। 30 जून से पहिने चाही। युवालेखन रजत जयन्ती 19-10 जुलाई पटना मे विद्यापति भवन मे मनाओल जायत। अहाँ दूनू दिन आवु कोनो व्यस्तता नहि राखी। सम्पूर्ण सहयोग-समितिक आवश्यकता अछि।

**प्रभास कुमार चौधरी**

जीवन बीमा निगम, पटना

आयुष्मती डॉ. शेफालिका वर्मा जी,

आशीर्वाद।

...सपरिवार सानंद होयब। अहाँक दिनांक 17 क बधाई पत्र पाबि खूब नीक लागल। बहुत दिनक बाद अहाँक समाचार भेटल। अहाँक साहित्यिक क्रियाशील प्रगति जानि अह्लाद भेल हमर

शुभकामना ग्रहण करू। साहित्य सम्मेलनक अध्यक्ष पद ''मानद'' पद छैक। पटना मे सदैत खन रहबाक प्रयोजन नहिं छैक। ओना सम्मेलन भवन, कदम कुआँ मे अतिथिशाला एवं कार्यशाला छैक। पटना जायत अबैत त रहैते छी। प्रायः मास मे एक बेर जरूर,...... भेंट करबाक इच्छा बनल अछि. ....कोना..... लिखब-

अहाँ सभक

**डॉ. विष्णु कुमार झा 'बेचन'**

पूर्व प्रतिकुलपति, भागलपुर वि.वि.

आदरणीय दीदी जी!

सादर नमन।

आदरणीय वर्मा जी के आकस्मिक निधन से हम यहाँ बडी उद्विग्नता का अनुभव कर रहे हैं। आपके लिए तो यह मर्मभेदी दुःख कितना रहा है, इसका यत्किंचित् अनुमान ही लगा सकते हैं। अनुकूल, गुणी जीवनसाथी का अचानक साथ छोड़ जाना कितना वेदनाजनक होता होगा, सोचकर भी मन बैठ जाता है। संसार में यही विचित्रता है। यह सदा संसरण-परिवर्तनशील है, जो थे अब नहीं हैं, जो चाहें वे भी कुछ दिनों बाद नहीं रहेंगे। आप मुझ से इसकी वास्तविकता को अधिक समझाती हैं। कृपया धैर्य मत छोड़ियेगा। पुत्र-पुत्रियों एवं अन्य छोटे-बच्चों को आपके आशीर्वाद एवं सान्निध्य की आवश्यकता है। पुत्रों में वर्मा जी का अंश रूप देखकर मन को समझाने का प्रयास कीजिएगा। मुझे सदा मुस्कुराते हुए आपके मुख में तैराती शून्यता, का मानो यहीं से दर्शन हो रहा है।

ईश्वर आपको इस महती वेदना को सहने की शक्ति एवं धैर्य प्रदान करें। एवं आपकी सन्तति एवं बन्धु-बान्धवगण वर्मा जी के वियोग-दुःख को भुलाने में सहायक हों यह प्रार्थना करते हुए वर्मा जी की दिवंगत आत्मा की परम शान्ति की कामना परमात्मा परमेश्वर से करता हूँ।

आपका

**अनुजतुल्य**

केदार नाथ शर्मा

संस्कृत विभाग, जम्मू विश्वविद्यालय

24.12.2001

प्रिय शेफालिका जी,

की लिखू, से फुरवे ने करैए। शोकसँ मर्माहत छी। हम किछु दिन पहिने सुनने छलहुँ-ई शोक समाचार - 'ललन जी नहि छथि- कोनो श्रेष्ठ व्यक्तिक मुँह सँ। विश्वास नहि होइत छल-मुदा, बुझलहुँ ने - अधलाह समाचार फूसि नञि होइत छैक। अहाँ पर सदिखन मोन लागल रहैत अछि-

कोना हैब.....।

हमरा सहरसाक साँझ - ललन भैयाक स्वर..... 'अभी कुछ प्यार बाँकी है.....' - की, ई शेष भऽ सकैत छैक? पुनः प्रयोग मे, अमरनाथ झा जन्मशती वार्षिकीक अवसर पर अपना सभक भेंट घाँट- से सभ एतेक जल्दी ओ छोड़ि कऽ चल गेलाह?

अहाँ दऽ ओ लिखने छथि जे जहिना, कोमल छी, तहिना अचल..... भगवान अहाँक अटूट सामर्थ्यकँ बनौने रहथु। अहाँक वेदना मोती बनिकऽ आखर बनय, किएक तँ अहाँ पर दोबर दायित्व अछि जे धीया-पूता अहींक आँखिमे अपन पिताक छवि देखऽ चाहत, तँ अपने आँखि नोरे भरल नहि राखी। श्री 108 जगदम्बा पूरा घर कँ शोक सहबाक सामर्थ्य देथु।

अहींक

**(नीरजा रेणु)**

03.01.2002

श्रद्धया शेफालिका जी,

प्रणाम,

हमरा सतत प्रतीत होइत रहल जे अहाँ सभ सँ दूर रहितहुँ हम ओहि सारस्वत परिवारक सर्वाधिक निकट छी। प्रातः स्मरणीय पूज्य भायक प्रेरणामय व्यक्तित्वहिं तँ हमरासभक सम्बल रहल। ''कोशी कातक गाम बरू हो उजरल, मुदा गाम केर लोक सभक अछि कीर्ति चहुँदिसि पसरल'' - हुनकहि पाबि हम ई पाँति बॉचैत छलौं। ओ हमरा छोड़ि गेलाह - ई अकस्माते जखन ज्ञात भेज तँ हतप्रभ रहि गेलौं। अपना पर तामस भेल-कारण विश्वविद्यालयक संघर्षमे हम एना अपनलोकसँ वेसुध रहलौं - तकर भान ओहि क्षण भेल।

हम पटना अहाँक ओहिठाम गेल छलौं। अहाँ दिल्ली प्रवासमे रही। हम अहाँक व्यथित मनकें जनैत छी जे सतत् सारस्वत - साधनामे लीन अहाँ सदृश विदुषी कोना हमरा सभक लेल, आत्मज-आत्मजाक लेल, समाज साहित्य आओर संस्कृतिक, रक्षार्थ जीवैत - प्रेरणामयी बनल रहलीह।

सत्य प्रकाशक माँ बड़ व्यग्र छथि अहाँक हेतु। हमर परिवार सतत् अहाँक आज्ञाक पालन करबाक संकल्प सँ भरल अछि। कखनो - कोनो क्षण अपने कोनो आदेश प्रदान करबैक हम सभ कृतार्थ होयब। सभक कुशल-समाचार लिखबाक कृपा करबैक।

माँ तारा सँ अहाँक सपरिवार कुशलताक आकांक्षी।

**मनोरंजन झा**

स्नातकोत्तर विभाग (मैथिली) सहरसा

2.1.2002.

*उजड़ल गामक अक्षय कीर्ति, अशेष गौरव गान नेने एहि पत्रक लेखक मनोरंजन नहि रहलाह- ई सोचनाइयो कष्टकर प्रतीत होइत अछि-*

आदरणीय श्रीमति शेफालिका वर्मा जी,

अखिल भारतीय ''संस्कार भारती'' पटना में प्रथम बार त्रिदिवसीय ''तयोदश राष्ट्रीय कला साधक संगम'' आयोजित कर रही है। कार्यक्रम का उद्घाटन स्थानीय महाराणा प्रताप भवन, आर्य कुमार रोड संध्या 5 बजे होगा।

इस अवसर पर एक ''काव्य संध्या'' भी आयोजित है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करेंगे डॉ. ब्रजेन्द्र अवस्थी (बदायूँ) और ''संस्कार भारती'' के कवि प्रतिनिधि भी इसमें भाग लेंगे। इस काव्य संध्या में हमने अपने राज्य के प्रमुख कवियों को भी आमंत्रित किया है। काव्य संध्या रात्रि 8 बजे से प्रारम्भ होगी।

आप हमारे राज्य के एक विशिष्ट कवि हैं। हमारी आकांक्षा है कि इस अखिल भारतीय मंच को आप सुशोभित करें एवं अपने काव्य-पाठ से इस काव्य संध्या को महिमान्वित करें।

आपके सहयोग को ''संस्कार भारती'' परिवार सदैव स्मरण रखेगी। आशा है कि आप अपनी स्वीकृति शीघ्र देंगी।

भवदीय,
**(अभिजित काश्यप)**
कार्यक्रम संयोजक,
फोन-350797
684523

महाशया (Dr. Verma)

मेरा नाम महेश झा है और सन 1950 साल (Since 1950) से मुझे हिन्दी में पढ़ने लिखने की आदत छूट गई है।

मैं इन दिनों में Why Maithili Language and Mithila State? (क्यों मैथिली भाषा और मिथिला प्रान्त) के विषय पर अध्ययन कर रहा हूँ। इस विषय पर मुझे खबर लिख सके तो धन्यवाद।

आपका
**महेश झा**
Jan 11 '95
लिंकन, USA.

आदरणीया शेफालिका जी,

......कथा पाठ आ परिचर्चा) केर 54म आयोजन दिनांक 09 अप्रैल 2005 के मैथिली लोक गायक महानायिका बहुरा गोटिनक माटि बेगूसराय मे होयबाक निस्तुकी भेल अछि। अपने के ई अगाउ जन तब दैत हमरा सभकें प्रसन्नताक बोध भ' रहल अछि। संगहि आग्रह जे उक्त अवसर पर पधारि हमरा लोकनिक उत्साह के बढ़बैत मैथिलीक एहि कथा प्रवाहकें गतिमान बनयबा मे अपन योगदान दी।..........

मेनका मल्लिक
संयोजन सहयोग

**प्रदीप बिहारी**
संयोजक

शेफालिका जी,

हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग का 54वाँ अखिल भारतीय अधिवेशन और बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन 75वाँ स्थापना वर्ष समारोह 'अमृत महोत्सव' का उद्घाटन दिनांक 14 मई 1993 को संध्या 5 बजे होना निश्चित है।

अतः आपसे अनुरोध है कि अंत समारोह में सम्मिलित होने की कृपा करें।

निवेदक
स्वागताध्यक्ष बिहारी हिन्दी साहित्य सम्मेलन,
पटना-815193.

एहि अवसर पर नरेश मेहता हुनक पत्नी सँ एतेक एकात्मकता भऽ गेल शुभ्र श्वेत वस्त्रधारी नरेश मेहताक अन्तरम जेना हुनक मृदुल व्यक्तित्व पर झलकि रहल छल-

प्रिय दीदी शेफालिका वर्मा जी,

सादर चरण स्पर्श।

समकालीन भारतीय साहित्य पत्रिका के अंक (नवंबर-दिसंबर 2006 में आपकी कविताएँ 'सार्थकता' व 'प्रसंग चाहे जो हो' पढ़ी। पढ़कर बहुत-बहुत अच्छी लगी। बधाई। बहुत दिनों बाद इतनी अच्छी कवताएँ पढ़ने को मिली। साधुवाद। आपकी कविताएँ जहाँ संवेदनशील, मार्मिक व यथार्थपरक थी वहीं मन को भी बहुत गहरे तक छू गयी। संबंधों की नींव आज स्वार्थ पर टिकी हुई है। आज के इस आधुनिक युग में जिस व्यक्ति से हमारा स्वार्थ सिद्ध होता है, हम उसके आगे पीछे कुत्ते की तरह दुम हिलाते हुए चलते हैं। आज, देश में एक भी सीता सुरक्षित नहीं है। आज, आस-पड़ोस व परिवार में ही करोड़ो रावण, राम का मुखौटा लगाए घूम रहे हैं। इतनी अच्छी कविताओं के लिए, एक बार फिर बधाई व साधुवाद। दीदी, आगे भी इतनी अच्छी कविताओं की प्रतीक्षा रहेगी। आपकी कौन-कौन सी पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं, पत्र द्वारा सूचित करें अगर, अपनी कोई

पुस्तक भेंट स्वरूप भेज सकते तो भेज दें। दीदी, आप तो मुझे आज की महादेवी वर्मा लगती हैं आपकी कविताओं को पढ़कर ऐसा लगता है जैसे महादेवी वर्मा ने आपके रूप में नया जन्म लिया हो। शेष शुभ आपके पत्र व पुस्तक की प्रतीक्षा रहेगी।

आपका छोटा भाई

**बलजीत**

गढ़वाल, हिसार, हरियाणा

11.1.2007.

प्रिय शेफालिका जी,

साहित्य अकादेमी और मिथिला सांस्कृतिक परिषद, जमशेदपुर के संयुक्त तत्वाधान में 'मैथिली उपन्यासक विकास' विषय पर 23-25 मार्च 2007 तक जमशेदपुर में एक त्रिदिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है।

आपसे अनुरोध है कि आप 25 मार्च 07 को अपराहन 2 बजे आयोजित पंचम सत्र की अध्यक्षता करने का अनुग्रह करें। आकदेमी इसके लिए मानदेय के रूप में आपको रु. 1000/- की राशि प्रदान करेगी। ...........

आपसे अनुरोध है कि लौटती डाक से अपनी स्वीकृति और अपना बायोडाटा हमें भेज दें अकादेमी बाहर से अपने प्रतिभागियों को नियमानुसार द्वितीय श्रेणी ए.सी. रेल भाड़ा/ बस भाड़ा प्रदान करेगी। आपके आवास एवं भोजन की व्यवस्था **मिथिला सांस्कृतिक परिषद, जमशेदपुर** द्वारा की जाएगी। आयोजन स्थल और आवासीय योजना के बारे में हम आपको बाद में सूचित करेंगे।

शुभकामनाओं सहित,

आपका

**अग्रहार कृष्णमूर्ति**

सचिव, साहित्य अकादेमी,

नई दिल्ली।

आदरणीया शेफालिका जी,

शुभकामना (2000)

तन में हो श्रम-शक्ति प्रबल, संकल्पन सुदृढ़ हो मन में!

सुख - समृद्धि - शांति की वर्षा हो प्रतिपल जीवन में!!...

रामपुनीत ठाकुर तरूण

तिरहुत अकादमी, समस्तीपुर

प्रिय शेफालिका जी,

नव वर्ष/ नई शती/ नई सहस्राब्दी की मंगल कामनाओं के लिए आभारी हूँ । नई शती में हम सब मिलकर देश को न सिर्फ दुर्दशा से उबारें, एक स्वस्थ, सुसंस्कृत, समृद्ध, शालीन और संवेदनशील राष्ट्र के निर्माण में भूमिका निभाएँ – यही शुभ कामना है। आपके और आपके परिवार के लिए कृप्या मेरी मंगल–कामनाऐं स्वीकार करें। .....

आपका

**( डॉ॰ प्रभाकर श्रोत्रिय )**

निदेशक/संपादक

भाषा परिषद, कार्यालय

शेक्सपीयर सारणी

कलकत्ता 18 जनवरी 2001

आदरणीय महोदया,

जय श्री चित्रगुप्त।

साहित्य के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान के लिए आपको 'डॉ. मुरलीधर श्रीवास्तव शेखर' सम्मान, 2007 से सम्मानित करने का निर्णय समिति द्वारा लिया गया है। यह सम्मान आगामी श्री चित्रगुप्त पुजनोत्सव के अवसर पर 11.11.07 को आयोजित 'सांस्कृतिक संध्या' में माननीय मुख्यमंत्री श्री नीतिश कुमार के हाथों प्रदान किया जाएगा।

अतः विनीत आग्रह है कि आप उक्त अवसर पर पधार कर आयोजन को गरिमा प्रदान करें।

सादर।

भवदीय,

**( कमल नयन श्रीवास्तव )**

प्रधान सचिव, चित्रगुप्त संस्थान,

पटना.........

सम्मान्य डॉ. शेफालिका जी,

मैथिली–भोजपुरी अकादमी, दिल्ली दिनांक 28, 29, मार्च 2009 को दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन दिल्ली में (स्थलः सी.सी.आर.टी. व्याख्यान कक्ष–2) प्लॉट 15–ए, सैक्टर–7 रामपुल चौक के पास, द्वारका, नई दिल्ली–110075 करने जा रही है।

आप दिनांक 29.03.09 को प्रथम (10 बजे) सत्र में समकालीन रचनाकारक रचनात्मक दायित्व बोध (भाषा साहित्यिक संदर्भ में) विषय पर वक्ता के रूप में सादर आमंत्रित हैं। दूरभाष

पर आप की स्वीकृति प्रदान हो चुकी है। धन्यवाद! संगोष्ठी में उपस्थिति की एवज़ में अकादमी द्वारा स्वीकृत मानदेय का भुगतान कार्यक्रम स्थल पर किया जायेगा।

सादर

**( डॉ. रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव )**
मैथिली भोजपुरी अकादेमी,
राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार।

रवीन्द्र जीक पत्र देखि एकदम से मोन पड़ि गेल, ओहि दिन द्वारकाक सेमिनार मे भाई बैद्यनाथ विदित जीक कहल बात हमरा दिसि संकेत करैत ओ रवीन्द्र जी से कहलनि–लिय अहाँक एकेडेमी लेल एकटा रत्न दिल्ली आबि गेलीह, हम अकचका गेल छलौं, मुदा ओ हमर प्रतिक्रिया देखवाक लेल ठाढ़ नै रहलैथ, हमरा किछ बुझि मे नै आयल; मुश्किल से दस–पन्द्रह दिन भेल होयत हमरा दिल्ली शिफ्ट भेनाय ई पत्र जखन हमरा भेटल तँ विदित जीक बात मोन पड़ि गेल–विशालकाय व्यक्तित्व जकाँ हुनक हृदय सेहो विशाल छल, बाहर भीतर एक समान। ई हम अनुभूत केलौ ऊपर से निर्विकार मुदा, अंदर मे स्नेह–सागर छलकैत। एक दिन साहित्य अकादेमी मे ओ गुनाशेकेरण जी लग कह लगलाह। शेफालिका जखन मंच पर अबैत छलखिन हमरा सब के मोन होयत छल एक बेर दृष्टि उठाय हमरा दिसि ताकैथ आ जकरा दिसि ई ताकि दैथ ओ निहाल भ जाय .....फेर हमरा दिसि तकैत विदित भाई बजलाह अहाँ कतबो पैघ भ जायब, मुदा हमर छोट बहिने रहब। हम सहरसे से अहाँके अपन छोट बहिन मानैत छलहुँ।

मोन पड़ि आयल अपन सहरसा, कतेक बड़का बड़का कार्यक्रम होइत छल सहरसा क रसमय भूमि पर! एक बेर राजकमल जयंतीक भव्य आयोजन भेल छल जाहि मे समस्त देश के, नेपाल के मूर्धन्य कवि सब आयल छलाह... राजकमलक फोटो केर बैज बनल छल जे हमर सबहक कान्ह पर साटल गेल छल, सम्मेलनक अंत मे ओहि बैजक पाछु हम सब एक दोसराक हस्ताक्षर नेने छलौं, देने छलौं.....

ओहि आसपास सुपौल से रामृकष्ण झा 'किसुन' जीक पत्र आयल छल।

सौभाग्यवती शेफालिका,

.....अहाँक कथा कविता सब पढैत रहैत छी, सुनैत रहैत छी....अपना घर के बच्चा के आगू बढैत देखि केकरा खुशी नै हेतैक... हमर आशीर्वाद अहाँक संग ऐछ.....
अहींक अप्पन...
किसुन .....मुदा कोनो संकल्प पत्रिका मदे ओ लिखने छलाह से सब उड़ि गेल। ओही समय हम सब फौन्टेन पेन, कलम, दवात से लिखैत छलौं जे समयक संग उड़ि जायत छल.....
फेर मायानंद मिश्र केर पत्र, पटना रेडियो स्टेशन से...

शेफालिका,
खूब खुश रहू...
अहाँक एकटा कथा पाठ रखने छी रेडियो मे, मुदा हम पता अहाँक पिता केर देने छी-90, श्री कृष्ण नगर के...अहिठाम आबि एहि कार्यक्रम मे भाग लिय, बाद मे हम सहरसा क पता से कांट्रेक्ट भेजब... अहाँक प्रतीक्षा रेडियो स्टेशन मे करब।
शेष शुभ...मायानन्द, रेडियो स्टेशन, पटना
ई सब पत्र नहि हमर भविष्यक न्यों छल। तखन बिहार मे एकेटा रेडियो स्टेशन छल पटना मे। बाद मे दरभंगा रेडियो स्टेशन बनल ते सहरसा दरभंगा मे चलि गेल...
आदरणीया शेफालिका जी,
.....अहाँक कथा रक्त संबंधक अग्नि परीक्षा पढ़लौं.... हम दुनू बेकैत रोमांचित भ उठलौं... एतेक सजीव रूपे संबंधक चित्रण केने छी... सिहरि गेल छलौं... अपन समाज मे सब ठामक चित्र देखा पड़ै लागल... अपने दरभंगा आऊ ते हमरा ओते जरूर आऊ...हमर सौभाग्य होयत.....
अपनेक
शंकर झा,
दरभंगा

माननीया शेफालिका जी,
प्रणाम,
अपनेक कथा सब मिथिला मिहिर मे लगातार पढ़ि रहल छी। हम सहरसा जरूर आयब। हमरा दुई टा भगवती केर दर्शन केनाय ऐछ। भगवती उग्रतारा आ भगवती शेफालिकाक
.....नवीन चन्द्र झा
दरभंगा

... हम लाज से भरि गल छलौं...मुदा जखन दरभंगा गेलौं ते शंकर जी ओतय आ नवीन जी दुनू ओते गेल छलौं...ओ अतिथि सत्कार मिथिला केर जे विश्व मे अन्यत्र दुर्लभ ऐछ, आइयो मोन अछि के आह्लादित कै दैत अछि। सुमन जी, मिहिर जी, अमर जी, हंसराज सोमदेव, रामानंद रेनू, साकेतानंद, हरिश्चंद्र झा, नीरजाक पिता आदि कतेको नाम ऐछ...
सहरसा हमर अपन घर छल, हमरा आगु बढ़ेवा मे ओ सब से आगू छल। तकर बाद जे आत्मीयता हमरा दरभंगा मे भेटल... जखन नवीन जीक बदली सहरसा भ गेल ते सब से पहिने मनोरंजन भाई क संग हमरा से भेट कर आयल छलाह... हम ते किछ नै छलौं, किछ नै छी। एम्हर हाल मे अचानक एकटा पत्र आयल।

आदरणीया शेफालिका जी,
प्रणाम।

.....हमरा अपनेक आत्मकथा किस्त किस्त जीवनक 6 प्रति चाही। हमरा लाइब्रेरी लेल जरूरी ऐछ। अपने से आग्रह जे ओकरा जतेक जल्दी होई भेज देल जाई...अपनेक ओकर मूल्य भेटि जेतैक...ओहि पोथिक बड नाम सुनने छी...अपने से भेंट करवाक सेहो प्रबल इच्छा ऐछ...अपने हमरा सबहक गौरव थिकहूँ।

स्नेहाधीन
मदन मिश्र
अध्यक्ष, मैथिली विभाग
नीतीश्वर महाविद्यालय, मुजफ्फरपुर

जखन हुनका पोथी भेटी गेलिक ते ओ ओकर पेमेंट लेल बेहाल 5-6 मास क बाद जखन हमरा पेमेंट भेटल ओहि अनजान व्यक्ति के एतेक सिनेह कोना हमरा से भ गेल छलैक... शेफालिका जी हम नै बूझैत छलौं जे ई छोट सन काज एतेक भारी भ जायत... हमरा हंसी आइब गेल छल...सरकारी काज एहिना होयत छैक।

आदरणीय बहिन,

मिहिरक 13 मार्च क अंक मे आयल अपनेक कथा- 'रेत आरेत' पढ़वाक सुयोग भेटल। अपनेक पूर्व प्रकाशित रचना सभ जकां इहो बेस रूयल-तदर्थ हार्दिक धन्यवाद!

कथाक नायिका-एकटा भावनामयी त्यागमयी आदर्श मैथिल ललनाक गंगा सन पवित्र रूप-भाभी.........सत्ते, नहि बिसरायत कहियो भाभीक ओ निष्कलुष छवि। ओहिना, जहिना 'कंपैत कालक ठहार' औखन मानस-पटल पर अंकित अछि।

'........ओह! कतेक भावनामयी छी अहाँ! लगैछ, ईश्वर अहाँकँ, अहाँक मोन-प्राण कँ कोनो रेशमक मोलायम, सुकुमार, 'मासूम' तारक ताना-बाना सँ बुनने अछि....' भाभीक ओहि निश्छल भाइक हृदयक ई उद्‌गार, प्रस्तुत कथाक सन्दर्भ मे कोनो पाठक अपन एहि रूपक मत, अपनेक प्रति, व्यक्त कऽ सकैत अछि। बहिन! ई अपनेक भाव-प्रवण हृदयक चमत्कार थिक, जे अपनेक लेखन मे जीवंत होइछ, प्रामाणिक ओ प्रभावोत्पादक सेहो मैथिली साहित्य कँ अपने सन साहित्य विदुषी सँ अनन्त अपेक्षा छैक, सङहि समस्त कायस्थ समाज आइ अपने सन प्रतिभाशालिनी बहिन कँ पाबि गौरवान्वित अछि।

कृपया बराबरि लिखैत रहियैक-से अनुरोध!

कृपाकांक्षी,
**विनोद बिहारी लाल**
पचही

शेफालिका जी,

अपनेक कथा ससमय प्राप्त भेल। धन्यवाद। एकर उपयोग नीक जकाँ करब। अपन वक्तव्य 10 पाँती मे आ परिचय- 5 पाँती मे, शीघ्र पठा दिय।

वक्तत्व- कथाकी थीक! कियक लिखैत छी! लक्ष्य की अछि! आन भाषाक तुलना मे मैथिली-कथा! अहाँक कथा शिल्प? ललन जी कैं हमर स्नेह निवेदन। सकुशल छथि!

''आकाशदीप'' नीक लागल। संभवतः फरवरी '69 मे एकर उपयोग करब पूर्ण निखारक संग। परिवार मे हमर यथा योग्य। अपने सभक पारिवारिक-व्यवहारक स्मरण एखनहुँ होइछ।

हम सभ सकुशल छी। क्रांतिकारी जीवन छोड़ि एकटा कॉलेज मे हिन्दी प्राध्यापिकक पद पकड़ि लेलहुँ अछि अगस्त सँ।

एतद्धि एखन।

शुभाकांक्षी
**सोमदेव**
धरणीधर पथ, लहेरियासराय
'68.

प्रिय शेफालिका जी,

शुभाशीष।

आपका काव्य संग्रह 'विप्रलब्धा' सुन्दर, ललित, भावनापूर्ण एवं उत्तम है। आप काव्य क्षेत्र में प्रतिभापूर्ण स्थान एवं यशस्वी कीर्ति अर्जित करें। मेरी यही शुभकामना एवं मंगल कामना है। औढरदानी आशुतोष शंकर जी से विनम्र प्रार्थना है कि आप स्वस्थ एवं दीर्घजीवी हों। जिससे साहित्यिक क्षेत्र में तथा जनसेवा के क्षेत्र में अधिकाधिक सेवा करने में पूर्ण समर्थ हो सके। मेरे योग्य सेवा सूचित करती रहें।

आपका भाई
**दया शंकर मिश्र**
'सूर्य' पत्रकार, स्वतंत्रता सेनानी
फतेहपुर, यू.पी.
2.6.'79.

आदरणीया शेफालिका जी,

कोटिशः अभिवादन।

पत्रक अभिशय जे अहाँक कृति (रचना) सभ पर विशेष कऽ 'भावांजलि' पर एकटा पैघ

आर्टिकिल लिखि कए मैथिली पत्रिका मे प्रकाशित करबाक हमर योजना अछि। तँ अहाँ से निवेदन जे अहाँ अपन पासपोर्ट या ओहि साइजक नीक फोटोक चारि प्रति सादा या रंगीन पठेवाक कृपा कएल जाय।

इति शुभम।
अरूण कुमार पाठक, गोलघर पार्क रोड, पटना–1
20.4.'06

*जखन हम बंबई स्पैरोक कार्यक्रम आल इन्डिया वीमेन्स रायटर्स कन्फरेंन्स मे गल छलौं तँ ओहिठाम हमर भावाँजलिक एतेक चर्च छल–ओकर कविताक पाती सभ के मैथिली मे आ ओकर अनुवाद अंग्रेज़ी मे आठ आठ फीट के बिहारक नक्शा (झारखंड सहित) मे हमर फोटो संगे भावांजलिक पाती सभक कट आउट बनाओल गेल छल। आँखि भरि आयल छल कनिक काल लेल बिहार अपन मे एकर चर्च नहि भेल आ आन राज्य मे एतेक महत्व। एहिना स्मृतिरेखा संग भेगल। यू.पी. मे पुस्तक खूब बिकल, बिहारक लोग क्यो जानलक क्यो नहि– भाग्यो तँ थीक ने?*

डॉ. शेफालिका वर्मा,
हिन्दी विभाग
ए.एन. कॉलेज, पटना
परम श्रद्धेया शेफालिका जी,

नमस्कार।

नव वर्ष आपके और आपके परिवार के सदस्यों के लिए सुखकर, हितकर एवं स्वास्थ्य कर सिद्ध हो, इसी आशा और विश्वास के साथ नूतन वर्ष मंगलमय हो। मैथिली की महादेवी हिन्दी की मीरा, शेफालिका वह है, प्यारी है जिसको पीड़ा।... अतीत की बैसाखी पकड़कर जीना भले ही कष्टकर है, लेकिन कमल तो कीचड़ में ही खिलता है, गुलाब तो काँटों के बीच ही मुस्कुराता है। और आप तो दर्दों की दुनिया की राजकुमारी हैं...

**महेन्द्र मस्ताना।**
झरिया, 31.08.82

शेफालिका जी,

दुनिया की सबसे खूबसूरत ख्वाहिश।

अभी की नहीं गई। खिले नहीं बागों में/ सबसे रंगीन फूल/ लौटी नहीं फूलों पर/ सबसे शोख तितलियाँ/ आने हैं अभी/ दुनिया के सबसे खूबसूरत लोग/ सबसे खूबसूरत औरतें/ खिले जाने

हैं/ सबसे खूबसूरत प्रेम-पत्र/ दुनिया के सबसे मजबूत कंधे/ बनाये जाने हैं/ घर सपनों के/ तरासने हैं/ सबसे असरदार शब्द/ दुनिया की सबसे खूबसूरत कविता/ अभी लिखी जानी है।.....

**ध्रुव नारायण गुप्त,**
नगर पुलिस अधीक्षक,
भागलपुर, '95

स्नेहिनी शेफालिका जी,

......मोन पड़ैत ऐछ अहाँ सबहक संग बिताओल कविक कार्यशाला...एकटा लहरी आयल, तन मन तिताय चैल गेल इलाजी लीलाजी वीरेंदर जी क संग अपन सबहक हंसी मजाक, अहाँ संग एवाजेवक सानिध्य, रबिन्द्र सारणी से शेक्सपियर सारणी धैर, कहियो, तक्सी से, कहियो, ट्राम ते ८ब बस में अहाँक दशा देखि एखनो अपना पर लाज होइत ऐछ. कतेक कष्ट भेल ओही ८ब में. ...

अहींक सुकांत सोम...'84

''....कमलक पराग सँ माँतल भ्रमरक चरण-स्पर्श सँ उठैत जल-तरंगक ध्वनि कँ राग-रागिनी मे आबद्ध करैत श्री मायानन्द जी एवं श्रीमती शेफालिका जी, पेटक ज्वाला सँ झुलसैत श्रमिक मे शक्ति तकैत श्री कृष्ण चंद्र 'मस्ताना जी' मधुमाँछीक खोता मे मनुक्खक मनकँ झोहैत थी जयानन्द जी, टुटल टुकड़ी सभकँ जोड़ि पूर्ण चान बनाए ओहि चान कँ चूमबाक हेतु अपन आँखि सँ शीशाक देवाल तोड़बामे व्यस्त महाप्रकाश जी, कीट्स, इलियट, सेक्सपीयरक द्वारा चुराओल भारतीय चरित्रकँ स्वदेश लौटेवा सँ व्यथित श्री ललितेश जी 'उमस' क 'बेसियर' क लघु परिधि मे राजकमल विशाल आत्मा कँ बान्हैत श्री महेन्द्र जी तथा हवाक झोंक सँ झुकैत उठैत तार वृक्षक द्वारा अपन प्रेमिका कँ मौन निमंत्रण दैत श्री अनिष शेष, सभ हमरा एबनोरमल लगैत छथि आ तखन हमर इच्छा होइत अछि जे एहि सभ एबनॉरमल लोक कँ एकटा रूम मे बंद कए दियैक, वर्ष मे एक वा दुई बेर हिनका सभकँ सहरसाक सड़क पर निकलए दिअन्हि जाहि सँ सहरसाक धरती नॉरमल रहइक।

मुदा, हम सभ 'नार्मल' लोक कँ स्पष्ट कहि दिअन्हि जिनका अहाँ 'एबनॉर्मल' कहैत छियैन्ह ओ अहाँक धरतीक प्राणा थीकाह। इएह 'एबनार्मलिटी' हुनक ओ निधि थीक जे हिनका लोकनि कँ अमरत्व प्रदान करैत अछि........''

**मनोरंजन झा**
आचार्य योगेश्वरक
''इत्यादि'' सँ सभार।

*आय मनोरंजन भाई अचानक धोखा दऽ देलनि- ई असर संसार हुनका नीक नहि लगलनि-*

आदरणीया श्रीमती वर्मा जी,

विगत 18 तारिखक मिथिला मिहिर के मध्य अहाँक कथा पढ़ि हम गदगद भए उठलहुँ। ई जानि हमरा अपार हर्ष हएत जँ अहीं सन सन दस-पाँच महिला अपन एहि तरहक प्रौढ़ रचना उपस्थित करैत रहथि तँ अपना समाजक पसरल विडम्बना सभक अनायास अन्त भए जएत। मिथिलाक नारी मे जागृति आनबाकटा कार्य छइक। हमरा बुझाइत जे अहाँक कलम मे ओ शक्ति अछि जाहि द्वारा समसामयिक घटना सभ कँ समय समय पर उपस्थित करैत रहला सँ नव जागृति आनि समाजक पतनक रक्षा भए सकैत अछि। कलम चालुए रहए से हमर आग्रह। अनेक धन्यवाद।

भवदीय,

**श्री गिरीधर झा,**

सीनेमा चौक, दरभंगा।

आदरणीय श्री ललन बाबू सौ. डा. शेफालिका वर्मा, चि. प्रो. राजीव वर्मा, संजीव वर्मा एवं सौ. जया वर्मा, सौ. शबनम वर्मा एवं अरूषी, अदिति, क निमित्त नव वर्ष शुभ हो।

बीतल वर्ष पुरनका, बंधुवर! खोलू सत्वर द्वार।
नव वर्ष पाहुन घर आयल लए नूतन उपहार।
पूब क्षितिज पर पाहुन कँ लखि, कुहकल मानस 'जय हो'।
नवल वर्ष मंगलमय, हितकर, सुखद आर मधुमय हो।

अशेष मंगलकामनाक संग।

**उपेन्द्र दोषी**

13.1.'99.

*99 ई. मे लिखल स्व. दोषीजीक पत्र 'जय हो' देखि होयत अछि-इएह 'जय हो' आस्कर एवार्ड अपन देश मे लऽ अनलक-*

कर्णगोष्ठी, धनबाद
(सांस्कृतिक चेतना की सामाजिक संस्था)

माननीया,

कर्ण गोष्ठी, धनबाद अपन पंचम वार्षिकोत्सबक अवसर पर एक गोट कालजयी स्मारिकाक प्रकाशन करए जा रहल अछि।

अपने सँ विनम्र निवेदन जे एहि ऐतिहासिक आयोजन मे अपन रचनात्मक सहयोग दए कृतार्थ करी।...

**उदय चंद्र लाल दास**
महासचिव, कर्ण गोष्ठी
धनबाद।
3.12.96

15.05.66 कँ मधुबनी सँ रामदेव राय, प्रकाष्ठ सं.-2, पूर्णेन्दु निकेतनक पत्र।

आदरणीय बहीन 'उदास राखी उदास अनुभूतिक' व्यथाक संदर्भ मे स्नेह सँ वंचित हमर हृदय बहीनक दुइ बुन्न नोर कण-एहि निर्जीव श्वेत पत्र पर देखि आकुल भऽ गेल अछि। निर्निमेष दृष्टिए कथाकँ आद्योपान्त पढ़ि गेलहुँ। तकर बाद मोनमे एकटा शंका उठल, जनैत छी स्नेहक सशक्त भावोच्छवास मे शंकाक स्थान नहि लेकिन शंका.........। अस्तु, शंकाक निवारणार्थ ई पत्र पठा रहल छी - अपन श्रद्धा आ सिनेह पर एतेक विश्वास अवश्य अछि जे हमर अग्रजा हाथ मे रखी आ माथ पर अपन वरदहस्त देने एहि अनुजक संशयतम कँ अवश्य नाश करतीह। हमर शंका। की, भाइ-बहीनीक नाता मात्र सहोदर भेला सँ होइत अछि? की भाइ बहीनीक रिश्ता मृत्योपरान्त टुटि जाइत अछि, की एकटा अभागल भाइ संसारक कोनो स्त्री सँ भाइ बहीनीक नाता नहि जोड़ि सकैत अछि? यदि एहेन भऽ सकैत अछि तँ की एहि अभागल भाइ कँ अहाँ बहीनीक स्नेह दऽ सकैत छी? पत्र यदि आँखि नोरा गेल छल-संबंध जोड़ि नेने छलौं भाई रामदेव सँ मुदा, आइ नहि जनैत छी रामदेव राय कतऽ छथि हमर हृदयमे स्नेह आ ममता सँ भरल वएह स्थान हुनका लेल अछि।

गाजियाबाद सँ प्रतिभा पाण्डये जे हमर कथा सभक हिन्दी अनुवाद कऽ रहल छलीह ' ओहि सभक प्रसंग मे लिखने छलीह ..... जो सजा दें स्वीकार करूँगी। वैसे मैंने दीदी बना लिया है आपको। इसलिए मन मे डर कम हो गयी। सजा तो मिलेगी पर कठोर नहीं.....।

2 फरवरी' 80 कँ भागलपुर चंपानगर सँ लिखल प्रसून लतांतक पत्र।

'दीदी तुमने पत्र का उत्तर दिया। तुम्हारी पत्र से लगता है दीदी तुमने वास्तव मे संबंधों को टिकाउ बना रखा है.....तुम्हारे अस्वस्थता का समाचार चिंतित कर देता है..... तुम्हारा यह कहना है कि कष्ट नहीं हो तो इस कार्य को कर देंगे..... अरे दीदी, तब तुमने मुझे जाना ही कहाँ-औपचारिकता की स्थिति मे तुम अभी भी हो..... पत्र जल्दी-जल्दी लिखोगी, तो जल्दी सहयोग करूँगा तुम्हें...बीमारी मे परहेज करती हो न? परहेज करोगी तभी स्वस्थ भी हो सकोगी.....' तुम्हारा ही तो प्रसून-

हमरा आइयो मोन अछि 66ई.क गप होयत। हम डुमरा मे छलहुँ। हृद्य मे कथा कविताक लहरि पर लहरि उठैत रहैत छल किन्तु परिवेशक प्रतिकूलताक कारण गाम मे किछु लिखि पढ़ि नहि पबैत छलहुँ। गाम मे बड़ जल्दी राति भऽ जाइत छल। गामक राति, निस्तब्धता आ अन्हारक। सीरक

ओढ़ि सूतल गाम। छोट सन् डीबीयाक टेमी राति भरि थरथराइत अन्हार सँ लड़ैत रहैत छल- अन्हारक अमित साम्राज्य सँ लड़ैत- ओकरा सँ बगावत करैत डिबीयाक भुकभुकाइत टेमी! मौन-मौन, गहन मौन - ओहि राति वर्मा जी सहरसा सँ एलाह आ रातिक ओहि मूक अन्हार मे हमरा हाथ मे एकटा पोस्ट कार्ड थमा देलनि -

'गै, तोहर एकटा करुण कथा प्राप्त भेल 'आ जींजीर बाजि उठल।' कथा अंक मे सभ सँ बेसी रूचल। मिथिलाक आदर्श एहि कथा मे भेटल हमरा .....फेर एहने प्रगतिशील कथाक हमरा प्रतीक्षा रहत। तू राबिन शा पुष्पक कथा सँ टेकनीक सीखहँ। की हमर बात मानबीही ने?.....

मधुर, सहायक शिक्षक, तेतरी मुंगेर 8.7.66! के छथि मधुर पता नहि कतऽ छथि सभ?

मुदा, डिबीयाक लौ जकाँ हमर आँखि मे नोरक बून्न थरथरा रहल छल। यानी हम मैथिली मे ठीक ठाक लिखि रहल छी। हमर मोनक आकास मे खाली टैगोर, शरद, अमृता प्रीतम, अज्ञेय, जैनेन्द्र सभ चमकैत रहैत छलाह। हुनक भावना सभ हमर हृदय कँ अपन बाहुपाश मे बान्हने रहैत छल। आब ओहि मे पुष्पक नाम सेहो सटि गेल।' मिहिर मे क्रिया प्रतिक्रिया हमर कथा पर छपैत छल किन्तु व्यक्तिगत रूप सँ सेहो हमरा पत्र आयब आरंभ भऽ गेल छल- सौंसे सहरसामे हल्ला छल जे वकील साहब पत्नीक नाम सभसँ बेसी पत्र अबैत अछि- हमरा लेल शुभ-मुदा, समाज लेल?

आदरणीया शेफालिका जी,

सभ सँ पहिने, हमर हार्दिक साधुवाद स्वीकार करू 'निसांस कऽ सफल रचना पर। वाह! जेहने प्लाटक गांभीर्य ओहने भाषाक सुंदरता.....एहि सँ पूर्वो हम अहाँक रचना सभ सँ बड़ प्रभावित रहल छी। किछु दिन पूर्व हमहूँ मिहिर मे छपल रही किन्तु अहाँ लेल तँ अनचिन्हार छी - बस रचनाक माध्यम सँ अहाँ कँ देखैत छलहुँ.....। नीक लगैत छल......

अहाँक

**लक्ष्मण झा सागर**

राजेन्द्र छात्र निवास शंभु चटर्जी लोन

कलकत्ता

हमहूँ अहाँ सभक स्नेहके ह्रदय सँ सतत् अनुभूत करैत रहैत छी- सागर जी, कहियो मंच पर हम सभ रहैत हएब किन्तु, देखने नहि छी अहाँ कँ! आइ सागर मैथिलीक महान साहित्यकार छथि।

किछु एहिना तँ पंचानन मिश्रक पत्र छल साइत- 70 ई.क'..........अहाँक कथा सभ एकटा अलग आकर्षण नेने रहैत अछि जे हमर ह्रदय कँ स्पर्श कऽ लैत अछि संवेदनात्मक स्तर पर सभ सँ अलग, सभ सँ फराक.......।

16.1.69 मे मिथिला दूतक रमादत्त झा जीक पत्र आयल छल – अगला मास दूतक तृतीय वर्षक प्रथम अंक – कथा अंकक रूप मे प्रकाशित होऽ जा रहल अछि। अहाँक कथा रचना पएबाक हार्दिक अभिलाषा अछि.......।

परम सौभाग्यवती चि. डा. वर्मा एवं चि. पाहुन,

शुभाशीष।

नव वर्षक शुभकामना पाबि अति अहलादित भेलहुँ। भगवान सँ विनीत प्रार्थना अछि जे ओ अहाँ लोकनिक समस्त परिवारक जीवन सुखमय राखथु। शेफालिका सचमुच कहैत छी हम अहाँक सृजनात्मक क्षमता एवं विनम्र स्वभावक हृदय सँ प्रशंसक छी। ओहिना चि. पाहुन श्री ललनजीक अगाध योग्यता के देखि गदगद रहैत छी। दूनू गोटे अहाँ लोकनि अपना-अपना क्षेत्र मे जे यश एवं प्रतिष्ठा अर्जित केने छी तकरा देखि आनन्द होइछ। चि. संजीव के भगवान पूर्ण सफलता देथुन्ह से हो प्रार्थना भगवान सँ अछि।...

परिवार मे सब सदस्यक प्रति हमर शुभकामना एवं आशीर्वाद अछि।

**जटाशंकर/पटन देवी**

6.1.99

महोदया डॉ. शेफालिका वर्मा,

अति प्रसन्नताक संग सूचित करय चाहैत छी जे चेतना समितिक तत्वावधानमे चौबनम (54म) विद्यापति स्मृति पर्व समारोह 22 नवंबर 2007सँ 24 नवंबर 2007 धरि अनुष्ठित अछि।

उक्त लक्ष्य प्राप्तिक दिशामे अग्रसर होयबाक लेल विद्यापति-स्मृति-पर्व समारोह 2007क अवसर पर आहूत कवि सम्मेलनमे अपने सादर आमंत्रित छी। निवेदन जे समितिक उपयोगार्थ कविता नव एवं अप्रकाशित हो, एकर ध्यान राखल जाय। एहि संबंधमे ईहो आग्रह जे पठनीय रचनाक (अधिकतम दू) एक प्रति दिनांक 10 नवंबर, 2007 धरि अधोहस्ताक्षरीयकें पठा दी जाहिसँ कविताका स्वाभावनुसार सुरुचिपूर्ण प्रस्तुतिक प्रयास मंच पर कयल जा सकय। पठनीय कविताक दोसर प्रति अपना संग जरूर आनी।

कृपया अपन स्वीकृति पत्र पठा कृतार्थ करी।

भवदीय

**(मधुकान्त झा)**

सयोजक, कवि सम्मेलन,

चेतना समिति, पटना

डॉ. शेफालिका जी,

अहाँ के ई विदित अछि जे मैथिली भाषा आ' साहित्यिक प्रगतिक हेतु 'स्वस्ति फाउंडेशन' क दिसि सँ विशेष वार्षिक पुरस्कारक स्थापना कैल गेल अछि। एहि पुरस्कारक चयन समितिक सदस्य के रूप मे हमरा सबकें एहि विशेष पुरस्कारक योग्य मैथिली साहित्यकार अथवा भाषाविदक विषय मे सुझाब देबा मे अहाँक योगदान महत्वपूर्ण रहत। एहि चयन समितिक नवीन सदस्यक रूप मे स्वस्ति फाउंडेशनक दिसि सँ अहाँक अभिनन्दन करैत छी।

हमरा सभक आग्रह जे अहाँ चयन समितिक सदस्यक कें रूप मे 8 दिसम्बरक सभा मे उपस्थित भए अपन मूल्यवान विचार सँ हमरा सब के लाभान्वित करी। ई कहब अनावश्यक हैत जे फाउंडेशनक दिसि सँ अहाँ कें एहि सहयोगक हेतु यथोचित मानदेय देल जायत।

सधन्यवाद,

अहाँक

**डॉ. अभय नारायण सिंह**

प्रबंधन न्यासी

स्वस्ति फाउंडेशन

श्रीमती शेफालिका वर्मा जी,

अपनेक ई जानि अपार हर्ष होएत जे मिथिला परिषद भागलपुर अपन वार्षिक पत्रिका ''मिथि-मालिनी'' क वर्ष-6 अंक 6 विद्यापति स्मृति पर्व समारोहक अवसर पर प्रकाशित भऽ रहल अछि।

अपने से सादर अनुरोध जे एहि अंगभूमि सँ प्रकाशित होए वला एहि पत्रिकाक हेतु उपर्युक्त विषयक लेख सामग्री यथाशीघ्र 30 दिसम्बर धरि अवश्य पठाएवाक कृपा कएल जाय। परिषद अपनेक अभारी रहत।...

**आरती कुमारी**

संपादक

मिथि-मालिनी, मिथिला परिषद, भागलपुर

दु:ख तँ एहि बातक अछि जे कतेक पत्रिका मे हमर रचना छपैत अछि मुदा, ओकर प्रति हमरा नहि पठाओल जायत अछि जे हम बुझि सकी-

पू. शेफालिका जी,

सादर चरण स्पर्श।

चित्रगुप्त आदि-मंदिर प्रबंधक-कमिटी द्वारा प्रकाशित स्मारिका हाथ में आयल। ओकरा पढ़बाक क्रम मे स्व. जटाशंकर दास जी पर अपनेक एकटा संस्मरण देखल आ पढ़ल। हम स्व. जटाशंकर दास जी के ज्येष्ठ सुपुत्री वीणा रानी कंठ एवं स्व. गुणानन्द कंठ जीक ज्येष्ठ पुत्र छी। पू. नाना जी पर श्रद्धांजलि हेतु कोटिशः प्रणाम।

बचपन सँ अपनेक पूरा परिवारक चर्चा स्व. नाना जीक मुख सँ सुनैत रहलहुँ। जे सुनलहुँ ओकरे प्रतिबिम्ब अपनेक संस्मरण मे भेटल। बाजरवाद क अहि युग मे जखन की सफलताक मापदंड अर्थ सँ तौलल जा रहल अछि, पू. नानाजीक सच्चाई, ईमानदारी, निष्कपटता, सादगी एवं कर्मठता अनुकरणीय अछि। और जखनि अपने सदृश समाजक स्तंभ एकरा प्रतिष्ठा दैत छियैक त अहि पर चल बला सभ के संबल भेटैत छैक।...

...प्रणाम करैत एकबेर पुनः श्रद्धांजलि हेतु साधुवाद।

अपनेक

**राजीव कुमार कंठ**

बोकारो

प्रिय आत्मना दीदी,

नमन।

एक बहुत बड़े अंतराल के बाद.........राखी के गीतों से पता चला कि सावन आ गया दीदी की राखी मिली तो जैसे रक्षाबंधन आ गया। दीदी, पता नहीं मनका कौन सा अछूता कोना है कौन से जन्म का कैसा रिश्ता है जो आप से बंध गया है। मेरी बहनें पहले आपकी भेजी राखी मेरी कलाई पर बांधती है फिर अपनी! सभी जानते हैं आपका महत्व! पता नहीं कब मैं अपनी इस दीदी का दर्शन कर पाऊँगा? कब आपको देख पाऊँगा।

हम चित्रकूट में आपकी बाट जोह रहे हैं... श्रीराम चित्रकूट ही क्यों आए-इस काले कलूटे पर्वत पर? कहाँ है कालिदास का रामगिरि? औरंगजेब ने घुटने क्यों टेके? अकबर की सांस्कृतिक चेतना का मूल्य चित्रकूट ही क्यूं? विपदाग्रस्त लोग ही क्यों आते हैं और विपदाओं का शमन होता है। कहाँ है दूध की धार सुरसरिता मन्दाकिनी। असंख्य प्रश्न चिन्हों से घिरे चित्रकूट को देखने असंख्य लोग आते हैं और क्या खाते हैं? क्या पाते हैं? क्या लेकर लौटते हैं अपने घरों को कुण्ठा या स्वस्थ एवं पूर्ण मानसिकता? मैं आपका बाट निहारूँगा, आप रामायण मेले में आएंगी ऐसा विश्वास है। बच्चे आ सके तो उन्हें भी लाइए साथ में वकील साहब को अवश्य ही लाइए। बहन, मैं बहुत ही गरीब साधनहीन भाई हूँ बस सेवा की कर सकूँगा। मेरे पास और है ही क्या, न कार न बंगला बस आपको तकलीफ न होगी ऐसा मेरा विश्वास है।.... मैं बस पूर्व जैसा ही ठूँठ का ठूँठ हूँ।

...दीदी, चित्रकूट के संबंध में एक और बात- दक्षिण में राम का प्रवेश द्वारा चित्रकूट है-फिर रेल लाइन का मार्ग भी वही है जिधर से राम गए थे' भारकुण्डी यानी मार्कण्डेय आश्रम, 'कटनी' यहाँ सूर्पणरवा की नाक काटी गई है आदि इन तथ्यों में कुछ विशेष कड़ियाँ भी पिरोयी जा सकती है लेकिन चाहे वे मंच पर के वक्ता हों, या विशाल आयोजन हो या कथावाचक हो कभी कोई भौगोलिक आधार बनाकर न तो किसी को कुछ बताता है न वह सरदर्द मोल लेता है। उसे बस राम कथा से मतलब है। जैसे पण्डों को मूर्ख यात्रियों से यह कहकर बड़े मजे से पैसे चढ़वाते हैं- जैसे यहाँ राम का दातून गिरा था आदि- हँसी आती है हम कितना ध्वस्त किए जाते हैं। दीदी पत्र तो बहुत लंबा हो गया। पूर्व की तरह ही क्षमा कर देना दीदी! क्षमा कर देंगी न? मन ही मन आप सोचती होगी कितना सनकी है सोनी! दीदी, आप आएंगी तो आपको क्या खिलाऊँगा जानती है- कंदमूल जो भगवान राम खाए थे... भागवान करे मेरी दीदी खूब खुश और सुखी रहें- शुभकामनाएँ। आप से मिले अपनत्व के कारण ही ऐसा लिख जाता हूँ। यह एहसास ही नहीं रह जाता कि कहाँ मैं एक आदिवासी संस्कृति में पला बसा एक निरीह प्राणी हूँ एक विद्वान के सामने बके चला जा रहा हूँ। राम सीता से जिस तरह मनुहार करती स्त्रियाँ कहती है तुम फिर इसी रास्ते से लौटना-हम बाट निहारेंगी-बार-बार दर्शनों का मोह मेरे मन में भी आपके दर्शनों की आकांक्षा ऐसी ही है आप पधारें मेरी चिर कामना पूरी हो बहुत ही लालसा है। आने की पूर्व सूचना से अवगत कराएँ मैं इलाहाबाद स्टेशन पर आपको रीसीव करने आऊँगा-

आपका ही भाई

**शिव प्रसाद सोनी**

27.01.82

आदरणीय बुआ जी,

चरण स्पर्श।

आप आए तो अवश्य सोच रही होंगी कि ए किस बुआ के भतीजे का पत्र आ गया इसलिए सर्वप्रथम मैं अपना परिचय दे दूँ। मैं श्री शिव प्रसाद 'सोनी' का सबसे बड़ा पुत्र हूँ। पिछले वर्ष इंटरमीडिएट बायो से डिस्ट्रिक्ट टॉप करने के पश्चात् यहाँ इलाहाबाद यूनिवर्सिटी से बी.एस.सी. बायो से कर रहा हूँ। यह प्रथम वर्ष है, वैसे तो इस वर्ष मेडिकल परीक्षाओं की तैयारी है।

घर में समय असमय ही आपके पत्र देखने को मिलते रहे आपके स्नेह और प्रभाव से मैं भी वंचित न रह सका।

**दीपचंद्र सोनी (कर्वी वाले)**

रूम नं.-17 (अमितको क.)

बेली रोड, नया कटरा, इलाहाबाद (उ.प्र.)

पत्र की प्रतीक्षा में .......शेष शुभ।

10.02.'72

आज ही आपका स्नेहक्ति साक्ष्य, आपके पत्र द्वारा हुआ, कह नहीं सकता कितनी प्रसन्नता हुई। ऐसा लगा जैसे मरीचिका में वास्तविक सोते फूट पड़े हों। आपका पत्र पढ़कर संभाल नहीं पाया ऐसा लगा कि भरे हुए हृदय को निकलने का रास्ता मिल गया। किसी की गज़ल है-

*बाहर से देखते हैं तो वो समझेंगे किस तरह*
*कितने गमों की भीड़ है इस आदमी के साथ,*

इस सबके बावजूद बोल्ड होने की कोशिश कर रहा हूँ। वैसे कभी-कभी यथार्थ रूप से ऐसा लगता है शायद मौत ही स्थाई हल है क्या, पर इस स्टेज पर आकर अपने बारे में सोचना बंद कर देता हूँ और बच जाता हूँ। वैसे शायद ही इससे ज्यादा भयंकर मानसिक यंत्रणा, कभी मिले। एक काली सी लिजलिजी सीलन भरी, घुटन लग रही है। सब कुछ बेअर्थ लग रहा है। फिर भी आश्चर्य होता है अपने आपको जिंदा देखकर यदि सांसों का चलना ही जिंदा रहना है तो जी ही रहा हूँ। हर आज इस इन्तजार में कटता है कि शायद कल का सूरज कुछ परिवर्तन का पैगाम लेकर आए और कोशिश रोज मुझे तोड़ देती है चूर कर देती है। लगता है इस आपाधापी में मेरा स्वत्व पारे की बूँदों की तरह बिखर गया है मैं आकार विहीन हो गया हूँ। लेकिन इन सब बातों के बावजूद चिर सत्य है कि मैं जी रहा हूँ हँसने की भी कोशिश करता हूँ, समझौता भी करता हूँ। ऐसा बना लिया है मैंने अपने आपको कि कोई भी किसी भी सांचे में ढाल ले। कोशिश कर रहा हूँ कि इस मानसिकता से जल्द ही उबरूँ। कर्त्तव्य का अहसास अभी बचा है, तभी तो शायद एकाध लचर निषेध अपने आप में ढूढ लेता हूँ। वैसे बड़ा बेमानी लगता है सब। बहुत बड़ा बिजनेस है ज़िंदगी। जो व्यापारी है, शुद्ध व्यापारी वही सफल है। अच्छा तो अब सब बंद करता हूँ। कहीं खत्म नहीं होगा। पता है मुझे एकदम धरती आकाश के संयोग रेखा की तरह।

बुआ जी मिलन मयस्सर है और होगा, मुझे लग रहा है, काफी नजदीक आ गया है, पर विश्वास नहीं बताऊंगा नहीं तो टूट भी सकता है। वैसे अगस्त या फिर नवम्बर (दिसम्बर 85 में मैं और आपकी बहू बेटी दोनों ही आयेंगे। आपकी बहू ने भी आपका साक्ष्य पत्र में और मुझमें किया है। वह प्रणाम कहती है आपको।

और हाँ 9 अगस्त को आप का जन्म दिन था पत्र 10 को मिला। इस बेटे के मुँह से और क्या निकल सकता है सिवा इसके कि भगवान आपको सदा ही स्वस्थ्य व प्रसन्न रखे। बुआ जी अब आप हमारे सब्र का इम्तिहान ही ले रही हैं, जल्दी से किताब या तो अपना फोटो भेज दीजिए।

*''मेरी बुआ का जन्म दिन है, क्या करूँ समझ नहीं आता, लगता है जितने सितारे हैं, उतनी खुशियाँ उनके दामन में भर दूँ....''* पत्र की प्रतीक्षा प्रतिपल है...

आपका
**दीपचंद्र**
चित्रकूट धाम, कर्वी (यू.पी)

*आँजुरि सँ समयक पानि  बहैत गेल- कतेक काल बीति गेल मुदा, शिव प्रसाद सोनी आ हुनक पुत्र दीपचंद्र सोनी सँ आय धरि हमरा भेंट नहि भऽ सकल, जी कचोटैत अछि। करीब सय डेढ़ सय पत्र दूनू गोटेक हमरा भेटल मुदा-हम अकिंचन....? जनैत छी एखन ओ उत्तर प्रदेश मे कोनो प्रशासनिक अधिकारी होयत-*

हे मैथिल ललन!

मैथिलीक महादेवी शेफालिका अहाँ छी। साहित्य केर सरिता बहओने अहाँ छी।।/ कथा हो कि कविता लिखल विधा विविधमे। 'यायावरी' क संस्मरण अर्पित केने अहाँ छी।।/ चम्पू सेहो ने छोड़ल 'भावाञ्जलि' जकर प्रतीके। 'एक टा अकास' कथा सन संग्रह देने अहाँ छी।।/ 'अर्थयुग' महत्ता कथे विधामे देलहुँ। 'नागफाँस दऽ कऽ जन-मन बन्हने अहाँ छी।।/ फणीश्वर नाथ रेणु विनिबन्ध प्रकाशित कऽ। मैथिली-मंदिर कँ प्रकाशित केने अहाँ छी।।/ बनलहुँ अहाँ सदस्यो साहित्य अकादमीके। चेतना समितिमे सेहो सक्रिय रहल अहाँ छी।।/ 'बरगाँव' घर अहाँके टेक गौरवक छी धेने। शिक्षक रूपेँ सेहो सुप्रतिष्ठित रहल अहाँ छी।।/ सम्मान 'काव्य-विनोदिनी' 'उमेश मिश्र' नामेँ। सम्पादन-कलामे पटुता पओने सेहो अहाँ छी।।/ मिथलाञ्चलक एहन ललना जतए हमर छथि। शतशत अभिनन्दक सत्ते पात्रहि से ततऽ छथि।

मिथिला विभूति पर्व
कार्त्तिक धवल त्रयोदशी
13, 14, 15 नवम्बर, 2005 ई.

हम सब छी
सदस्यगण
विद्यापति सेवा संस्थान
दरभंगा

शेफालिका जी,

हमारी शुभकामना है कि नववर्ष आपके व आपके परिवार के लिए शुभ व मंगलकारी हो।

...आशा है कि पढ़ने लिखने व सोचने समझने के राष्ट्रीय एवं सामाजिक कार्य के प्रसार व प्रकाशन में पूर्व की भांति आपका सहयोग प्राप्त होता रहेगा।

सद्‌भाव सहित।

शुभेच्छु
**बी.एम.एन. प्रकाशन**
निराला नगर, लखनऊ

प्रिय बहन

साभिवादन !

कादम्बिनी कविता 'प्रतीक्षा' आपकी पढ़ने का सुयोग प्राप्त हुआ, वस्तुतः आपकी अंतहीन प्रतीक्षा आपकी नन्ही शेफाली की उत्कृष्ट मनोदशा है। अपने आत्मकथ्य में गार्हस्थ्य जीवन में

अलिप्तता और विषमताओं की ओर से असंपृक्तता के बारे में कहा है, इसने बरबस ही मुझे आपसे सम्पर्क करने को विवश किया ।

आपके अंतर की शेफाली कभी भी नही खो पायेगी क्योंकि उसको अभिव्यक्ति ऐसा सशक्त माध्यम मिल गया है।...

सस्नेह आपका

**सुनील कुमार 'राही'**

कानपुर '78

महोदया शेफालिका जी,

अपने कँ विदित अछि जे चेतना समिति अपन स्थापना केलक आ (1954 ई.) सँ मैथिली भाषा, साहित्य एवं संस्कृतिक क्षेत्रमे प्रचार प्रसारक संग मिथिलांचलक समग्र विकास लेल प्रयासरत अछि। एहि प्रयासक क्रममे एम्हर चारि वर्षसँ खटकैत अभावक पूर्ति हेतु एक त्रैमासिक पत्रिका घर बाहरक प्रकाशन कए रहल अछि।

अपने जनैत छी जे पत्रिकाक सफलता एवं प्रकाशन मे निरन्तरताक मुख्य आधार थिक रचनाकारक सक्रिय रचनात्मक सहयोग। एहि सहयोगक बिना ने पत्रिकामे स्तरीयता सम्भव अछि आ ने गुणात्मक विविधता। लेखकीय सहयोगक बिना निर्धारित योजनाक सफलता सेहो संदिग्धे रहैत छैक। चेतना समितिक ई प्रयास मैथिली पत्रकारिताक क्षेत्रमे उत्कर्ष प्राप्त कए सकय, एहि हेतु अपनेक निरन्तर सहयोगक समिति आकांक्षी अछि।

अपने सँ विनम्र अनुरोध जे घर बाहर मे प्रकाशनार्थ अपन कथा यथाशीघ्र उपलब्ध कराय सहयोग करी।

घर बाहर कँ घर सँ बाहर धरि अपनेक रचनात्मक सहयोग भेटतैक, हमरा लोकनि पूर्णतः आश्वस्त छी।

भवदीय,

**( डॉ. बासुकीनाथ झा )**

सम्पादक

चेतना समिति, पटना

26 जुलाई, 2007.

आदरणीया

ममतामयी दीदी

प्रणाम ।

दिन भरिक जंजाल सँ फराकत पाबि होटलक एकान्त कोठरी मे समय खर्च करबाक काल अहाँक प्रेरणादायक 'अर्थयुग' पढ़ब शुरू केलौं । मनकें पीड़ाक अथाह सागर मे धकेलि-देलक,

अपराध बोध आ पश्चाताप सँ मन कुण्ठित भ गेल । पुनः भेट करबाक उत्कंठा जागल, लेकिन समयाभाव आ अर्थाभाव इजाजत नहीं देलक ।

भावक अभिव्यक्तिक लेल भाषा नहिं अछि। अपन त्रुटिपूर्ण लेखनी सँ, मनक हलचल मे अहाॅके देखिकें । समाजक कुब्यबस्था पर अहाँक प्रहार जत मैथिल समाजक दशा कें प्रतिबिम्बित करैत अछि, ओतऽ अहाँक दृष्टिकोण मिथिलाक दिशा दैत छैक । इयह तँ हमर संस्थाक विचारक विषय थीक ।

जामवन्तक शब्द प्रवाह सँ जेना हनुमान जी समुद्र के फानि गेल तहिना अहाँक 'अर्थयुग' हमर प्रेरणा स्रोत बनत, अहाँ आशीर्वाद दियक ।

मैथिली साहित्य मे एहन सत सामयकी पुस्तक हम प्रथमही देखलौं, हमर प्यासल मन के जेना अमृतक सरोवर भेटिगेल ।

अहाँक मार्गदर्शन आ ममताक छाँह मे हम अपन लक्ष्य के प्राप्त करब हमरा ई विश्वास भऽ गेल ।

स्मारिकाक प्रकाशन 30 मार्च के होयत, आयोजित विचार गोष्ठीक लेल हम अहाँक मार्गदर्शनक प्रतिक्षा करब पत्रक माध्यम सँ शेष दर्शनोपरान्त

दीदी राही मासूम रजाक उपन्यासक पंक्ति हम अहाँके याद कराबैत छी

...युद्धक्षेत्र में जब मौत मेरे सामने खड़ी थी तो मुझे याद आता था अपना गंगोली गाँव। खुदा को काबा याद आता होगा, क्योंकि वह ख़ुदा का घर है मुझे सिर्फ याद आता था अपना गंगोली गाँव।

दीदी 30 मार्चक कार्यक्रमक संचालन बड़गाँवक बेटी डॉ॰ शेफालिका करथि की हमर इ मनोरथ पूर्ण हैत? अहाँक पत्रक प्रत्यासा मे ।

**अहाँक नैयहर बड़गाँव वासी**

शंभु प्रताप, संस्थापक

चन्दा झा मानवीय विकास शोध केन्द्र,

बड़गाँव (सहरसा)।

*अचानक भेंट भेल अपन नैहरक एहि भाय के देखि हमरा जेना अनचोके मणिरत्व प्राप्त भऽ गेल। बड़गाँव विद्वान क गाम थीक, जाति पाति सँ उपर... मोन पड़ि जायत अछि कुल किंकरक पाती नैहर कियहु नहि बिसरैये-*

श्रद्धेया श्रीमती शेफालिका वर्मा जी,

अपने कँ ई जानि प्रसन्नता होयत जे विगत कैयक वर्षक भाँति आगामी वर्ष 10 फरवरी 1996 कए मिथिलाक सपूत, अमर शहीद स्व. ललित नारायण मिश्र जयन्ती समारोहक आयोजन कएल जा रहल अछि। एहि अवसर पर अपने लोकनि द्वारा लिखल-लेख, कविता केर संग्रह कए एक विलक्षण ''स्मारिकाक'' प्रकाशन कएल जाईत अछि।

अस्तु, अपने सँ, साग्रह अनुरोध अछि जे मिथिला मैथिली आ ''ललित बाबू'' सँ संबंधित ''स्मारिका'' में प्रकाशन योग्य सामग्री यथाशीघ्र पठेबाक कृपा करी।

भवदीय,

**अभय नाथ मिश्र**

महासचिव

ललित नारायण मिश्र सांस्कृतिक

एवं सामाजिक संस्थान

जमशेदपुर, 5.12.95.

मान्यवर शेफालिका जी,

'वैदेही' मैथिली मासिकक संस्थापक-संचालक मंत्री (स्व.) कृष्णकांत मिश्रक मैथिली पत्रकारिता एवं पुरातात्विक अवदान विषय पर केंद्रित हुनक समग्र कृतित्वक मूल्यांकन करैत एकगोट स्मृति-कृति ग्रन्थ प्रकाशनक योजनाकेँ क्रियान्वित करबाक निर्णय कयलक अछि। मुदा से अपने लोकनिक सदृश विद्वान लेखकक सारस्वत सहयोग बिनु संभव नहि।...

सारस्वत सहयोगक आकांक्षी

भवदीय,

**डॉ. श्रवण कुमार चौधरी**

**संयोजक**

प्रो. कृष्ण कुमार मिश्र

कृति-स्मृति समिति, दरभंगा

05.07.08

प्रिय शेफालिका जी,

आपके द्वारा भेजी गई कविताओं **सार्थकता** तथा **प्रसंग चाहे जो हो** समकालीन भारतीय साहित्य में प्रकाशनार्थ स्वीकृत हैं। कृपया इन्हें प्रकाशन हेतु कहीं अन्यत्र न भेजें। इन्हें हम यथासमय प्रकाशित करेंगे।...

शुभकामनाओं सहित,

आपका

**अरुण प्रकाश**

संपादक

समकालीन भारतीय साहित्य अकादेमी

नई दिल्ली 17.07.2006

प्रिय बंधु शेफालिका जी,

**<u>मैथिली कथाः शताब्दी संचय</u>**

संपादकः रामदेव झा

अकादेमी से श्री रामदेव झा द्वारा संपादित 'मैथिली कथाः शताब्दी संचय' का प्रकाशन किया जा रहा है। आपको जानकर प्रसन्नता होगी कि उक्त संग्रह के लिए संपादक द्वारा आपकी एक कहानी 'एकटा आकाश' का चयन किया गया है। इस पत्र के साथ स्वत्वाधिकार संबंधी अनुमति प्रपत्र संलग्न किया जा रहा है। कृपया यथानिर्धारित दोनों स्थानों पर हस्ताक्षर कर हमें इसे लौटती डाक से वापस भेजने का अनुग्रह करें।

शुभकामनाओं सहित,

आपका

**ब्रजेन्द्र त्रिपाठी**

उप-सचिव

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

जुलाई 2008

सेवा में, शेफालिका वर्मा,

साहित्यकार दिल्ली,

सहर्ष आग्रह जे **कर्ण सेवा**, दरभंगा द्वारा स्मारिका विमोचन संस्थाक द्वितीय वर्षगाँठ दिनांक 28 जून 2009 के शुभअवसर पर कमला नेहरू पुस्तकालय सभागार, लेहेरियासराय में 11 बजे दिन सँ आयोजित बैसारक शुभवसर पर अपन गरिमामय उपस्थिति एवं उदगार सँ कृतार्थ कएल जाए।

स्मारिकाक प्रधान उद्देश्य समाजक बिखरल बिछुरल व्यक्ति सबहिक पता एक स्थान संग्रह कए प्रकाशित करबाक अछि।

अतः निवेदन जे स्मारिका हेतु अपन बहुमूल्य आशीर्वचन एवं संलेख प्रकाशनार्थ अपन पासपोर्ट फोटो सहित दिनांक 31 मई 2009 तक कृपा कए अवश्य पठाबी।

भवदीय

**उमेश चन्द्र कर्ण**

महासचिव

कर्ण सेवा, दरभंगा

*पाछा शिवेन्द्र कुमार दासक मुद्रण कटिका सँ बेर बेर फोन अबैत रहल-अफसोस रहल अपन स्वास्थ्यक कारण कत्तौ जेवा सँ कखने काल-लाचार भऽ जाइत छी-*

मान्यवरा,

हर्षक संग सूचित क' रहल छी जे मैथिलीक पहिल संपूर्ण पारिवारिक रंगीन द्विमासिक पत्रिका मिथिला दर्शनक नवीन अंक प्रकाशित भ' गेल अछि।

मैथिली भाषा आंदोलनक मुखपत्र मिथिला दर्शन क नाम कोनो प्रबुद्ध मैथिलक लेल नव नहि। मैथिली आंदोलनक प्रसादें आइ हमर सभक मातृभाषा-मैथिली-संविधान स्वीकृत राष्ट्रीय भाषा थिक।...

...मिथिला दर्शनाक सदस्यताक फार्म आ पत्रिकाक प्राप्ति स्थानक सूची एकर पाछा मे अछि। आग्रह अछि जे अहाँ मिथिला दर्शनक सदस्य बनब आ अपन सब मैथिल मित्र कँ एकर सदस्य बनैब।

अपनेक रचनाक आकांक्षी-

नमस्कारान्ते,

**प्रणव कुमार सिंह**
व्यवस्थापक
मिथिला दर्शन
ए-132, लोक गार्डन, कोलकाता।

सेवा में,
डॉ. (श्रीमती) शेफालिका वर्मा,
नई दिल्ली।

महाशया।

शशि सरोजनी रंगमंच सेवा संस्थान, सहरसा (बिहार) द्वारा आगामी 28, 29 एवं 30 मार्च 2010 को सहरसा में मिथिलांचल नाट्य महोत्सव का आयोजन किया गया है। उक्त महोत्सव में देश के अनेक राज्यों से नाट्य दल शिरकत करेंगे। उक्त अवसर पर एक संग्रहनीय स्मारिका प्रकाशित करने का निर्णय लिया गया है।

उक्त स्मारिका में आपके आशीर्वाद एवं शुभकामना या अपनी लिखी हुई रचना एक रंगीन पासपोर्ट फोटो के साथ भेजने की कृपा की जाय ताकि महोत्सव आयोजन के पूर्व स्मारिका का प्राकशन संभव हो सके।

विश्वासभाजन
**वंदन कुमार वर्मा**
सचिव
शशि सरोजनी रंगमंच सेवा संस्थान
गंगजला, सहरसा

आदरणीया शेफालिकाजी,

सादर यथोचित अभिवादन,

मेरी पुस्तक दुकान– ''बुक मार्ट'' जो पूर्व में दरभंगा निजी बस पड़ाव में थी, अब भगत सिंह चौक पर स्थानांतरित हो गई है।

आपसे अनुराध है कि हिन्दी एवं मैथिली साहित्य के इस अनुपम भंडार में अपनी उपस्थिति दर्ज करावें। आप अपने एवं सहयोगी वृन्द लेखकों की पुस्तकें हमारे यहाँ भेजें ताकि ''बुक मार्ट'' द्वारा आयोजित पुस्तक प्रदर्शनी में उसे उचित स्थान दिया जा सके। आपके सकारात्मक सहयोग की अपेक्षा एवं हार्दिक शुभकानाओं के साथ।

**गोपाल प्रसाद (बुक मार्ट)**

अपने के सुचित करैत अपार हर्ष भए रहल अछि जे विद्यापति कला परिषद अपन चारिम स्थापना दिवसक अवसर पर जनक, याज्ञवल्क्य, जानकी, मण्डन मिश्र, पक्षधर मिश्र, लोरिक, गौतम, कणाद, सलहेस, भारती, गार्गी, दीनाभद्री, लखिमा, कालिदास, डाक घाघ ज्योतिरेश्वर ठाकुर आदि मिथिला विभूति क स्मरणार्थ एकटा एतिहासिक स्मारिका प्रकाशनक नेआर कय चुकल अछि।

अपने विविद्वद्जन से सादर निवेदन जे उपर्युक्त मिथिला विभूतिक स्मरणार्थ अपवन निबंध। कविता (गीत–गजल) क रचना प्रेषित कए, यथा समय स्मारिका निकालवा मे अपन सहभागिता देखाओल जाय।

भवदीय,

**शिवानन्द झा**

विद्यापति कला परिषद,

बेनीपट्टि, मधुबनी

23.06.87

सेवा में,

श्रीमती शेफालिका वर्मा,

गंगजला, सहरसा।

प्रिय महोदय,

संलग्न परिपत्रक संदर्भ मे अपने कँ सूचित करैत अपार हर्ष भय रहल अछि जे संगठन समितिक निर्णनयानुसार महासभाक अवसर पर भव्य एवं उपादेय स्मारिकाक प्रकाशन कयल जायत।

अपने सँ निवेदन जे उक्त स्मारिकाक हेतु कर्णगोष्ठी मध्य उपस्थित समस्या आ तकर निराकरण, स्मरणीय महापुरुषक कृतित्व आ व्यक्तित्व, सामाजिक अथवा सांस्कृतिक चेतनाक अन्युत्थान सँ संबंधित आदि उपादेय संदर्भ लेख पठयवाक कृपा कयल जाय। आलेख 30 सितंबर,

86 धरि अवश्य कार्यालय मे पहुँचि जाय से प्रयत्न कयल  जाय।

भवदीय,

**रामानंद रेणु**

कर्ण कायस्थ महासभा,

दरभंगा।

सेवा में,

श्रीमति शेफालिका वर्मा,

गंगजला, सहरसा।

मान्या,

समस्तीपुर जिलान्तर्गत कर्णगोष्ठी क मध्य सांस्कृतिक, राजनैतिक, सामाजिक एवं आर्थिक रूप सँ सर्वांगीण विकासोन्मुख तथा नवचेतना उत्थान करबाक दिशा मे 'मैथिल कर्णकल्याण परिषद, समस्तीपुर' सतत् प्रयत्नशील अछि। परिषद क निर्णयानुसार त्रैमासिक 'कर्ण सौरभ' पत्रिका प्रथम अंक प्रकाशाधीन अछि। अपनेक विचार, सहयोग एवं आशीर्वाद लौटी डाक सँ अपेक्षित अछि जाहि सँ कि 'कर्ण सौरभ' सौरभमय भए सकय।

सादर,

भवदीय

**( डॉ. उमाशंकर चौधरी )**

अध्यक्ष

*करम  कर्ण कायस्थ महासभा, मधुबनी से हमरा सम्मान पत्र 1990 मे देल गेल छल।*

**सम्मान पत्र**

श्रीमती प्रोफ. डॉ. शेफालिका वर्मा... ग्राम... गंगजला, सहरसा, पो. सहरसा, जिला– सहरसा के काव्य प्रतिभा एवं सामाजिक जागरण के क्षेत्र मे विशिष्ट सेवा एवं कार्य कलापक हेतु कर्ण कायस्थ महासभा सम्मानित करैत ऐछ, जाही से अपनेक आदर्श अनुकरणीय होयत।

अध्यक्ष

जगत नारायण दास

अष्टम कर्ण कायस्थ महासभा, मधुबनी

1 अक्टूबर, 1990

मान्यवर, आदरणीय डॉ. शेफालिका वर्मा जी,

विगत एकत्तीस मैथिली- कथागोष्ठी (सगर राति दीप जयर- दि. 18-07-97), सहरसा मे कयल गेल घोषणाक अनुसार एकटा कथासंग्रह प्रकाशित करवाक नियार अछि, जाहि मे भाग लेबाक हेतु.....कँ सादर निमंत्रित कयल जाइत अछि। अपने कँ निकँ-ना ज्ञात अछि जे प्रकाशन - संस्थाक अभाव... काज सामूहिक सहयोगेक आधार पर संभव अछि। तें अपने सँ विनीत निवेदन जे कृपया अपन दू टा मिथिला कथा जे कोनो कथागोष्ठी मे पढ़ल गेल हो आ अद्यावधि अप्रकाशित हो शीघ्रताशीघ्र पठाओल जाय आ संगहि दू सय टाका सेहो पठाय अपन रचना कँ पाठकक सोझाँ पठयबा मे सहयोग कयल जाय जाहि। सगर राति जरयबला। साहित्य - दीप मैथिली क्षेत्र मे अनन्त कालधरि जरैत रहसय।

सधन्यवाद!

निवेदक

**रमेश**

उप समाहर्ता

जिला ग्रामीण विकास अभिकरण

जवाहर विकास भवन, सहरसा-852201.

परम आदरणीया शेफालिका जी,

प्रणाम,

आशा ऐछ अपने नीक नाहित होयब। अपनेक कथा कविताक एकटा बड पैघ पाठक आ प्रशंसक हम सेहो छी। माँ मैथिलीक लेल अहाँ एकटा वरदान छी मैथिली भाषा क लेल हम सब किछ करवाक संकल्प नेने छी। हम बहुत जल्द आबी रहल छी। अपनेक सहयोगक आकांक्षी छी. ..विशेष भेंट भेला पर।

अहांक योगेन्द्र नारायण मल्लिक

दरभंगा

'86

पत्रक कागज, अक्षर सब टा पुरान आ धूमिल भ गेल ऐछ, मुदा ओही मे निहित सिनेह ओहिना भास्वर...

आदरणीया शेफालिका जी,

प्रणाम।

अपने हमरा चीन्हब कि नै, मुदा हम अपनेक कथा कविताक बड पैघ प्रशंसक छी। हमहू मैथिली मे लिखैत छी। छपैत छी...अपनेक रचना सब पढ़ही मोन उत्फुल भ जायत ऐछ। अपने के

प्रत्येक रचना मैथिलीक धरोहरी बैन जैत ऐछ। एहिना माँ मैथिलीक भंडार भरैत रहु। एयाह शुभकामना हमर...

**शारदानंद दास 'परिमल'**

दिल्ली 92

.....चौधरी अपन शोध मे लिखने छैथ....मुक्त छंद मे प्रणित अपन काव्य मे जेना शेफालिका वर्मा नव अभिनव उपमान आ चित्रधर्मी छंद वितान से अपन भावक विन्यास करवा मे सफल भेलीह ऐछ। तहिना गीत सब मे सेहो एकटा विलक्षण मार्दव आ सौकुमार्य संप्रेषित कयल ऐछ.... हिनक प्रानक अतलता मे सुकुमार भावक जे मधुरिमा आ कमनीयता अपन प्रकाश विकीर्ण करैत ऐछ. तकरा तद्रुपे रमणीय शब्दावली मे प्रस्तुत करवा मे कवयित्री सफल भेलीह। शेफालिका वर्माक आन कवयित्री से पृथक् स्थान ऐछ...

आदरणीय शेफालिका जी,

प्रणाम।

मिथिला महान कतेक दिन से अपनेक रचनाक बाट ताकि रहल ऐछ। हमरा सब के बहुत गौरव भेटैत ऐछ। जे हमर समाज मे अपने सन नारी रत्र छाथ... मिथिला महान एखन बड संघर्ष से निकलि रहल एछ। अपने सबहक सहयोग अपेक्षित।

अपनेक स्नेहकांक्षी

अर्जुन चौधरी,

पटना।

अष्टम कर्ण कायस्थ सभा, मधुबनी से हमरा सम्मान पत्र 1990 मे देल गेल छल–

**सम्मान पत्र**

श्रीमती प्रो. डॉ. शेफालिका वर्मा... ग्राम...गंगजला, सहरसा, पो. सहरसा, जिला– सहरसा के काव्य प्रतिभा एवं सामाजिक जागरण क्षेत्र में विशिष्ट सेवा एवं कार्य कलापक हेतु कर्ण कायस्थ महासभा करैत ऐछ। जाही से अपनेक आदर्श अनुकरणीय होयत–

अध्यक्ष

**जगत नारायण दास**

अष्टम कर्ण कायस्थ महासभा

मधुबनी, 1 अक्टूबर, 1990

सोचैत छी हम कोना कर्ण कायस्थ सबहक प्रिये भ गेलौं पता नहि! सबहक सिनेह के हम दूर्वादल जकाँ माथ झुकाए धारण करैत छी....

प्रो. ऊषा चौधरी अपन शोध मे लिखने छथि..''मुक्त छंद मे प्रणीत अपन काव्य मे जेना शेफालिका वर्मा नव अभिनव उपमान आ चित्रधर्मी छंद वितान से अपन भावक विन्यास करवा मे सफल भेलीह ऐछ, तहिना गीत सब मे सेहो एकटा विलक्षण मार्दव आ सौकुमार्य संप्रेषित कयल ऐछ. ..हिनक प्रानक अतलता मे सुकुमार भावक जे मधुरिमा अकमनीयता अपन प्रकाश विकीर्ण करैत ऐछ तकरा तद्रुपे रमणीय शब्दावली मे प्रस्तुत करवा मे कवयित्री सफल भेलीह। शेफालिका वर्माक आन कवयित्री से पृथक विलक्षण स्थान ऐछ...''

*जमाना बड़ तीव्र गति से भागि रहल छैक पत्र लिखवा लेल समय नहीं ऐछ किन्तु पत्रक अस्तित्व ख़तम नहीं भेल। गजेन्द्र ठाकुर जीक संपादन मे ओन लाइन विदेह पत्रिका निकलय लागल। देश विदेश मे एही पत्रिका केर धूम मची गेल। हमरा गजेन्द्र जी पत्र लिखलनि।*

आदरणीया शेफालिका जी,

...अपनेक रचना विदेह लेल आमंत्रित ऐछ। विदेह में सभी विषय पर मुख्यत: मैथिली संस्कृति, आ अंग्रेज़ी मे सेहो  मुदा मैथिली से अंग्रेज़ी में अनुवाद) सब प्रकाशित होइत ऐछ। विदेह सदेह-2 प्रिंट फॉर्म मे आओत (देवनागरी आ तिरहुता मे) जनवरी 2010 मे जर्नल मे 26-50 अंक केर रचना चुनल जायत.....

सादर

**गजेन्द्र ठाकुर**

तखन व हमरा फोन पर समझेलैथ हम हिन्दी मे कोना टाइप कै सकैत छी एकर बाद ते हमरा टाइप करय मे बेसी नीक लागऽ लागल....हम इंग्लैंड मे छलौं ते ओहिठाम मैथिल समाज मिथिलाक संस्कार मे तितल भिजल छल...कहैत छलाह जे कंप्यूटर खाली अंग्रेज़ी बुझैत छैक हम सब अंग्रेज़ी मे मैथिली लिखि देखा दैत छी। आय विदेह देखि मोन पड़ि आयल जे मैथिली मैथिली मे लिखनाय शुरु भऽ गेल विदेह मे हमर रचना जैत रहल, संगे हमर रचनाक अंग्रेज़ी मे अनुवाद सेहो छपैत रहल। आ वैदेहीक लोकप्रियताक अंदाज एहि से भै गेल, जखन हमरा कतेको पत्र भेटय लागल. ..दक्षिण भारत सँ सब सँ बेसी...जाहि मे अशीम, नायर, कुलदीप, कमलेश भट्टाचार्य आदि छैथ.. . कमलेशक पत्र

Madam,

We need writer in English and Bengali for our online ezine-----pl. send sensible articles for that we pay a honorium $10 for each published article. Kindly give us your valuable thoughts likings and dislikings about the e-zine.

Kamlesh
Delhi

अशीम, चेन्नई, ते वैदेही मे छपल हमर कविताक संगे हमरा लिखलन्हि... i m big fan of yors.

Mam,
... जिंदगी किसी की अमानत नहीं होती...मेरी दोस्ती की कैद में जमानत नहीं होती... do what makes a happy, be with who makes you smile and laugh as much as u breath, love as long as you live----- आप हँसते रहिये। आप के लिए मैं सोचता हूँ तो लगता है मैं भगवान के लिए सोच रहा हूँ...आप को मैं जितना पढ़ता हूँ, उतना ही दर्द से भरता हूँ अपने को...आप खुश रहिये...आपकी कविताओं ने मेरी जिन्दगी में एक जगह बना ली है...और आपके लिए सोचता रहता हूँ...........

**अशीम विश्वास**
चेन्नई

मोन पड़ि गेल शरदिन्दु...हमर आत्मकथाक विमोचन समारोह मे कहने छलाह...अहाँ देखू ते एही समारोह मे कहियो एतेक भीड़ देखने छलियैक...सौंसे विद्यापति भवन ठासठास भरल ऐछ कतेक मानैत ऐछ सब अहाँ के...आब अहाँ उदास नहीं रहु...तखन लागल हमर उदासी से शरदिन्दु पर कतेक प्रभाव परैत छल। आय अशिमक पत्र करीब रोज भोरे हमरा वो लिखैत छल। ... wishing u a nice day only means good morning but, silent message saying---i remember u------- हमर रचनाक दर्द केकरो अंतर के छुवि लै एहि से बेसी लेखक के की चाही? हम आभारी भ जायत छी विदेहक, गजेन्द्र जीक.....नागफांस क अंग्रेज़ी अनुवाद सँ बहुतो पाठकक पत्र आबि गेल–

I am going through your novel 'Naglans' on Vedeha. Its unique, For this I have started reading videha on net and

फोन, मोबाइल एसएमएस, ईमेल, आरकूट, फेसबुक.......

हम ते बहुत खुश भय गेलौं यदि पाठक के ह्रदय के रचना छुबि लय रचनाकार लेल एहि से बेसी आनंद की हेतैक, एकटा परमानंदक अनुभूति...हमर जीवन एकटा खुजल किताब रहल, एकर सभ पन्ना केओ पढ़ि सकैत ऐछ। हँ, निर्भर करैत ऐछ पढ़ैवालाक मानसिकता पर.. ''मैं छिपाना जानता तो जग मुझे साधू समझता, शत्रु आज बन गया छल रहित व्यवहार मेरा'' हम गजेन्द्र जीक आभारी छी जे हमर रचनाक युवाकाल जेना घुरा देलनि। चूँकि हम बाल्यकाले से पत्रमित्रता खूब करैत छलौं

माँ पापा कहैत छलाह रजनी जतय बैसैत ऐछ ओतहि दोस्त बना लैत ऐछ। रेल मे, बस मे, सिनेमा घर मे जे बगल मे होय, सरिपो आय वैह हिस्सक हमरा पत्र संग्रहक कारन बनि गेल–स्यात...

साँच ते ई ऐछ जे हमरा पत्र लिखनाय आ पत्र पढ़नाय दुनू निक लागैत अछ। यदि केकरो पत्र स्नेह तितल एको पंक्ति अबैत ऐछ ते मोन होइत होइछ ओकरा कतेक पन्ना लिखी दी चाहे ओ रक्त संबंध होई आ कि भावनात्मक संबंध हम जेकरा मानलों ह्रदय के गहिर से मानलों...हम केकरा बुझाबी जे हमर ह्रदय मे भावनाक विपुल भंडार भरल ऐछ कतबो बांटब खतम नहीं होयत.....खाली नहीं होता, पैमाना है ऐसा... एहिना कतेको हिस्सा मे बांटी गेलों हम,

सत्यशील दिल्ली से लिखलनि.........

Mam, ..... the line you have written here is very motivating for me its a matter of great pleasure that I am in the friends list of well learned and knowledgeable person like u-

-- एहिना सुशान्तक पत्र ....you have added color in my life.....

हमर अपन भागिन सुदीप....

. मामी,..... अहाँ अपन युग से बहुत आगू रहलहु...कखनो कखनो विश्वास केनाय मुश्किल लागैत ऐछ वोहि समय अहाँ कोना एतेक मैनेज करैत होयब, ...... कोना एतेक आगु बढ़हल होयब... simply, u r incredible..... अहाँ हमरा सब लेल सब दिन प्रेरणा रहलौं...........

हम अपन भगिना भगिनी की सबहक दोस्त बनल रहलौं गंभीरताक ओढ़ना खाली गंभीर लोग लग ओढ़ने रहलों हमरा बच्चा सब लग हँसैत बजैत नीक लागैत छल ओतेक फालतू बात मे नहि... हम दोस्तक दोस्त छी...सबहक सिनेह, सबहक विश्वासक रक्षा करय वाली...

श्वेता चेन्नै से...बुआ, अहाँ ऑरकुट सेलेब्रेटिस के सदस्य बैन जाऊ, अहाँक एतेक फेन ऐछ जे हमरा सब के गर्व होइत ऐछ, ओना अहाँक सब से बड़का फेन ते ह हमर पति नवीन जी छैथ जे कहैत छथि जे अहाँक घर मे बुआ से बढ़ि के केओ नहि... मोन पड़ि जायत छैथ नीतू, अलबेला...

मौसी, आई सरस्वती पूजा थिक, सोचलों पहिने अहाँक दर्शन करी...हँसी लागि जायत ऐछ। बच्चा सबहक छोट छोट बात छोट छोप प्यार पर।

एतवे नहि एही एसएमएस के जमाना मे 13 अप्रैल के 11 बजे राति मैं एकटा मेसेज मोबाइल मे आयल, कवयित्री महोदया,

प्रणाम,

कर्णामृत पत्रिका मे अपनेक द्वारा लिखल कथा डोरोथी पढलों...खूब निक लागल पहिनहु दिशाहीन, झहरैत नोर बिजुकैत ठोर, फंसरिक दुई छोर, अर्थ युग पढने छलों...सबटा मर्मस्पर्शी. हमर

पिता स्व. कालीकान्त झा बुच अहाँक रचनाक नीक पाठक छलाह। अपनेक स्वस्थ जीवनक माँ दुर्गा से प्रार्थना करैत छी...

**शिव शंकर झा**

टिलू, जमशेदपुर, 13 अप्रैल

हम सोचे लगलों बहुत बहुत बात...मेल मे, एसेमेस मे ह्दयक अभाव रहैत छैक मुदा, 11 बजे राति मे कोन ज्वार शिव शंकर जी के ह्दय मे उठल हेतैक जे ओ एतेकटाक एसेमेस करवा लेल बाध्य भ गेल हेताह। एतेक राति मे माँ दुर्गा से हमरा लेल प्रार्थना क रहल छैथ... हमरा आर की चाही! एहि एसेमेसक एक एक टा आखर हमरा लेल कोनो स्वर्ण पदक आकि पुरस्कार से कम नहि बुझा पड़ैत ऐछ।

लगले एकटा पत्र भेटल,

प्रिय बहिन शेफालिका जी,

नमस्कार,

सेवा मे अपन पुस्तक ''मैथिल कर्ण कायस्थक गोत्र, पवर, मूल आ वैवाहिक संबंध'' पठा रहल छी। एकर एक प्रति श्रीमती गिरिजा व्यास (अध्यक्ष, राष्ट्रीय महिला आयोग, दिल्ली) के पठा रहल छियेह। एहि पुस्तक क एको पांति वा वाक्य यदि अपनेक चित्त के आकर्षित क सकल त हम अपना श्रम के सार्थक बुझि ओकरा सराहब आ गौरवान्वित होयब...

पोथी के यदि ताहि योग्य बुझी त श्रीमती गिरिजा व्यास से एही संबंध मे परामर्श करब.. ...

सिनेही भाई

कमलधर दास,

खेराजपुर, दरभंगा

07.04.2010

सरिपो लेखक जे रचना करैत छैथ ओ ओकर अपन संताने जकां होइत ऐछ। संतान अध्लाहो रहैत छैक ते माय बाप ले अनमोल रतन... ओकरा विरुद्ध किछ सुनवा मे कष्ट होइत छैक... ई तँ बड़ नीक पोथी छल–

Dear All,

At present, I am reading one autobiographical book i.e. Kist-Kist Jeewan. I have read only 2 chapter and when I explained the vibration of this book, my wife snatched from me and started reading. The flow of events are so ornamental, that too in Maithili, you will feel interesting in every pages.

Do you know about the writer?

The writer of the book is Dr. Shefalika Verma.

Now, Dr. Shefalika Verma is the member of Mithilamanthan. It is a matter of pride for all us to join the hands of Shri Jyoti Prakash Lal to welcome our True Leader of Literature, Dr. Shefalika Verma.

We look forward for her guidance and blessing in our day to day Manthan.

With regards,

**Karna BK**
Hyderabad

हमर जिनगी मे कतो कोनो भौतिक सुख क कमी नहि अछि, किन्तु मोन के खुश रखवा लेल जिनगी बीतावऽ लेल हमरा पाँच वस्तु क आवश्यकता ऐछ... 1. कंप्यूटर नेट क संग, 2. टी. वी., 3. मोबाइल, 4. कलम, 5. कागद। बीच बीच मे चाह भेटि जाय खेवा पीवा से कोनो मतलब नहि। आ ई सभ सुविध हमरा प्राप्त अछि सब टा हमरा ऐछ। एकरे सहारे हम जिनगी बिता लेब. ..एहि मे सौंसे संसार हमर ऐछ।

सरिपों, मिथिला मंथन हमरा अपना संग जोड़ी लेलक....... फेर ते हमर मोनांगन मे समस्त दक्षिण भारत से ल क नेपाल सब आबी हमरा विहुंसाब लागल... जीवन क एही संध्या काल मे एतेक प्यार... ज्योतिप्रकाश, केशव कर्ण, केशव समस्तीपुरी, अमिताभ ठाकुर, राजीव ठाकुर, मृत्युजंय ठाकुर, कृष्णकांत कश्यप, प्रीटी झा, अमित, संदीप, मितेश, जितमोहन झा... आदि आदि कतेक मुस्कान हमरा भेटल...हमर मृत्यु सेहो भाग्मंत भ जायत... सबहक विचार...ई माँ मैथिलिक अभूतपूर्व सेवा थिक.. ... अपन अपन स्तर से सब क रहल छैथ।

Dr. (Smt.) SHEFALIKA VERMA is a writer and poet of Hindi and Maithili languages, considered prominent women Maithili essayist, poet and novelist. With a career spanning over six decades, she has produced many books of poetry, essays, travelogues and an autobiography (name: "Kist Kist Jeevan"). Many of her books got high acclaimed and recognition by avid book readers. Personally, I too very much touched with her way of writing and the ability to stuck the readers with her terrific written words.

I salute and wish a great time ahead to our 'Mithila Vibhuti' and Gold Medalist awardee Dr. Shefalika Verma.

Saadar,
**Jyoti Prakash Lal**
Hyderabad.

मानस मंथन में Thought of the day मे एक दिन गीताक प्रसंग छपल छल। ओ पढ़ि हमरा अपन जीवनक ओ घटना मोन पड़ि गेल- कोना किस्त-किस्त प्रकाशन सँ पहिने अचानक हमर दृष्टि कैलेंडर मे लिखल गीता-सार पर गेल। कोना हमर अवसाद आ तनाव सँ भरल मोन अपूर्व तेज सँ भरि गेल- ई अनुभूति अपन जखन हम मानस मंथन मे देलौं ओहि पर जे प्रतिक्रिया आयल हम भाव विभोर भऽ गेलौं।

आदरणीया शेफालिका जी के मिथिला मंथन क प्लेटफार्म पर पाइब बहुत बढ़िया लागल आ ततबे नीक संस्मरण तथा भावकृति लागल। हमरा दिस सँ हुनकर अनेकानेक स्वागत तथा प्रणाम! बेस त' अखन इतबे। फिर कहियो और लिखब-

सप्रेम आ सादर,
अमरनाथ ठाकुर, मिथिला मंथन

आत्मीय एवं आदरणीया,
शेफालिका जी,
जय माता दी,

अहाँक के प्रसंग बहुत लोगक प्रेरणा बनि सकैत अछि। जिन्दगी हर एक इन्सान के मौका दैत छैक किछ न किछ करवा के लेल।

हर इन्सान के भाग्यक फैसला गर्भ मे आवै से पहिने भ जायत छै।

आदरणीया शेफालिका जी अहाँ अपन हिम्मत और सूझ-बूझ से समाज मे बदलाव आनुँ। अपन लेखनी सँ इन्सान के अंदर मरल आत्मा कें जगाबु। ई काज आसान नै अछि। लेकिन हम मानय छी जे ई काज अगर आसान होयत तखन ई काज शेफालिका जी सँ किएक नहि होयत? अगर शेफालिका जी छथिन तखन युग परिवर्तन जरूर हेतैक।

याद रखू हम बदलेंगे, युग बदलेगा।

**राजीव ठाकुर**
वसुधैव कुटुम्बकम, मिथिला मंथन

अखिलेश जी,

परम आदरणीया शेफालिका जी, जरूर जवाब देतीह!

शेफालिका जीक बुक ''किस्त किस्त जीवन'' पढ़ू लागैत जे एतेक मधुर, जे बार बार पढ़िते रहू। हमरा पास किताब अछि। चूँकि अहाँ हैदराबाद छी, मिलु आ देखू आ पढ़ू।

**बी.के. कर्ण,** मिथिला मंथन

शेफालिका जी,

गोर लगै छी,

अहाँक मेल पढ़ि मे बहुत कष्ट होयत (कियक टा अहाँक मेल मे लाक्षणिक भाषाक प्रयोग अत्यधिक अछि) नीक लागय....किछ नीक गप और भाषा सीख क भेटायत।

हमरा एहें कोनो पुस्तक क नाम बताऊ जाय सा हम मिथिलाक्षर भाषा सीख सकीं..... हमरा बंग्ला नीक जकाँ आबैये मैथिली लिपि और बंगाली लिपि मे बहुत समानता बुझैत अछि...

धन्यवाद,

**अखिलेश,** मिथिला मंथन

Dear Mam;

Thank you so much, for sharing some moments with me. I wanted to take a permission from you would be guid for some pahses of my life. I really don't have such people around me with a clear vision like you.

I should say I have become fan of yours. I am not aware about you a lot but could only understand that you have a very lovely personality.

**Abhilasha**

O my Sweet friend,

-----When you have plan to visit USA, Pl. tel me know I will be so happy to have my darling friend with me.

**Shelley Banerjee**
USA

Mam,

.....It is my pleasure to receive letter from 0such a big personality you have constentsy------ been my insip----------- you are my strength as well as my proud. You ae the example to humanity I am really feeling glad to have such a mother who is living, sparkling elegantand verstile pl. do give your support and guidance.

**Shreyas Sinha**
Delhi.

A prayer can go whre I can not go. Through prayers I can be with you without being there.........

C.S. Anad, Kerala.

डॉ. शेफालिका वर्मा,

माननीया,

अपनें लोकनिक पठाओल रचना हमरा लोकनिक स्मारिका प्रकाशन मे बहुत बेसी उत्साहवर्धन कयल, जाहि हेतु हमरा लोकनि अपनेक सतत आभारी रहब। समयांतराल कम हेबाक कारनें प्रकाशन के शीघ्रता के ध्यान मे रखैत शुद्धिकरण मे किछु आंशिक त्रुटि सेहो भेल अछि, जाहि हेतु हमरा लोकनि क्षमाप्रार्थी छी आ आगाँ ई प्रयास रहत जे एहि मे सुधार होएया। सहयोग हेतु पुन: धन्यवाद। विशेष शुभकामनाक संग

निवेदक

**पी.एन. झा**

विद्यापति मैथिल युवा मंच

पांडव नगर, दिल्ली।

*एतेक लोकक शुभ संदेश हमरा विदेहक कारण भेटल आ भेटि रहल ऐछ। सबके एहि में समावेश किनाय शंकरक जटजूट कें समेटवा सन दुर्लभ ऐछ।*

---Shefalika has made a mark as a poetess of love and pathos and distinguished by the title Kavyavinodini awarded by Maithili Academi, Allahabad. Her Vipralabdha consists of 31 poems resprsenting vermas maiden attempt; the poems can be read as songs of love poignant with melancholy with a delicate touch. Bhawanjali with 51 prayers is a mature work with noble thoughts marked by restraint : it has a mystical dimension, but the treatment is modern. One can feel Mahadevi vermas influence over Shefalika and she has rightly been called the Mahadevi of Maithili it is delicate, a product of a refined temperament.

Shefalikas Smriti rekha (1977) is a living sketch of ren Drminiscences and reflects her personal experience with fine innovations, she holds up a mirror to the times she lives in and manifests her mindest in an ironic style. Yayavari is marked by strong creative urge and emotional intensity through sketches, memorable events and touching moments of travel, she reveals the conscience of modern man and moves her readers with her appeal to compassion.

Shefalika Verma's Ekta Akasha <1988> is an anthology of twelve short stories on women's awareness, on the tragic aspects of love-marriage, mismatched alliance and dwells at length on the remedial measures of remarriage. It unveils the hidden forces of love with pathos and sounds deep note on conjugal harmony................

By- Dr. Devkant Jha
(A History of Modern Maithili Literature)

I met a lady who was amaging. Her simplicity, her charm, her intelligance was unique. I never met such a lady before. Her was so soft, full of love, full of expressions, I know her from the very begining, but it was our first meeting. She was grieving for her gone husband. Her sweet deep voice break the silence of the dark. In her eyes the pathos of her parted husband was in full frame, this touched me, our pain was similar... I remember that day of music, dance and food on the lonely sea beach of Sundarland. she was running on the sand calling my name loudly See Maa and heard her own echo, how jubilant she was I could see that moments of happiness on her childish lovely face and she was SHEFALI.

I met her Dr. Vabdana and Dr. KPs house, new castle. She was non other than Vandana's mother the veteran writer Dr. Shefalika Verma.

Her husband Mr Verma learnt gthat to make love to a writer is to know her soul. When she was with him life took on a new meaning. She always told me that they were not wife and husband but they were mainly lover and beloved--and I remembered same sentiments with my husband--my Ram, my lover.

I read her poems in English translations in Penguine series, also some in Hindi, and some in original Maithili..., being a Nepali. I understood Maithili, but not fluently. The pathos of her poem was mine too, not only the poems but also the pathos of her brain, of her heart touched me, surrounded me. I forgot the pain of losing Ram so the Shefali losing her Lalan--both our smile, we met on the same platform of lonliness, sadness and restlessness. We

became friend. We called each other Taruni...in Nepali its evergreen.

**Mrs. Seema Gautam**
W/o Dr. Ram Gautam
Sunderland, U.K.

Dear Mummy,

I know my mom is the best mom in the universe---u are the best friend of mine in my good times and n the moments of sorrow...you are the reasons for sweet yesterday & my promises for tomorrow . you have always been to us a giver of sweet unconditional love... we see our loving papa in you...we respect u my mom, we adore u...we got everything from your love...never be sad mamma....

your lovely beti
suku....bhawna....
karekal

*मैथिली भाषा लेल पटना हाईकोर्ट मे जयकान्त मिश्र हिनके से केसक ड्राफ्टिंग करौने छलाह। पता नहि कोना वर्मा जी पर एतेक भरोस छलन्हि। कालान्तर मे केस जीतीयो गेलाह। ओहि संदर्भ मे ई पत्र.....।*

Respected Jaykant Babu,

I am sending the draft for approval. I am very sorry for the trouble I have given. Hope the necessary corrections are needed. The number of annexures have been changed as per Rules and Patna High Court.

The draft has also been made in accordance with those rules.

I have got estimated the expenditure for filing which will be Rs. 2500/- approximately with typing and photo charges and stamp. I have not charged the fees. Photo copies of annexures will have to be made under my supervision before filing.

I fully agree that Tara Babu should also be approached.

Hope this finds you in cheers.

Yours affectionately
**(Lalan Kumar Verma)**
Advocate
Patna High Court, Patna.

Pt. Jayakant Mishra,
Allahabad.

ई पत्र हमरा पूर्वांचलीय भारत कवि समारोह उड़ीसा सँ आयल छल-

Shefalika Verma
Municipal Commissioner
Ganjala, Saharan,
N. Bihar.

Dear Madam,

As a part of Inter-state Cultural/Mutual---- Exchange Programme 'Samas Prakasan' of Sambalpur is going to sponsers "Pruba Bharat Kavi Smaroh". In the premises of Mini Stadium, Bargarh on 04.06.83 and 05.06.83 we solicit your kind presence to grace the 'Poetry Recitation Commony' as well as to take part in the discussion on "Contemporary Indian Poetry" with special emphasis on Maithili poetry. Many young poets from Asam, Manipur, Bihar, M.P. and West Bengal have already consented to grace the ocassion. We are much interested to hear a note of consent from you as well as to receive one or two poems of yours including a criticism on contemporary Maithili poetry to put them in our sovenir. As the poems are to be translated into English, it would be nice if we receive them earlier by 30th of this month, Bargah is a Railway station on South-Eastern Railway. You can sharp get down here by Bokaro-Madras Express. The organisation will be glad enough to meet your travelling expenses minimum to and Ist class in the shortest possible train route.
Arrangement for your accomodation is also well made here.
Awaiting for your kind reply.
With regards,

Sincerely,
**Organising Secretary**
Sambalpur, Orissa.
'83.

Madam Shefalika,

You will be pleased to know that your name has been selected by our research editors for inclusion of your biographical sketch the forthcoming edition of ' Learned India'.

'Learned India'- Nation's foremost who's who of Men & Women of Achievement and Distinction,a foundation compilation on living men and women whose unique talents and creative efforts have played an important role in stimulating and sustaining the high name of a particular branch of knowledge or significant area of activity, attempts to capture and preserve knowledge about them and portray their achievements in brief capsule profiles.

Your immediate favourable instructions will be gratifying endorsement of our efforts and shall stand in great esteem.

Thanking you,

Yours faithfully,
Editor
Asia International

मुकुन्द राजकोट गुजरात मे छलाह। हमर कविता सबहक अनुवाद गुजराती मे केने छलाह-

Oct. 17, 90

Dear Shefalika Verma,

I wrote to you 3 letters, including one carrying text copy of a Gujrati translation of one of your peoms which seems to have crossed with your pc of Octomber 3. Havn't you received all these letters redirected from your Saharsa address?.......I am very much anxious. Pl. tell me soon---

**Mukund Dave,**
Rajkot (Gujrat)

कन्नड़ लेखक नायक सँ सेहो हमर परिचय मैथिली क कारण भेल छल-

Dear Shefalika Ji,

For want of time I could not see you personally. Please excuse me. I was in Patna during the 3rd week of Dec. I hope I shall get your cooperation in the integration project of which I shall write you soon.

Yours sincere
**R.K. Naik**
Kannad Writer
Belgaum
1.1.'96.

*हम साहित्य अकादेमी मे पाँच बरीस धरि सलाहकर समितिक सदस्य मैथिली मे छलौं। ओहि क्रम मे इन्द्रनाथ चौधरी सँ बड़ आपकता भऽ गेल छल-*

Dear Dr. (Mrs.) Shefalika Verma,

I am writing this small "Thank you" note on the eve of my retirement from the Secretaryship of the Sahitya Akademi. My association of over 12 years with the Akademi has been most rewarding and it has given me an overall sense of great personal fulfillment. Through these long years with the Akademi, I have always derived strength and satisfaction from your support. I am deeply indebted for your cooperation and the confidence you have reposed in me.

I have every hope that you will continue to extend your valuable help to my successor Professor K. Satchidanandan.

Hoping to receive full cooperation from you in future also and with kind regards,

Yours sincerely,
**Indra Nath Choudhari**
16th October 1996
Secretary
Sahitya Akademi
Delhi.

*Indmark Publishing, बंगलौर सँ जखन पत्र हन्ना मायरक आयल छल तँ हमरा आश्चर्य लागि गेल हम ओहिठाम कोना पहुँचलौं- फेर तँ पत्र व्यवहार होइत रहल- हमर आलेख ओ अंग्रेज़ी मे छापने छलीह।*

Dear Mrs. Shefalika Verma,

Thank you for your letter dated May 9th. I must apologize for this delay in replying. I was in Delhi during the whole of May in connection with the release of Vol. II of India 2001 Encyclopedia. The function at Rashtrapati Bhavan on May 19th at which the first copy was presented to the President and the meeting at the Nehru Centre where Mr. Shivraj Patil, Mr. Salman Khurshid, Dr. Karan Singh and others spoke was a grand success.

I am sending you herewith the computer printout of your article and please return them with corrections.

I would also like you to select a few outstanding quotations or prose from a Maithili work for display in your article. I am enclosing the article of Kannada literature, which contains two

quotations for your guidance.

Warmest Regards,

Yours sincerely,
**Hanna Myer,**
12th June 1995,
Indmark Publishing, Bangalore.

Dear Didi,

Accept first my brotherly love and respect. Excuse me for my delayed response. I got your letter on 2nd August 1985, still could not write you for my nothingness busy. I may kindly be excused form my dear didi. Didi, it was out of my imagination that I will get a letter from you. Your affectionate smile, simple native and mixing behaviours not only to me but also to all and for Aswini Babu never forget you. Didi will you please promise me to keep this correspondence for ever. Promise me Didi please promise me. I am waiting for you next letter.

You know Didi I was a student of B.A. final having Oriya honours and Pol. Sc. I got a first class honours with distinction in our university and of only in Sambhalpur University.

My heartly congratulation to your eldest son Rajiv for his veterea success acknowledge me and my address for him kind correspondence on the following address.

Your's lovely brother.

**Ashok Mapapatra**
Sambalpur,
Orissa.

*नहि जानि अशोक महापात्र आय कतऽ अछि? कोना हृदय सँ हृदयक रिस्ता बनि जाइत अछि। जावत हम बरगढ़, संबलपुर मे रहलौं ओ हमर आगु पाछु करैत छल- हमर भाषण, कविता सभटा टुकुर टुकुर मुँह दिसि तकैत सुनैत रहैत छल-*

*विभा मैथिलीक लेखिकाक संगे एकटा रंगकर्मी सेहो छथि संगे इन्डियन वायल बम्बई मे हिन्दी पदाधिकारी छथि- दूर रहितो सम्पर्क सभ सँ राखने रहैत छथि, ओ माँ मैथिलीक सेवा करैत छथि-*

Dear Dr. Verma,

Thank you for the letter and information on women writers which you had sent so promptly I also enjoyed reading "Yayawari" and getting a glimpse into the life of a sensitive being.

I followed up on the information you had sent out. But I have found that procuring books in Maithili from Bombay can be frustrating experience.

Please let me know if I can be of any help anytime. Wish you and your family a very happy 1997.

Sincerely,
**Vibha Vasi**
10C, Bombay
5 Jan, 1997.

Dr. Shefalika Verma,
7/C-14, Anandpuri
W.Boring Canal Road,
Patna-800 001, INDIA

Dear Dr. Verma,

Congratulations! Because of exemplary performance your name has been recommended recently to the Institute's Governing Board of Editors for biographical inclusion in the Sixth Edition of INTERNATIONAL DIRECTORY OF DISTINGUISHED LEADERSHIP by Professor Mukund R. Dave.

Selection is based entirely upon merit, and I congratulate you on the fine example you are setting for your peers and society, Dr. Verma. My best personal wishes for all of your future endeavours. I look forward to hearing from you here at our headquarters.

Respectfully,
**J.M. Evans**
EDITORIAL DIRECTOR
'95.

*एहि पत्र मे मुकुन्द दवेक नाम सँ हँसी आबि गेल ई अनचिन्हार सभ हमर कविता कथाक माध्यम मे कोना चीन्हार भऽ जायत छथि-*

H.H. The Maharaja's College For Women
Thiruvananthapuram
Centenary Celebrations 1997
Chair Person: Prof. B. Hridayakumari
General Convenor: Prof. J. Rajakumary (Principal)
Treasurer: Prof. S. Valsala
Chief Person: Shri E.K. Nayanar (Hon. Chief Minister)

Respected Madam Shefalika Ji,

This is to earnestly solicit your help and contribution for an exhibition being organized by us as part of the centenary celebrations. The exhibition to be held by the end of November '97 and entitled HOME AND THE WORLD would focus on various areas of women's achievement. One major section will be devoted to the women writers of the different regions of India.

I request you on behalf of the organizing committee to help us in this venture by contributing the following items:

(a) a detailed write up about yourself including biographical details.
(b) list of work published and unpublished.
(c) a fairly large photograph or at least a small one of yours.
(d) Copies of your works available.

It would be a great boon to us and to all the women in this part of the country to become aware of writers like you who have contributed so much to the cultural wealth of our country. Please respond at the earliest and could you please write to me in the address given below?

Thanking you,

Yours truly,

**Dr. M.S. Hema**

Dept. of English,
Govt. College for Women,
Thiruvananthapuram.

*आर्लिन आर.के. जिडेक पत्र आयल तँ वर्माजी कतेक खुश भऽ उठल छलाह-आय अहाँक मैथिली मे लिखनाय सार्थक भऽ गेल। आ हम- हम तँ सपने मे जीवैत छलौं-सपने बुझैत छलौं-*

Dear Poet Shefalika ji,

I am pleased to be able to inform you that Penguin (India) will be bringing out Other Voices : The Penguin Anthology of Contemporary Indian Women Poets some time after March, 1991.

This letter is to inform you that it is likey that at least one of your poems has been selected to appear in the volumes. As I still in the process of collecting translations, it is not really possible to be more precise at this time: also since I am packing up and finishing work in the very little time left to me here in India. I do hope you will forgive the impresonainess...... and formility of this letter.

I would ask that you please put together a brief (25 words) bio-data which includes your year and place of birth, and sent it on to me in the United States, at the above address. (I recommend that all important correspondence, currection/correction... etc. be sent Registered Mail as such material has already got lost.) The bio-data must reach me no later than February 10th, 1991 to be included.

You may expect to be contacted by Penguin India directly some time.

With warmest good wishes and regards, and my great pleasure at being able to include your work in the anthology.

Yours sincerely,
**Dr. Arlene R.K. Zide.**

To,
Hon. Shefalika Verma Ji,
Namaskar!

On the very onset I thank you for contributing post-independence poetry through your constant, powerful creative writing. A concern for common man and respect for human values have been the hallmarks of your poetry. Love for life is the special quality of your verse writing.

From a decade I have been doing research on post independence Indian poetry. It's my attempt to find out the linguistic tradition, cultural tradition in various India languages and to trace out Indian ness reflected on various levels.

To publish the translated poems in journals or book is also one of my aims. So, I wish to translate your poems into Marathi.

Therefore, you are humbly requested to allow me to translate your poems into Marathi, and publish it.

With regards,

Yours sincerely,
**(Prithviraj Taur)**

Respected elder sister Shefalika Di,
Pakanpur 30.9.06.

Namaskar. Kindly send some stories, poems etc. for the monthly children's magazine in Maithili language named 'Dulari Bahin'.

Kindly send the Notes of U.K. and other countries for our museum. Send your postcard size photograph (color) for our museum......

Yours faithfully,
**Bijaya Kumar Mohapatra**
Vill- Pakanpur
P.O.- Kaduapada-754106-
Dist.- Jagatsinghpur (Orissa).

*दिल्ली मे सद्‌भावना दिवस राजकमल मिश्र बहुत सशक्त आ सनगर ढंग सँ दृष्टि क कार्यालय मे मनौने छलाह। हमरा मुख्य अतिथि बनेने छलाह आ गोविन्दाचार्य जी उदघाटक ई पत्र, हमरा भेटल छल- ओहि समय।*

Respected Dr. Shefalika,

With a view to understand the Slum problems, and to propose threadbare and meaningful solutions, we, the faculty and student of the Campus Law Centre, University of Delhi have resolved to:

With this purpose, we have scheduled a two day Conclave on "Slums: REALITY, UNDERSTANDING AND SOLUTION" on August 17th and 18th 2005 from 9.00 AM to 7.00 PM at Campus Law Centre, University of Delhi, Delhi.

Our deliberation will be greatly enriched if you could share with us your experiences in handling intense human problems, in slums and other human habitations in the country. We would be extremely grateful if you could also contribute a paper or give a power point presentation on any of the above themes. Your presentation should not ordinarily exceed 20

minutes.

We are eagerly awaiting your response in regard to the earliest so that we can finalize a programme.

With warms regards,

**Rajiv Khanna (11/8/05)**
Professor in Charge,
Campus Law Centre,
University of Delhi,
Delhi-110007.

स्पैरोक *All India Women's Writer Conference* मे भेटल छलीह- सत्यवती।

Dear Shefalika Verma,

How are you\ Nice meeting and talking with you in Khasid. It was a wonderful experience for me. I wrote a detailed report on my experience in my magazine Bhumika. I am sending a copy. I also created an yahoo group women writers network. I invite you to joint the group to share views. I gave an email also to some writers. Some responded also. OK. Keep in touch.

**K. Satyavati**
Kannad writer
Cell No. 9440271565.

Dear Sister;

Hope you are fine. I have read your views, published in Samakalin Bhartiya Sahitya. Please accept my congratulation...Yes, heart felt love and thanks. I am a freelance writer. I have got books published. I have also translated many important books. I an eager to know more things on you and your literary flair. May our friendship blossom through.

**Pravat Kumar Mishra**
Agrail. Extn. Officer
Gangadhan Nagar
268028 Bangang
Orissa.

Sound and Picture Archieves for Research on Women

Dear Ms. Shefalika Verma,

SPARROW is planning to organize a Writers' Camp from 26th to 30th January 2006. This camp is part of a SPARROW project entitled Leaps and Bounds, which is a project to celebrate and publish women's writings. The camp is planned in a quiet village near Alibagh called Kashid. The camp will be located in the Kashid Beach Resort. We are hoping to bring together writers from 20 different languages. The five-day camp is conceived as a time for writings, readings, sharing of experiences, recording, watching films, nature walks, listening to music and watching performances. It will be a five-day camp where along with the sounds of different languages, you will also hear the sound of the sea waves. We would very much like you to be part of this camp and would feel honored if you accept our invitations. SPARROW will be able to pay you First class or II A.C. fares. As we are working with a very tight budget, we will be able to bear airfare expenses only under special circumstances.

We look forward to hearing from you,

Yours sincerely,
**C S Lakshmi,**
Director.

ई सभ पत्र हमरा मैथिलीक  कारण भेटल अछि–

जखन ई पत्र आयल छल तँ कतेक बधाई हमरा एहि नोमिनेशन लेल भेटल छल। मुदा हम परिस्थितिक एहेन झंझा मे पड़ल छलौं जे एहि दिसि ध्यानो नहि देलौं–

Dear Mrs. Shefalika Verma,

I am delighted to announce your nomination by the Governing Board of Editors of the Americal Biographical Institute for the prestigious title WOMAN OF THE YEAR 2004. The Institute's International Board of Research decided on your nomination, due to your overall accomplishments and contributions to society. It is our desire to uplift accomplishments of our fellow Americans and those in other countries whose deeds are important to the world.

The ABI Board continually researches achievements of men and women from around the world.

The ABI Board continually researchs achievements of men and women from around the

world, and most are recognized in the institutes internationally. Occassionally the Board finds other individuals who deserve such top honors as women of the year. The task of choosing such a group from around the world is overwhelming, to say the least. The institute is assisted in its research through personal recommendations from the ABI Research Board of advisors, a panel of 10000 influential members living in as many as 75 countries.

Yours sincerely,
**J.M. Evans**
President ABI, Raleigh, North California
13/2/2004.

Respected Dr. Shefalika,

Just after reading your poem in Lok Suchak (Issue 5, April, 1995) I am inspired to write this letter to you. I like to share your agony with my own poem regarding Phoolan let us celebrate this equality of opportunity.

**Raju Solanki**
Vivek Bhawan,
B/H Prakash Cinema,
Patani Sheri, Ahmadabad.

**Asmita**

20 June 2009, Patna

Venue: Vidyapati Bhawan, Patna.

Dear Madam, Shefalika Verma,

The Akademi has proposed to organize a programme on the above mentioned subject at Patna on 20 June 2009.

We are happy to invite you in the programme to read your short-stories in the pre-lunch session at 10.00 a.m.. You will be provided honorarium of Rs. 1000/- (Rs. One thousand only) and II AC train/bus fare/local conveyances at TA as per Akademi norms.

We are thankful for you have given your consent to the Convenor of Maithili Advisory Board to participate in the programme. For futher information you may please contact with

Co-ordinator, Sri Vinod Kumar Jha, Mobile No. 0-9334108287.

With regards,

Yours,
**(S. Gunasekaran)**
Sahitya Akademi,
New Delhi.

Darling Daughter Guddi,

I was listening your song on tape. I started weeping to listen you it is so lovely, so graceful; I always feel your presence with my every heart beat they only docam. By the beat of what you are' wil materialise by your heard/hard--- labour never case for anything ressive that your have divine power you will remain peaceful and such angles....

Papa

My dear Raju, Jaya, Lily, Guddu, Guddi and Arushi,

We left Madras yesterday at 8.40am.Coramandal started its journey for Howrah 30 minutes late. Perhaps you must have received my earlier letter that I got check up at Apollo. There is nothing to worry. I am very much happy with you people. You all are our assets. When you are happy, I am very happy. Please don’t bother for anything. We had been to Rameshwaram where we stayed in Birla Cottage on the seashore. The island of Rameshwaram spreads out over a 56km, swell with gentle sand dunes, embellished with the delicacy of Casuarina Trees and Stark palms. Dramatic landscapes enhance the sacred mystery of the place. Sri Lanka is only 45 kms away. It is one of the holiest places for Hindus who consider no pilgrimage complete without a dip in the sacred sea waters of the Agneitheertham. It was here that the sea was calmed by Lord Ram. The sea at this place (point) is said to be the most tranquil found anywhere around our country. Our Birla Cottage no. 22 was situated just North of this point. We took holy deep in Agnitheertham both on the 24$^{th}$ and 25$^{th}$ September on behalf of all the family members, taking their names. We worshipped Shri Ramnathswamy (Lord Shiva) in the Ramanathaswamy Temple, rambling over 15 acres. It is the main attraction and the deity is called Ramnathswamy (Hindus call it Rameswaram.) The temple has elephants to welcome visitors and bless them with deliberately gentle trunks for a small fee. There is a legend about the lingam here which is said to have been built with sand by Sita after Ram brought her back from Lanka after killing demon Ravana. Ram sent Hanuman to MountKailash to fetch a lingam but since he arrived late and the auspicious hour of Puja was at hand, the said lingam was worshipped in order to expiate Rama’s killing of Ravana.

There are 22 sacred wells inside the temple each with water that tastes different from the others. We like other pilgrims took a guide at Rameswaram Station named Munian Dee and after being purified after a holy bath in Agnitheertham went inside the temple and took bath

in the said 22 wells. Pilgrims pray to Ganesh here for family happiness and to Kalyan Sundareshwar for a good marriage. Vishnu as Sheshnarayan lies on his back on the sacred song – a pose unique to this temple. Nandi is made of only one big stone carved out and painted superbly showing the best possible art of South. A spell binding sight is the temple corridor the longest in the country having a total length of 1200 metres flanked by beautifully, ornate pillars. The corridor seems to stretch to infinity. We worshipped Ramnathswamy on 24th at 12 hours. We also saw Swet Sfatik Lord Shiva and took his Darshan at 5am on the 25th. It was so fascinating to have a glimpse of the Lord, which I cannot express. It is worth Rs. 1.5 Crores and is moutned a golden throne weighting 1½ mounds. Another temple, the Ramjharoka Temple is on the highest point of the island – Gandhamatharam Parvatham. It was really known as Ramji rutia, which means that Lord Rama rested here before and after embarking for Sri Lanka. It is from here that Hanuman is said to have taken a flying leap for Lanka in search for Sita. From the temple terrace, we saw the island of Rameshwaram, surrounded by a vivid blue circle of sea. I wondered when a blue sea and a blue sky could be so fascinating, why people hanker after only white complexioned of girl or boy. In the inner shrine, are the footprints of Rama, worshipped with flowers, vermilion powder, camphor (burning) and musical chanting.

I must say that before reaching Rameshwaram Station, the train chugs a vivid turquoise translucent sea over the long Pamban Bridge. We were simply thrilled to find ourselves in the middle of a translucent sea over which is built the enchanting Pamban Bridge.

There are other temples in Rameswaram, small ones dedicated to Rama, Sita, Lakshmana and Hanuman.

Though Rameswaram is gently veiled by an aura of peace enhanced by the soft whisper of a sea once tamed by Rama, the poverty reigns here. The main sources of income are the fish and beautiful coral reefs and the tourists. I had an impression that the day the tourists will cease to come here, the people of the area may starve. I think, it is the blessing of Lord Ramnathswamy and Rama, that the influx of pilgrims is increasing day by day and the people are living in harmony, peace and happiness.

Now I am finishing this letter. The train has reached Kharagpur Station on way to Howrah. Only 2 and a half hours journey will make us reach Howrah from here.

I have every desire that you all be cheerful. Your Mammi is enjoying the trip and so am I.

With love and blessings to you all.

Your Papa- Coromandal Train.

28.9.1993.

*पत्र के शुरु में हम सभ रामेश्वरम गेल छलौं- ओहिठामक सौंदर्य सँ अभिभूत भऽ वर्मा जी कोरोमंडल ट्रेनहि से बाल बच्चाक नामे चिट्ठी लिखने छलाह- बच्चा सब के हमरा सँ प्रेम रहल सभ दिन सँ-हमरा बच्चा सभ सँ- बच्चाक ह्रदय सरल निष्कट होउत अछि- तँ हमर परिवारक बच्चा सभ चाहे दोओरक होय वाकि ननदिक-हमर दोस्त जकाँ रहल चाहे ओ पोती ओ वाकि नाति नातिन-*

My mummy, Shefalika Verma,

is the best mummy, not only in the world, in universe also. She is my parent as well as teacher. She teaches us that what is good or bad. She always wants that we become a good person. I think that she is greatest amongh the great man.

**Ankit,**
2007.

*मोहन जीक बेटा अंकित बड़ कम बजैत अछि मुदा ह्रदय सँ ओ हमरा एतेक किएक मनैत अछि- पता नहि-*

Hey Dadi Ma,
How are you,
---Never be sad

Because we are with you. D- Delightful, A-Amity, D- Dilligent, I-Intelligent- Dadi you are the greatest one. Sugar sweet, but not sweet as you.

God has blessed u becoz all ur dreams are coming true, we love u. Hope you are coming on 15th. But my exams are also starting from 15 of Dec. But I am happy you people are coming and you will help me in my studies. Pl. come immidiately. I am waiting for you impatiently. Everybody is fine here and waiting for you, dad chhoti mummy and my dear Tanya. I am constrating on my studies and excited that you people are coming. Aditi is also writing a letter to you-----Pl. help Mom to do her interview in excellent manner. Missing u, waiting for u---------

Yours lovingly
**Arushi**

*अरुषी हमर प्रथम पोती- डुमरा खानदानक हमर बाद राजीवक ओकर बाद अरुषी सँ हमर वंश चलत- इन्दिरा गाँधी सँ-*

Dear Dada Dadi,

You are very intelligent I love u very much. Please come soon. My exams are over. Pl. come in christmas. How do you do. We are fine here--------Be happy you are the best.

Love and regards from

**Aditi.**

*नारी सशक्तीकरणक अनुपम उदाहरण- हमर गौरवमय परिवार थीक- अरूषी आय इंजीनियरिंग छात्रा थीकीह फेर अदिति- हमर सभ सँ ज्येष्ठ नतिनी- चींकी यानी सुप्रभा एखन मेडिकल फाइनलक छात्रा थीकीह- मुदा एकर सबहक हृदय पर हमर राज अछि- कतेक नाना नानीक ई सौभाग्य भेटैत छैक- सुप्रभा आ प्रसून भास्कर यानी हनी भावनाक बेटा-बेटी-*

Dear Nanima,

Saadar Pranam! Its been quite a long time since I wrote to you and I earnestly apologize for it. You see, I was so involved in this whole examination stuff that I couldn't spare time for the letters, but I was glad to receive your letter stating that you and Nanaji are fine.

Well then, there's good news for you. I had an all Indian CIPEL exam for excellence in English and G.K. and was awarded a gold medal for scoring 5th rank all over India. Papa and Mummy are quite happy about it and I really thank God for this pleasant moment. We, celebrated this in a hotel that night.

My eleventh Birthday is coming soon. I would be glad if you and Nanaji would be here too. How are the others by the way? Mummy, Papa and Honey are just fine. Honey always asks for Nanaji.

Convey my regards to Nanaji and the elders and my utmost respect to you.

Hoping to see you soon.

Yours obediently
**Chinki**
(Suprabha)
1999.

Dear Nanima,

How are you? Everyone's fine here. It's been so long since I have written to you. I feel very sorry for that. Anyway I enjoyed my summer vacations very well. I joined a skating camp that was organized for twenty days and was also awarded the gold medal for coming first in the groud above 12 years. I have also subscribed for an IIT/AIEEE/MBBS course. My VIII standard studies are going on fine. Hope you are fine there. Please take care of your health. Always think that NANAJI is with us.............

Thanking you,

Yours affectionately,
**Prasun Bhaskar**
Karaikal
'2006.

*ई पत्र, ई कविता सभी ओहि लड़की अंकिताक थीक जे हमर हँसीक पाछा बताहि जकाँ रहैत छलीह- दुनियाक समस्त सुन्दरता ओकरा अपन नानी माँ मे देखा पड़ैत छल। India माने नानी माँ- अंकिता (प्रीतू) आ अनुपमा दूनू बंदनाक बेटी छी आ अंकिता एखन लंदन विश्वविद्यालय मे मेडिकल छात्रा थीकीह-*

My Nanima

Her eyes like sapphires, a purposeful element in a dimmed world, glittering, shining and showing warmth to all who looks into them.

Her hair is free, it runs in the breeze! Left, right up, down, as black as night. Her face is shaped so perfectly that it is impossible to believe that there is anyone else more perfect.

Her complexion is like the moon-only the moon has scars and my Nanima is clear. Her mood is like the weather when it rains, she rains. Where the Sun is out, she shines. Her mood is predictable as life. She showers her love between everyone and everyone loves her to the full.

She has a personality, that is kindness and love and peace. She is like her namesake and blooms at night, and in the day withers, yet, I love my Nanima.

She inspires us and encourages us to reach out into future and grasp everything. She puts her world into our laps and dedicates herself to us, and we to her.

I love you. Keep smiling always-I really don't know what I'd do without you Nanima.

--------------

Without My Nanima. The Sky seems Dull,
The Night Never Ends. The Day Never Stops,
The Sun Never Shines, The Flowers Never Dance.
The Moon Never Sleeps and The Heart Never Beats.

But knowing that she Remembers Us.
Is Enough For Us,
Is An Honour For Us,

The Night Must End, The Day Must Stop,
The Sun Must Shine. The Flowers Must Dance,
The Moon Must Sleep and The Heart Must Beat,
Because Our Nanima Is Always With us.
She is Never Away From Our Hearts,
She is part of us
That can never be taken away
She is us.

Ankita Karn
New castle. (U.K.)

*स्काटलैंडक जंगल मे छोटकी एनी हमरा अपना मोहक खिलखिली संग ई कागजक टुकड़ा देने छलीह- नानी माँ, अहाँ ले- ही ही ही-*

My Dear Nani Ma,
I love you. I can not live without you. You can not live without Nanaji. Nanaji is in my heart, in my brain in ny eyes. Look into my heart and smile for us.---Love you-

Yours lovely
**Anie (Anupama)**
UK

*8 बरीसक तान्याक पत्र पढ़ि मोन विह्वल भऽ जायत छल। ओकरा आदत छल एकटा पत्र भगवानक नाम सँ लिखि राखि दैत छल- जाहि मे कहियो हमरा लेल खुशी, कहियो अपना लेल मोबाइलक मांग- कहियो कहियो त भगवान दिसि सँ हमरा जबाब लिखऽ पड़ैत छल-मुदा, ओ कहियो नहि बुझलक वरण भगवानक जबाब बुझि ओकर अक्षरशः पालन करैत छल।*

My dear Dadi Ma,
Why you go anywhere leaving me? You know well I can't live without you. You are the flower of our garden. We smile, we are happy seeing your smile. Don't be sad, I don't like your sadness, don't sing sad songs- Any a also likes you. If we do mistake you beat us but don't go anywhere. I have written a letter to God, give the smile Dadima

Yours ever
**Poti Sanskriti Tanya**
**and Abhi shri anya.**

*सुपर्णा कें बड़ दुख छलैक पापा अपन नाति दीपांकर कें नहि देखलनि, संजीव कें दुख अभिश्री कें नहि तँ तरुणा सात्विक कें नहि देखलनि- सरिपों, संसारक सभ सँ भागवंत दादा, दादी-नाना नानी हम सभ छी जकरा लेल छोट छोट बच्चो के जी छटपटाइत छैक- प्यार सँ प्यार बढ़ैत छैक आ हमरा सभक संग प्यार छोड़ि किछ नहि।*

Respected Mammi,
Pranam,

Your letter handed to me when I was from market havinig dropped in inland-letter to you at 5 p.m. your letter was touching, particular that part of the letter much concerned the---of the revened--- uncle to my affection for you all. I came to know how profundly uncle loves me. Our anxiety is gone by the arrival of your letter after a long period.

Yesterday I had returned the book to Prof. Radha Kanta Chaudhary. He was sad to know that you unknowingly left for Saharsa. Recently, we had gone to visit movei ' Bhai Ho to Aisa' at Shaveda Talkies, and there I rereshed the memory when we were attending 'Adarsa' every now and then.

Mother asked me to write you about the land. So please inform soon.

Yours son
**Lal Chandra Bhushan**
Bhagalpur, 7.3.81

We are happy to be connected to you aunty. It is small world indeed. Hope you are now well accustomed to Delhi's weather.

Shama Vishwas
USA

मितेश मल्लिक बंगलौर सँ कतेक बेर मेल सँ तँ एसएमएस सँ लिखने छथि-

आदरणीया,

मिलना न मिलना तो भौतिक चीज है आपसी प्रेम और सौहार्द्र तो दिल से होता है। वैसे मुझे आपसे मिलने की बहुत इच्छा है। आप एक महान लेखका और कवि हैं। आपने मैथिली का मान बढ़ाया है। वैसे कोई भी भाषा अपने में महान है पर आपने उसे जीवन्त रखा है।

आदरणीया,

प्रेमक भूखल हम छी ताहि द्वारे अपनेक ममतामयी सिनेह मे रहवाक लेल अपनेक सानिध्य मे आयल छी-चरण स्पर्श-

किशोर ठाकुर
साल्ट लेक, कलकत्ता

*हम सभ पहिलुक बेर U.K. गेल छलौं तखन डॉ. बंदना, डॉ. कौशलेन्द्र दूनू गोटे ओम्सकर्क (लंकाशायर) अस्पताल मे रहथि। दूइ मास सौसे इंगलैंड घुमि लेलौं आ एकर बाद हिनका कार्डिएक एरेस्ट भऽ गेल जीवन मृत्युक मध्य झूलैत रहलाह... चारि मास अस्पताले मे रहि गेलाह। एम्हर अपन देश मे खलबली मचि गेल... अचानक की भऽ गेलैक तखन ककर email ककर फोन नहि..... आयल देस विदेश सँ।*

*तखन जेना विज्ञानक चमत्कार के प्रणाम केलौं क्षणि भरि मे सौसे खबर सभ ठाम- तँ कोनो चीज कें बेजाए कोना कहि दी। नीक बेजाए सभ मे रहैत छैक। आ तें ओहि सभ मेलक सार्थकता नेने सइ दुइ सय सँ उपर मेल सँ किछ ई मेल चुनि के एहि मे देने छी- व्याकुलता आ समाधान-क्षण क्षण मे-*

Dear Pahun,

We all pray to Almighty for your quick recovery and a long and active life. We know that your are a strong willed person and have bravely weathered the vicissitudes of life. This is just a passing phase and you will surely get over it through your strong determination and positive approach. Almighty has all long been kind to us and he will contine to shower his blessings upon us.

Get Well Soon. Looking forward to hear from you.

Yours affectionately,

**SENTU**
**Sharad Mallik.**

Dear Papa,

Please get well soon we are very much worried here. Please come to India as soon as possible. You are invited to our home on our marriage anniversary i.e. 26th May.

**Guddi**

Dear Papa-Mummy,

Ultimately it happened, but by grace of almighty it happened in England and also among the fact that RAJLALAN is never to be seperated. It is perennial bond. We all are the flowers of a loving tree like you. How can we believe that somebody would try to separate flowers from the illuminating tree. I am thankful to god Tirupati and Mata Vaishno Devi. Please get well soon and come over to Delhi as soon as possible. We all are longing to see you. Dear Kaushlendraji and Pinki, their bond-a grace of Pashupatinath, their worth now proved and their being doctors and their ultimate aim security to parents achieved. They are really fortunate. Please do not worry for anybody. Jaya, Arushi and Aditi are fine. Guddi and Vikasji and Ajay are also fine. Guddu Sweeti are well. Please do not bother for anything. Sukku is also worried for you. Everybody is sending best wishes for you. Some teachers from my college saw papa's photograph and thought him to be my elder brother. Wishing quick recovery.

**Raju**
Delhi
29 April '99.

Dear Kaushlendraji

Namaskar. Please convey our best wishes to uncle and aunty. Here is the letter from Jayaji.

**Vijendra & Neelima.**
Delhi University.

DEAR PAPA,

I LOVE YOU. I AM PRAYING GOD EVERY MINUTE FOR YOUR GOOD HEALTH. PLEASE GET WELL SOON AND COME TO US. PAPA, YOU HAVE TO ALSO TAKE CARE OF MUMMY- SO, PLEASE BE BRAVE AND GET WELL. I KNOW YOU ARE A VERY BRAVE MAN BECAUSE YOU ARE THE PAPA OF A VERY BRAVE BETI-GUDDI.

DEAR MUMMY IT SEEMS THAT PAPA'S HEART BEAT GOT FAST

BECAUSE OF WATCHING ENGLISH MAMES. PLEASE TAKE CARE OF THIS FACT AND KEEP BEAUTIFUL NURSES OUT OF PAPA'S SIGHT.

PYARE PAPA, WE CAN'T SEE YOU, WE CAN'T TOUCH YOU BUT WE CAN FEEL YOU. ADITI, LILY DIDI, MANOJ JI, SUKKU DI, PRAKASH JI, AJAY, VIJENDRA, NEELIMA ALL ARE IN OUR CONTACT AND ALL OF THEM ARE PRAYING AND WAITING FOR YOU.

LOVE YOU AGAIN AGAIN AND AGAIN

GUDDI-VIKAS

30 APRIL '99

P.S. BHAIYA HAS ARRANGED RS. 50,000 FOR ANY KIND OF NEED. IF ANY NEED PLEASE SEND THE MESSAGE.

Dear Papa - Mummy, Pinky, Kaushlendraji,

We are getting the latest information through your E-mail. Just remember one thing. If God be for us, who can be against us? Papa always think of God and all your children who are waiting eagerly to meet all of you at this corner of earth with heart full of prayer and patience. The darkness of the night will just fade away and give way to the bright and happy tomorrow.

We all love you from the core of heart. Both of you are the stars in our life which has slipped from the sky, spilling the treasures of a thousand dreams come ture, hearts full of hope and love.

I have faith in my God that the almighty will always do good to our entire family. I know Mummyis such a strong lady that she will overcome all the anguish she is going through right now. Pinky and Kaushlendraji don't think you are alone there. Our sincere feelings and prayers are with you. Papa-we want to see your book on 'Human Rights' published and you getting award for it. We saw the photographs. Papa is looking so hale and hearty. We want to see the same Papa and Mummy together.

Aditi, Arushi are missing your terribly at this moment. Lots of love to Preetu and Anni dear. Kaushlendraji, as a Doctor go for whatever is the best for Papa. Do not worry for anything including the financial aspect. We all are with you. Please let us know about all the options. Please verify and ascertain the suitability of any device to Indian condition.

We share a special family and home that we all love.

**Jaya Verma**
30 April '99.

Dear Papa
Sadar Pranam!

We are fine. Waiting to see you soon. Papa we know you have a strong WILL Power. We have faith in you and Ma. So everything will be fine. **You are in the best place and best hand.** I have applied for visa. I managed to get a place in flight on 7th May only. The flight arrives at Manchester airport at 17-45 local time. So I will join you on Dinner. But I have got one small problem. Applied for visa but yet not received. As per the consulate I can (if) get my visa only on 4th May. After 4th May they have got just one flight to Mahchester. So you will have to wait till 7th to see me. Tell Pritoo that her Samosajee will have to stay once again alone. But I won't keep him alone for longer.........

Do you need something from Ex. Soviet Union

Papa if possible, please direct my Jijoo to inform me about weather accordingly I will bring my cloth. Rest I will take from Pinki Di.

Come home soon, we will call you on Sunday. Take care of Mummy and yourself.

Yours Beta
**Manoj & Lily.**

Jijaji,

We have received all the papers. On 4th interview will be done, since vacations are going on. Say our love to Papa Ma.

Chaya is asking me to make bed (computer) tea. But I have said her rule no tea without your clean up. Ask Papa not to worry about the English Meme as Guddi has mentioned in her letter. He will have time for that. I can feel the flying belan from Ma. Ma if you permit, and Papa allows I would like Chaya stay here with me. Hi hi Hi! You know I can't stay without her any longer after wanbas of 5 months. But if she is needed more there and consulate permits (direct your belan to consulate) she will fly to you all with immediate effect. And I will have to sing Ram Dulari Mayke Gai--------------

**Manoj**
Ektarinburg

Dear Pinkiji and Karanji

Couple days before got a mail message from Ch. Chaya and Manoj from Russia about the cardiac failure to Samadhi jee. We are worried for his health. This is really very

nice to know that in such a condition, he was with you and got all he medical facility timely. Yesterday we had talk on phone to Chaya and Manoj and came to know about Samadhijee that he is recovering very fast now. We all wish for his quick and steady recovery.

Let me introduce myself to you. I am Manoj's youngest uncle from New Jersey and my family came here one and half year before. Although we did not meet face to face but now we could know about each other.

Convey my good wishest to Samadhijee, Samdhinjee and you all.

**Chandra Kumar Das and Punam Das**
USA
3 May '99.

REV. SAMADHI JEE & SAMADHIN JEE,

Sasneh Namaskar!

It gave us consolation to know that you are convalescent. After staying a day over, we are back to Ranchi. No sooner we will reach Ranchi, we will do "ANUSTHANAM" for 'MAHAMRITUNYAJ JAPAM' in a Shiva temple. Apart from that we family members will observe 'CHANDIPATH' which will be of immense help in getting u speedy recovery. We pray to lord Shiva & Goddess Durga daily for your speedy recovery. Please extend our well wishes to Dear Pahunjee, Pinkyjee, Lilyjee & both the kids.

Sincerely yours,
**Samdhisamdhin**
Brahmehari
(RANCHI)
18 May.

Dear Kaushlendra Ji & Pinky,

Over joyed to know about papa's successful operation. Really, you deserve all the credit for this. Your continuous and patient efforts ultimately rewarded by the GOD. It is rightly said that GOD HELP THOSE WHO HELP THEMSELVES. Credit also goes to Lily who managed to be there inspite of the facts that she has been away from Manoj ji for along time. Yesterday I wrote that her B'day gift will be papa and now she has got this gift from the almighty. Right since the morning we involved ourselves in prayers, worships. We went to "MANGAL MAHADEV" for papa's long life. Mummy i.e. Jaya's mother also accompanied us. We kept fast for the whole day. Guddi organised HAVAN for papa's recovery and GUDDU SWEETY participated in that, the HAVAN was performed by Pitaji Sh. Chandra Bhanu Arya ji. At home myself. Jaya and mummy engaged ourselves in

SUNDER KAND. Right since the moring we went through HANUMAN CHALISA, DURGA CHALISA, DURGA KAVACHAM, SHIVA KAVACHAM & other MANTRAS for papa's successful operation. Lalmama phoned from Patna but at that time the GOOD NEWS was not available to us. After we got the news we phoned to Samita Ji, Madhu mausi. We also received call from Sukku & Prakash ji and they were over joyed to know the news. We also received the letter from Rajendra Papa ji from M' pur who also enquired about papa's latest condition. Today after 4 pm when your call did not come we became desperate. I tried to contact you on your mobile but in vain. I also tried to contact the Hospital but it was engaged. Then ultimately I tried at the home telephone and fortunately Pinky was there and she told me that operation was successful and there were no complications. Then I also received a email from Lily and she gave the news that papa is now shifted to ICU. Pinky told me that papa would remain in ICU for 2 days and then in ward for 8 days and then he will be back to home. Pl. write us everything in great detail. Today I contacted the agent for the extension of papa mummy's ticket as he had promised me to give the PNR No. of the confirmed ticket which was to be extended from Manchester branch of Scandinavian Airlines. Unfortunately, he was on leave today. Tomorrow I'll contact him and try to get the PNR No. which will be sent to you. But since there is no time left you must contact the Manchester branch of Scandinavian Airlines and tell about your problem. Rest is fine. Eagerly waiting for your e-mail. Our e-mail sometimes works sometimes does not. But you always send mail to us. Pranam to PAPAMUMMY, love to LILY, PRITOO ANNIE.

**Raju Jaya & Whole family**
14 June'99.
PITAMPURA.

DEAR Didi and Pahun,

At last the 'D' day has come! Pahun, before entering the O.T., please, remember the Almighty and all the elders, with whose blessing, we are thriving on this earth. And, your WILL POWER and DETERMINATION are really God-gifted. Please, don't let them shake. Didi has faced such types of ordeal times and again and always came out with flying colours.

We are waiting for the good news of your successful operation. Pinki, Pahun, Anilji and both the 'Malangwa-young's are there to inspire and assist you for your speedy recovery. We, from far away place, send our good wishes and pray to the GOD for your gaining of strength and returning back to India hale and hearty.

**CHAND-MANNAJI**

hi evereyone there,

i am khusbu bhabhi's nanad, mona. we heard about papajee. we are worried here...but it is nice to here that he is improving. we wish that he will be get well very soon. how's is maajee? papa and maa talked to bhabhi and bhaiya (in russia) yesterday night. they are also fine there. i hope everything will be fine soon. say my pranam to papajee, maajee and all elders...and lots of love to my youngers.

bye.

**mona.**
**USA**

Dear Papa

Love you!

How are you? We are eagerly waiting to hear from you. Today Resp. Bhaijee Chacha called us. He will also write you. Please take care of yourself. Remember you have to meet we all at the earliest possible. So get well soon.

Love you,

**Lily.**

Dear Papa-Mummy,

Just received your e-mail in detail. Very happy to know that papa is recovering very fast. We are just coming from Bhagwati sthan. Papa Bhagwati is with us. No need to worry about anything. Bhagwati gave you opportunity to spend your life with your children that is why Bhagawati took me to this profession. You should not worry about anything. We are very lucky that you are with Jijaji & Didi. They did what the children do. They are just like our Ma-Pa. Mummy you are the **will power** of papa. So take care of him. SK Nagar people always remember you. Pintu mama just now gone from here. Talked to Guddi, Sukku Di and Bhaiya. Lily di jijaji are on e-mial. All are sending **BEST WISHES TO YOU**. Mummy, as soon as you come from Hospital, do ring up to us.

**Best wishes from all of us.** Bye--------

**GUDDU SEETY**
Patna

Respected mummy papa didi pahun & pritu annie ji,

Sadar pranam & love

Mummy now I feel fine. Temperature is now normal. U please don't worry at all. Mummy as I am very much talkative, no one is here to talk right now in the house. I feel very bore, papa pl. come I've so many batain to tell u. Mummy u were the only one who listened to me very carefully. I remember u every moment of time. My college is remain close till 11th becoz of the matric exam. I am reading regularly. Please inform us when us when u all come to Patna. I am waiting for u. Romi is alright and always asking about u. The climate is fine. U need not worry about anything be happy. But come as soon as possible. We need u. ye---- take care of all. No important message from your college mummy. rest is ok. How is didi & pahun ji tell them to write something. I know they are very busy in their job. Pahun & didi ji u also come to patna. Pritu & Annie ji I also remember u all the time. I haven't saw u after my marriage. Pl. come soon. Now I am going to eat. Would you also like to join me? Come soon I am waiting for u. No message from Lilly didi.

**Sweety.**
Patna

To Dearest Mausaji

every day, I pray for you. I make a wish on a star and I pray for you. I wonder how you are, and I pray for you.............

**Ajay**
Basant Kunj,
Delhi.

To Dearest Jeejaji

We all are happy to know you are recovering at a good pace. That's what we were all praying for day & night. Get well soon and come back to us to chat & chat---

**Madhushankar & Ajay.**

Dear

A prayer for u and I hope you feel better real soon. Get well soon.

We all miss you every much-----

- Relatives from Delhi.

Dear Ma,

Sader Pranam!

At first I will demand that Ma must take care of your health.

Ma. I can only think about the pressure, tension you all went through from 26th of April. But if I look back to that date and this minute, I can say, yes, the every minute Papa is breathing is due to your work. I know you want him home now. I know you want to feel him. But Ma, it will be nice for him only, that he stays little longer with these white nurses. I know Ma that your patience is wearing out, and you can't share Papa with these Drs, any more. Ma I request you to be bit more patient for Pa's benefit.

Ma knowing your pressure, I don't expect much letters from your side, even I am a bad letter writer. A blank from your side never worried me, because I know Papa is at right place, in good hands. But your daughter creates lots of hue and cry if no letter comes.

Give some more kissu & hug from us to darling Papa.

**Manoj, Lily**
Ektarinburgh
11 July'99.

Dearest Pahuna,

It gives us immense pleasure to note that you arrived at home hale and hearty.

The almighty has accepted our prayer for your safe arrival. We all are waiting for you at Patna to celeberate the occasion. Give our regards to Didi and ask Pahun to bring Annie with him to Patna where Samita-Babita will take care of her for few months. Rememberence to Pahun, Pinki and Anil Ji and to Pritoo, Annie.

Pintusamitashagun.
S.K. Nagar, Patna.

Dearest Pahun, Didi, Kaushlendraji, Pinky and kids,

Just that God that pahun is at the best possible place at this crucial time. The only regret we have is that we are helpless and reached to you. We are simply longing to see you all.A Pahun, we are eager to hear from you all your experiences with a good laugh. We are spending this evening wih Guddu and Sweety. Today is Sweety B'day. But Anandpuri is incomplete without you people. Pinki & Pahun- it is very nice that you people are with pahun and didi. We feel safe.

With Love
**ANNU (Mami)**
S.K. Nagar, Patna.

Pahunpinky,

The local doctors have suggested the efficacy of Pace maker in such a case. Kindly let us know if it is a desirable proposition. I tried to contact you on phone at around 5.30 pm IST but did not get any response. If any mobile no. is there with you pl. let us know. I'll again try to contact you on Monday.

**SENTU.**

# पारिवारिक पत्र

माँ-मम्मी, अम्मा-इन शब्दों ने अपने अंदर अनेक denotation और Commodation---- को छुपा रखा है। जैसे- प्यार, ममता, मातृत्व की छाह, आदर, स्नेह आदि...आदि।

**राजू**
11.01.'84

''स्नेह के क्रोड़ में पल्लवित रस बेटी,
को क्या कभी अपने से वंचित करोगी।''.....

**पींकी**
11.01.84

संबंध क स्थायित्व लेल परिवार के जोड़ि के राखवाक क्रम मे पत्रक महत्व बड़ बेसी होयत छै। हतास निरास मोन, टूटल उपेक्षित तन सब जेना अपन वेदना बिसैर एकटा सिनेहसूत्र मे बान्हि जायत ऐछ। शर्त विवेकक रहि जायत ऐछ जे सकारात्मक सोचके कँ प्रश्रय दैत छै, ओ खुश रहैत छैथ। मुदा जे बाल क खाल निकालैत रहैत छैथ आखर-आखर सँ ओ स्वयं ते दुखी होइते छैथ आनो के दु:ख दैत छैथ..... लिखऽ अबैत छोउ, नै-मेटावई अबैत छोउ ते हँ...दुनू हाथे...इएह थीक संबंधक सार्थकता...अपना ले ते सब जियैत ऐछ जे दोसरा लेल जिबैत ऐछ ओ महान छैथ।

हम बाल्यकाले से विस्तृत परिवारक फलक पर जिवलहुँ हम किस्त किस्त मे लिखने छी। हमरा एतेक सिनेह, प्रेम भेटल जे हम सब के अपन अन्तस्तल मे सागर जकाँ समेटने छी, किन्तु सबहक पत्र के हम अक्षुण्ण नै राखि सकलौं... गौरीशंकर भैया-गम्हरिया, रजनी यानी जूही-सुपौल, नूनू भैया छरहरा प्रकाश भैया, सुन्दर भैया आदि-आद... हिनकर सबहक पत्र एतेक साहित्यिक, एतेक प्रेम भरल होइत छल जे आय मोन कचोटि उठैत ऐछ तखन 12-13 बरिसक हम होयब, हम नहि जनैत छलों जे एक दिन हम एहि योग्य बनि सकब! हम सब सँ क्षमा मंगेत छी... तखन जे पत्र हमरा संग ऐछ ओहि मे से कृपण बनि काटि-छांटि पत्रक पाति सब राखि रहल छी.....

जखन हम अपन प्रशंसक फोन, मेल, एसेमेस, पत्र सब देखैत छी, सुनैत छी ते हमरा लागैत ऐछ हमरा से बेसी सुखी प्राणी एहि संसार मे के अछ? अपन लोकनिक प्यार, देश विदेशक प्यार हमरा भेटि रहल अछ। हमर अंतर अवस्थित नान्हि टा शेफाली खिल खिल झहरऽ लागैत अछ। हम ओहि शक्ति दिसि नमित भ जैत छी जे हमर हाथ 15 वरिसक आयु मे पकड़ि रजनी से शेफालिका बना देलनि। मुदा, एखनो हमरा मे एकटा बड़ पैघ कमी ऐछ जकर पूरक ओ छलाह। हम सबहक संगत असंगत व्यवहारक संग अपन संगत नहि बैसा पबैत छी। एहि लेल ओ कतेक बेर अपन बाल बच्चा के सेहो लिखने छैथ। टेप मे रेकॉर्ड केने छैथ... ''हम रही नै रही तो सब अपन मम्मी के

बुझवा मे कहियो गलती नै करिह, तो सब मांक स्नेहक-सागर-हृदय मे मोती जका हेलि रहल छ। हम आय धरि कोनो माय के नै देखने छिएक जे सब टा बाल बच्चाक खुशी लेल अपन खुशी बिसैर जायत ऐछ... हँ, बजैत बजैत तोहर माँ कखनो किछ एहेन बाजि दैत छैथ जेकर अर्थ ओ स्वयं नै बूझैत छैथ....'' की सरिपो हुनका अपन जेवाक एहसास भऽ गेल छलैक-? की हमर संवेदनशील मोन के विषय मे ओ सोचैत छलाह? तैं पारिवारिक पत्र मे हम हुनके पत्र सँ शुरु करैत छी। एतेक पत्र अछि हुनक आठ-दस पन्ना के ओहि मे से किछ के काटि छाँटि के दऽ रहल छी।

विद्वान Morgat Picemist 1700ई. में अपन पत्नी Constanze के लिखने छल-

Adieu dearest, most beloved little wife, while I was writing the last page tear after tear fell on the paper but I must cheer up catch an astonishing number of kisses are flying about---------

हमहुँ सभ अपन पत्र मे प्रेमक अभिव्यक्ति किछ एहिना तँ करैत छलौं- लिखती हूँ खत खून से स्याही न समझना मरती हूँ तेरी याद मे जिन्दा न समझना।..... चाँदनी रात मे ये खत लिख रही थी- याद आयी तेरी तो फूट फूट कर रो रही थी........ ई सभ खाली लिखवाक भाव नहि छल वरण विरहिणी नायिकाक सशक्त आत्माभिव्यक्ति छल। पत्र लिखैत-लिखैत कतेक ठाम नोर सँ अक्षर धुआय जाइत छल- हमरा मोन अछि हिनका सँ अलग होयतहि हम एकदम मौलाय जाइत छलौं। कतेक बेर ब्लेड सँ आंगुर काटि-सोणित जना कय कलमक नीब ओहि मे डुबाय डुबाय हिनका पत्र लिखने रही- विद्यार्थी जीवन पतिक छल आ वियोगक घड़ी- एतबहि नहि-पतिक की मनोदशा रहैत छल वर्मा जी हमरा लिखलैथ-पतिक रूप मे, पिता क रूप मे हम हुनक लिखल किछ पत्रक किछु अंश एहिठाम दऽ रहल छी। हमर ब्याह पन्द्रह सोलह वर्षक आयु मे भेल छल-व्यवहारिक नहि छलौं ओना आइयो नहि छी......

.... रनिया,

तुम्हारी शिकायत है कि मैं तुम्हें भूल गया। अपने दिल को जरा टटोलो तो! क्या महसूस कर रही हो? मैं हमेशा तुम्हारे पास हूँ-तुम्हारे बिना एक क्षण भी बेकार है। क्या कहूँ रन्नो, कर्त्तव्य के फन्दों में इस तरह जकड़ गया हूँ कि जब तक अपने जीवन को सफल नहीं बना लूँगा, मुझे चैन नही मिलगा। मैं तभी सफलीभूत होऊँगा, जब तुम्हारा सहयोग मिलेगा। तुम तो मेरी प्रेरणा हो। तुम्ही ने तो एक दिन मुझे 'पूर्व राग' के विषय में कहा था। हमलोग रन्नो पूर्वजन्म के सहयात्री हैं। फिर बिना तुम्हारे सहयोग के मैं कैसे सफलीभूत हो सकूँगा। यह अवश्य है कि अब कोई भी विध्न बाधाएँ मुझे अपने मार्ग से विचलित नहीं कर सकती! तुम्हारे सहयोग से मैं अपने में ऐसी शक्ति उत्पन्न करूँगा कि अपने मार्ग के सारे विध्नों को हँसते हँसते झेल लूँगा। तुम में सारे गुण वर्तमान हैं। मुझे खुशी है कि मेरी रन्नो दुनिया को कुछ-कुछ पहचानने लगी है। इस संसार में अपने को सुमार्ग पर ले चलना टेढ़ी खीर है। गिर कर जो सँभलते नहीं उसका जन्म ही व्यर्थ है।... स्वार्थी व्यक्तियों से अपनी रक्षा करने के लिए तुम में सारी शक्तियाँ विद्यमान हैं। उन शक्तियों का उपयोग करो और देखो कि वे

व्यक्ति तुम्हारी ओर आँख उठाकर भी देखने की कोशिश नहीं करेंगे–तुम अभी छोटी सी बच्ची हो–कहती हो जब दिल साफ है तो सारा जग सच्चा है। हिरण का भी हृदय साफ रहता है किन्तु सिंह या बाघ उसे खा ही जाता है। आज कल सभी दट्टी की ओट में शिकार करते हैं। अपने को इन जटिलतम परिस्थितियों से बचा लेना साधारण मनुष्य का काम नहीं। ........... मुझे दुख सिर्फ इस बात का है कि मुझे समझने में कभी–कभी तुम भी भूल कर बैठती हो और फलस्वरूप रोने लगती हो। पर तुम्हारे आँखों में मैं आँसू देख नहीं सकता कम से कम मेरे लिए तो खुश रहने की कोशिश करो।...

तुम्हारा ही

**ललन**

3.11.'59

नेपोलियन बोनापार्ट नीस सळ 1796 मे अपन पत्नी जोसेफिन के लिखने छलाह– ''हम एकोदिन अहाँकेँ प्यार केने बिन नहि बीतौने छी। हम एको राति अहाँकेँ आलिंगन मे नेने बिना नहि काटने छी–अपन पत्र मे अहाँ हमरा निष्ठुर कहने छी– अहाँ हमर हालत नहि बुझब'' ई सभ देखि हमर पत्र मंजूषा सँ जोगायब पत्र सभ गर्भस्थ शिशु जकाँ बहार एवा लेल आर छटपट करऽ लगैत छल–

...रन्नो इस अलमस्ती की बेला मे हम जुदाई का रोना रो रहे हैं। ठीक ही तो कहा गया है–

*अनुरागवती संध्या ध्विस्तत: पुर: सर*

*अहो दैवगति की दृक तथापि न समागम:*

अर्थात् अनुरागवती संध्या और स्नेहायुक्त दिवस के वियोग का विधान करने वाली विधि की विडंबना भी विचित्र है। आज मैं बीते क्षणों की मधुर यादों को संजो रहा हूँ और जब कभी भी वियोग का दुख दारुण हो जाता है उन्हीं स्वर्णिम दिवसों को याद में मन को सराबोर करने का यत्न करता हूँ।...

..... दिल के बहलाने की कोशिश की जाती है। पर तदबीर नहीं मिलती। कभी सोचता हूँ–दिल के बहलाने की तदबीर तो है तू नहीं तेरी तस्वीर तो है– पर बेजान बेचारी कब तक साथ देगी–कभी होता है कि कर्त्तव्य भावना को मेरे मार्ग से हटा दो इसने यथार्थता की पृष्ठभूमि में मुझे जकड़ डाला है।... इतने दिनों से पत्र नहीं दे सका था–क्या रूठी हो–अभिसारिका कमलिनी कब तक रूठी रह सकती है अपने साँवरिया दिनकर से–तुम्हारी याद मे बराबर गुनगुनाया करता हूँ–

पूनम की चाँद हो या आफताब हो... तुम्हारी परीक्षा खराब नहीं होनी चाहिए रन्नो। अपने दिल से जान रहा हूँ कि तुम्हें पढ़ाई में कितना मन लगता होगा–फिर भी परीक्षा तुम्हें अच्छी तरह देनी है। मैट्रिक के बाद इंटर की परीक्षा भी मानी रखती है। पर्चे के विषय मे लिखना। मेरी बातों को हमेशा

ध्यान मे रखना—कहीं भी हूँ, कुछ भी हूँ पर हूँ तुम्हारा ही। तुम्हारे परीक्षाफल से मुझे भी उत्साह मिलेगा—

तुम्हारा ही ललन
डुमरा
मार्च '60

मेरी रूठी मुस्कान,

क्या कहूँ ? व्यथा की घड़ियाँ तड़पन लिये आती है और टीस दे जाती है। सोचता हूँ दुनिया की रीति ही निराली है। सभी जगह मिलन, जुदाई, फिर मिलन और फिर जुदाई । भान होता है दुनिया के सारे कर्त्तव्य इसमें ही निहित हैं। शायद मिलन को ही सुख और जुदाई को ही दुख की व्यायकता मिली है। क्या इसी सुख-दुख की महत्ता को कवि पंत ने अपने शब्दों में अमरता प्रदान की है। सुख-दुख के समिश्रण में यह जीवन है परिपूर्ण.............

लोगों का कहना है कि सुख को अमरता प्रदान करने के लिये ही दुख का सृजन किया गया है। परन्तु क्या मनुष्य की महत्ता बढ़ाने के लिये ही कीड़ो-मकोड़ों की रचना हुयी है? क्या दुख के बिना सुख का कोई महत्व नहीं? अगर दुख की रचना हुयी है तो उसमें चिन्ता क्यों इस अत्यधिक मात्रा में आयी ? रन्नो, इन्हीं उलझनों को सुलझाने में लगा हूँ जब से मुझसे बिछड़ गयी हो । परन्तु क्या ये प्रश्न सुलझने वाले हैं? रानी, दुख में ईश्वर ने इतनी व्यथा भर दी है कि सुख के सारे अनुभव स्वप्नवत प्रतीत होने लगते है। उसकी कड़ुआहट के समक्ष सारे सुख धराशायी हो जाते है। प्रिये, जुदाई के गम ने मेरे हृद्य को क्षतविक्षत कर डाला है, व्यथा ने मेरे मन को आन्दोलित कर दिया है और विरह के आवेग ने मेरा हृदय मंथन कर डाला है। बेचैनी के साथ घुटन, तड़पन के साथ एक टीस और हृदय-मंथन के साथ एक दर्द ने मेरी जुदाई की घड़ियों को असमर्थ बना डाला है। क्या इसका कुछ उपाय नहीं, इसकी कोई दवा नही?.....

अरी निष्ठुर, उधर तू जा रही थी और बाबूजी खड़े होकर तुम्हारी गाड़ी को देख रहे थे । उनकी आँखों से गाड़ी ओझल हो गयी परन्तु वह वहीं पर ठगे से खड़े थे । उनकी दशा भी वैसी ही थी मानो उनका हीरा खो गया हो । माँ भर दिन रोती रही अभी भी रो रही थी । एक बार मैंने उसे कहते सुना "कोई यहाँ आये तो जाय नहीं" इस वाक्य में कितनी व्यथा छिपी है एक माँ का हृद्य ही अनुमान लगा सकता है। इन जुदाई की घड़ियों को भूलने के प्रयत्न में रूलाई का आवेग तीव्रतर हो जाता है। मैं जब कभी भी आंगन गया तो माँ को तुम्हारे घर में रोते हुये पाया । उसकी हालत देखकर तो मैं और भी परेशान हो जाता हूँ । दिनभर रोती रही सभी उदास है, सारा आंगन उदास है। जिन घरों में तेरी पायलों ने कभी झूम-झूमकर संगीत साधना की थी वे आज उस मधुर संगीत के लिये तृषित हैं। सारा वातावरण स्तब्ध है। सबों के मुँह पर उदासी की कालिमा हैं, आँखे बोझिल हैं और सबों का स्वर भारी है।

अरी पगली, अब जरा एक पागल की दशा देखो न । तुम जा रही थी, वह देख रहा था । आत्मा विलग हो गयी थी अपने नश्वर शरीर से । शरीर निश्चेष्ट था । सभी रो रहे थे और वह आँसू पी गया था । अपनी बनावटी मुस्कुराहट में उसने दिल के सारे तूफानों को छिपा लिया था । आँसू आते थे और उन्हें वह छिपा लेता था । रूलाई के आवेग को वह सम्भाल नहीं पाकर भी.
...

**ललन**
'61

तखन मोन पड़ल निर्भय नारायण दास बम्बई, हिनक अभिन्न संगी हिनका लेल जे लिखने छलाह–

"हमर ब्याह तँ स्कूले जीवन मे भ' गेल छल। अपन मित्र मंडलीमे हमही टा विवाहित छलौं तँ सभ दोस्त हमरा किचारैत रहैत छलाह आ संगे सभ अनुभवक गप्पो पुछैत छलाह – ललन कुमार वर्मा, नीरस लाल दास, राजेन्द्र प्रसाद, सुधाकान्त लाल, राज कुमार लाल, श्याम नारायण लाल, शिशिर वर्मा आदि कतेको मित्र पटना विश्वविद्यालयक विभिन्न कॉलेजक विभिन्न वर्ग मे पढ़ैत छल। हमर सभक ग्रुप पटना मे बनल छल। सभ मित्र अपन अपन जीवन संगिनीक कल्पना विभिन्न रूप सँ करैत छलैथ। किन्तु ललनजी किछ अलग बजैत छलाह – हमर ब्याह ओहि लड़की सँ होयत जे हमर प्रेमिका हेतीह। ओकरा पत्नी आ प्रेमिका दुनू बन' पड़तैक, हम पति आ प्रेमी दूनू बनब– तखन हम सभ खूब हँसैत छलौं। प्रेमिका पत्नी नहि भ' सकैत छैक किन्तु यदि पत्नी भ' जायत तँ प्रेमिका बनल रहनाय संभव नहि अछ– किन्तु ललनजी अपन कल्पना आ विचार कँ साँच कय देखौलैथ शेफालिकाजी सँ ब्याह कय... आय स्वयं शेफालिका जी कहैत छथि हम सभ पति पत्नी कम प्रेमी प्रेमिका बेसी छलौं तँ लगैत अछि जे ललनजी मे कतेक आत्मविश्वास आ कर्मठता छल। हुनकर व्यक्तित्व तँ प्रभावशाली रहवे करैक, सौम्य रूप, मुस्काइत मुखमण्डल तनावरहित, हुनकर मधुरवाणी सभ कँ प्रभावित करैत छल...

...अहाँ हमर मानस पटल पर कल्पना बनि रहि जायब/ बस ओहि कल्पनाक संगे हृदयांगन मे/ कल्पना बनि अहाँ छायब/ संतोष अछि कल्पना सँ अल्पना बनि/ साकार चित्र तँ बनि जायब, अहाँ/ जखन जखन आयब।"......

निर्भय बाबूक आर कतेको बात लिखने छलैथ।

वर्मा जी प्रेम करैत छलाह तँ एकटा नेना जकाँ समझावैत सेहो छलाह–

रन्नो, प्रतीक्षा कराने के बाद तुम्हारा एक पत्र कल्ह मिला और एक आज। कह नही सकता रनिया दिल कितना मायूस था। संशय और दुविधा में कुछ सोच ही नहीं पाता था। मैं परेशान था, माँ बेचैन थी और सारा घर गम में डूबा था। हरेक कल आशा की क्षीण किरण लेकर आता और दुखों का सागर दे जाता। परंतु फिर उसी कल ने अपनी लाज बचायी और अंत में तुम्हारी पत्रिका मिली।

खुशियाँ मिली, गम के बादल ढह गये और सारा वातावरण उन्मादक हो उठा। रन्नो, तुम्हें क्या बताऊँ तुम्हारी चिट्ठी जब नहीं आती है तो कितना बेचैन हो उठता हूँ। एक तो मेरा यहाँ आना ही ऐसा आकस्मिक हुआ कि न कुछ कह सका न कुछ सुन सका। मन तो होता है तुरंत तुमसे मिलने चल दूँ। यहाँ की रौनक तो तुम थी। सारा आलम उदास रहता है। सचमुच तुम लक्ष्मी हो। यहाँ आने पर तुमसे अलग होने पर मैं बेकार हो जाता हूँ।

रन्नो, एक बात मानोगी? देखो, विषम परिस्थितियों के रहते भी हमेशा हँसते रहना। हाँ, परंतु एक बात शारीरिक तकलीफों को मत छिपाना। धैर्य के साथ सारी परिस्थितियों का समाना करना। हमेशा यह समझना कि मैं तुम्हारे साथ हूँ। फिर देखना तुम्हें फिर कोई तकलीफ नहीं होगी। तुम्हे जो सास मिली है वैसी सास भाग्य से ही किसी को मिलती है। तुम्हारी सारी ननदें तुम्हें कितना चाहती है मैं कह नहीं सकता। मैं शब्दों में क्या कहूँ तुम्हें आप ही सारी बातें समय गजुरने के साथ मालूम हो जाएगी। तुम जरा भी भय न करना। हीरा जी ऐसा भाई मिलना मुश्किल है। मैं अगर उसके लिए कुछ कर सकता तो मैं अपना अहोभाग्य समझूँगा। तुम उसे जरा संस्कृत, हिन्दी और अंग्रेज़ी में निर्देशन कर देना।...

मेरा पढ़ना कसकर चल रहा है। परीक्षा के समय जैसा ही पढ़ रहा हूँ। राजू को बुखार हो गया है, बड़ी चिन्ता लगी है। जल्द से जल्द समाचार भेजना। मैं अब दो दिनों पर पत्र लिखा करूँगा। तुम घबराना नहीं। विशेष दूसरे पत्र में।...

**तुम्हारा ही ललन**
पटना

हमर नानी सेहो हमर ब्याहक बाद पत्र लिखलनि...

चो. मुन्नी,

सोहागवती रहु,

.....आशा ऐछ अहाँ निक जकाँ रहैत होयब... अहाँ अपन घर मे छी...सब के खुश राखब. ..हमरा बुझल ऐछ जे अहाँ के गामो मे नीक लागत... हम जतेक बात सिखेने छी सबहक पालन करब...खूब हँसैत रहब...केओ कुछ बाजत ते मुँह मलिन नहि करब...

अहाँक नानी,
**अत्तर देवी,**
पटना '1960

नानी कैथी मे पत्र लिखैत छलीह हम कैथी नीक जकाँ पढ़ि लैत रही...किन्तु नानीक पत्र एखनो देखैत छी ते दुई-तीन बात मोन मे घुमरै लागैत ऐछ....सब के खुश राखब...हम आइ धरि सब

के खुशे रखवाक प्रयास तँ करैत रहलौं मुदा, स्वयं हम? बाल्यकाल मे माता-पिता, भाई बहिन, विवाहोपरांत पतिक संगे सासु-ससुर, दियर ननदि यानि सोंसे परिवार के, तकर बाद सयान बाल बच्चा के खुश राखु-की स्त्रीक अपन मोन नहि होयत छैक? की ओकर नियति एयाह होयत छैक...माता पिता, पति-फेर पुत्रक संरक्षण मे-स्त्रीक जीवनक कारागार बनाओल गेल ऐछ..... मुदा एकर विश्लेषण एहि प्रकार भ सकैत छैक... बेटी किएक बेटा बेटी दुनू के वाल्यकाल मे माता पिताक संरक्षण केर आवश्यकता होइत ऐछ. नीक संस्कार लेल... पति किएक..वरन पति पत्नी दुनू के एक दोसराक प्रेमक आवश्यकता होइत ऐछ। जाहि से दुनू मिलि समस्त परिवार पर सिनेहक वर्षा क सकै... पुत्रक संरक्षण...माता जे जननी छैथ ओ पुत्रक संरक्षण मे नहि रहैत छथि, वरण जिनगी भरिक थाकल ठेहिआयल तन मोनक चैन लेल, संगे नीक बेजा समय मे पुत्र के उचित मार्ग निर्देशन क सकै... माता भनहि अनपढ़ रहैक किन्तु, अनुभवक ज्ञान मे पुत्र से बहुतो आगू रहैत ऐछ। बेटा बेटी कतबो पैघ पद पर पहुँचि जायथ, माता पिता सँ पैघ नहि भऽ सकैत अछि! अभागल ओ बेटा होयत छैथ जे माँ के अपन संरक्षण मे बुझैत छैथ मुदा, माइये किएक ओ तँ वृद्ध पिता के सेहो अपन संरक्षण मे बुझैत छथि- चूँकि हमर समाज पुरुष प्रधान रहल तैं एकर व्याख्या सेहो ओहि तरहे भेल...

आदरणीय समधि श्री टुनाय बाबू,

हमर सादर प्रणाम,

.......अपनेक पत्र भेटल सब समाचार से अवगत भेलों.... अपने लिखलों जे चि. रजनी सहरसाक बाज़ार मे मुँह उघारि के चलैत छैथ... हम अपनेक एतवा जरूर कहब...जे हमर बेटी आइग मे रहे वाकि पाइन मे यदि केओ ओकरा दिसि आंगुर उठायत ते ओकर आंगुर गैल के नष्ट नहि भ जायत ते हम पिता हेवाक गर्व छोड़ि देब... तैयो बेटीक बाप हेवाक नाते हम अपने से करबद्ध भ माफी मंगेत छी...

**अपनेक ब्रजेश्वर**

1966

ई पत्र देवाक तात्पर्य जे ओहि समय सहरसाक समाज, ओकर मानसिकता की छल जिला बनि गेल छल मुदा मानसिकता.....। हम एकटा दोकान चुड़ी पहिरवा लेल जायत छलों इन्द्रपुरी... आर कत्तो नहि... ओहियो मे माथ पर से नुआ राखि बेटीक पिताक की स्थिति तखन छल जे बाबू ब्रजेश्वर मल्लिक एतेक विनीत भ क पत्र लिखने छलाह 4-5 पन्नाक ओही पत्रक एकटा खंड ई ऐछ। पता नहि बाबूजी के गाम मे हमरा खिलाफ कान भरि देने छल- जकर प्रतिक्रिया स्वरूप बाबूजी हमरा सभ के किछ नहि सीधे हमर पापा के पटना शिकायत पत्र भेजि देने छलाह। तखन अपना पर गलानि भेल छल। फेर कहियो बाजार नहि गेलौं... जातक म्युनिसिपल कमिश्नर नहि बनलौं... आय वैह सहरसा थिक सौनसे बाजार माथ उघारने स्त्री सब भरल रहैत- ककरो ध्यानो नहि जायत छैक-यदि ध्यानो जेतैक तँ आजुक नारी के ओकर कोनो परवाह नहि छैक- ओ अपन अस्तित्व, अपन शक्ति कें जानि गेलीह।

जखन हमर बी.ए. सम्मानक रिजल्ट निकलल छल– तँ नैहर खानदान मे हम अपन दादी श्रीमती विद्यावती मल्लिक कें छोड़ि प्रथम लड़की छलौं जे बी.ए. पास केने छलौं– समस्त परिवार खुशी सँ नाचि रहल छल वर्मा जी सेहो पटने मे छलाह– हम गाम मे। तखन डुमराक पता सँ सभक पत्र आयल छल–

Darling,

My heartiest and warmest congratulation to you on your great grand success. It is very encouraging for Raju that his mother has established an all time record by securing honours among the females of Saharsa district. Really, your success is to be invied by your contemporiries. And it will also inspire our future generations. I am extermely happy to see your success. Indeed, a marvellous achievement. I am really proud of my wife who is B.A. (Hons.) with best wishes.

Your
**Lalan**
Patna '62.

*सरिपों हम B.A. Hons करीब अठारह बरीस धरि बनल रहि गेलौं–तकर बाद एम.ए., पी. एच.डी......*

सौभाग्यवती चि॰ रजनी,

शुभाशीष

आय अहाँक रिजल्ट देखिके कतेक खुशी छी जे हम कोना के लिखी । आय यदि अहाँ अहिठाम रहितों तँ हम दूनू गोटे अहाँ कें खूब छाती सँ लगाय आनन्द विभोर भऽ जायतों । परन्तु आय अहाँ ओते छी। हमरा आनन्द के ठिकाना नहि अछि भगवान एहि तरहे अहाँ के सफलता दैथ । एखन हमरा खुशी मे किछु लिखल नय जायत अछ । अहाँ आबु तब पूजा होयत । एखन हम भगवती स्थान जाय रहल ही मिठाय चढ़ावै लेल। अहाँ के पापा 24 ता. के एते से जेता चि॰ पाहुन आ मन्ना ता॰ 18 के जायत। हमर राजू बेटा कोनां अछ । लिखव पत्र जल्दी देव ।

अहाँ के माँ
**अन्नपूर्णा**
90; श्री कृष्ण नगर, पटना
1962.

प्रिय रजनी,

तुम्हारी आशातीत सफलता पर हार्दिक बधाई। आज तुम्हारी माँ हर्ष से फूली नहीं समा रही है, बच्चे नाच-गान कर रहे है, चयनी और इरा भी तुम्हें चिट्‌ठी लिखने को ललच रही हैं। बधाई-बधाई-बधाई।

तुम्हारे आने पर मैं कृष्ण वल्लभ सहाय को खाने के लिए बुलाऊँगा। मैंने उनसे कह दिया है कि उनके मिनिस्टर होने से तुम्हें बेहद खुशी हुई इस संबंध के बराबर तुम्हारे पत्र आते हैं।

तुम्हारा पापा

**ब्रजेश्वर**

90, श्री कृष्ण नगर, पटना

'62

*दुई तीन बरीसक हमर बहीन इरा आ चारि पाँच बरसक चयनी सभ खुशी सँ खुश ज़रूर होयत मुदा पापा अपन खुशी बच्चा सभ पर आरोपित कय कतेक खुश छलाह-*

एम्हर बाबू जी सेहो डुमरा मे खुशी सँ भरल छलाह-

चि० कनिया

...मैं चाँद हूँ अम्बर में/ मेरे जयन्त मेरे सुनील/ मेरे राजू दिल के भीतर/ मैं हूँ चाँद सभी तारे/ मेरे ध्रुव है ये उग्र ललन/ मेरी मीना रेणु/ बच्ची है, भोली रजनी- अहाँ अपन पिताक संरक्षण मे एहिना आगु बढ़ैत रहु......

**सूर्य नारायण लाल दास**

बाबू जी

डुमरा '62

*(अपन डायरी मे लिखि हमरा देने छलाह)*

जखन हमरा इलाहाबाद मे स्वर्ण पदक सर्वश्रेष्ठ लेखिका लेल भेटल छल तँ हमर पिसिऔत भाई अत्तर भैया, भाभी आ बड़की दीदी क पत्र आयल जे हमरा लेल अपना आप मे स्वर्ण पदक बनिगेल- हम पिसिऔत लिखलौ किंतु हमर सभक पालन पोषण संस्कार एहेन छल जतऽ केओ पिसिऔत आ पितिऔत नहि छल' वरण सभ सहोदर छलौं- आइयो छी- नैहर सँ सासुर धरि-

प्रिय राजा बहिन,

प्यार दुलार।

...दो दिन पूर्व अखबार तुम्हारे समाचार को ज्ञात करा गया । अखिल भारतीय मैथिली सम्मेलन, इलाहाबाद मे तुम्हें वर्ष की सर्वोत्तम सजर्नात्मक प्रतिभा स्वीकारा है और स्वर्ण–पदक से विभूषित करने का निर्णय लिया है। सचमुच, कितनी खुशी हुई यह जानकर नहीं बता पाऊँगा । जीवन में सतत् सफलता तुम्हें हासिल हो, तुम्हारी कीर्ति के सौरभ से जग का प्रांगण भर जाय यही मेरी मनोकामना है। क्या कुछ लिखी हो, सूचित करना।...

तुम्हारा ही अत्तर भैया

**वीरेन्द्र वर्मा,**

किसान कॉलेज, सोहसराय।

गुंजन

नमस्ते ।

अखबार में आपका समाचार पाकर कितना हर्ष हुआ वह व्यक्त करना लेखनी से बाहर है। ईश्वर आपको जीवन के हर क्षेत्र में इसी तरह सफलता प्रदान करें यही शुभकामना है।

प्रिय बहन का क्या समाचार है ! उन्हें मेरा नमस्ते कहेगीं तथा बच्चों से हार्दिक प्यार ! इस छुट्टी में मुजफ्फरपुर तथा घरजाने का प्रोगाम है देखे क्या होता है। पूज्या माँ इस बीच बीमार रहा करती हैं। यूँ पहले से स्वास्थ्य में कुछ सुधार है किन्तु पूर्ण नहीं ।

आपकी भतीजियाँ प्रणाम भेज रहीं है। पत्राशा बनी रहेगी।

आपकी भाभी

**शान्ता**

सोहसराय

सौभाग्यवती पुत्रवती राजा बेटा,

हार्दिक आशीर्वाद।

अहाँके स्वर्ण पदक मिलवा के समाचार सुनि हम आर आनन्दित भेलौं भगवान सँ इएह प्रार्थना रहल जे अहाँ कँ उन्नति देथ! जाहि सँ हमहुँ सभ सुखी होई। चि. पाहुन बाबू कँ हमर आशीर्वाद।

अहींक बड़की दीदी

**शकुन्तला**

*हमर सभ सँ ज्येष्ठ पीसी जिनका हम सभ बड़की दीदी कहैत छलौं- हुनक पत्र-हमर परिवार मे स्याते ककरो भेटल होयत-ई सौभाग्य हमरा भेटल-हमर घरक नाम रजनी खाली माँ पापा लेल छल-बाकी सभ राजा, रज्जी, रज्जो, रजिया-ई सभ एकटा समय छल स्मृति पटल पर कखनो सघन घन घिरि जायत अछि, कखनो इजोत-*

प्रिय पहुना,

नमस्ते।

आप जाने के साथ हमलोगों को भूल गए। खैर... हमलोग को जाने दीजिए। आप मेरी दीदी यानि अपनी बीवी को एक लाईन नहीं लिख सकते हैं।....... लगता है आपको ट्रेन में कोई ऐसी बीवी मिल गई है या कोई सहरसा में बीवी है कि आपको समय नहीं मिलता है। यहाँ पर दीदी आपकी याद में बैठी रो रही है, बाल बिखरा हुआ, मुँह पर लट लाल लाल साड़ी काजल लगायी और बिस्तर पर बैठी-बैठी और रो रो के ये गाना गा रही है। *''आ लौट के आजा मेरे चीन्टू तुझे मेरे गीत बुलाते हैं।''*

मुझे बहुत जोरों की हँसी आ गयी पहुना। लेकिन लिखने वाली बात नहीं है। आज दीदी दिनभर फोन के पास बैठी है। बोल रही है कि आज मेरे चीन्टू फोन करेंगे। बोल रही है कि लिख दो कि वे जल्दी से अपने कोमल-कोमल गोरे-गोरे हाथों से खत लिखें ताकि हमारी इच्छा पूरी हो जाय।

देखिये जीजाजी हम आपको कितना मानते हैं कि अकेले चिट्ठी लिख रहे हैं अंतर्देशीय में। देखती हूँ कि आप इसका जवाब देते हैं कि नहीं। दीदी कह रही है आज का मौसम बहुत अच्छा है और साथ-साथ ये गाना गा रही है *''मौसम है आशिकाना ऐ दिल कहीं से चीन्टू को ऐसे में ढूंढ लाना।'*

समझे आज बस इतना।

**ईरा**
9.1.74

आज दीदी इतना रो रही है कह नहीं सकती। जब तक आप थे तब तक कुछ नहीं होता था। जैसे आप यहाँ से घसके सब बीमारी शुरु हो गयी, दीदी की। दीदी बोल रही है मेरी तरफ से लिख दो- *''दिवाने है दिवानो को न घर चाहिये मुहब्बत भरी एक चिट्ठी चाहिये।''*

**ईरा सारिका**
90 श्री कृष्ण नगर,
पटना 7.1.74

*हमरा किछ पता नहि छल जे हमर बहीन सभ की की हिनका लिखि रहल अछि। असल मे दस भाई बहन मे सभ सँ ज्येष्ठ छलौं तँ सभ हमरा बड़ मानैत छल। एकरत्ती हमर चेहरा मलिन नहि देखऽ चाहैत छल केओ। हमरा उदास देखि किशोर शरद हमर डायरी मे लिखि देलक जे आइयो हम सहेजने छी- 'तेरे समन्दर में क्या कमी थी कि दीदी को रूला रहा है।' एहिना '73 में हमर आपरेशन होय वला छल पटना मे मन्ना जी यानी कृष्ण कुमार जे आब स्वयं बड़का डाक्टर छथि- आपरेशन थियेटर मे जेवा सँ पहिने एकटा छोट सन कागज देलनि-दीदी बेहोश हेवा सँ पहिने एकरा पढ़ि लेब- आँखि नोरा गेल छल-*

*''15 नं. बेड पर पड़ी है,*
*कविताओं की जननी*
*उसे विश्वास है वह,*
*लौटकर आयेगी,*
*अपनी नन्ही नन्ही सुन्दर कविताओं के साथ।''*

*ई हमर मेजर आ पाँचम आपरेशन छल- हाथ से लिखल पत्र मे हृदयक निश्छलता रहैत अछि जे पढ़ऽ वलाक हृदय मे सेहो हिलकोर मचा दैत छैक- ई तँ अछि पत्रक अस्तित्व। आदमीक अस्तित्व खत्म भऽ जायत छैक मुदा पत्रक अस्तित्वक संगे ओहि व्यक्तिक प्रेमक साँस सुरभि रचल बसल भेटैत छैक।*

पूज्या दीदी,

प्रणाम!

...आशा है आपलोग सहरसा में अच्छे होंगे। दीदी आप सब की बहुत याद आती है। आप बहुत अच्छी हैं मुझे इतना प्यार भी करती हैं। मुझे हरदम मन होता है हब सब साथ में रहें। दीदी आप जल्दी से डुमरा आइए-पू. लालभाय को मेरा प्रणाम बोल देंगी।

...प्रिय राजू जी एवं सूकू जी को गाँव भेज दीजिए। मुझे बहुत मन करता है उन सब से मिलने का-चाची की याद नहीं आती है उन्हें...

आपकी ही छोटी बहन
**मोती**
डुमरा

*मोती क ई पत्र हमरा लेल अनमोल भऽ गेल। के जनैत छल एतेक कम उमिर मे ओ भगवान लग चलि जेतीह-*

*हमर पितिऔत भाई रामानंद (पुत्र स्व. ललितेश्वर मल्लिक) क मृत्यु 25-26 वर्षक आयु मे अकस्मात भऽ गेलैक। लिखबा मे पितिऔत लिखऽ पढल मुदा ओ हमर सहोदर पैघ भाई छलाह-*

*मल्लिक खानदानक सभ सँ पैघ संतान-हुनक लिखल पत्र सभ मे हुनक प्रेम ओहिना अक्षुण्ण अछि-*

गफलत में पड़ी मेरी अजीज अनुजा

स्नेह मेरे!

...जानता हूँ रूठी है बहन! पर अपने भैया से ज्यादा देर नहीं रूठ पाओगी-तुम तो वर्डस्वर्थ की कविता साकार हो- ...ए वायलेट बाय ए मौसी स्टोन हाफ हिड्डन फ्रोम दी आइ...

तुम्हारा ही भाईजी

**रामानंद**

'58

प्रिय गुलाब,

याद।

...अपने जंगममय जीवन से लड़ झगड़ कर जब मैं व्यथा की खाट बिछाए, विकलता की तकिया लगा ग्लानि की चादर लपेटे एकान्त में पड़ी थी कि एकाएक तुम्हारे शीतल प्रणाद ने मेरे विप्लवमय अन्तस्तल को शान्ति प्रदान की-और मैं विहँस उठी.....

तुम्हारी गुलाब

**अरुण प्रभा**

'58

हमर पिसिऔत बहीन अरुण छथि जिनका सँ गुलाब लागल छल। एकटा आर बहीन सुपौल क गुलोदाय जिनका सँ मधुप लागल छल-ओकर पत्र-

''ऐ गुलाब मैं मधुप तुम्हारी, ठुकरा दो या प्यार करो''

मुक्तमणि हमर कुसुम क पत्र-

... कुसुम- तुमसे दूर हो गयी विवाह के बाद। कौशल जी मेरे हृदय स्थित तुम्हारे सिंहासन को पाने के लिए लगातार प्रयास कर रहे हैं पर अभी तक सफल नहीं हो पाये- तुम्हारी याद में नींद भी तो नहीं आती-सपनहु संगम पाओल, रंग बढ़ावल रे सेहो मोरा बिहि बिघटाओल नींदओ हेरायल रे...

तुम्हारी

**कुसुम**

1958

*एहि सभ पत्र मे छलकैत प्रेम सँ एखनो आत्मविभोर भऽ जाइत छी- खास कय हमर विवाहक बाद दुईटा पत्र आयल छल एकटा शान्ति भाभीक मुँगेर सँ दोसर रमेश नारायण हमर पाहुन जीजा जी के! शान्ति भाभी हमरा 'कला' कहैत छलथि। कारण जे ओहि समय ननदि देओर कें नाम सँ नहि बजवैत छल वरण अपना दिसि सँ नाम राखैत छल।*

प्रिय कला,

सदा सुहागिन रहु।

......ब्याह मे हम नहि आब सकलौं किन्तु, बड़ प्रसन्नता भेल जे हमर कला क ब्याह विज्ञान सँ भऽ गेल अछि....

**अहाँक भाभी**

शान्ति, मुँगेर

*दोसर पत्र रमेश बाबू पाहुन कें हमरा ब्याह सँ पहिने 'अनाघ्रात' कहैत छलाह- ब्याहक उपरांत हमरा सोझे 'विवाहिता' कहि पत्र लिखऽ लगलाह-*

विवाहता जी,

कैसे आपको अब अनाघ्रात कहने की धृष्टता करूँ बस अब तो आप विवाहिता ही हो गयी.
.........

आपका ही

**डॉ. रमेश नारायण**

पटना, '59

*हमर बड़की पुतौह ज्याक प्रथम पत्र-*

आदरणीय पापा-मम्मी,

चरण स्पर्श।

आपका पत्र मिला और घर का सारा समाचार पत्र हुआ। आप लोग उस दिन बहुत ही कष्ट से पहुँचे होंगे यह बात तो हमें न्यूज से ही पता चल गया था। पापा, आप हमारी चिंता मत कीजिए हम दोनों अच्छे से हैं और रेगुलरली कॉलेज जाते हैं और नार्मल रूटीन फोलो करते हैं। लिली, गुड्डी फ्राइडे को वैशाली से आ रही है जानकर बहुत ही खुशी हुई। हम दोनों उन्हें लेने स्टेशन चले जाएंगे।

मनोज भईया आए हुए थे यहाँ घर पर। आनंद जी (फूफाजी) का लड़का भी मिलने आया था। मधु मौसी का फोन भी आया था उनके पास कॉलेज में लेकिन बात नहीं हो पाई। हमलोग उनका पता नहीं जानने के कारण कन्टैक्ट नहीं कर पाए। ये एक दिन अशोक विहार वाले मौसा-मौसी से भी मिले। हमलोग एक दिन प्रो. डी.एन. झा और प्रो. वर्मा जी के घर गए थे और वे काफी खुश थे हम दोनों से मिलकर।

पापा, अब तो सर्दी आ चुकी है। यहाँ भी ठंढ काफी बढ़ गई है इसलिए आप मौसम को ध्यान में रखते हुए अपने स्वास्थ्य का पूरा ख्याल रखेंगे। अब तो गुड्डी भी यहाँ आ रही है इसलिए मम्मी का दायित्व तो और भी बढ़ जाता है। मम्मी का डेडीकेशन आपके प्रति बहुत ही प्रशंसनीय है। गुड्डू कैसा है? अगली छुट्टी गुड्डू भी यहाँ आता तो हमारा बहुत मन लगता। आप सब इतने अच्छे हैं, इतना प्यार दिया है हमें कि लगता ही नहीं मैं आप सब से कभी अलग थी। हम दोनों आप सब को काफी मिस करते हैं। आप दोनों की कमी काफी खलती है कभी-कभी सोचती हूँ हम दोनों का जीवन का अनुभव ही कितना है- आपलोगों के अनुभवों और सलाहों की ज़रूरत पग-पग पर पड़ती है। विश्वास कीजिए मैं आपलोगों की हर परीक्षा में खरा उतरने की पूरी कोशिश करूँगी। पापा आपने जो कुछ बातें लिखीं थी उन्हें फौलो करने की कोशिश करती हूँ। हम दोनों यहाँ अच्छे से हैं अगर किसी भी तरह की कोई परेशानी होगी तो ज़रूर खबर करेंगे। पापा बस आपके स्वास्थ्य की चिंता रहती है। आप हम सब की खातिर कभी अपना स्वास्थ्य नजर अंदाज नहीं करेंगे। मम्मा का भी कॉलेज अब तो खुल गया होगा। छठ में पानी में खड़ी हुई होंगी। पिंकी कैसी है? शेष कुशल है- मैं हर हफ्ते पत्र डालती रहूँगी। बड़ों को प्रणाम तथा छोटों को प्यार।

आपकी बेटी

**जया**

दिल्ली 14.11.89

*पुनः वर्मा जी क पत्र अपन पुत्र वधू जयाक नाम-*

ॐ ऐं श्री

प्यारी जया बिटिया,

सदा सुहागिन रहो।

तुम्हारा 14/11/89 का पत्र अभी-अभी कचहरी से लौटने पर मिला है। पत्रोत्तर तुरंत दे रहा हूँ। अपनी आदतों के विरुद्ध।

बेटी, तुमने लिखा है कि मम्मी मेरे प्रति बहुत dedicated है। इतने कम समय में इतने बड़े सत्य का उद्घाटन तुम्हारे समक्ष कैसे हुआ, मैं तुम्हारी तेजस्विता पर आश्चर्य चकित हूँ। इतना समझ लो बेटी कि उसकी हर साँस में मैं बस रहा हूँ। उसने कितना struggle मुझे बनाने में किया है, मेरी प्रतिज्ञा को रखने में उसने कितनी तकलीफों को झेला है वह ईश्वर ही जानते हैं। मैं तो समझता हूँ

बेटी कि किसी को प्रेमिका दे तो ऐसी, पत्नी होतो ऐसी। बहुधा ऐसा देखा जाता है कि जब तक लोग-प्रेमी-प्रेमिका रहते हैं उनका मनोभाव जो रहता है वह मनोभाव पति-पत्नी के रूप में बदल जाता है। लेकिन तुम्हारी मम्मी ने इसे बिल्कुल झूठा साबित कर दिया है। वह एक आदर्श पत्नी रहते हुए भी आदर्श प्रेमिका (evergreen) है। मैं कितना भी बिगड़ूं हँसकर टाल देती है। आखिर मुझे ही गुस्सा ठंडा करना पड़ता है। 'हम तो लड़ते हैं, झगड़ते हैं, खफा होते हैं, फिर भी मुहब्बत में न जुदा होते हैं' यही हम दोनों के life का motto है। और इसकी जड़ में है हम दोनों के बीच clear-understanding। बेटी, हमारे उसी प्रेम का पहला पौधा है राजू। उससे तुम हमेशा प्रेम ही प्रेम पाओगी। तुम्हें देखकर मुझे लगा कि तुम्हारे हृदय में भी उसके लिए अगाध प्रेम है जो शाश्वत है। अतः मेरा आशीर्वाद है कि तुम दोनों हमेशा आदर्श पति-पत्नी ही नहीं वरन् आदर्श प्रेमी-प्रेमिका भी बने रहोगे। जरा भी मन दुखी हो एक दूसरे के सहयोग से उसे मिटा डालो, फिर जीवन खिलता हुआ गुलाब हो जाएगा।

राजू अपने generation में अपने घर में और ननिहाल में सबसे बड़ा है और सबका प्यारा है और तुम उसकी अर्द्धांगिनी हो। इस तरह से तुम दोनों जगहों में अपने generation में आधार-स्तम्भ हो तुममें आत्मविश्वास है। तुम्हारी नन्दें एवं तुम्हारा एकलौता देवर गुड्डू तो राजू को अपना आदर्श ही मानते हैं। उनके मन में राजू के लिए इज्जत ही इज्जत और प्यार ही प्यार है। समय बताएगा कि वे लोग तुम्हें कितना प्यार करते हैं, कितना चाहते हैं। मेरे और मम्मी के बाद तो तुम दोनों के सिवा उनका है ही कौन? लेकिन मुझे दृढ़ विश्वास है कि हम जितना प्यार उन्हें नहीं दे सके उससे ज्यादा तुम दोगी। तुम तो हमारे घर की आधार शिला हो। अतः बेटी किसी भी विपत्ति की घड़ी में (भगवान न करे करे कभी वह क्षण आवे) हिम्मत से काम लेना और हँसते-हँसते झेल लेना।

तुमने मुझे विश्वास दिलाने की कोशिश की है कि तुम हमारी हर परीक्षा में खरा उतरोगी। ऐसा तुमने लिखा क्यों? क्या मुझसे और मम्मी से मुलाकात के बाद तुम्हे ऐसा नहीं लगा? तुम पर हमरा अटूट विश्वास है, आगाध प्रेम है। तुम में हमने पुतोहु का रूप तो नहीं देखा बल्कि एक बेटी का रूप देखा और इसलिए तुम्हें मैंने कहा था कि तुम अपने पापा की कमी मेरे रहते हुए नहीं महसूस करोगी। परीक्षा लेने के बाद ही खरा पाने पर अपनाया जाता है। हमने तो तुम्हें देखते ही अपना लिया, फिर भी तुम्हारी परीक्षा लेकर तुम्हें खरा नहीं उतरने की बात सोचना क्या बेवकूफी नहीं होगी? हमें तुम्हारी क्षमता, योग्यता, सहनशीलता और प्रेममयी मूर्त्ति पर अटूट विश्वास है, यह हम हृदय से कह रहे हैं।

तुम्हारे आने का इंतजार यहाँ से डुमरा तक बेसब्री से हो रहा है। मेरी माँ तुम्हें देखने के लिए आतुर है। अतः घबड़ाने की कोई बात नहीं। जो आगे बढ़ते हैं वे पीछे नहीं देखते, जो पीछे देखते हैं वे आगे नहीं बढ़ते। अतः तुमलोग निर्भय होकर अपना आने का प्रोग्राम बनाओ, किसी से हमारा बैर नहीं है, हम हर इन्सान से मुहब्बत करते हैं। पत्र की प्रतीक्षा में।...

पापा

**ललन कुमार वर्मा**

आनन्द पुरी, पटना

प्यारी लिलि बिटिया,

शुभाशीष।

अभी–अभी मैं 'शबनम' पिक्चर देख रहा हूँ और तुम्हारी याद आ रही है। तुम भी तो शबनम की तरह ही कोमल हो । लेकिन उसकी तरह आत्मविश्वास लाने की आवश्यकता है। हार और जीत मन की भावनाएँ है। तुममें आत्मविश्वास की कमी नहीं, अतएव जीत अवश्यम्यावी है। तुम U.P.S.C. दे रही हो सुनकर बड़ी खुशी हुयी । Work with determination and self confidence, you are bound to achieve the goal. कभी यह मत समझो कि तुम अकेली हो, हम तुम्हारे साथ हैं। हमारा आशीर्वाद हमेशा तुम्हारे साथ है।

गुड्डी बीमार होकर जा रही है। कलकत्ता यात्रा में उसने बेटा का कार्य किया । उसी में बीमार थी । उसका ध्यान रखना । डा॰ विजय से उसे दिखला देना और उसके विषय में लिखना । तुम दोनो मिलकर आसमान के तारे तोड़ ला सकती हो।

पापा

**ललन**

प्रिय रजनी दाय,

शुभाशीर्वाद।

हम आशा करैत छी जे जाहि कार्य सँ अहाँ मधेपुरा गेल रही ताहि मे आरो प्रगति भेल होयत। हम अहिठाम आबि के फँसि गेल छी। ललित बाबू हमरा आबितहि अमरीका चल गेलाह, काल्हि धरि एताह। हुनका सँ पाँच मिनट बात क कै हम एहि ठाम सँ रवाना भैजाइब।

अहि पत्र के विशेष प्रयोजन। हमरा मन मे विचार आयल अछि जे विद्यापतिक एक नवीन संस्करण अहाँ सब निकाली। हम काल्हि श्रीमती बुची दाय के से हो एकर भार देने छियन्हि। आइ पत्र द्वारा श्रीमती बच्ची दाय ओ श्रीमती खूखू के से हो सूचना दए रहल छियन्हि। श्रीमती दीपकक पता हमरा ज्ञात नहि अछि। अहि कार्यक विशद विवेचन तँ पाछू होइत जे विद्यापतिक कोन पुस्तक अथवा पदावलीक कोन अंग पर के लिखब, परन्तु एखन यदि एतबा बात तय भए जाय जे ई कार्य कर्त्तव्य थीक तँ बहुत पैघ बाधाक शमन भए जाइत। अहाँक योग्यता, क्षमता आ संवेदनशीलता हम जनैत छी एवं जटा बाबू सभक मुँह सँ सुनने छी।

अहाँ अपन विचार हमरा मधेपुराक पता सँ लिखब।

**ललितेश्वर मल्लिक**

दिल्ली।

आदरणीय चाचाजी एवं चाचीजी,

सादर प्रणाम!

...आपका पत्र कल आया। आपके तो पत्र में केवल खूबियाँ ही निहित है। जितना प्रशंसनीय

हमलोग हैं नहीं उतनी आपने प्रशंसा ही की है। आपलोगों को तो मैंने पहली बार देखा और पहली बार में ही आपलोगों के करीब आ जाने की इच्छा है। देखें कब तक हमलोग आपलोगों के करीब जा पाते हैं। विशेष क्या लिखूँ। बड़ों को प्रणाम कह देंगे।...

आपका

**चन्दर**

शास्त्री नगर, मुजफ्फरपुर

15.07.85.

*हमर प्रथम पुत्री भावनाक ब्याहक चर्चा चन्दर जीक पैघ भाई प्रकाश जी सँ चलि रहल छल। तखेने कोनो पत्र हम देने हेवैक जकर उत्तर ओ किशोर बालक एतेक सुन्दर शब्द मे देलनि। सभ व्यक्ति सभक प्रशंसा नहि कऽ सकैत अछि जकरा मे एक पाइ खर्च नहि होयत छैक। मुदा, जे खुद प्रशंसनीय होयत छथि वएह ओना कँ प्रशंसा करैत अछि– एहि मे कोनो संदेह नहि–*

चि० ललन जी,

शुभाशीष,

...एहिठाम हाल की लिखब अपने के स्वयं आना चाही। एहिठाम सर्वे के तीन कैम्प खुजल छैक, मुरली, ढोलवन, बड़हरा और केदली के मोकदमा चलि रहल छैक। रोज 15-16 मुकदमा चलि रहल अछि। हाकिम बहुत कराई केने छैक। मोहलत लेल दू रूपयाक टिकट लागैत छैक। एक केसक एक दर्खास्त दभऽ पड़ैत छैक।...लगातार तारीख छै 4/12, 5/12, 6/12, 8/12, 9/12 आ 19/12 के तारीख छैक। नोटिस दिन प्रतिदिन मिलि रहल छैक। कनियो देर भेला सँ मोकदमा खारिज कऽ दैत अछि। एहि हालत मे धनकटनी सेहो चलि रहल अछि चूँकि लोक (चोर) जहाँ तहाँ धान काटि लैत अछि। धनकटनी मे सर्वे के कारण पिछुआय गेल छैक तँ डुमरा बला धान कटेवा मे व्यस्त। अपन सभक खेत एकारि भऽ रहल छै। मुनाय बाबू अन्यमनसकता धारण केने छथि। अपने शीघ्र आउ आ सभ बातक विचार कऽ जाउ। मोकदमा (सर्वे) मे के पैरवी करत, मुनाय किछ नहि जानैत अछि जे अपने के ज्ञात अछि... एहिना हालत मे कोना बच्चीक ब्याह देखब। हीरा जी अलगे बटहा बाँटि रहल अछि जे हमरा नोकरी नहि भेल। की करी किछ नहि फुरैत अछि, अपनहि सँ सभ विचार हम कय रहल छी। अपने जल्दी आउ। रघुवीरा कें मोहलत दिआय सबेरे गाम पठा देबै– चि. कनिया आ बच्चा सभ के हमर आशीर्वाद दऽ देवैक।...

अपनेक बाबूजी

**सूर्यनारायण लाल दास**

डुमरा

*बाबूजी के सेहो पत्र लिखबाक हिस्सक छल। अपन मोनक सभटा तनाव कँ पत्र मे उझलि स्वयं निश्चिंत भऽ जाइत छलाह– आ हम सभ हुनक ओझराहटि कें सोझरावऽ मे स्वयं ओझरा जायत छलौं'–*

चि. कनिया एवं ललन जी,

शुभाशीष।

बहुत दिन सँ अहाँसभक कोनो समाचार नहि जानि मोन हमेशा चिंतित रहैत अछि। अहाँक मोन आब केहेन अछि लिखब। हम अपन समाचार की लिखब अहाँ सभक बिना कोनो तरह जी रहल छी। अहिठामक सब समाचार नीके अछि। अहाँ हमरा लेल एकटा रजाई मे खोल लगा क भेज देब आ ओढ़नाक चादरक संग बिछावनक चादर भेज देब। भगवान के चढ़ावैक वास्ते मनक्का आओर किछु बूटक सत्तू सेहो भेज देब। पुरा बाहँक स्वेटर भेज देब ठंढा बढ़ि रहल अछि। अहाँ अपन स्वास्थ्य पर ध्यान राखब।

चि. कनिया, अहाँ तँ जनैत छी हम आय धरि अहाँ छोड़ि ककरो लग मुँह नहि खोलने छी। तँ अपन जरूरतक चीज अहाँ कँ लिख देलौं।

अहाँक माँ

डुमरा

*सरिपों, माँ जीवन पर्यंत हमरा छोड़ि ककरो सँ किछ मुँह खोलि नहि माँगलीह। कहैत छलीह–राजूक माय जाहि दिन हमरा उनटा कें जबाब दऽ देत हम ओहि दिन मरि जायब। किन्तु, ओ दिन नहि आयल माँ मुदा चलि गेलीह–*

पू. दीदी,

उम्मीद है वहाँ सभी ठीक होंगे। 2 तारीख को शाम छ बजे मैं एक डाक्टर के घर में था All India Radio से राखी के गाने सुनाई पड़े। तब एकाएक अहसास हुआ कि आज रक्षा–बंधन है। मन दुखी हो गया।...

रक्षा–बंधन के इस पवित्र अवसर पर मैं तुम सबों की भले की कामना करता हूँ। इतनी दूर से तो सिर्फ चिट्ठी पहुँचेगी तब तक तुम्हारा जन्म दिन भी बीत चुका होगा। फिर भी मेरी ओर से जन्म दिन की बधाई स्वीकार करना।...

तुम्हारा भाई

**मन्ना जी**

शाहत, लीबीया

*हमरा मोन पड़ैत अछि हम सभ राखीक दिन लेल केहेन केहेन पत्र लिखैत छलौं- हृदयक उद्गार कें छिरिया दैत छलौं पत्र मे*

चि. पाहुन प्रकाश जी, सूकू,

असंख्य आशीर्वाद।

अहाँ हमर परिवार के प्रकाश सँ भरि देलौं, पाहुन! हमर बेटी हमरा सभ सँ अलग भऽ गेल ई दारुण व्यथाक पहिल अनुभूति हमर सभक थीक। अहाँक मम्मी तँ कखनो काल सूकू के यादि मे बेसुध जकाँ भऽ जायत छथि। किन्तु, हम सभ जनैत छी अहाँक प्रेम भरल हृदय मे आ परिवार मे सूकू के स्थान भेटल छैक। एहि सँ बेसी कोनो माता पिता के की चाही?

अहाँक

**पापा/मम्मी**

My dear Pahun and Pinki,

-------We always miss u. we always remember u. We have spent 6 months in England now it seems dream like. We have enjoyed every unexpected pleasures of life in early months of England. Later in stressful it was but a new sunshine of my life that I found a new birth. How can I forget those thrilling moments of our life which we shared with each other. I lieve here all the time with the sweet rememberance of you all. Pritu and Anie always dance before my eyes-----

On 14th I will go to Apollo hospital for check-up--- Raju, Jaya, Guddi, Vikasji all taking care of me. We will go to Patna on 16th of Oct.-----be happy.

Yours Papa

AP/60D, Pitampura, Delhi.

चि० पाहुन मनोज बाबू एवं सौ० लिलि,

असंख्य आशीर्वाद ।

दीपावली की अशेष शुभकामनाएँ । माँ लक्ष्मी आपलोगों के जीवन को सुख समृद्धि एवं खुशियों के अनगिन दीपों से भर दें । आप अपने दुख दर्द को भूलकर हमेशा अपनी खुशी का इजहार करते रहे एवं सबों के जीवन को आनन्द से आप्लावित करते रहे ।

लिलि, तुमलोगों में धैर्य, सहिष्णुता एवं आत्मविश्वास का जो बीज हमने बचपन में बोया उसे पल्लवित पुष्पित होकर अपनी सुगन्धि बिखेरते देखकर हमें अपार खुशी हो रही है। हम अपार सन्तोष

महसूस कर रहे हैं । हम हमेशा तुम्हारे पास हैं, आँखे मूँदकर देखो हमें अपने पास पाओगी । हमेशा हँसती रहो । माँ परीक्षा लेती हैं, लेकिन अपने भक्तों को सफलता भी प्रदान करती हैं। चि॰ पाहुन बहुत शीघ्र पूर्ण स्वस्थ होकर सामान्य हो जायेंगे एवं और भी ऊर्जा से परिपूर्ण हो जायेगें । चिन्ता मत करना । पाहुन का स्वभाव एक मासूम बच्चा जैसा है जिन्हें बरबस प्यार करने को जी चाहता है। वे इतने Confident हैं कि कोई भी काम उनके लिए कठिन नहीं । हम गौरवान्वित हैं कि हमें ऐसे-ऐसे बच्चे मिले हैं। पाहुन को सहेज कर रखना । bypass होने के बाद तो सारी व्याधि दूर हो गयी, लेकिन Life style change कर देना हैं, Food habits में Fat avoid करना है, Regular walking करना एवं Stress Strain से दूर रहना, हमेशा खुश रहना ही इसका परहेज है। Poisitive aspect है कि smoking नहीं करते है, और drink भी नहीं करते हैं। उन्हें कुछ हो ही नहीं सकता । बेटा, फोन कर तुम्हारी आवाज बहुत थकी-थकी थी। समझता हूँ तुमहारा दायित्व कितना बड़ा दायित्व है। लेकिन तुम उसका निर्वाह सफलता पूर्वक कर रही हो । बस ईश्वर में विश्वास रखो । चि॰ पाहुन को देखने की उत्कट इच्छा है, लेकिन परिस्थितियों के भंवर में हम पड़े हैं। वैसे मन से हम तुमलोगों के पास ही हैं।

**पापा माँ**
**ललन राज**

प्रिय राजू, जया, लिली, गुड्डी, अरुषी एवं अदिति ।
शुभ प्यार ।

आज शिवरात्रि का महापर्व है। जिस शिवजी को विष के नाश से बचाने के लिये गरल पान करना पड़ा । उन्हें भी जीवन में कितनी कठिनाईयों का सामना करना पड़ा । माँ सती को अपने पिता के घर यज्ञशाला में कूदकर प्राण देना पड़ा । शिवजी पागल की तरह उनके प्रार्थिव शरीर को लेकर तांडव करते हुए घूमने लगे, क्रोध से जलने लगे उन्हें शान्त कराया गया । उनकी कठिनाइयों उनके कष्टों को सोचो। एक ओर वे संहारकर्त्ता हैं और दूसरी और 'शिव' अर्थात् कल्याणकारी । इतने दुखों को सहने के कारण ही वे देवाधिदेव कहलाये और लोगों का कल्याण किया । कल्याणकारी रूप को लोग श्रद्धा से नमन करते है। तुम सभी कल्याणकारी बनो यही आशीर्वाद भगवान शिव तुमलोगों को दें । किसी बात का दुख न करना ।

**पापा-दादा ललन**
'94.

चि॰ राजू, सौ॰ जया,
असंख्य आशीर्वाद।

दीपावली की अशेष शुभकामनाएँ। माँ लक्ष्मी तुमलोगो के जीवन को सुख समृद्धि एवं

खुशियों के अनगिन दीपों से भर दें। माँ की कृपा से तुमलोग खूब आगे बढो। तुमलोगो ने बहुत बड़े दायित्व का निर्वाह का सराहनीय कार्य किया है। हमलोगों की कमी तुमलोगों ने महसूस नहीं होने दी यह अत्यन्त संतोषप्रद है। मेरा मनोबल तो बहुत ऊँचा है, परन्तु बीमारी और उम्र ने शरीर को कमजोर कर दिया है। कहीं जाने में असमर्थ सा महसूस करता हूँ । यहाँ तक कि कोर्ट भी बहुत कम ही जा पाता हूँ । 'मम्मी' भी स्वास्थ्य से ठीक नहीं है। ज्वाइन करने के लिए भी सहरसा जाना कठिन है। ऐसे समय में जया के अस्वस्थ रहने के बावजूद तुमलोग हमारी अनुपस्थिति में भी बखूबी इतने बड़े दायित्व का निर्वाह कर रहे हो, यह हमारे लिये बड़ी खुशी की बात है। महसूस कर रहे हैं कि अच्छे संस्कारो की बीज जो अपने बच्चो में हमने बोया है वह बहुत ही सुन्दर एवं स्वादिष्ट फल दे रहा है। खैर, हमारी कमी कभी मत महसूस करना, ज्योंही आँखे बन्द करोगे और देखने की कोशिश करोगे हमें अपने समक्ष पाओगे । दोनो पोतू चि० अरुषी और अदिति को दीपावली का असंख्य आशीर्वाद। ये दोनों तो हमारी हंसी खुशी है। आशा है, सुबह में एक घंटा टहलना प्रतिदिन का जारी होगा । Low fat diet. No stress, और Normal Weight अच्छे स्वास्थ्य की कुंजी है। हम समझते हैं कि जया भूखे पेट कॉलेज नहीं जाती होगी ।

**तुम्हारा पापा**

'2000.

आदरणीय पापा/मम्मी,

चरण स्पर्श।

... पापा, हमलोग आपको और मम्मी को बहुत Miss कर रहे हैं। उन तीन-चार दिनों में ही मुझे जिंदगी क्या है पता चला-और जिंदगी में पहली बार लगा कि सही मायने में मैंने कुछ पाया है। मुझे लगता है कि प्यार शब्द को पहली बार इतना सम्मान और स्नेह मिला है।

पापा, आपलोग किसी बात के लिए चिंता नहीं करेंगे। कोई भी बात होगी तो हमलोग सब मिलकर मुकाबला करेंगे। आपने तो मुझे बहुत ही ऊँचा दर्जा दे दिया है। कभी-कभी अपनी जिम्मेदारियों का अहसास होने पर अजीब सा सुकून मिलता है। पापा, आपको मेरी एक बात माननी ही होगी। आप मम्मी की हरेक बातें मानेंगे। दवाई समय पर खाएँगे तथा Court से पक्का 3 बजे वापिस घर आ जाएँगे। ज्यादा Exert नहीं करेंगे। मैं जब 24 दिसम्बर को सहरसा आऊँगी तो आपसे कोई बहाना नहीं सुनूँगी। वैसे ये कह रहे थे कि गुड्डी आपका बहुत ही ख्याल रखती है। गुड्डू कैसा है? उसे अब अपने Examination के लिए पूरी तैयारी करनी चाहिए। मुझे विश्वास है वह जिंदगी में बहुत ही अच्छा करेगा। गाँव का क्या हाल है? डैडी सहरसा आए थे या नहीं? अब तो गाँव जाकर कुल देवता तथा दादी से भी आशीर्वाद लेना है। मम्मी, हमलोग आपकी किताब 'एकटा आकाश' का बेकरारी के साथ इंतजार कर रहे हैं। आपकी किताब पढ़ने से मुझे मैथिली भी आ जाएगी। विशेष कुशल है। दिल्ली में अब काफी ठंढ बढ़ गई है। आप सब को काफी Miss करते हैं हम दोनों। आपलोग अपना ख्याल रखा कीजिए। आपलोगों की चिंता लगी रहती है। विशेषकर

पापा को ज्यादा काम नहीं करने दीजिएगा। हम तो दिसम्बर में आएँगे ही। बच्चों को बहुत सा प्यार।

आपकी पुत्री

**जया**

*ठीके बजने छलीह जया हमरा पढ़ैत ओकरा मैथिली आबऽ लगलैक। आ विदेह मे राजीवक संग बेसी अंग्रेज़ी अनुवाद नागफाँस केर जया केने अछि–*

पू. मम्मी,

सादर प्रणाम।

कल आपकी एक चिट्ठी मिली थी। अब आप मेरे बारे में एकदम चिन्ता नहीं करेंगी। अब मैं Hostel में आराम से हूँ। 6 ता. को Fresher Night मनाया गया। उसमें बहुत देर तक मैं Dance करता रहा English Music पर। उसके पहले दो–तीन घंटे जानवर बनकर Hostel में हमें घूमना पड़ा। खैर अंत में आठ बजे रात में रैगिंग की घड़ियाँ खत्म हुई Dinner लिया और उसके बाद हमलोग लगभग 200 लड़के Cinema देखने गए।

अब जीवन सामान्य ढंग से चल रहा है। एक–दो दिन कमरा ठीक करने में लग गया। अब तो पढ़ाई भी शुरु कर दी है। Hostel Charge अब October में ही लगेगा। अभी केवल 82 रु. College Fees लग रहा है December तक का। मैं सोच रहा हूँ अगर 26 ता. को घर जाने के लिए Principal allow करता है तो मैं पटना में एक दिन के लिए आऊँगा और उसके बाद 29 तक सहरसा आऊँगा। 1 से 15 तक Vacation है। अभी तक यहाँ पर पूरी तरह मन नहीं लग पाया है। कोशिश कर रहा हूँ। कल Hostel में Social Programme हुआ था जिसमें Miranda Girls College से लड़कियाँ आई थीं। उनलोगों के साथ English Music पर हमलोगों को Dance करना था।

मैं शाम में Daily लाल मामा के पास तीमारपुर चला जाता हूँ। अभी मैं उन्हीं के रूम में बैठकर यह पत्र लिख रहा हूँ। उनका Room एक फिर Change हो गया है। अब वे Room No. 14 में हैं। और सब क्या हाल चाल है? पू. पापा कहाँ हैं? अभी तो कहीं बाहर भी नहीं जाना है। पू. डैडी एवं सुनील चाचा को सादर प्रणाम। पिंकी, लीली एवं गुड्डु, गुड्डी को प्यार।

Important Thing: मम्मी मेरी घड़ी खराब हो गई है। घड़ी चलती ज़रूर है लेकिन सूई एक जगह ही टिकी रहती है। इसलिए अगर पापा Birpur की ओर जाएँ तो 80 रु. वाली एक घड़ी मंगा देंगी।

आपका बेटा

**राजू**

दीदी,

राजू के लिए आप चिंतित नहीं होंगी। वह एकदम स्वस्थ है। अब उसे Hostel में भी मन लगने लगा है।

अपने विषय में कुछ भी लिखने को नहीं है। बस, समय काट रहा हूँ। देखें, बेकारी की यंत्रणा कब तक झेलनी पड़ती है।

पाहुन कैसे हैं? उन्हें मेरी याद दिला देंगी।

आपका

**सेन्टू**

*बेकारीक यंत्रणा झेलऽ बला सेन्टू यानी शरद मल्लिक आय IRAS छथि रेलवे बोर्ड दिल्ली मे–*

*एखन राजीव दिल्ली विश्वविद्यालय मे इतिहासक प्रख्यात एसोसिएट प्रोफेसर छथि संगहि–स्टैंडिंग कान्सिलक सदस्य सेहो– ओना राजीव कें पत्र लिखवाक बड़ हिस्सक छल किएक तँ ओ जनैत छल हमर मम्मी हमरा सभ लेल सदिखन आकुल रहैत अछि– एक बेर ओ अपन मौसा शंकर बाबू मौसी मधु, मामा कृष्ण कुमार, मामी चंदा, मामा शरदक संग कश्मीर गेल छल। 15 पैसाक पोस्ट कार्ड सभ खरीद के लऽ गेल छल–सभ ठाम सँ हाल लिखि खसा दैत छल–*

*18.10'78*

आ. मम्मी,

...हम सभ बड़ौदा सँ 15 ता. के भोर मे दिल्ली लेल विदा भेलहुँ। रास्ता मे उदयपुर मे ठहरलौं। उदयपुर राजस्थान मे छैक। सौंसे शहर झील आ फव्वारा सँ भरल अछि। ओहिठाम राणा प्रतापक पैलेस देखलहुँ। ओकर बाद 17 ता. कें भोर मे उदयपुर सँ राजस्थानक राजधानी जयपुर पहुँचलौं। रस्ता मे दुइ घंटा ख्वाजा मोइउद्दीन चिश्तीक दरगाह, अजमेर मे सेहो रुकलौं। जयुपर मे आमेर फोर्ट, हवा महल आदि देखलौं। फेर हम सभ हरियाणा राज्यक गुड़गाँव शहर होइत दिल्ली पहुँचलौं। जम्मू 20.10... हम सभ कुशलतापूर्वक कार सँ यात्रा कऽ रहल छी लुधियानाक रास्ता मे हम पटियाला, अम्बाला, पानीपत, कुरुक्षेत्र आदि देखलौं। राति लुधियाना मे रुकि 20'क भोर मे जलन्धर होइत 3 बजे जम्मू पहुँचलौं। काल्हि भोर श्रीनगर लेल विदा होयब, चारि दिन ओहि ठाम रुकब। कार मे हम सभ 9 आदमी यात्रा कऽ रहल छी... 23.10 कश्मीर.....21 ता. कें जम्मू से कश्मीर लेल विदा भेलौं। रस्ता पहाड़ पर छल। अपना सभ दार्जिलिंग गेल छलौं ओहियो से भयानक। कार सँ करीब दस घंटाक यात्रा छल। कश्मीर जेवाक आधा मजा रस्ते मे भेटैत छैक। 5 बजे सांझ मे हम सभ श्रीनगर (Capital of Kashmir) पहुँचलौं। एहिठाम डल झीलक बीच मे

एकटा हाऊस बोट मे ठहरलौं। 22 ता. कें शिकारा (एक प्रकारक नाह) सँ हम सभ साँझ के पाँच बजे तक डल झील, नागिन झील आदि मे घुमैत रहलौं। शालीमार आ निशान्त Garden देखलौं। पूरा कश्मीर पहाड़ी सँ घेरल अछि। काल्हि हम सभ गुलमर्ग जायब फेर कश्मीर मे तीन दिन रुकब-फेर पहलगाम मे दुइ दिन रुकब-

ठाम-ठाम पर राजीव पत्र गिरवैत रहल-सभ ठामक वर्णन करैत रहल! तखन ओ मैट्रिक पास कय पटना कॉलेज मे आई.ए. मे पढ़ैत छल! कश्मीर सँ घुरल तँ हमरा लेल शुद्ध सिल्कक साड़ी कश्मीर सँ नेने आयल- पचीस रुपया मे मक्खन सन मोलायम सिल्क साड़ी-तखन पचीसक कीमत छल। हमरा ईदगाह क हामिद मोन पड़ि गेल जे अपन सभ लोभ पर संयम राखि दादी लेल चिमटा खरीदि कें अनने छल...

हमरा बाल बच्चा मे पत्र लिखवाक हिस्सक सभ सँ बेसी राजीव कें छल। पत्र की ओ अपन डायरी लिखि भेजैत छल। हजारो पत्र ओकर हमरा भेटल। लगैत छल जेना ओकर साँस साँस मे हम बसल छी- फेर बंदना आ सुपर्णा खूब लिखैत छलीह। सुपर्णा तँ तीन-तीन पन्नाक पत्र लिखैत छली, संजीव, तरुणा ठीके ठाक लिखैत छल- मुदा, भावना पत्र लिखवा मे सभ सँ बेसी कंजूस छलीह- जखन ओकरा फीस देवाक समय अबैत छल तखन लिखैत छलीह-एतेक टाका पठादेव आ अपनो हँसैत छलीह।

पूजनीय पापा एवं मम्मी,

सादर प्रणाम,

...मम्मी, अहाँ सभ किएक बुझैत छी जे हम सभ अहाँ सभ कें बिसरि गेलौं। अहाँक जीवन सँ हम सभ प्रेरणा ग्रहण केने छी। अहाँ जेना संघर्षो मे मुस्काइत रही ओहिना तँ हमहुँ सीख रहल छी। मुजफ्फरपुर मे सेहो आ. पापाजी, माँ, सुभाष जी, चंदर जी, विकास जी सभ अहाँ सभक तारीफ करैत रहैथ।

अहाँक पाहुन अहाँ सभ कें बड़ प्यार करैत छथि। हमरा हरदम कहैत छथि पत्र लिखवा लेल।

अहाँ जानैत छी जे हम पत्र लिखवा मे कतेक आलसी छी। पापा, अहाँ नीक सँ रहब। मम्मीक खियाल राखबै।

अहाँक बेटी

सूकू (भावना)

बम्बई 2.12.89'

*ई पत्र समीताक विवाहक उपरान्त पहिलुक बेर जखन इंगलैंड रहवा लेल पींकी गेल छलीह तखन लिखने छलीह।*

पू. मम्मी पापा,

चरण स्पर्श।

आज तक कभी आपलोगों के लिए इतनी बेचैनी नहीं हुई थी जितनी कि इन दिनों हो रही है। पहले तो जब भी आपलोग याद आते थे बस फोन लगाकर बातें कर लेती थी, परंतु अब फोन पटना का खराब हो जाने से आपलोग सोच नहीं सकते हैं कि हमलोगों की क्या हालत होगी। आपलोगों की आवाज़ सुनने के लिए बेचैन हैं हमलोग, बस आपलोगों का Cassette दिन भर लगाकर सुनते रहते हैं। उसमें भी अब कैसेट लगभग घिस सा गया है। ज्यादा Rewind or F/F करने पर डर लगता है कि cassette ही खराब हो जाएगा। Please मम्मी मेरा एक request है कि एक नया cassette खरीद कर उसमे दोनो side पापा और आपका गाना पूरा record कर लेंगी। ज़रूरी नहीं है कि एक ही समय में सब गाना गाया जाए। जब-जब मौका मिले तब-तब Record कर लेंगी। Please मम्मी मेरे आने तक वो cassette तैयार रहना चाहिए। मम्मी समीता का ख्याल करना। सोचना एक बेटी England गयी तो दूसरी आयी।

खत आपलोग देंगे। बहुत याद आपलोग आ रहे हैं।

**पीकू बेटा वंदना**
Flat 2, New Terrace
न्यू कास्ल, U.K.

पिंकी जखन मेडीकल छात्रा छलीह तँ बड़ बेकल भऽ लिखने छलीह- मम्मी डाक्टरीक पढ़ाई बड़ खराब होइत छैक- एतेक पढ़ऽ पड़ैत छैक-जे आँखि पर चश्मा चढ़ि गेल... ताहि पर दरभंगा मे बिजलीक हालत एतेक खराब अछि जे बेसीतर मोमबत्तीक इजोत मे पढ़ऽ पड़ैत अछि-

कतेक बेर हम बंदना के इंगलैंड मे उदास देखने छलौं-हम ओकरा बुझवैत रही-बेटा अहाँक भाग्य अछि जे अहाँ इंगलैंड मे छी, नहि तँ एखन कोनो ब्लाक मे रहितौं-विकासक मार्ग अवरुद्ध भऽ जेतीयैक। हमहु चिन्ता नहि करैत छी बेटा-पहिने जाड़ मास मे सीरकक नीचा घुसल रहैत छी। बरखा मे भीजैत छी तँ गरमी सँ बेहाल पंखाक नीचा बैसैत छी। ओहिना दुख अबैत अछि, कनि काल लेल हम सभ बेचैन भऽ जायत छी फेर भगवान रस्ता निकालि छैत छथि पटना मे तेइस घंटा बिजली रहैत अछि, एक घंटा नहि रहैत अछि। मुदा, ओहि तेइस घंटाक सुख बिसरि एक घंटाक दुख मे कछमछी छुटि जाइत अछि- तँ सदिखन धैर्य रखु, हँसैत रहु-

*ब्याहक उपरांत लीली सुपर्णा केर ई प्रथम पत्र मास्को सँ आयल छल अपन दैनन्दिन अनुभव सँ-*

प्यारे पापा, मम्मी,

चरण स्पर्श,

आशा है आपलोग अच्छे होंगे। मैं यहाँ बिल्कुल ठीक से हूँ। मेरी चिन्ता नहीं करेंगे। आपके पाहुन मुझे बहुत प्यार से रखते हैं। सुबह 8:30 को जाते हैं शाम 7:30 तक आ जाते हैं। वह बाद में 9 बजे तक आएंगे।

मैं इन्हें ऑफिस भेजकर फिर दो घंटे सोती हूँ उसके बाद आराम से नाश्ता, खाना, T.V. देखना और Phone पर बात करना होता रहता है। अभी मैं अकेले कहीं बाहर नहीं निकलती हूँ। Saturday, Sunday को घर सफाई, कपड़ा सफाई यही सब होता है। इनका Office सिर्फ Sunday को बन्द होता है। पर Saturday को तीन चार बजे तक आ जाते हैं। Saturday, Sunday को ढेरों लोग मिलने आते हैं, सब का खाना बनाते हैं हम दोनों। काफी मजा आता है। इनके Office से चार Russian भी आए थे/आई थीं। बहुत अच्छा लगता है। यहाँ हरेक घर में Heater लगा होने से Room Temperature normal होता है। कोई ठंढ नहीं लगती है। पर घर के बाहर निकलो तो Woolen clothes ढेरो डालना होता है boots पहनना होता है। आँख, नाक छोड़कर कोई part नहीं दिखना चाहिए, करीब 25 kg. weight ढोना पड़ता है। सब जगह snow बहुत मजा आता है बर्फ पर चलना।

यहाँ का Market बहुत महंगा है। एक बैंगन जिसका वजन 200 gram होगा, उसकी कीमत 100 Rs. करीब तीन डॉलर, हर चीज महंगी। सौ रुपये में 100 gram chips, जो India में 10 Rs. में आता है। देखूँ घर कैसे चला पाती हूँ। अभी तो बहुत ही खर्च हो रहे हैं। इसलिए अब कहीं भी Phone नहीं करूँगी। मैं घर पर Computer भी सीख रही हूँ।

प्यारे पापा, आप मुझे चिट्ठी लिखेंगे तो मुझे अच्छा लगेगा। अपने Health का Care करेंगे। गाड़ी कैसी चल रही है? ज्योति है या नहीं? रोमी का क्या हाल है? उसे मेरा प्यार देंगे। Video Cassette पर सबको देखती रहती हूँ और याद करती हूँ। आ. निक्का काका कैसे हैं? उनको दिल्ली कब जाना है? उनको एवं आ. मां को मेरा प्रणाम देंगे। आ. पिन्टू मामा, मामी, लाल मामा-मामी को प्रणाम देंगे। प्रिय बबीता जी, दिबू, आयुश को प्यार।

**प्यारी लिलि**

मास्को '96

*लीलीक विवाहक यानी सिन्दूर दानक बादे संजीव फ्लाईट सँ अहमदाबाद चलि गेल छल ओ International Training for Environment लेल चुनल गेल छल-*

आदरणीय मम्मी पापा,

प्रणाम!

हम एहि ठाम नीक जकाँ छी। सभ किछ नीक अछि। एहि इंटरनेशनल ट्रेनिंग मे छह टा लड़की, पाँच टा विदेश के, बाकी हम सभ छह गोटे अपन देश सँ छी। सभ किछ नीक छैक खाली भानस अपने करय पड़ैत अछि– सभ लड़का लड़की मिलि भोजन बनेवाक ग्रुप बनौने अछि। हमर ग्रुप नीक अछि जे हमरा खाली चौर चुनऽ पड़ैत अछि।

एहिठाम सँ हमर सभक ट्रेनिंग सेंटर यानी नेहरू फाउन्डेशन फॉर डेवलपमेंट जे थालटेज, टेकरा मे अछि, पएरे पएर जाइत छी। दस-पन्द्रह मिनटक रास्ता छैकं सेंटर मे यशेष अनन्तानी, कार्तिकेय जी, किरण भाई आदि हमरा सभक पथ प्रदर्शन करैत छथि... अहाँ सभ कोनो बातक चिन्ता नहि करब। पापा, अहाँ अपन हेल्थ पर ध्यान राखब। मम्मी अहुँ अपन खियाल राखब। आब तँ हम सभ केओ भाई बहीन अहाँ सभ लग नहि छी। तें हरदम मोन अहीं सभ पर लागल रहैत अछि। ट्रेनिंगक उपरांत हमरा अहमदाबाद मे नौकरी भेटि जायत। मुदा, हम अहाँ सभ सँ एतेक दूर नहि रहि सकैत छी। अहाँ सभ के देखऽ वला केओ चाही। हमरा यदि पटना मे भेकेन्सी भेटि जायत तँ हम निश्चित रूप सँ ओहिठाम आयब। हमर लॉ के परीक्षा कहिया सँ होयत... पू. भैयाक घर देखवा लेल हम दिल्ली जायब संगे गुड्डी सँ सेहो भेंट करब।

अहींक आज्ञाकारी

**गुड्डू ( संजीव )**

अहमदाबाद, '96

संजीवक पत्र देखैत मोन पड़ैत अछि जखन संजीव सेंट पॉल अकादेमी पटना मे फर्स्ट स्टैंडर्डक छात्र छल आ राजीव पटना कॉलेज मे आइ.ए. क विद्यार्थी छल। दुनू भाय संगे अबैत जायत छल सहरसा-पटना। पहिल बेर जखन ओ जायत छल तँ हम राजीव के संगे संजीव के सेहो कहलौं- पटना पहुँचिते हमरा चिट्ठी लिख देब..अहाँ जनैत छी हमरा कतेक चिन्ता भऽ जायत अछि।

जखन रिक्शा पर चढ़य लागल तँ संजीव हमरा हाथ मे एकटा चिट्ठी दऽ देलक मम्मी भोर खन एकरा पढ़ि लेब...

आदरणीया मम्मी,

गोर लगैत छी

अहाँ चिन्ता नहि करब। हम सभ खूब नीक जकाँ पहुँचि गेलौं। पू. पापा सँ प्रणाम...

अहीं के बेटा

**गुड्डू**

*हमर आँखि से नोर खसि पड़ल-चिट्ठीक ई महत्व छल-? एतवे नहि ब्याहक पहिने ओ*

*अपन पत्नी शबनम कँ पत्र लिखने छल*

प्रिय शबनम,

शुभ.....तुम एक अच्छी लड़की हो, मैं जानता हूँ बस एक बात मुझे कहनी है.... मेरे मम्मी पापा ने हमें बनाने के लिए बहुत कष्ट उठाए। पापा एक सिद्धांतवादी एवं आदर्शवादी व्यक्तित्व के हैं...मैं सब कुछ कर सकता हूँ किन्तु अपने मम्मी पापा को दुखी नहि देख सकता.... और मैं तुम से भी ये ही आशा करता हूँ कि कभी कोई ऐसी बात मत करना जिससे उन्हें चोट पहुँचे। माता-पिता के आशीर्वाद के बिना सब सुख व्यर्थ है, मानता हूँ तुम इस मामले में मुझसे भी अच्छी होगी-यही आशा है-

**संजीव**

अगस्त, '97

*संजीवक पत्र सभ विचित्र लगैत छल-*

सौभाग्यवती चि. रजनी,

आशीर्वाद।

अहाँ सब के मालूम भ गेल होएत जे चि. सुकू के देखैक बास्ते राजेन्द्र बाबू सब आएल रहैथ राजेन्द्र बाबू, हुनकर कनिया, छोटका बेटा, बद्री बाबू के कनिया, बेटा पुतहु, 2टा पोती राजेन्द्र बाबू के कनिया के भतीज पूतहु सब आएल सुकू के देखि के बहुत खुशी भेलैथ बहुत देर तक रहलैथ।

...आब विवाह के तैयारी करू। चि. पाहुन के आशीर्वाद कहि देबैन तथा गुड्डी के प्यार।

अहाँ के पापा आय रक्सौल गेल छथि। मिटींग छियैक 23 ता. के लौटथीन। चि. इरा काल्हि मधुबनी गेल अछ। पत्र देब...

अहाँके माँ

90, श्री कृष्ण नगर

पटना

*हमर पैघ जमाय यानी भावना (सुकूक) पति-*

आ. मम्मी

सादर प्रणाम।

हमलोग कुशल से है और आपलोगों की कुशलता के लिए ईश्वर से सदा प्रार्थना करते रहते है। आपके पत्र से परसों नानी जी के स्वाथ्य के बारे में ज्ञात हुआ। अब वह कैसी है। आ. नानी एवं नानाजी का भी पत्र मिला था। अब तक जवाब नहीं दे पाया। चिंकी के कारण एक मिनट के लिये फ्री नहीं हो पाता हूँ। अभी भी चिल्ला रही है। वह चाहती है कि हम दोनों उस पर ध्यान दिये रहें। अब बदमाश भी हदसे ज्यादा हो गयी है। तोड़-फोड़ तो रोजमर्रा की बात है। आपको भी लग रहा होगा मैं बहाना कर रहा हूँ। अभी मैं एक हफ्ते की छुट्टी पर हूँ। स्नोफीलिया का प्रोबलम हो गया था। मम्मी, आपको क्या लिखूँ आप हम सब की गौरव हैं...........

कौशलेन्द्र जी को हमलोगों की बधाई भेज देंगी। उनके विदेश जाकर पढ़ाई करने के लिए। पिंकी का हाल-चाल भी लिखेंगी। अभी तो कॉलेज वगैरह बंद ही है। मौका लगे तो गुड्डू को बम्बई कुछ दिनों के लिए भेज दिजीएगा। आ. पापा जी को प्रणाम। आ. नाना, नानी जी और सभी बड़ों को मेरा प्रणाम।....

आपका

**प्रकाश चन्द्र नवीन**

ओ.एन.जी.सी. कॉलोनी,

पनबेल बम्बई।

*दोसर जमाय कौशलेन्द्र जीक पत्र-*

मलंगवा।

15 अक्टूबर 1989

आदरणीय पापा एवं मम्मी,

सादर प्रणाम ,

कुशलपुर्वक रही आशा अछि जे अपने सभी वहिठाम पशुपति नाथक कृपा सँ आनन्द होयव ! हम अहिठाम काल्ही सवेर मे करीब आठ बजे काठमाण्डू सँ पहुँचलऊ ! कोजागरा के विध-वाध सभी काल्हि समाप्त भ' गेल। काल्ही अहिठाम एकटा रिशेप्सन के आयोजन कयल जा रहल छैक, कम समय मे सभ Management कायल जा रहल छैक, तहि हेतु निकाकका तथा और सब व्यस्त छैथ! पिंकी के दरभंगा मे DMCH मे 'फोर्म' भरवाक छैक। ताही लेल हम सब अहिठाम सँ 18 या 19 ता॰ कें दरभंगा जायब, तुरन्त फार्म भरिक' पटना लेल विदा भऽ जायब ! कहवाक मतलब यी जे हमसब 20 ता॰ के कोनो समय मे पटना पहुँच जायब ! पिंकी कहि रहल अछि कखनो जे हम वहिठाम मद्रास अपने सबक साथ नहि जा सकब, लेकिन काल्हि सँ जिद पकड़ने अछि जे हम जयबे करब! (ये बहुत चालाक हैं, मुझे वहाँ ले ही नहीं जाना चाहते हैं Silver sand पर) ताही हेतु

जायत या नहीं से वहिठाम पटना अयले पर निश्चित होयत! (हम नहीं जायेंगे, कसम से झुठे से–पिंकी)।

और अहिठाम के सब समाचार ठीके छैक। अनिल सर के हाथे शादी के सब फोटो तथा और किछु फोटो पठा रहल छी । लिल्ली गुड्डी जी तथा गुड्डू के कि हाल समाचार छैक? गुड्डु जी सँ तँ पटना मे भेट भ' जायत, लेकिन लिल्ली जी तथा गुड्डी जी सँ भेंट नहि भ सकत ! समय ज्यादा रहैत तँ हम सीधे सहरसा अबीतौं, लेकिन कि कयल जाय । अपन आ पापाक स्वास्थ्य पर ध्यान देबाक छैक।

विशेष और सब सामाचार ठीक छैक । बाँकी भेट भेला पर ।

अपने सबहक

**कौशलेन्द्र**

मलंगवा

*एखन इंगलैंड मे डॉ. कौशलेन्द्र आ डॉ. बंदना दूनू गोटे मिलि समस्त मैथिल समाजक एकटा मैथिल संगठन बनौने छथि जाहि मे मैथिलीक उत्कर्ष, विकास विदेश मे कोना होयत एहि सभ मुद्दा पर विचार होयत रहैत अछि।*

*एहि क्रम मे अखिलेश दीप्ति, अनिल, पूनम, डॉ. राजीव रंजन, डॉ. ए.के. झा, नीना झा, डॉ. सृजा आदि व्यस्त रहितो संपूर्ण सहयोग दैत छथि।*

*जखन '99 ई. मे हम पहिल बेर इंगलैंड गेल छलौं तँ कौशलेन्द्र जी पाहुन कहने छलाह– मम्मी, कम्प्यूटर खाली अंग्रेज़ी भाषा जनैत अछि– हम सभ ओकर भाषा कें मैथिली बना देने छी। हम सभ मैथिलीयो अंग्रेज़ी मे type करैत छी–*

*हमर तेसर जमाय मनोज जीक पत्र–*

आदरणीया माँ एवं पापा जी,

सादर प्रणाम।

नये वर्ष में हम सब का प्रणाम। हमलोग यहाँ अच्छी तरह से हैं। छाया भी ठीक है। आपलोग किसी तरह की चिन्ता नहीं करेंगे। पापा, आप अपने स्वास्थ पर ध्यान देंगे। माँ, आप भी अपना ख्याल रखेंगी, हम सब का ध्यान आपलोगों पर ही रहता है.............

आपका ही

**मनोज**

मास्को '96 जनवरी

*आँखिक आगु सभ किछ साकार कऽ देब' वला ई दुर्लभ पत्र- विकास जी, हमर सभ सँ छोट जमायक-*

आदरणीय मम्मी/पापा/गुड्डू भैया/ छोटी भाभी,

सादर प्रणाम ।

हम यहाँ एकदम ठीक हैं। और आशा करते हैं कि आप भी सकुशल होंगे । कल ही मम्मी का पत्र मिला जो कि हमारे घर में आनेवाला पहला (ऐतिहासिक) पत्र था । पढ़कर बहुत खुशी हुई। मम्मी ने पत्र में बहुत सी जिज्ञासाएँ व्यक्त की, मैं इस पत्र में उन सबका समाधान कर रहा हूँ ।

हमरा 'घर' लगभग सेट हो गया है, हालाँकि छोटी-मोटी गतिविधियाँ चलती ही रहती है। हमारे पास फिलहाल एक ही कमरा है, लेकिन कमरे का आकार काफी बड़ा है। पंखा लगा हुआ था, कूलर हम घर से ले ही आए है। एक अलमारी (लकड़ी की, पहले से बनी हुई थी, एक स्टील की बड़ी अलमारी और मेरा स्टडी टेबल हम लेकर आए है। इसके अतिरिक्त फर्नीचर के नाम पर एक पलंग भैया-भाभी द्वारा भेंट स्वरूप दिया गया । एक सेन्ट्रल टेबल, एवं स्टूल, दो कुर्सियाँ और एक फोल्डिंग टेबल (जो अब कूलर के स्टैण्ड के तौर पर कार्यरत है।) हमारे पास है इस सब सामान के बावजूद कमरा खुला-खुला लगता है।

कमरे के अतिरिक्त हमारे पास एक बहुत ही सुंदर, सुविधाओं से सुसज्जित रसोई है, विवाह से पूर्व तरुणा जिस कमरे में विजय नगर में रहती थी, यह रसोई उस कमरे से बड़ी होगी। रसोई में मार्बल का स्लैब तो है ही, एक सुंदर सा, सफेद चमचमाती टाईलें लगी दीवारें, तीन स्लैब रखने के लिए तथा एक Exhaust Fan (जो आवश्यक्तानुसार बाहर अंदर किसी भी ओर हवा खींचता है) लगा हुआ है। अभी दो दिन पूर्व ही हमने एक सोडामेकर खरीदा है जिससे बहुत कम खर्च पर एक मिनट में ही कैम्पा कोला या कैम्पा ओरेन्ज या लिम्का तैयार किया जा सकता है। आपके आने से ही यह खरीदना सार्थक हो सकेगा । बर्त्तन इतने हैं कि हम किसी भी समय आठ-दस लोगों को भोजन करा सकते हैं।

रसोई तथा कमरे के अतिरिक्त एक बाथरूम कम टॉयलेट है। यह बाथरूम के आकार और सौंदर्य में रसोई के बराबर है। गीजर से लेकर हैंड-शॉवर तक की संमस्त वांछनीय सुविधाएँ यहाँ उपलब्ध है।

यह घर दो मंजिला है हम नीचे यानी ग्राउण्ड फ्लौर पर ही रहते है। मकानमालिक श्री एस॰आर॰मेहरा, जो अभी हाल ही में C.S.I.K. (Council of Scientific And Industrial Research) से सेवा निवृत हुए हैं, अपनी पत्नी (जो घरेलू महिला है और गठिया रोग से पीड़ित है। तथा एकमात्र संतान, अपने सुपुत्र मनीष जो कक्षा दस का विद्यार्थी है तथा तरुणा का भक्त है के साथ ऊपर रहते हैं। नीचे ही एक और नवदंपति भी रहते है। जिनके पास दो छोटे-छोटे कमरे, एक छोटी रसोई, और एक छोटा बाथरूम/टॉयलेट है, रहते है, और आजकल अपने घर (बिहार) गए हैं। उपर एक कमरे

में एक लड़का 'अजय' रहता है, जो आजकल मैनेजमेंट का कोर्स कर रहा है। यह पहले हिन्दी में ही एम॰ए कर रहा था, उसी संदर्भ से हमसे अच्छी तरह परिचित हो गया है। ये सभी लोग अधिक सहाय तथा सहायक प्रवृति के है, इसलिए किसी भी प्रकार की कोई तकलीफ होने का सवाल ही पैदा नहीं होता ।

घर का किराया पहले दो महीनों के लिए 2700/- प्रतिमाह तथा फिर 2800/- प्रतिमाह होगा । बिजली का खर्च इसके अतिरिक्त जो आएगा, हमें देना होगा । नीचे का मीटर अलग से लगा हुआ है। बिल के अनुसार हमें देना होगा ।

हमारी दिनचर्या अभी तक बहुत अधिक निश्चित नहीं हुई है, पर यह लगातार तय होने की प्रक्रिया में है। यदि सब स्थितियाँ साधारण हो तो मैं प्रातः नौ बजे से सांय साढ़े सात बजे तक लाइब्रेरी में पढ़ने चला जाता हूँ तथा पीछे से तरुणा घर पर पढ़ती है। मैंने उसे भी लाईब्रेरी में पढ़ने का सुझाव दिया है, पर वह घर में अधिक प्रसन्नता पूर्वक पढ़ती है। शाम को आठ बजे हम 15-20 मिनट साथ घूमते हैं। फिर खाना खाकर, पढ़ने बैठ जाते है और 12-1-2 बजे तक सो जाते हैं। तरुणा शाम को कभी-कभी अपनी सहेलियों से मिल लेती है।

भोजन के संबंध में हमारा प्रयास रहता है कि वही खाएँ जो विद्यार्थी के अनूकूल हो, स्वास्थ्य के लिए बेहतर हो तथा अधिक ताम-झाम वाला नहीं हो । रसवाली एक सब्जी और सूखी सब्जी हो तो दाल, आमतौर पर यह हमार 'मीनू' होता है। रोटी हम खाते है ओर कभी-कभी एक-दो दिन में चावल भी खाते रहते है। अचार हमने लिया है पर बहुत अनुशासित ढंग से उसका सेवन करते है। मसाले कम खाते है। चाय, कॉफी और मिर्च-ये तीन चीजें अभी तक हमारी रसोई में उपस्थिति दर्ज ही नहीं करा सकी है। दिन का खाना मैं पैक कराकर ले जाता हूँ । पानी ठंडा रखने के लिए विश्वास भैया और शमा भाभी ने तरुणा को जन्मदिन के उपहार के तौर पर एक कूल जग भेंट किया था । बर्फ हमें मकान-मालिक के यहाँ से मिल ही जाती है। नास्ते में हम सैंडविच या पराठे खाते है, दोपहर में सब्जी रोटी । नास्ते में आमतौर पर दही खाते है तथा रात को दूध भी पीना पसंद करते है। दिन में एक-दो बार ठंडक शर्बत या बिस्कुट या सोडा पी लेते है।

हमारे यहाँ आतिथ्य पर बल दिया जाता है। हमारे सभी दोस्त लगभग एक बार घर देखने के लिए आ जाते हैं। भैया-भाभी दो - तीन बार आए है। उनका आना हमें बहुत अच्छा लगता है। अभी वे ही हमारे अभिभावक हैं। माँ-पिताजी-मम्मी पापा चारों में से अभी तक कोई भी नहीं आ पाये है। माँ-पिताजी की आजकल Special Examination Duty चल रही है, इसके समाप्त होते ही आऐगें । इस प्रकर माता-पिताओं के आशीर्वाद से यह घर अभी तक वंचित ही है।

हमारी इच्छा है कि गुडडू भैया और छोटी भाभी अपने दिल्ली प्रवास के दौरान हमारे घर ही रहें । हमें उनके माध्यम से उनका आशीर्वाद तो मिलेगा ही अपने भी मिल जाऐंगे।

शेष सब कुशल है। मुझे आशा है कि पत्र पढ़कर आपके मन में हमारे घर की एक तीसरी छवि स्थापित हो जायेगी । फिर भी असली मजा तो आपको तभी आएगा जब आप खुद ये घर देख

लेंगे । हम सब ब्रेसबी से इंतजार कर रहे है।

आपके
**तरुणा/विकास दिव्यकीर्ति**
2.5.'98
11.17 प्रातः

*पत्र लेखन सरिपों एकटा कला छी। पत्र एकटा एहेन साधन थीक जे अपन ह्रदयक भावक संग संग अपन जीवन शैली कें साकार कऽ एकटा जीवन्त चित्र उपस्थित कऽ सकैत छैक-*

*पत्रक आरंभ, समापन, कथ्यक सम्प्रेषणीयता-लेखक क विनम्रता व्यक्तित्व, चिन्तन, विद्वता आदिक परिचायक भऽ जायत छैक। तैं विकास जी पाहनुनक ई पत्र अपूर्व भऽ जायत छैक।*

*कतेक खुश छल गुड्डी जखन ओ दृष्टिक आरंभ केने छल-*

प्यारे पापा मम्मी,

सादर प्रणाम।

आपलोगों को कितना मजा आ रहा होगा मेरा लेटर पैड देखकर मुझे भी उतना ही मजा आ रहा है लिखने में। पहला खत आपको ही लिख रही हूँ। आपलोग के आशीर्वाद से 'दृष्टि' नववर्ष में धूम के साथ चल रही है। हिन्दी में अभी 15 बच्चे हैं, G.S. में 9 तथा दर्शनशास्त्र में 9 बच्चे। शुरुआत अच्छी है क्योंकि बहुत जल्दी 'दृष्टि' लोगों की दृष्टि में आ चुकी है। क्या लिखूँ समझ में नहीं आ रहा, बस लिखते हुए रोना आ रहा है। अपने अंदर इतना आत्मविश्वास पाती हूँ साथ ही इनका मेरे ऊपर विश्वास देखकर बहुत हिम्मत मिलती है। पूरा दिन व्यस्त रहती हूँ सुबह 8 बजे आ जाती हूँ और रात को ग्यारह बजे घर जाती हूँ दिन भर की थकान के बाद भी थकावट नहीं होती बल्कि और ज्यादा उत्साह से भर उठती हूँ जब ये सोचती हूँ कि मैं बेकार नहीं बैठी हूँ, न ही बीमार लड़की हूँ। पापा आपकी तबियत कैसी है? अपना ख्याल रखियेगा। चिन्ता मत कीजिएगा आपके दोनों छोटे बच्चे जिन्हें सब नकारा समझते रहें ज़रूर अच्छा करेंगे, बहुत अच्छा करेंगे बल्कि अच्छा करने के रास्ते पर चल पड़े हैं। आप ही तो कहते रहे हैं- ''सच्चा तैराक तो वो है जो धारा की उल्टी दिशा में तैरे।'' प्यारे गुड्डू भैया और प्यारी छोटी भाभी को मेरा प्रणाम। अभी और भी लिखना था पर कुछ काम है अगले खत में लिखूँगी।

आपकी बेटी
**गुड़िया**
(तरुणा वर्मा)
निदेशक,
'दृष्टि (The Vision)', मुखर्जी नगर, दिल्ली

*आय दृष्टि विकास तरुणाक अनुपम देन भऽ गेल समाज सेवा लेल-*

*ई पत्र छोटकी कनिया शबनमक पत्र थीक-*

Respected
Mummy Jee and Papa Jee
Sadar Pranam

हम सब कुशल पूर्वक से हैं। आशा करती हूँ कि आप लोग भी कुशल पूर्वक से होंगे। आप लोगों से जुदा होने के बाद मन एकदम से दुखी हो गया। आपलोगों की याद काफी आती है। मधु श्रावणी पूजा की तैयारी जोर-शोर से चल रही है। मम्मी सब सामान की व्यवस्था में लगी हुई है। मम्मी आज आपके ममेरे भाई आए हुए हैं। डैडी से कुण्डली दिखाने के लिए। मैं अभी उनके पास नहीं गई हूँ। अभी बैठें हुए हैं। बड़ी मम्मी अभी तक नहीं आई है पर आएगी ज़रूर। छोटी फुआ, भाभी, नानी, मौसी एवं और बहुत कोई आप सबों के लिए पूछ रहे थे? और सब ठीक है। पापा की तबीयत कैसी है लिखीएगा। फोन पर बात करेंगी। विशेष बातें फोन से बताया करूंगी। Rest is ok. मम्मी ठीक से रहेंगी अपना और पापा का ख्याल रखेंगी...

आपकी बेटी
**शबनम**
राँची, '98

*हमर सभ सँ ज्येष्ठ समधीनक ई पत्र थीक जे गिद्धौर राज्यक वारिस रहितो जमुहारक जमीन्दारी मे अपन स्वतंत्र राज्यक गठन केलीह-*

आदरणीय समधी एवं समधीन जी,
प्रणाम।

...आपलोग एक बार जमुहार आइए। हमलोगों का सौभाग्य होगा आप आएंगे तो। ...अपने स्वास्थ्य पर ध्यान रखेंगे। मैं भी ठीक हूँ अपने को घीसीट कर जी रही हूँ। जया आप सब की हरदम तारीफ करती रहती है। वो लोग दिल्ली में एकदम ठीक है।...

...एक बार आप दर्शन दें हमारी बहुत इच्छा है।

आपकी समधिन
**सुभद्रा**
जमुहार, सासाराम
'96

प्रिय ललन जी, शेफालिका जी,

अभी आपका पत्र मिला है। मुझे ऐसा अनुभव हुआ जैसे मैं आपसे मिल रहा हूँ तथा गले से लिपट गया हूँ । मूक होकर अपनी आत्मा द्वारा आप से कुछ कह रहा हूँ । हमलोगों का यह विछुड़ना बहुत ही ह्रदय द्रावक है। आप कानून के चक्कर में ओर मैं अपने अस्तित्व के रक्षार्थ पागल हूँ । मेरी कविता समाप्त हो गई । नमक-तेल-लकड़ी ने मुझे कहीं का नहीं रखा । मैं भूल गया वह दिन जब पटना मैं गंगा के किनारे कुहरे के धुँआ में किसी अज्ञात सौन्दर्य के लिए तड़पता रहता था । पटना साईन्स कॉलेज में आप पढ़ा करते थे और मैं अशोक के वृक्ष के नीचे शान्त और एकान्त में मुँह छिपाए कुछ खोजता रहता था । निरुदेश्य भटकता रहा तथा किसी अज्ञात खोज के लिए तड़पता रहा हूँ । मेरा कवि ह्रदय मात्र आप लोगों को याद करके संतोष कर लेता है। अब तो तरह-तरह की उलझनें समस्याऐं है और उनके समाधान के लिए पागल रहता हूँ ।

समधिन! अब आप छोड़ कर भाग नहीं सकती हैं। गरई मछली की तरह छिटकती रहती हैं- किन्तु समधी जी और आपसे संबंध इतना गहरा है कि छूटे नहीं छूट सकता है। आपने याद किया है- बहुत-बहुत धन्यवाद।

समधिन! मेरे समधी जी भी वैसे ही हैं जैसो मैंने विद्यार्थी जीवन में देखा था। मैं स्वीकार करता हूँ उनका मेरे प्रति आदर वही है जो पहले था।...

आपलोगों का

**राजेन्द्र प्र. निर्मल**

मुजफ्फरपुर

*पत्रक सहारे आदमी ह्रदयक अन्तरतम गहीराय कें स्पर्श कऽ लैत अछि- पहिने दोस्त फेर समधि बनि गेलाह मुदा ह्रदय ओहिना भाव सँ भरल भावनाक भूखल- तँ तँ हम अपन ''भावना'' (प्रथम पुत्री) हुनका समर्पित कऽ देलौं-*

*राजेन्द्रजीक पत्नी कमला जीक स्नेहिल शुभकामना-*

प्रिय समधी एवं समधीनजी,

नया साल का हार्दिक नमस्कार।

नया वर्ष आपलोगों के जीवन में नयी ज्योति लेकर प्रवेश करे यही मेरी शुभकामना है। बहुत दिनों से आपलोगों का कोई समाचार ज्ञात नहीं हो पाया है। समधी जी, आपके स्वास्थ्य के लिए मुझे और भी चिन्ता बनी रहती है। माँ काली से मेरी यही प्रार्थना है कि मेरे समधी जी मेरी समधीन के साथ इसी तरह हँसते-हँसते जीवन का शेष भाग गुजार दें।......

आपकी समधीन

**कमला**

मुजफ्फरपुर 05.01.'95

*हमर लेखन कें प्रेरित करैत ई पत्र जे बंदना कें हमरा सँ मांगि कें लऽ गेलाह-*

आदरणीय समधि तथा समधिनी जी,

सादर नमस्कार।

..... समधि के स्वास्थ्य में पहिल सँ सुधार छनि से सुनि हमरा लोकनि के अत्यधिक खुशी भेल। समधि सँ भेट करबाक लेल हमरा लोकनि के बड़ अभिलाषा अछि किन्तु परिस्थितिवश विवश होवक पड़ैत अछि। घर मे हम दू गोटे मात्र अखन छी। धिया पुता अध्ययन अध्यापन ल सब बाहरे अछि।... अपने सँ निवेदन जे अपने अपन लेखनी द्वारा समाजक कल्याण हेतु किछु कलम चलाओल जाय। तिलक दहेज सँ पीड़ित मैथिल समाज के कल्याण कोना हेतैक तेकर ध्यान रखैत किछु लेख लिख युवक वर्ग के क्रांति के लेल प्रेरित कैल जाय। हमर निवेदन जे अहाँ "बर छी की बरद" शीर्षक के लेख लिख किछु युवक वर्ग के परिवर्तनक लेल अगाड़ी बढ़ाव मे सहयोग कैल जाय। ओना तँ कवि तथा कवयित्रीक अपन भावुकता होइत छैह यदि उपरक शीर्षक सँ और कोनो बढ़िया क्रांतिपूर्ण लेख होइत त नीक। हम निवेदन कैल अछि। अपने क लेख सँ हम काफी प्रभावित भेलौं तथा आशा करैत छी जे अपनेक लेख सँ समाज मे परिवर्तनक सूत्रपात भऽ सकैत छैक। कहावत छैक Pen is mighter than sword-----

..... प्रणाम तथा नमस्कार के उपयुक्त स्थान पर प्रयोग होवक चाहि, हमरा विचारे नमस्कार समकक्ष तथा प्रणाम अपना सँ श्रेष्ठ के लेल प्रयोग होवक उचित। अपने लोकनि पत्र मे प्रणाम शब्द के प्रयोग के हमरा लोकनि के जे श्रेष्ठक श्रेणी मे रखबाक प्रयास कैल अछि ई अपने लोकनिक महानताक द्योतक थीक। मुदा, नमस्कारक प्रयोग भेने हमरा विशेष प्रसन्नता हैत तखन अपने हिन्दी के विद्वान छी तँ नमस्कार तथा प्रणाम क शुद्ध व्याख्या अशुद्ध होए.....

अपनेक समधि

**राजेन्द्र प्र. कर्ण**

मलंगवा (नेपाल)

30.11.'89.

*समाज सुधारक, तिलक दहेजक विरोधी लोकनि कें हम प्रणाम नहि करब तँ किनका करब के प्रणम्य छथि? जे सरस्वती पुत्र छथि-छोटक पैघ हम सभकें आदरणीय लिखैत छी-*

आरदणीय समधिनजी,

नमस्कार।

कुशल छी। आशा अछि अपने लोकनि भी सकुशल होएव। पत्रक जवाब देव मे विलम्ब भेल तकर मुख्य कारण स्वास्थ्य सँ पूर्ण रूपे स्वस्थ्य नहि भेल छी। काठमांडू जाक पुनः देखाव छल किन्तु रास्ता बन्द भेने नहि जा सकलौ अछि। अपने लोकनि अपन घर मे चलि गेलौं से सुनि बहुत खुशी भेल, अहि तरहे समय समय पर पत्र द हमरा लोकनि के एकाकी जीवन मे सरसता लावी देव से

आशा करैत पत्रोत्तर मे विलम्ब के लेल क्षमा करब। शुभेच्छु
परविार मे सब सँ हमर आशिर्वाद कहल जेतैक

अपनेक
**समधिन**
सत्यभामा
मलंगवा, 2003

आदरणीय वर्मा जी,
माननीया श्रीमती वर्मा जी,
चिरंजीव गुड्डू जी,
नमस्ते।

परमपिता परमात्मा की अपार कृपा के फलस्वरूप हम सब यहाँ सकुशल हैं। विश्वास करता हूँ कि आप भी सपरिवार स्वस्थ एवं सुखी हैं।

सबसे पूर्व अपने एक अपराध के लिए करबद्ध नतसिर क्षमा याचना कर लूँ। छब्बीस मई, 1997 के आज मैं आपकी सेवा में पहली बार पत्र लिख रहा हूँ। मुझे यह कार्य बहुत पहले और बहुत बार कर लेना चाहिये था। ऐसा नहीं किया यह भूल अभाग्यवश हुई, बल्कि जानबूझकर की गई। मन में बराबर यह विचार बना रहा कि जब सप्ताह में कम से कम एक बार तो बच्चों के साथ आपका फोन सम्पर्क हो ही जाता है (यही स्थिति पूरे परिवार की है- फोन सम्पर्क) हमारा (मेरा/मेरी पत्नी का) भी बना रहता है और उनके साथ भी आपका सीधा सम्पर्क है ही) और दोनों तरफ के समाचारों का आदान-प्रदान भी हो जाता है तो क्या तब भी पत्र लिखने की कोई आवश्यकता रह जाती है? बस, यही सोचकर मैं बार-बार रह जाता था।

इसके अतिरिक्त एक पत्र तो मैंने तब भेजा ही था, जब विकास तथा तरुणा आपके यहाँ उपस्थित हुए थे। यह जून की बात है। एक और पत्र मैंने लिखा था-पूरे तीन लम्बे पृष्ठों का। उस पत्र को घर के शेष सदस्यों ने पढ़ा भी था। बस, यहीं तक आते-आते मेरा लिखना सार्थक हो गया था। अब वह पत्र फाइलों में पड़ा अपनी कर्मगति पर आँसू बहा रहा है। उसके प्रेषित करने का कोई औचित्य नहीं रहा।

आपने मेरे रिटायरमेंट की पृष्ठभूमि में, मेरे जीवन की उमड़ घुमड़ रही साँध्य वेला में, बिना किसी आयोजन के आपने (नारी हठ का मोहक परिचय देते हुए) मेरा नया नामकरण संस्कार कर दिया। इसके लिए धन्यवाद करने-न करने की व्यामोह-सन्धि से उबर नहीं पा रहा हूँ। यदि मेरी जननी की छत्रछाया मुझ पर आज भी बनी होती, यदि उन्हें अपने प्रस्तावित नाम ''चन्द्र भानु'' को आप द्वारा प्रदत्त नाम ''चन्द्र भूषण'' से पिटते देखकर दु:ख न होता तो विश्वास मानिये, मैं अब तक आपका हार्दिक आभारी हो चुका होता। पर मैं क्या करूँ, अपने शैशव से, माँ की लोरी बेला से सुनते आ रहे, प्रमाण पत्रों में लिखे जा चुके, सरकार द्वारा संस्तुति कर दिए गए, पत्नी और बच्चों

द्वारा, बिना किसी विरोध के, अपना लिए गए नाम ''चन्द्र भानु'' को मैं भी अपना अपनापा सौंप चुका हूँ। अब इस जीवन के शेष दिनों में इस नाम-एषणा से उबर न सकूँगा। अत: क्षमा याचना पूर्वक यह कहना चाहता हूँ कि ''चन्द्र भूषण'' को अपनाने के लिए मन अप्रस्तुत है।

होडल हमारे घर से 55 किलोमीटर है। मैं प्रात: सवा आठ बजे घर से निकलकर मध्यान्तर चार बजते-बजते घर मे प्रविष्ट हो जाता हूँ। लौटने की बेला में कभी तरुणा मुझ से बाज़ी मार जाती है, हालांकि अभी तक के तीन-चार दिनों में वह मुझ से बराबर पिछड़ती रही है। लगातार दिल्ली जाने, एक यात्रा में कम से कम तीन-चार वाहन बदलने के कारण उसकी संघर्ष गाथा मेरे मुकाबले अधिक लोमहर्षक है। वह थक भी खूब जाती है। इसके बावजूद निरंतर एक प्यारी दुलारी सी बहू बेटी बनी रहती है। निश्चय ही उसे आपलोगों ने बहुत अच्छे संस्कार, सम्यकभात्रा में कूट-कूट कर भरे हैं।

**चन्द्र भानु आर्य, कान्ता आर्य**
2223 ए, सैक्टर तीन
बल्लवगढ़ (हरियाणा)

*सब सँ छोट समधि श्री चन्द्रभानु आर्य जीक पता मे गलती सँ चन्द्रभूषण लिखा गेल- छल, ओहि बातक चर्च कतेक सुन्दर ढंग सँ अपन पत्र मे केलनि ओना हुनक परिवार मे तरुणा विकास जी, कान्ता जी, समधि स्वयं अपने साहित्यक प्रकांड विद्वान छथि.......*

आदरणीय समधीन जी एवं समधी जी,

नव वर्षक मंगल कामना और सादर प्रणाम ।

...अपने सबहक अनवरत स्नेह उपलब्ध होइत रहे ई हमर सवहक सौभाग्य थीक । अपने सनक शुभाकांक्षी, विवेकी और सहृदयी आश्वादक के हमर अजस्त्र अभिवादन। समधिनजी, हम अपने समक्ष किछु नहिं छी। अहाँ सनक समधिन अहि युग मे मिलवा मुश्किल। समधि जी तँ सेहो देवता स्वरूप छयि। नव वर्ष अपने सवहक, हर्ष एवं उमंग के मिश्रण सँ ओतप्रोत रहे इहे हमर सबहक मंगल कामना अछि।...

अपने सवहक आशीर्वादक आकांक्षी,

**समधिन नीलम**
(राँची)

*हमर बड़की भौजी यानी कृष्ण कुमारक पत्नीक पत्र-*

पूज्या दीदी,

दीदी, एकबार आपलोग डुमरी आइये न। उसबार का आपलोगों का आना न आना मेरे लिए बराबर है। गर्मी छुट्टी में तो पाहुन को छुट्टी रहेगी ही। हमलोग भी कहीं बाहर नहीं जा रहे हैं। शायद पू० माँ लोग यहाँ आएँ।

हाँ, पटना में सूक्कू और श्वेता में बड़ी पटरी बैठती थी। इसलिए मेरा request है कि exam खत्म होते ही सूक्कू को सहरसा बुलाने के बजाय कुछ दिनों के लिए डुमरी भेज देंगी।

इधर प्रिय राजू की खबर नहीं मिली है। यानि खत कोई नहीं मिला है। आपका मकान कहाँ तक बन पाया है, लिखेंगी।

प्रिय पाहनुजी को मेरी ओर से सप्रेम नमस्कार बोल देंगी और प्यारे गुड्डू और गुड्डी को बहुत-बहुत प्यार देंगी।

**आपकी ही चाँद**
**चंदा मल्लिक**
डुमरी, (गिरीडी) '79.

*दोसर भौजाई शरद मल्लिकक पत्नी अन्नुक पत्र-*

पूज्या दीदी

चरण स्पर्श ।

आपकी चिट्ठी मिली। ये गौहाटी चले गये है। परसो इनके लौटने की बात है।

इधर बहुत दिनों से पटना से कोई खबर नहीं मिली है। पूज्य पापा और माँ दिल्ली गये हुए थे। पता नहीं किस कारण से गये थे। बहुत मुश्किल से फोन लगा तो घर पर केवल धूपलाल ही था, इसलिये कुछ खबर नहीं मिल पायी। उसके बाद से फोन लगा ही नहीं।

मेरी तबीयत भी ठीक नही रह रही है। जिस डॉक्टर से दिखवा रही थी, वो दिल्ली गयी है। उसके आने बाद सिजेरियन का दिन निश्चित किया जायगा। संभवत: 23-24 नवम्बर को होगा।

बहुत दिनों से प्रिय सुकू की कोई चिट्ठी हमलोगों को भी नहीं आयी है। एक आयी थी, जो हमलोगों ने आपको रंगम जी के मार्फत भिजवा दिया था।

आपलोग पत्र बराबर देती रहेगी। नीकू बहुत लड़ती है। बहुत शैतान हो गयी है। गुड्डु भैया को हमेशा याद करती है।

शेष ठीक ही है। आपका सिपाही बिहारी को समान देकर कही चला गया था। अभी आया है। हड़बड़ी में है।....

आपकी ही

**अन्नू मल्लिक**

कटिहार

आदरणीय दीदी,

प्रणाम...बहुत याद आती है आपकी। आपका हेल्थ कैसा रहता है... आ. पहुना कैसे हैं, उनकी तबियत अब कैसी है। आपकी राखी मिलती है ह्दय मे अपूर्व शक्ति आ जाती है...लगता है अपनी दीदी को कितनी खुशियाँ दे दूँ?...अभी इंटर की परीक्षा होने वाली है....घर मे भी गेस्ट भरे हैं....यहाँ भी पू. माँ की तबियत ठीक नही रहती है....

मेरी दीदी आपका ही छोटा भाई

**पिंटू असीम**

90, श्री कृष्ण नगर, पटना

*हमर सब सँ छोट भाई पिंटू असीम मल्लिक आय कनाडा मे ऐछ...मुदा सिनेह हमर ह्दय मे ऐछ।*

हमर महाजन बहिन सब
बहुत आशीर्वाद,

रजनी, अहाँ सब बहिनक राखी भेटल बहुत निक लागल। हम ओकरा प्यार से अपन कलाई पर बान्हि नेने छी, सब बहिन मिठाई खा लेब।

अहाँक भाई

**रमेश '1960**

पूज्या जीजी,

प्रणाम।

.... गम तो दुनिया में बहुत है पर हंसी का आलम ही कुछ और होता है। आप हंसती हैं तो बहुत अच्छी लगती हैं, जीजी, आप हरदम हँसेते रहिये...

आपका ही

**अमर नाथ**

कलकत्ता '84

पूज्या दीदी,

प्रणाम।

आप कलकत्ता में हमारे पास कुछ दिन रही, हमें कितना अच्छा लगा यहाँ के हल्ला गुल्ला से भरा जीवन आप आयीं तो बहुत सुखद लगा... प्रि बोबी, सोनी, रुक्का सभी आपको याद करते हैं... कष्ट तो आपको हुआ होगा उसके लिए काफी चाहती हूँ। आपके पाहुन भी बहुत खुश थे, आपके आने से।

आपकी छोटी बहन दीपिया

**दीपमालिका**

कलकत्ता '84

साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित पोएट्स वर्कशॉप मे कलकत्ता गेल छलौं ते दीपक ओते, रबिन्द्र सारणी मे ठहरल छलौं, ओकर बाद दीपक आ पाहुनक ई पत्र छल....

हमरा हंसी लैग गेल...कष्ट आ हमरा... हम ते लोगक दिन मे रह चाहैत छी, घर में नै खास कय दीपक के दियादिनी मंजूक हंसी... जिन्दगी जिन्दादिली का नाम है, मुर्दादिल क्या खाक जिया करते हैं... टुक्कू, शम्भू, विजया हृदय...सबहक हंसी, शेरो-शायरी से घर गुंजित रहैत छल... सुकांत सोम सब सेहो अबैत छलाह।

पूज्या दीदी,

प्रणाम।

आप डुमरा चली गयी, सारा घर सूना सूना लगता है। कोई काम करने में मन ही नहीं लगता है। प्रिय पहुना जी का हाल लिखेंगी। उनका गाना याद आता है। आप जल्दी आइये। पू. बहिनदाय की शादी में तो आयेंगी ही... हम अभी से प्रतीक्षा कर रहे हैं... बड़ों को प्रणाम छोटों को प्यार।

आपकी छोटी बहन

**मधुलिका**

पटना '64

आदरणीय दीदी,

प्रणाम।

दीदी, आपकी बहुत याद आती है आप रहती थी तो घर हँसता रहता था। अब आपकी कमी बेहद खलती है। पू. माँ की तबियत भी ठीन नहीं रहती है। पू. पहुना जी को मेरी याद दिला देंगी... बच्चों को प्यार देंगी।

आपकी छोटी बहन

**अंजू**

मृणालिका, पटना '74

आदरणीया मम्मी,

सादर प्रणाम,

आशा अछि ई नीके जकां हेथिन। हिनका पढ़ैत रहैत छियें ते हमरा बड नीक लागैत ऐछ। एतेक दूर कनाडा मे हिनकर सबहक आशीर्वाद ते काज दैत छैक...हम ऑरकुट पर हिनका देखैत छी मोन के खुश राखैत छी.....खूब निक से रहथुन अपन हेल्थ पर ध्यान रखथुन। कखनो मोन के उदास नहि करिहैथ।

हिनके बेटी

**समिता**

*समिता हमर बेटी वन्दनाक ननदि भेलखिन किन्तु ब्याह भ गेलैक हमर सब से छोट भाई असीम मल्लिक से दीदीक बदला मम्मी कहैत रहलीह- संबोधनक अभिधा सँ सिनेह के की लेन देन? सब कनाडा मे छैथ... किन्तु समिता कहियो अपन भाषा नहि छोड़लन हुनक सब भाई बहिन मे छल भाषाक प्रति अनुराग.....*

पू. दीदी,

चरण स्पर्श,

आपकी चिट्ठी मिली। पढ़कर काफी खुशी हुई। किसी बहाने तो आप आ रही हैं। आपको जवाब देने में थोड़ी देरी हो गई, क्योंकि बबली उसके husband, गुड्डू अपनी wife के साथ आए थे उसी में व्यस्त हो गई थी। खैर, समय पर चिट्ठी पहुँच जाएगी नंदन एवं रिजनल अकादमी दोनों ही धर्मतल्ला side में ही है। यहाँ तो ठंढ पड़ती ही है। Dec. में।...

यहाँ पर सभी ठीक है। आपलोगों की खबर प्राय: पिन्टू लोगों से मिल जाया करती है। आपके आने की प्रतीक्षा कर रही हूँ। प्रिय गुड्डू, गुड्डी एवं लीली कैसे और कहाँ हैं? उनलोगों को खूब प्यार। पू. भाभी भाय साहब की चिट्ठी आई थी, सभी मजे में हैं। पू. पहुना को मेरी याद दिला देंगी। आज पिन्टू का birth day है आपलोग खूब enjoy कर रही होंगी अभी।

आपकी

**चयनिका**

29 नवंबर

दीदी राम,

प्रणाम।

पत्र को आरंभ करने के पूर्व बहुत सोचा है और अभी भी सोच रहा हूँ कि पत्र कैसे प्रारंभ करूँ?

हर बार मैं आपको कुछ लिखने बैठा हूँ, और दो-चार लाइन लिख के रह गया हूँ क्या

आपके Hridaya से relations खत्म हो गये? तो क्यों? और अगर नहीं तो कैसे? क्या आपके पास फकत इन दो सवालात का कोई मौजूं जवाब है।

दीदी! क्या हमारे और आप के संबंध की यही शर्त थी कि हमेशा मैं ही पत्र लिखूँ? या फिर मैं आपको पत्र लिखूँ और आप इसका बाध्य होकर उत्तर दे दें? मैंने बहुत दिन सब्र किया, और सब्र नाकाबिले बर्दाश्त हो गया तो आज अपने मन का गुबार निकालने बैठ गया हूँ।

मैंने जहाँ तक समझा है, हमारे और आपके बीच सिर्फ एक सामाजिक संबंध ही नहीं है, वरन् हमरे बीच एक भावनात्मक मित्रता का भी संबंध रहा है। शायद आप भी इस बात से इन्कार नहीं करेगी। और मैंने कहीं पढ़ा था, कि मित्रता का अर्थ है- पारस्परिक ईमानदारी, भावनात्मक लगाव और मानसिक सम दृष्टि।

आप ही से एक बात पूछूँगा कि क्या आप इस संबंध के प्रति पूर्णतः ईमानदार है? दीदी, आपका जन्म दिन था- सारा कलकत्ता छान मारा किन्तु आपकी तरह मूल्यवान कोई भी कार्ड नहीं मिला।

हृदय
**रवीन्द्र सारणी**
कलकत्ता '75

*पत्रक संग हृदयक गीत- मेरा दर्द तुम न समझ सके मुझे सख्त इसका मलाल है- आ संबंधक ईमानदारी एहेन भेल जे सामाजिक-भावात्मक रिस्ता सँ पारिवारिक रिस्ता मे हृदय कें वान्हि लेलौं-चयनिकाक पति बनि हमर परिवार मे आब गेलाह-*

पू. दीदी,

प्रणाम।

...मैं तो आपके पत्र का इन्तजार कर रही थी कि जरूर पत्र लिखेंगी, मगर आपका भी पत्र नहीं मिला। अन्नू भाभी भी इतनी व्यस्त रहती हैं कि किसी से अब उम्मीद ही नहीं कर सकती हूँ कि कोई पत्र लिखे।...

अंशु का test रामकृष्ण स्कूल वाला 18 Dec. को है। उस समय हमलोग दिल्ली जायेंगे वहीं test दिलवायेंगे। फिलहाल पटना जाने का तो कोई प्रोग्राम नहीं है। पहुना की तबीयत अब कैसी है लिखेंगी। यहाँ तो अच्छी खासी ठंढ पड़नी शुरु हो गयी है।

लिलि की शादी का क्या हुआ लिखेंगी। मुझे तो कुछ खबर नहीं रहती है। दीदी कम से कम आप तो बीच-बीच में पत्र लिख दिया कीजिए। गुड्डी तो दिल्ली में ही होगी। पिंकी आयी कि नहीं लिखेंगी। बम्बई से बेला का पत्र आया था जिसमें सुकू का भी हाल-समाचार मिला। गुड्डू आजकर क्या कर रहा है? उसने कहा था दुर्गा पूजा में मैं आऊँगा परन्तु आया नहीं। उसे जम्मू भेजेंगी न।

और पटना का क्या हाल समाचार है लिखेंगी। कृष्णा नगर वाला मकान बना कि नहीं लिखेंगी। पहुना को हमलोगों का नमस्कार देंगी। गुड्डू को स्नेह देंगी और सबों को मेरी याद दिला देंगी दानापुर से कृष्णा नगर तक। पत्र ज़रूर लिखेंगी।....

आपकी छोटी बहन
**सपना (नीहारिका)**
जम्मू 10.11.'94

पूज्या दीदी,

सादर चरण स्पर्श,

आपका अतिविलम्बित पत्रोत्तर विलम्ब के लिए उत्तरदायी कारणों को सूचित करते हुए मिला। निश्चय ही इसने मेरे मन में उत्पन्न चिन्ता को समाप्त कर दिया है। बिहार में अप्रत्याशित बाढ़ व इससे उत्पन्न विनाश–लीला की बातें तो हमें रेडियो तथा टी.वी. आदि से ही मालूम होती थीं, मगर इनसे दिल दहल उठता था। मुझे तो इस बात की चिन्ता थी कि आपलोग कैसे होंगी? अस्तु, भगवत्कृपा से सबलोग सकुशल हैं, यह जानकर प्रसन्नता हुई।...

...आपकी अनुजा नीहारिका की परीक्षा की निरंतर तिथि आगे टलने की प्रवृत्ति ने तो मुझे बोर कर कर दिया है। पता नहीं अब यह परीक्षा कब हो पाएगी।...

अपना आवास तो ले ही लिया है। अब आपलोगों के पधारने की प्रतीक्षा है।...

आपका स्नेहाकांक्षी
**वैद्यनाथ लाभ**
जम्मू विश्वविद्यालय

हमर सासुजीक कनकिरबी,

जय गोलकपुर की!

अहाँक परीक्षा आब अवस्से खचम भऽ गेल होयत कनी कान एम्हर दिऔने, एकटा सनगर बात कही। कनि कसि कें सुनवैत छी। लियऽ भरि छाँक सुनु–

चारिम दिन मुनहर साँझ कें चन्दर बाबू एकटा बेस खड़गर अलग टेंट संग एहिठाम पहुँचलाह। अलग टेंट महाशय आर केओ नहि बल्कि हुनकर श्री श्री 108 डिगा सन भातीज छलथिन्ह। आब सुनु हुनक किछु सराहना। डिगा महोदयक परिधान मे दुनल्ली। नहि बुझलियैक, वएह फत्ते खाँ बला पैजामा। पैजामाक डोरिक काज डराडोरि सँ चलैत छल। कद तीन फीट चारि ईंच। धुआ कब्जा वएह तीन गिरहबला हरवाहक पेना! आ ढाँचा? बुझु जे सजमनि छीलल। कोनो ठाम ब्रह्मा बाबा खुरचनि सँ बेसी ओदारि लेलन्हि आ कोनो ठाम जेना संयोगवश हुनक आँखि लागि गेलैक तँ खुरचनि एक दम्मे छछरि गेलैक। वयस आब जे होय मुदा रहथि झड़बेर जकाँ अँठिआयल। गारि तँ हुनकर मुँह सँ ओहिना निकलैत छल जेना फुसुक्की गोली। बोलचालक भाषा मे केओटि दालि। कखनहुँ

हिन्दी मे रंगरेजी कखनहुँ रंगरेजी मे मिथली। एकटा उदाहरण सुनु- एकबेर ओ बाजलथि-औ ललन बाबू, आय काल्हि सायन्स जे रैकेट (racket) मे इनवेंट केलक सेहो बर्ल्ड के सेभेन बन्दर्स मे छैक। हमर दिमाग चकराय गेल जे ई बैडमिन्टन आ टेनिस बला रैकेट दुनियाक सात बानर मे कोना आयल? पाछु ज्ञात भेल जे ओ गपे गप मे रॉकेट कें रैकेट आ वन्डर्स कँ बन्दर्स बना देलनि।

आ-हा-एकटा गप तँ बिसरले जाइत छलौं- हुनका देखला सन्ता हमरा अहाँक भट्टा-बाड़ीक मन्नाजीक बनाऔल लाठी समेत उनटल करिया खापैड़ मोन पड़ि गेल। ब्रह्म बाबा हुनक रचना स्पेशल करिऔठ माटि सँ केने छथिन्ह। परसू भोरे भोर बेचारा कें बाइब्रिंग उखड़ि गेलैक। कुटुम्ब वाली बात। खेने रहथिन्ह विशेषे। बाइब्रिंग एहेन हुमचलकैन्ह जे भोर सँ दुपहर धरि एक सोरे बेर पिचकारी बाँसक अढ़ मे छोड़लैथ। राति मे एहेन दबल आबाज होय जेना विवाहक डेढ़ आ रसन चौकी। कखनो टामीगन सेहो चलैत छल परंतु अपवाद रूपे! आब विशेष की कही हुनका विषय मे। चन्दर बाबू लग हुनक शोभा ओहिना होय जेना भड़कदम लग टनक बेहरी!

आर समाचार की कही? अपना ओहिठाम पिल्ला पिल्ली मिलाय सात जन छल। तीन गोतनी आ चारि दिआद् सभ एक पर एक बिलैंती। एहि बीच मे बड़ 'दर्दनाक' घटना भऽ गेलैक। सभ कुत्ता कें कोन दनभारूख बीमारी भऽ गेलैक! तीनटाक तँ अपटी खेत मे प्राण चलि गेलैक। बचलो सभ स्वर्ग पार्सल हेवाक तैयारी मे अछि। अहि कारणे बड़ दुखी छी। खेवा पीवा मे मोन नहि लगैत अछि। देखिऔक ने ट्रैजेडी ई भेल जे कुत्ता श्राद्ध करय लेल अबैत अछि वएह एहि गिरफित मे पड़ि जायत अछि। से गाम परक सभ कुत्ता असहयोग आंदोलन कयने अछि। विचार अछि जहिना दक्षिण अफ्रीका मे शहीद कें श्रद्धांजलि अर्पित करवा लेल अफ्रीकी सभ 'मोर्निंग डे' मनवैत अछि तहिना हमहु सभ शहीद कुत्ता सभकें श्रद्धांजलि अर्पित करी! मोन कर्म वचन सँ शुद्ध भऽ कऽ दिवंगत आत्मांकें अहुँ सभ श्रद्धांजलि अर्पित कऽ दिऔक।

पढ़नाय तँ कम सम चलैत अछि। देह हाथ छोड़ि कँ खायत छी। मुख्यत: तँ चारि बेर मुदा फा दुआ मिल कँ आठ दस बेर। दिमाग सँ बेसी पेट सँ काज लँ रहल छी। परिणाम ई जे पेट संक्रांतिक टिमकी कोहा जकाँ फुलल जा रहल अछि आ कपार चोकर बनल जाइत अछि। अच्छा तँ बेस अहींक बतबनौआ राजा।

**ललन**

डुमरा

12.4.'61.

पत्र पढ़ितहि जी जरि गेल। एतेक दिन पर गाम सँ पत्र लिखलैथ आ सेहो भाव-शून्य! कत्तौ हृदय नहि। ई तँ साँच अछि हिनकर गीत सभ सुनि हम अपन हरमोनियम तानपुरा तबला डुग्गी गीत संगीत सभी बिसरि गेल रही- ओहिना हिनकर ठेठ मैथिलीक ठाठ सँ भरल भाव भाषा देखि मोन भेल हम मैथिली मे लिखनाय छोड़ि दी।

आदरणीय लाल माय,

सादर प्रणाम,

आगे यहाँ सभी का समाचार अच्छा है। भगवान के कृपा से आपलोगों का भी समाचार अच्छा हो होगा। केश फाईल कर दिया हूँ। नोटिस अब तो मिल जाएगा। आपके अनुसार मोहन भैया को चिट्ठी आपके द्वारा लिखित दिया। देने के साथ-साथ रमण भैया एवं मोहन भैया दोनो हमसे अभी अलग बरताव में हैं। जलकर अभी तक नहीं के बराबर बिका है। कुछ जमीन बरहारा का बिक्री होना था आपके चलते बात नहीं कर रहा हूँ। कुछ बकुनिया की जमीन निकाले हैं वह भी बात नहीं कर रहा हूँ। आप से बिना जानकारी प्राप्त किए मैं बात नहीं कर सकता हूँ। यह जमीन दूसरे आदमी के पास है और अमीन साहब (पलट अली) इसको सूदभरना रख दिया है। अगर आपका सहमति मिल जाता है तो मैं बात कर लूँगा। धान का फसल ठीक ही है। मोहन भैया से फसल के बारे में कहें तो वे बोले कि लाल माय खुद आकर यहाँ व्यवस्था करें। तब तक मैं तुमको नहीं मानूँगा। इसलिए आप मोहन भैया को पत्र लिखकर सूचित कर देंगे। पलट आकर कुछ इधर-उधर की बातें मोहन भैया को .......।

विशेष पत्र की आशा में।

आपका छोटा भाई

**अशोक,**

डुमरा, 19.12.94

प्रिय मोहन जी, सुनील जी एवं अनिल जी,

विजयादशमीक शुभाशीष!

आशा अछि अहाँ सभ सपरिवार कुशल सँ होयब। हम 9 ता. के आवै लेल एकदम तैयार रही। लेकिन एम्हर प्लेगक कारण डाक्टर अपन स्थान छोड़वा लेल सभके मना कय देने अछि। सूरत सँ सभटा मजदूर भागि के हाजीपुर, समस्तीपुर, बेगुसराय, खगड़िया मे भरि गेल अछ। ई बीमारी खाली साँस मे भऽ जायछे। अहुँ सभ सावधानी सँ रहुँ। DDTक छिड़काव गाम मे कराई। गंगा कहलक जे अहाँ हैजा सभक दवाय लेल कोनो पीटीशन कलक्टर कँ देने छियैक। ओकर प्रति अहाँ कँ एहिठाम पठाय देवाक चाहैत छल। बच्चा सभ पर खास ध्यान राखब अंगना सँ बाहर नहि जाय देवैक। सभ चीज शांत भेला पर हम दीवाली मे दुइ तीन दिन पहिने आवैक कोशिश करब।

अहाँ सभके हमर हिस्साक व्यवस्थाक चिन्ता अछि। हमर खेती अहीं सभ करू। हँ जेना जे हिसाब होयत से हमरा लिखि के भेजब। माछ-मखानक पैसा हमर हिस्सा गामक बैंक मे ड्राफ्ट बनवाय गंगाक संग पठाय देव। हम गंगा सँ बात केलौं। ओकरा कहि देने छीयैक जे हमरा दिसि सँ अहाँ सभक आदेशक पालन करत। धान सभक कटाई हिस्सा बोइन बीहेन जे होयत ओ सभटा

कय लेत। एखन ओकरा पटना गाम लागल छैक। तैं ओकरा रखवा मे हमरा कोनो दिक्कत नय अछ। दोसर जे लीली, गुड्डी दूनू बहीन hostel चलि गेल अछ जे 1500 महीना हम पठाय रहल छी। एक–दुई बरीस मे हम सभ जिम्मेदारी सँ मुक्त भऽ जायब तकर बाद फेर अहाँ सभक संग नव व्यवस्था करब।

जमीनक बटवारा अहाँ सभ मिलि कऽ लियऽ। नीक बेजाय जे जमीन होयत हमरा हिस्सा मे दऽ देब। एहि मे अहाँ संकोच नहि करब। हम अपन जमीनक ओहि अनुरूप व्यवस्था करब।

आ सभ सँ पैघ बात छैक जे पू. माँ के कष्ट नय हेवाक चाही। माँ सँ बढ़ि दुनिया मे कोय नय अछि। लोग पितृ ऋण सँ मुक्त भऽ जायछ मुदा मातृ ऋण सँ नहि। पू. माँ क मोन दुखायब तँ माँ क कोनो बेटाक उन्नति नय होयत। हम एवाक कोशिश करैत छी। देखी ईश्वरेच्छा।

अहाँक

**लाल माय ललन**

पू. माँ,

विजयादशमीक प्रणाम,

सभ बात चि. मोहन जीक पत्र सँ ज्ञात करब। हमरा अहाँ पर बड़ जी लगि गेल अछ। बड़ देखवाक मोन कय रहल अछि। लेकिन प्लेगक महामारीक कारण डाक्टर केकरो कतौ निकलय नय दय रहल अछि। सभ किछ शांत भेला पर हम एको दिन लेल गाम अवश्य आयब। अहाँ यदि पटना आबि के रहिी तँ हमरा सभके बड़ खुशी होयत।

अहींके बेटा

**ललन**

मेरी मम्मी,

ममता की एक ऐसी मूरत जिन्हें ऐसा कोई नहीं जो उन्हें जानता न हो, प्यार न करता हो। मैं अपनी मम्मी से बहुत प्यार करती हूँ। मैं अपने आपको बहुत खुशनसीब समझती हूँ कि मैं उनकी बेटी हूँ। उम्र के पाँच साल से मैं उनके पास रही हूँ। पटना वीमेन्स कॉलेज में एडमिशन के बाद जब मैं हॉस्टल चली गई तब मैं थोड़ी सी उनसे दूर हो गई। वैसे तो हमेशा वो हमारे दिल में ही बसती है। उनसे मिलकर मैं इतनी इंस्पायर होती हूँ कि लगता है कि क्या मैं कभी ऐसी बन पाऊँगी? शायद नहीं! फिर भी वो हमारे साथ इस तरह बिहेब करती है जैसे उनके अंदर कोई खासियत नहीं वो हमारे ही तरह बिल्कुल आम है लेकिन वो तो बहुत सारी खासियतों की मालकिन हैं जो हमारी मम्मी हैं। प्यार की ऐसी मूरत जिसे सभी प्यार करते हैं क्योंकि वो सबों से प्यार करती हैं। माँ किसे

कहते हें उन्हें देखकर ही जाना है मैंने। जब भी उनके पास होती हूँ तो लगता है कि मैं अपनी मम्मी के पास हूँ लेकिन जब मैं उनकी उपलब्धियों को देखती हूँ तो लगता है कि डॉ. शेफालिका वर्मा जो कि इतनी बड़ी लेखिका हैं, हमारी ही मम्मी हैं। उन्हें देखकर सचमुच गर्व हो जाता है। मम्मी-पापा दोनों ने हम बच्चों को इतना प्यार दिया है, जिसे इस कागज और कलम से व्यक्त करना संभव नहीं। पापा के जाने के बाद उनकी कमी तो हमेशा रहेगी लेकिन मम्मी ने हर संभव कोशिश की कि हमें उनकी कमी ना महसूस हो। हालांकि वो खुद पापा को कितना मिस करती हैं ये वो शायद हमारे सामने जाहिर ना करती हो लेकिन पापा की तस्वीर तो जैसे उनके दिल से लेकर आँखों तक छपी है। मम्मी मैं आपसे कहना चाहती हूँ कि आप खुश रहिये क्योंकि आप खुश रहती हैं तो हम सभी खुश रहते हैं। और भगवान से प्रार्थना करती हूँ कि जिस तरह उन्होंने आपको ऐसा बनाया कि आप हमेशा दूसरों के लिए जीती हैं उसी तरह भगवान मुझे भी ये आशीर्वाद दे कि मैं भी आपकी तरह बन पाऊँ और आपने और डैडी ने मेरे लिए जो भी सपने देखे हैं उन्हें मैं पूरा करके दिखाऊँ। और भगवान को बहुत-बहुत धन्यवाद देती हूँ कि उन्होंने हमें आप जैसी मम्मी (माँ) दी। एक छोटी सी कविता मेरी प्यारी ममा के लिए-

*''आँचल की छाया देकर, सारा प्यार लुटाये जो।*
*ममता की मूरत बनकर, मेरी माँ कहलाए वो।''*

**स्नेहा वर्मा**
पटना वीमेन्स कालेज हॉस्टल
जनवरी 2006

*वर्माजीक महाप्रयानक उपरांत अशोक हमर छोट भाय जे सहोदर से कम नहीं छल हमरा एकटा पत्र लिखलक-*

चरणों में सादर प्रणाम,

... आज रात मैंने एक सुंदर सपना देखा कि मैं अपने कानून के गुरु श्रद्धेय स्व. ललन बाबू की याद मे गरीबों को मुफ्त कानूनी सहायता हेतु एक केंद्र का उद्घाटन करवा रहा हूँ। ब्रह्म मुहूर्त में 3 बजे जब मैं ध्यान करने जाता हूँ ठीक उसी समय यह स्वप्न देखा लेगा कि मेरे शरीर में एक नयी स्फूर्ति, नई जागृति और प्रेरणा हुई। मैं सुबह होते अपने मन मंदिर में ठान लिया की सहरसा में मैं अपने घर पर ''ललन कुमार वर्मा कानूनी सहायता केंद्र'' खोलूँगा जो सरकार में रजिस्टर्ड रहेगा.....

आपका छोटा भाई,
अशोक कुमार वर्मा, एडवोकेट,
नई दिल्ली 13.05.03

*वास्तव में अशोक हिनकर जूनियर कम आ भक्त बेसी छल-*

हमर माँ पापा कँ बड़ चिन्ता रहैत छल रजनी कोना गाम घर मे रहैत हेतीह- मोट रहन सहन पर्दा प्रथा.... तखन हम पापा माँ के आठ दस पन्नाक पत्र लिखने छलौं जाहि सँ माँ पापा हमरा दिसि सँ बेफिक्र रहैथ। ओकरे किछ अंश...... ओना सौंसे पुस्तक मे हमर लिखल इएह एकटा पत्र अछि एक तँ हमर लिखल पत्र हमर समस्त साहित्य समाज लग अछिए...

पूजनीया माँ एवँ पापा,

चरण स्पर्श,

हम एहिठाम नीक जकाँ छी! अपने कोनो बातक चिन्ता नहि करब। अपने हमरा एहेन शिक्षा आ संस्कार देने छी जे हम कत्तौ अपने सभक माथ नहि झुकायब। कखनो कखनो पटनाक सोडाफोन्टेनक मसाला दोसा मोन पड़ि जायत अछि- कखनो सभ भाय बहीनक हँसी मजाक-किंतु, एहिठाम सेहो खूब गीत गावैत छथि-माँ हमर माँ....पापा हमर पापा-अहाँक रजनी बेटी खूब खुश अछि...

माँ, सभ देखैत छी तँ लगैत अछि जेना राति-दिन, सुख-दुख, हँसी-मुस्कान अबैत अछि ओहिना तँ गाम आ शहर थीक। शहरक भीड़ भाड़ गहमागहमी मे मर्करी, नियोनक इजोत मे आदमीक मोन जखन उद्विग्न भऽ जायत हेतैक तखन निश्चित रूप सँ ओ गाम दिसि भगैत अछि- गामक लोक मे निश्छलता, प्रकृतिक हरीतिया..... मे पवित्रता, इजोरिया मे शांति तँ रौद मे दीप्त कर्मभाव-एकदम दोसर चित्र अछि- गाम तँ ई अछिए हम धानक गाछ नै देखने रही- जखन ननदि सभ सँ पुछलौं जे हम धानक गाछ देखब तँ पू. बाबूजी हँसय लगलाह-कनिया धानक गाछ नै होयत छैक- पौधा होइत छैक, तखन हमरा लाज भऽ गेल अपना पर किएक तँ खिड़की सँ जेम्हर देखैत छलौं तँ खेते खेत ताहि मे धान का पीअर पीअर शीश हवाक संग झूमैत छल-माँ, हमरा कखनो काल मोन होइत छल धानक खेत मे हवाक संग हम दौड़ि-दूनू हाथ पसारि गाछी बीरीछ मोइन. ... पोखरि सभटा नीक लगैत अछि माँ। अहाँ सोचैत रही रजनी देहात मे कोना रहत-मुदा, हम खूब नीक सँ रहैत छी- हँ हमर तन नै दौड़ैत अछि लेकिन हमर मोन हवाक संग संग कतऽ सँ कतऽ भागि अबैत छी। पापा, अहाँ तँ नीक जकाँ जनैत छी-अहाँक बेटी मोन मे बेसी जीवैत अछि- मोनक दुनिया ओकर अपन दुनिया थीक कखनो शरत चंद्रक नायिका बनि, तँ कखनो रवीन्द्रनाथ टैगोरक आँखक किरकिरी बनि-ई तँ हमर अपन हृदयक आँगन थीक जाहि मे हमर मोन विचरण करैत रहैत अछि-

माँ, दीवाली कँ एहिठाम दीया बाति कहैत छथि। जहिना पापा अहाँ उक्का... पाती भाँजैत छलैय ओहिना अहियोठाम होयत छैक! मुदा एहिठाम कतेक दिन पहिने सँ बच्चा सँ पैघ तक यानी

अहाँक पाहुनो सभ भाय बहीन मिलि कैंडिल बनवैत छथि। सभ भाय बहीन बाजैत लालमाय अपना सभ सँ सुन्दर कैंडिल केकरो नै हेवाक चाही–रंग बिरंगी कागज, कैंची लई सभ हिनकर चारूकात पसरल सभ सँ ऊँच बांस पर ओ 'आकासदीप' टांगल जाइत छल। एहिठाम बड़ पावनि तिहार होयत छैक माँ! अपना सभ कँ छठि नहि हायेत छैक मुदा एहिठाम छठि हायेत छैक मुदा दोसर गोटे डाली उठवैत अछि। सामा चकेबा बननाय छठि सँ शुरु भऽ जायत छैक। हमहुँ सभ माँ बच्चे सँ सामा चकेवा खेलैत छलौं। एहिठाम मीना सभ बहीन मिलि हमरो ले गीत गाबि दैत छथि– मन्ना भैया चलला अहेरिये हे आहे रूमाल भरि आनल चंपा फूल हे मचिया बैसल तोहे रजनी बहीने हे–खोँइचा भरि लेहु चंपा फूल हे– माँ तखन हमर आँखि नोरा जायत छल–सोचैत रहैत छी जे पटनो मे एहना हमर माँ, नानी, बहीन सभ सामा चकेवा खेलैत हेतीह– चुगला बनवैत आ हम बटखोजनी बनाय बनाय बाट पर राखैत छलौं कहीं हमर भाय आबि जायथ मुदा, एहिठाम सभ केओ हमरा खराब डहकन सुनवैत छलीह। बाबूजी आंगन मे बजलाह जल्दी जल्दी भानस भात खतम करू। आय दलान पर जट्टा जहिनक खेल होयत सौंसे गाम मे देखवा ले नौतने छी–माँ, एगारह बजे राति मे शुरु भेलैक–पूर्णिमाक राति माँ एतेक सुन्दर इजोरिया हम आयधरि नहि देखने छी जतेक सुन्दर गाम मे रहै छैक। जेम्हर सँ उम्हार छल ओम्हर चौकी कुरसी आंगन वाली सभ ले, कनिया बहुरिया सभ ले लागल छल हमरा तँ लगैत छल हजारो आदमीक भीड़ होयत– सभटा बड़का बाबू बाबूजी का काकाजीक सामने एकदम अनुशासित, शिष्ट आ संयत–जहा जहिनक खेल हमरा एतेक नीक लागल–एकटा अनार नाम के लड़की हैक ओ जखन झूमैत छलीह– आबऽ ते, भीड़ ते बापक बेट्टी होयत छलैथ कतेक साहस हमरा सभक अन्तर मे देलीन....

माँ, अहाँ हमरा सभकँ चौरचन दिन घर मे बंद कऽ दैत छलौं चाँद नहि देखी– मुदा, एहिठाम चौरचन ब्याह दानक अंगना लगैत अछि– सभ बच्चा सभ नव नव कपड़ा पहरि–चानक दर्शन करैत अछि। जतेक पुरुख छथि ओतवा डाला, डाली, दहीक खोर, घैला पर कलस ताहि पर दीप नेसल.....भरि आंगन ढाह पड़ैत अछि जाहि पर ई सभ राखल रहैत अछि। खीर पूरी तरह तरहक पकमान सभ भरि दिन बनैत अछि– उगह चाय.... की लपकौ पूआ बच्चा सभ बजैत रहैत अछि! पापा, हमरा एकटा बात बड़ विचित्र लागल पुरुषक वर्चस्व। सभटा लड़की टुक टुक तकैत अछि आ जनमौऔ बेटी चानक आगु बैसि के खायत अछि–तकर बाद बेटी सभक पारी अबैत छैक। पापा, भरि दिन भूखल पिआसल माँ काकी एतेक चीज बनवैत छथि खायत काल पहिने पुरुष एहि तरहक भेद भाव हमरा नीक नहि लगैत अछि। हमरा मोन उदास भऽ जायत अछि। अहाँ सभ कहियो बेटा बेटी मे भेद नय केलौं पापा– हँ हमरा नीक लागल माँ– जखन हमहु भूखल पिआसलन गोसाँय घर मे सीरा आग्यु बैसि खीर पूरी सभ बनेलौं– अहाँ सभ चिन्ता नय करू.. ....

अहींक बिछुड़ल बेटी

**रजनी**